CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुण्डकोपनिषद् ॥

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशीय भाषा में रायबहादुर बाबू जालिम सिंह निवासी ग्राम अकबरपुर जिला फैजाबाद ने पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशी की सहायता से अनुवाद किया

तिसको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुन्शी प्रयागनारायणजीभार्गव ने सर्वलोकहितार्थ

दूसरी बार

लखनऊ

सुपरिण्टेण्डेण्ट बाबू मनोहर लाल भार्गव बी. ए. के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई.,) के यंत्रालय में मुद्रित किया

सन् १९११ ई०

हक़ तसनीफ़ महफ़ूज है बहक़ इस अपेक्षाने के ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिंभयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम्। यद्बो धोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः। षट्चक्रादिविचार सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करौं वन्दना ब्रह्मको। जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल। मिटै अन्धतम कूप ॥
नाम रूप जामें नहीं। नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं। रहितत्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद। ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थ को। लखै सकल संसार ॥
सन्त संगसे जो लख्यो। सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते। जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्याके निकट। अकबर पुर है गांव ॥
जन्मभूमि ममजान तू। जालिमसिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महा अपार समुद्र है इसके पार होने के लिये उपनिषद् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका हैं जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागर के पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्काल में होंगे जो मुमुक्षुजनहैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस टीकामें पहिले मूलमन्त्रहै फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दियाहै और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थ सहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफका लिखा हुआ ऊपरसे नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ा जावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्य देशीय भाषामें मिलेगा और यदि बायें तरफसे दहिने तरफ को पढ़ा जावे तो हरएक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलेगा जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभाक्तिके अनुसार लिखागयाहै इस टीकाके पढ़नेसे संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा इस टीकामें मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पायाहै और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसीके शब्दोंहीं से सिद्ध कियागयाहै अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगईहै हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करनेके लिये रक्खागयाहै और उस पदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनों को विदित हो जावै कि यह पद मूलका नहीं है इस टीका को बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर जिला फैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मो ड़ाख्य नगरके रश्मकरशुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमलमें अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहा कहीं अशुद्धताहो उससेटीकाकर्त्ताको सूचनाकरैं ताकि अशुद्धता दूर होजावै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

3
२५८

अथ मुण्डकोपनिषदि आरम्भ

शान्तिपाठः ॥

मूलम् ॥

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

स्वस्ति नः इन्द्रः वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नः तार्क्ष्यः अरिष्टनेमिः स्वस्ति नः बृहस्पतिः दधातु ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
वृद्धश्रवाः =	बड़ीहै कीर्त्ति जिसकी	नः =	हमारे लिये
इन्द्रः =	ऐसा इन्द्र देवराज	स्वस्ति =	अविनाशी सुखको
		दधातु =	देवै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+च = और
विश्ववेदाः = विश्वका जाननेवाला याने विश्वका प्रकाशक
पूषा = सूर्य देवता
नः = हमारे अर्थ
स्वस्ति = कल्याण को
+दधातु = देवै
+च = और
अरिष्टनेमिः = कल्याणोंसे परिपूर्ण
तार्क्ष्यः = गरुड़
नः = हमारे लिये
स्वस्ति = कल्याण को
+दधातु = देवै
+च = और
बृहस्पतिः = बृहस्पति देवगुरु
नः = हमारे लिये
स्वस्ति = कल्याण को
+दधातु = देवै

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः=हमारे तापत्रयों की शान्ति होवै ॥

अथ अथर्ववेदीयमुण्डकोपनिषद् ॥

मूलम् ॥

ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

ब्रह्मा देवानाम् प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता सः ब्रह्मविद्याम् सर्वविद्याप्रतिष्ठाम् अथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
विश्वस्य	= सब सृष्टि का	संबभूव	= उत्पन्न होता भया
कर्त्ता	= कर्त्ता	सः	= सोई
भुवनस्य	= जगत् का	सर्वविद्या प्रतिष्ठाम्	= सब विद्याओंमें उत्तम
गोप्ता	= रक्षक	ब्रह्मविद्याम्	= आत्मविद्या को
देवानाम्	= इन्द्रादि देवतों में	ज्येष्ठपुत्राय	= अपने ज्येष्ठ पुत्र
प्रथमः	= प्रधान	अथर्वाय	= अथर्वा नामक ऋषिसे
ब्रह्मा	= धर्मज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य करके संपन्न हिरण्यगर्भ ब्रह्मा	प्राह	= भली प्रकार कहता भया

भावार्थ ॥

अब ब्रह्मविद्या की स्तुति के लिये प्रथम ब्रह्मविद्या के प्रवर्तकों का इतिहास लिखते हैं ।

ब्रह्मेति ॥ इन्द्रादिक जितने देवता हैं उन सब से पहले मायोपाधिक चेतनसे प्रथम चतुर्मुख ब्रह्माही उत्पन्न होताभया, वह ब्रह्मा सम्पूर्ण प्राणीमात्र का कर्त्ता याने रचनेवाला है, और वही सम्पूर्ण भुवनों का रक्षक भी है, अर्थात् पृथिवी आदिक जितने लोक हैं सबका वह पालक है, वह अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा के प्रति प्रथम ब्रह्मविद्या का उपदेश करता भया, वह ब्रह्मविद्या सम्पूर्ण विद्याओं में श्रेष्ठ है ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

अथर्वणे यां प्रवदेत ब्रह्माऽथर्वा तां पुरोवाचाङ्गिरे ब्रह्मविद्यां स भारद्वाजाय सत्यवाहाय प्राह भार द्वाजोऽङ्गिरसे परावराम् ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

अथर्वणे याम् प्रवदेत ब्रह्मा अथर्वा ताम् पुरा उवाच अङ्गिरे ब्रह्मविद्याम् सः भारद्वाजाय सत्यवाहाय प्राह भारद्वाजः अङ्गिरसे परावराम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
याम्	= जिस आत्मविद्याको
ब्रह्मा	= ब्रह्मा
अथर्वणे	= अथर्वा नामक ऋषि से
पुरा	= पहिले
प्रवदेत	= कहता भया
ताम्	= उसी
ब्रह्मविद्याम्	= ब्रह्मविद्या को
अथर्वा	= अथर्वाऋषि
अङ्गिरे	= अङ्गिरमुनिसे
उवाच	= कहता भया
+च	= और
सः	= वहअङ्गिरमुनि
भारद्वाजाय	= भरद्वाज गोत्र बिषे उत्पन्न हुये
सत्यवाहाय	= सत्यवाह नामक ऋषि से
प्राह	= कहता भया
इति	= इसप्रकार
परावराम्	= ब्रह्माआदिकोंसे चली आई हुई आत्मविद्या को
भारद्वाजः	= भरद्वाज गोत्र बिषे उत्पन्न हुआ सत्यवाहनामक ऋषि
अङ्गिरसे	= अङ्गिरसमुनिसे
प्राह	= कहता भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अथर्वणेयामिति ॥ जिस ब्रह्मविद्या को ब्रह्मा अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा के प्रति कहता भया उसी ब्रह्मविद्या को अथर्वा अपने शिष्य अङ्गिरा के प्रति कहता भया और अङ्गिरा अपने शिष्य भारद्वाज गोत्रवाला जो सत्यवाह नामक है उसके प्रति उसी ब्रह्मविद्या का उपदेश करता भया, और भारद्वाज अपने शिष्य अङ्गिरस के प्रति उसी ब्रह्मविद्या को कहता भया, इस प्रकार परम्परा करके प्राप्त हुई यह ब्रह्मविद्या चली आती है ॥२॥

मूलम् ॥

शौनको ह वै महाशालोऽङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः पप्रच्छ कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

शौनकः ह वै महाशालः अङ्गिरसम् विधिवत् उपसन्नः पप्रच्छ कस्मिन् नु भगवः विज्ञाते सर्वम् इदम् विज्ञातम् भवति इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
ह वै =	प्रसिद्ध	शौनकः =	शुनक ऋषिका पुत्र शौनक
महाशालः =	धन कुल विद्यादि संपन्न श्रेष्ठ गृहस्थाश्रमका धारण करनेवाला और यज्ञोंका करनेवाला	विधिवत् =	यथाविधि याने गुरुशिष्यभाव से
		अङ्गिरसम् =	अङ्गिरस मुनि के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपसन्नः = समीपजाकर
इति = ऐसा
नुपप्रच्छ = पूंछता भया
किं
भगवः = हे भगवन् !
कस्मिन् = किस एकके
विज्ञाते = विशेष जानने पर
इदम् = यह सब कार्य्य कारण का विवेक
विज्ञातम् = भलीप्रकार जाना हुआ
भवति = होता है

भावार्थ ॥

शौनकोहेति ॥ जिस ब्रह्मविद्या को अङ्गिरस प्राप्त होताभया उसी ब्रह्मविद्या का अब निरूपण करते हैं। शुनक नामक ऋषि का पुत्र जो बड़ाभारी दानी शौनक नाम करके प्रसिद्ध था वह समित्पाणि होकर अर्थात् हाथमें कुछ भेंटको लेकर ब्रह्मनेष्ठी ब्रह्मश्रोत्री जो भारद्वाज का शिष्य अङ्गिरसहै तिसके पास जाता भया और जाकर उनसे विधिपूर्वक इस तरह पूंछता भया कि हे भगवन् ! किस वस्तु के जानने से सम्पूर्ण यह कार्य कारण समुदाय जाना जाता है, जो सम्पूर्ण पदार्थों के विज्ञान का हेतु यथार्थ ज्ञान है उसको मेरे प्रति कृपाकरके कहिये ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

तस्मै स होवाच द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद्ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यत् ब्रह्मविदः वदन्ति परा च एव अपरा च ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तस्मै	= उस शौनक मुनिसे	च	= और
ह	= विचार करके	+यत्	= जो
सः	= वह अङ्गिरस ऋषि	अपरा चएव	= अपराविद्याहै
उवाच	= कहताभया कि	द्वे विद्ये	= ये दोनोंविद्या
ह	= हे सौम्य !	वेदितव्ये	= जाननेयोग्यहैं
यत्	= जो	इति	= ऐसा
परा	= पराविद्या है	ब्रह्मविदः	= ब्रह्मवेत्ता लोग
		स्म	= निश्चय करके
		वदन्ति	= कहते हैं

भावार्थ ॥

तस्मैसहेति ॥ अब अङ्गिरसजी शौनकजी के प्रश्न के उत्तर को कहते हैं । हे शिष्य ! दो विद्या मुमुक्षुओं के जानने योग्य हैं, वे दोनों परा और अपरा नाम करके प्रसिद्ध हैं, दोनों में से जो अपराविद्या है, वह निष्काम कर्मोंके अनुष्ठान करने के वास्ते है, निष्काम कर्मों के अनुष्ठान से चित्त की शुद्धि होती है और चित्त की शुद्धिद्वारा पराविद्या का उपकारक है,इसीलिये परा-विद्या का कर्मकाण्डरूप अपरा विद्या साधन है, और उसका फल केवल अन्तःकरण की शुद्धि है, और पराविद्या का फल ब्रह्मकी प्राप्तिरूप मोक्ष है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

तत्र अपरा ऋग्वेदः यजुर्वेदः सामवेदः अथर्ववेदः शिक्षा कल्पः व्याकरणम् निरुक्तम् छन्दः ज्योतिषम् इति अथ परा यया तत् अक्षरम् अधिगम्यते ॥

अन्वयः	पदार्थ
तत्र	= पूर्वोक्त दोनों विद्याओंमेंसे
ऋग्वेदः	= ऋग्वेद
यजुर्वेदः	= यजुर्वेद
सामवेदः	= सामवेद
अथर्ववेदः	= अथर्ववेद
शिक्षा	= शिक्षा (इस में अक्षरोंकी उत्पत्ति के स्थान और स्वर आदिकों के उच्चारणका विवेक है कर्त्ता इसके पाणिनि मुनि हैं)
कल्पः	= विधिसूत्र (इस में गर्भाधान आदि संस्कारों की और अग्निहोत्रादि कर्मों की कर्त्तव्यता है कर्त्ता इसके कात्यायन मुनि हैं)
व्याकरणम्	= व्याकरण (इस में धातु प्रत्यय आदि शब्दोंका विवेक है कर्त्ता इसके पाणिनि मुनि हैं)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निरुक्तम्- निरुक्त(इसमेंवैदिक और लौकिक शब्दों का और लिंगोंका विवेकहै कर्ता इसके यास्क मुनि हैं

छन्दः = छन्द इसमें गायत्री आदिछन्दोंक विवेकहै कर्ता इस के शेषनाग हैं

ज्योतिषम् = ज्योतिष इसमें सूर्य चन्द्रमा आदि ज्योतिश्चक्र गति द्वारा कालका ज्ञा नहै कर्ता इसके सूर्य्य भगवान् और गर्गमुनिहैं

इति = यह सब
अपरा = अपराविद्याहै
अथ = और
यया = जिस विद्या द्वारा
तत् = वह वेदान्तप्रतिपाद्य
अक्षरम् = अविनाशी परब्रह्म(जिस का व्याख्यानअगलेमन्त्रबिषे है)
अधिगम्यते = पायाजाताहै
+ सा = वह
परा = पराविद्या है

भावार्थ ॥

तत्रेति ॥ पूर्वोक्त दोनों विद्याओं के मध्य पराविद्या की प्राप्ति का उपायभूत जो अपराविद्या है उस को प्रथम दिखलाते हैं ॥ ऋग्, यजुः, साम, और अथर्व आदि चारोंवेद, याज्ञवल्क्य कृत शिक्षाशास्त्र, कात्यायनप्रणीत कल्पशास्त्र, पाणिनिकृत व्याकरण शास्त्र, यास्कमुनिरचित निरुक्तशास्त्र, शेषनागरचित पिङ्गल शास्त्र और सूर्य्यरचित ज्योतिश्शास्त्र ये सब अपरा विद्याहैं, अब जिस पराविद्या करके वह ब्रह्म जाना जाता है उसको कहते हैं, ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

यत्तदद्दश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रं तद पाणिपादम् नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

यत् तत् अदृश्यम् अग्राह्यम् अगोत्रम् अवर्णम् अचक्षुःश्रोत्रम् तत् अपाणिपादम् नित्यम् विभुम् सर्वगतम् सुसूक्ष्मम् तत् अव्ययम् यत् भूतयोनिम् परिपश्यन्ति धीराः ॥

अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो
तत्	= वह
अदृश्यम्	= ज्ञानेन्द्रियों का अविषय है
अग्राह्यम्	= कर्मेन्द्रियों करके अगृहीत है
अगोत्रम्	= मूलकारण-रहित है
अवर्णम्	= नीलपीतादि वर्णरहित अथवा ब्राह्मणादि जाति रहित है
अचक्षुःश्रोत्रम्	= चक्षुश्रोत्रादि ज्ञानइन्द्रिय रहित है
अपाणिपादम्	= हस्तपादादिकर्मेन्द्रिय रहित है
नित्यम्	= अविनाशी है
विभुम्	= ब्रह्मासे स्थावर पर्य्यन्त सर्वव्यापी है
च	= और
सुसूक्ष्मम्	= आकाशवत् अतिसूक्ष्म है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वगतम् = {सबमें अनुगत है
+ अतः = इसलिये
तत् = वह
अव्ययम् = {सदाएकरूप नाशरहित है
यत् = जिसको
धीराः = विवेकी पुरुष
भूतयोनिम् } = {भूतादिकों का कारण
+ ज्ञात्वा = जानकरके
परिपश्यन्ति } = {सर्व ओर से देखतेहैं

भावार्थ ॥

यदिति ॥ जो वेद शास्त्र से प्रसिद्ध ब्रह्महै वह अदृश्य है, अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों का अविषय है, और कर्मेन्द्रियों करके अगृहीत है, और मूलकारण जो गोत्रहै, तिससे रहित है और नील पीतादिक वर्णोंसेभी रहितहै, और अपाणिपाद है अर्थात् हाथ पांव से भी रहित है,नित्य है,याने नाश से भी रहित है, व्यापक है, सर्वगत भी है, अतिसूक्ष्म है, अव्यय है, और सम्पूर्ण भूतों का योनि याने कारण भी है, जिस विद्या करके विद्वान्लोग ऐसे ब्रह्म को जानते हैं वही पराविद्या है ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्या मोषधयः संभवन्ति यथा सतः पुरुषात्केशलोमानि तथाऽक्षरात्संभवतीह विश्वम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

यथा ऊर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्याम् ओषधयः सम्भवन्ति यथा सतः पुरुषात् केशलोमानि तथा अक्षरात् सम्भवति इह विश्वम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
यथा	= जैसे
ऊर्णनाभिः	= मकड़ी
सृजते	= अपनीइच्छा सेनाभिस्थित सूत्रजालको बाहर निकालकर विस्तार करती है
च	= और फिर
गृह्णते	= स्वेच्छा से ग्रहणकरतीहै यानी उदरगत करलेती है
+ च	= और
यथा	= जैसे
पृथिव्याम्	= पृथिवी बिषे
ओषधयः	= अन्नादि सब ओषधियां
सम्भवन्ति	= उत्पन्नहोती हैंऔरपुनः उसीमेंलीन होजाती हैं
+ च	= और
यथा	= जैसे
सतःपुरुषात्	=जीवितपुरुष से
केशलोमानि	=केश और लोम
+सम्भवन्ति	=उत्पन्नहोते हैं
तथा	= वैसेही
इह	= इससंसारमण्डलबिषे
विश्वम्	= समस्तजगत्
अक्षरात्	= पूर्वोक्त अविनाशी परमात्मासे
संभवति	= ऊपर कहेहुये दृष्टान्तोंकेअनुसारउत्पन्न होताहै और उसी आत्मा में फिर लय होताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

यथोर्णनाभिरिति ॥ सहकारी कारण से विनाही ब्रह्म जगत् को उत्पन्न करता है, इसी में प्रथम दृष्टान्त को कहते हैं ॥ जिस प्रकार मकड़ी दूसरेकी सहायता से विनाही तन्तुओं को अपने शरीर से बाहर निकालती है, और फिर उन्हीं को अपने शरीर मेंही समेट लेती है, और उन तन्तुओं का वह अभिन्ननिमित्त उपादान कारणहै और जैसे पृथिवी से अभिन्न होकर सब ओषधियाँ उत्पन्न होती हैं, और फिर पृथिवी में ही लय होजाती हैं, अर्थात् ओषधियों के प्रति जैसे पृथिवी अभिन्ननिमित्त उपादान कारण है तैसेही ब्रह्म भी जगत् का अभिन्ननिमित्त उपादान कारणहै याने ब्रह्मसेही सब सृष्टि उत्पन्न होती है और ब्रह्ममेंही लय होती है ॥ प्र० ॥ अचेतन पृथिवी आदिकोंसे अचेतन ओषधियों की उत्पत्ति होवै परन्तु चेतन ब्रह्म से तो अचेतन जगत् की उत्पत्ति नहीं होसक्ती है ॥ उ० ॥ जैसे चेतन जीवित पुरुषके शरीर में जड़केश और रोम उत्पन्न होते हैं तैसेही मायावशिष्ट ब्रह्मसे यह सम्पूर्ण जगत् भी उत्पन्न होताहै केवल शुद्ध चेतनसे नहीं, इसी प्रकार ईश्वर ही जगत् का अभिन्ननिमित्त उपादान कारण सिद्ध होता है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

तपसा चीयते ब्रह्म ततोऽन्नमभिजायते अन्नात्प्राणो मनः सत्यं लोकाः कर्मसु चामृतम् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

तपसा चीयते ब्रह्म ततः अन्नम् अभिजायते अन्नात् प्राणः मनः सत्यम् लोकाः कर्मसु च अमृतम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
+ यदा	= जब
+ पूर्वम्	= प्रथम
ब्रह्म	= परब्रह्म
तपसा	= सृष्टिविषयक ज्ञानशक्तिकरके
चीयते	= स्थूलताकोप्राप्तहोताहैयाने बीजवत्अंकुरितहोनेकोगर्भितहोताहै
+ तदा	= तब
ततः	= उस ब्रह्म से
अन्नम्	= अव्याकृत याने प्रकृति
+ अभि जायते	= उत्पन्नहोतीहै
अन्नात्	= अव्याकृतसे
प्राणः	= सूत्रात्माहिरण्यगर्भ
+ अभि जायते	= उत्पन्न होता है
+ प्राणात्	= सूत्रात्माहिरण्यगर्भसे
मनः	= संकल्पविकल्परूप मन
+ अभि जायते	= उत्पन्न होता है
+ मनसः	= मनसे
सत्यम्	= अण्डसृष्टिपूर्वक आकाशादिपंचक
+ अभि जायते	= उत्पन्न होताहै
+ सत्यात्	= आकाशादिपंचकसे
लोकाः	= भूरादिसप्त लोक
+ अभिजायन्ते	= उत्पन्नहोते हैं
+ लोकेषु	= लोकों केबिषे
+ कर्माणि	= वर्णाश्रमों के कर्म
+ अभिजायन्ते	= उत्पन्न होते हैं
च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्म्मसु = कर्मोंके बिषे अमृतम् = अविनाशी कर्मफल	+ अभिजायते = उत्पन्नहोताहै

भावार्थ ॥

तपसेति ॥ वह मायावाशिष्ट ब्रह्म ज्ञानरूपी तप करके वृद्धिको प्राप्त होताहै, अर्थात् वह ईश्वर सृष्टिके आदिकाल में "एकोहं बहुस्यां" मैं एकसे अनेक होजाऊं जब ऐसी इच्छावाला होताहै, तब तिस ईश्वर से अव्याकृत याने प्रकृति उत्पन्न होती है, तिस अव्याकृत से हिरण्यगर्भ उत्पन्न होता है, तिस हिरण्यगर्भ से समष्टिरूप मन उत्पन्न होताहै, उस समष्टिरूप मनसे पांच स्थूल भूत उत्पन्न होते हैं, तिन पांच स्थूलभूतों से फिर अण्डरूप ब्रह्माण्ड उत्पन्न होताहै, तिस ब्रह्माण्ड से पृथिवी आदिक सब लोक उत्पन्न होतेहैं, तिन लोकों में फिर मनुष्यादि जीव उत्पन्न होतेहैं, और मनुष्यों से वर्णआश्रमों के अग्निहोत्रादिक कर्म उत्पन्न होतेहैं, और कर्मोंसे फिर फल उत्पन्न होताहै ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

यः सर्वज्ञः सर्ववित्यस्य ज्ञानमयं तपः तस्मादेत द्ब्रह्म नाम रूपमन्नं च जायते ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

यः सर्वज्ञः सर्ववित् यस्य ज्ञानमयम् तपः तस्मात् एतत् ब्रह्म नाम रूपम् अन्नम् च जायते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः =	जो पूर्वोक्त लक्षण वाला परमात्मा	सर्वज्ञः =	सामान्यतासे सबका जानने वाला है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च = और	एतत् = यह सृष्टिका
सर्ववित् = विशेषता से	उपादानकारण
सबकाज्ञाताहै	ब्रह्म = हिरण्यगर्भ
च = और	च = और
यस्य = जिसका	नाम = नाम
ज्ञानमयम् = ज्ञान से परि-	रूपम् = रूप
पूर्ण	च = और
तपः = सृष्टिविषयक	अन्नम् = भोग्यवस्तु
विचार है	जायते = सब उत्पन्न
तस्मात् = उस से	होता है

भावार्थ ॥

यइति ॥ जो अक्षररूप परमात्मा है, वह सर्व्वज्ञ है, अर्थात् सामान्यरूप करके सबको जानताहै, और वही ईश्वरहोकर सर्व-वित्भी है, अर्थात् विशेषरूप करके भी सबको जानताहै, उसका ज्ञान ही तपहै, क्लेशरूप जीवोंकी तरह उसका तप नहीं है, उसी ज्ञानमय तपवाले से कार्य्यरूप हिरण्यगर्भ उत्पन्न होताहै, तिस हिरण्यगर्भ से सब नाम रूप व अन्नादिक उत्पन्न होतेहैं ॥ ९ ॥

इति प्रथममुण्डके प्रथमःखण्डः ॥ १ ॥

मूलम् ॥

तदेतत्सत्यं मन्त्रेषु कर्माणि कवयो यान्यपश्यं स्तानि त्रेतायां बहुधा संततानि तान्याचरथ नियतं सत्यकामा एष वः पन्थाः स्वकृतस्य लोके ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् सत्यम् मन्त्रेषु कर्म्माणि कवयः यानि अपश्यन् तानि त्रेतायाम् बहुधा सन्ततानि तानि आचरथ नियतम् सत्यकामाः एषः वः पन्थाः स्वकृतस्य लोके ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ हेशिष्याः	= हे शिष्यो !
कवयः	= वसिष्ठादि ऋषीश्वर
मन्त्रेषु	= अपर विद्याके मन्त्रों बिषे
यानि	= जिन
कर्माणि	= अग्निहोत्रादि कर्मों को
अपश्यन्	= देखतेभये याने अनुष्ठान करतेभये
तत्	= वह
एतत्	= यह अग्निहोत्रादि कर्मों का अनुष्ठान
सत्यम्	= स्वर्गफलका साधनहै
+ च	= और
तानि	= वे अग्निहोत्र आदिकर्म
त्रेतायाम्	= वेदत्रयबिषे
बहुधा	= अनेकप्रकारसे
सन्ततानि	= प्रवृत्तहैं
+ यूयम्	= तुमलोग
सत्यकामाः	= यथायोग्य फलकीकामनावाले
तानि	= उनकर्मोंको
नियतम्	= नित्य
आचरथ	= अनुष्ठानकरो
+ हि	= क्योंकि
स्वकृतस्य	= अपनेकिये हुयेकर्मके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोके = फलकी प्राप्ति बिषे	एषः = यही पन्थाः = मार्ग
वः = तुम्हारे लिये	+अस्ति = है

भावार्थ ॥

पूर्व खण्ड में जो परा और अपरा विद्याका कथन किया है, उनके विषय भिन्न २ हैं, एकसे संसार मिलता है, और दूसरेसे मोक्ष, तिसीको अब दूसरे खण्ड में दिखलाते हैं ॥ तदेतदिति ॥ वसिष्ठादि ऋषियों ने जिन अग्निहोत्रादिक कर्मों को अपराविद्या ऋगादि वेदों के मंत्रोंकरके विधिपूर्व्वक त्रेतायुग में अनुष्ठान कियेहैं, वे सब स्वर्ग फलके साधन हैं, और वे वेदत्रय में अनेक प्रकार के हैं, हे शिष्यो ! उन कर्मोंको यथायोग्य फल की इच्छा वाले होकर तुमलोग भी करो, क्योंकि वे कर्म्म तुम्हारे को शुभ फलकी प्राप्तिका साधन होंगे, इसलिये इनका अवश्य करनाही तुमको उचित है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

यदा लेलायते ह्यर्चिः समिद्धे हव्यवाहने तदाऽऽज्य भागावन्तरेणाहुतीः प्रतिपादयेच्छ्रद्धया हुतम् ॥२॥

पदच्छेदः ॥

यदा लेलायते हि अर्चिः समिद्धे हव्यवाहने तदा आज्यभागौ अन्तरेण आहुतीः प्रतिपादयेत् श्रद्धया हुतम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यदा = जब		हव्यवाहने = अग्निबिषे	
समिद्धे = सम्यक्प्रज्वलित		अर्चिः = ज्वाला	

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेलायते = भलीप्रकार उठरहीहै
तदा = तब
आज्यभागौ = अग्निकेदक्षिण और वाम पार्श्व में याने बगलमें आज्यभागों को
+दत्त्वा = देकर
अन्तरेण = अग्निकुण्ड केमध्यबिषे
श्रद्धया = श्रद्धापूर्वक
आहुतीः = आहुतियोंको
प्रतिपादयेत् = प्रतिपादन करै यानेदेवे
तत् = ऐसा होम
कृतम् = श्रेष्ठहोमहोता है

नोट—आज्यभागौ आघारभाग और आज्यभाग दोशब्दहैं, आघारभाग वहहै जो होमके प्रथम अग्नि के दक्षिण पार्श्वमें आहुती दीजाय, और आज्यभाग वह है जो अग्निकुण्ड के वामपार्श्व में होम दियाजाय, पीछे इनके प्रधान होम उद्देश्यनिमित्त मध्यकुण्ड में दियाजाय ॥

भावार्थ ॥

यदेति ॥ सम्पूर्ण कर्मों में से अग्निहोत्रकर्म कीही प्रधानता है इसलिये प्रथम अग्निहोत्र कर्म कोही दिखलाते हैं ॥ जिस कालमें लकड़ियों करके सम्यक् प्रकार ज्वलित अग्नि बिषे ज्वाला भलीप्रकार उठरही है तिस समय में हवन करनेके योग्य जो द्रव्यहैं उनको अग्नि में सूर्य्यादि देवतों के निमित्त डाले यह कहकर ॥ अग्नयेस्वाहा, सोमायस्वाहा ॥ २ ॥

मूलम् ॥

यस्याग्निहोत्रमदर्शमपौर्णमासमचातुर्मास्यमनाग्रयणमतिथिवर्जितञ्च अहुतमवैश्वदेवमविधिना हुतमासप्तमांस्तस्यलोकान् हिनस्ति ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः॥

यस्य अग्निहोत्रम् अदर्शम् अपौर्णमासम् अचातुर्मास्यम् अनाग्रयणम् अतिथिवर्जितम् च अहुतम् अवैश्वदेवम् अविधिना हुतम् आसप्तमान् तस्य लोकान् हिनस्ति॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यस्य =	जिस अग्निहोत्रीका		
अग्निहोत्रम् =	अग्निहोत्रकर्म	अनाग्रयणम् =	शरद् वसन्त ऋतु विशेष नवान्न इष्टि करके रहित है
अदर्शम् =	अमावास्याको विशेषविधिकर के रहित है		
अपौर्णमासम् =	पूर्णमासीकोविशेषविधिसे रहित है	अतिथिवर्जितम् =	अतिथिकी सेवासेवर्जित है
		च =	और
		अहुतम् =	सायंप्रातःहोम करके रहित है
अचातुर्मास्यम् =	चातुर्मास्यइष्टिसेरहित है अर्थात् श्रावणादि चारमहीनोंमें विशेष होमविधानसेरहित है	अवैश्वदेवम् =	नित्य बलिवैश्वदेवसे वर्जित है
		अथवा =	अथवा
		अविधिनाहुतम् =	विधिकरके विरुद्धहोम कियागयाहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्य = ऐसे अग्निहोत्रीका अग्निहोत्रकर्म | आसप्तमान् = भूरादिसप्त लोकपर्यन्त | लोकान् = लोकों को | हिनस्ति = नष्ट करता है

भावार्थ ॥

यस्येति ॥ पूर्वोक्त अग्निहोत्र कर्म जो अपराविद्या करके प्रतिपाद्य है उसके विघ्नसे जो फल होताहै उसको दिखलाते हैं ॥ जिस अग्निहोत्रीका अग्निहोत्रकर्म पूर्णमासी और अमावास्या को विशेषविधि से रहितहै, और चतुर्मासमें या शरद् वसन्त ऋतु में जब नवीन अन्न उत्पन्न होता है तिस अन्नकरके अग्निहोत्र कर्म नहीं करता है, और जो अग्निहोत्री अतिथि का सत्कार नहीं करताहै, और वैश्वदेव श्राद्ध नहीं करता है, और शास्त्रकी विधिके अनुसार प्रतिदिन अग्निहोत्रकर्म नहीं करता है, या अश्रद्धा करके अग्निहोत्रकर्म को करता है, तिस अग्निहोत्री के सातों लोक नष्ट होजाते हैं, या उसके सात कुल नष्ट होजाते हैं, अर्थात् दुर्गति को प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

काली करालीं च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्तजिह्वाः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

काली करालीं च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमानाः इति सप्तजिह्वाः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
या	= जो
काली	= काली
च	= और
कराली	= कराली
च	= और
मनोजवा	= मनोजवा
च	= और
सुलोहिता	= सुलोहिता
च	= और
सुधूम्रवर्णा	= सुधूम्रवर्णा
+च	= और
स्फुलिङ्गिनी	= स्फुलिङ्गिनी
+च	= और
देवीविश्वरूपी	= देवीविश्वरूपी
इति	= ऐसेनामोंका केप्रसिद्ध हैं
ताः	= सोई
अग्नेः	= अग्निकी
सप्त	= सात
लेलायमानाः	= होम द्रव्य के ग्रहणकरने को लग करने वाली
जिह्वाः	= जिह्वा हैं

भावार्थ ॥

कालीति ॥ अब अग्नि की सप्त जिह्वोंका निरूपण करते हैं काली १ कराली २ मनोजवा ३ सुलोहिता ४ सुधूम्रवर्णा ५ विस्फुलिङ्गिनी ६ विश्वरूपी ७ आहुति ये अग्निकी जिह्वा हैं इन सप्तजिह्वाओं करके होमद्रव्य को अग्नि ग्रहण करती है ॥४॥

मूलम् ॥

एतेषु यश्चरते भ्राजमानेषु यथाकालं चाहुतयो ह्याददायन् तन्नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयो यत्र देवानां पतिरेकोऽधिवासः ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

एतेषु यः चरते भ्राजमानेषु यथा कालम् च आहुतयः हि आददायन् तम् नयन्ति एताः सूर्यस्य रश्मयः यत्र देवानाम् पतिः एकः अधिवासः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च यः	= और जो हवनकर्त्ता	रश्मयः	= किरणरूप
		भूत्वा	= होकर
भ्राजमानेषु	= प्रज्वलित	तम्	= उसअग्निहोत्रीको
एतेषु	= अग्निकी इनसातजिह्वाओंबिषे	आददायन्	= लेकर
		तत्र	= उसलोकबिषे
यथाकालम्	= समयानुकूल और विधिवत्	नयन्ति	= प्राप्तकरती हैं
		यत्र	= जिस लोकबिषे
चरते	= होमकरताहै	देवानाम्	= देवतों का
हि	= निश्चयकरके	एकः	= मुख्य
एताः	= वे	पतिः	= स्वामी इन्द्र
आहुतयः	= आहुतियां	अधिवासः	= निवासकरताहै
सूर्यस्य	= सूर्यके		

भावार्थ ॥

एतेष्विति ॥ पूर्वोक्त सप्त जिह्वाओं के फलको अब दिखलाते हैं ॥ जो अग्निहोत्री पूर्वोक्त अग्निकी सप्त जिह्वाओंमें विधिपूर्वक व समयानुकूल होम करता है तो यजमान करके अग्नि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में फेंकीहुई आहुतियां सूर्य्य की किरणों के साथ तादात्म्यता को प्राप्त होकर यजमान को उस स्वर्गलोक में प्राप्त करदेती हैं जहां देवतों का स्वामी इन्द्र ऐश्वर्य्य करके सम्पन्न सिंहासन पर विराजमान है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

एह्येहीति तमाहुतयः सुवर्चसः सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वहन्ति प्रियां वाचमभिवदन्त्योऽर्चयन्त्य एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

एहि एहि इति तम् आहुतयः सुवर्चसः सूर्यस्य रश्मिभिः यजमानम् वहन्ति प्रियाम् वाचम् अभिवदन्त्यः अर्चयन्त्यः एषः वः पुण्यः सुकृतः ब्रह्मलोकः ॥ ६ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सुवर्चसः =	प्रकाशमान है तेज जिनके ऐसी	पुण्यः=पुण्यैः =	पुण्योंकरके
आहुतयः =	आहुतियां	सुकृतः =	साधन कियाहुआ यानीभली प्रकारप्राप्त कियाहुआ
एहिएहिइति =	आवो आवो इसप्रकार	एषः =	यह
आह्वयन्त्यः =	बुलाती हैं	ब्रह्मलोकः =	स्वर्गलोकहै
च =	और	इति =	ऐसी
अर्चयन्त्यः =	आदरकरती हैं कि	प्रियाम् =	प्रिय
वः =	तुम्हारे		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाचम् = वाणीको	यजमानम् = यजमानकोया नेयज्ञकर्ता को
अभिवदन्त्यः = कहतीहुई	
सूर्यस्य = सूर्य के	+मृतेः पश्चात् = मरनेपीछे
रश्मिभिः = किरणोंद्वारा	
तम् = उस	वहन्ति = स्वर्गादि लोकों बिषेप्राप्तकरतीहैं

भावार्थ ॥

एहीति ॥ जिस कालमें अग्निहोत्री शरीर का त्याग करके स्वर्गको जानेलगता है, तब सब आहुतियें उसको सहित आदर के पुकारती हैं, आवो २ तुम्हारे पुण्यकर्मों करके प्राप्त कियाहुआ यह स्वर्गलोक है, हम तुमको वहां ले चलने को तैयार हैं, ऐसी प्रियवाणी को बोलती हुई जो सूर्य्य के किरणों के द्वारा आहुतियां हैं, यजमान को स्वर्गलोक में प्राप्त करदेती हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म एतच्छ्रेयो येऽभिनन्दन्ति मूढा जरामृत्युं ते पुनरेवापियन्ति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

प्लवाः हि एते अदृढाः यज्ञरूपाः अष्टादश उक्तम् अवरम् येषु कर्म एतत् श्रेयः ये अभिनन्दन्ति मूढाः जरामृत्युम् ते पुनः एव अपियन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
येषु =	जिन यज्ञआदिकर्मोंके बिषे	अवरम् =	अश्रेष्ठ
		कर्म्म =	कर्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उक्तम्=अपराविद्या करके कहा गया है
तेषु=उनविषे
हि=निश्चयकरके
एते=ये
अष्टादश=अठारहअर्थात् १६ ऋत्विक् १ यजमान १ उसकीपत्नी
यज्ञरूपः=यज्ञके साधक
अदृढाः=नाशवान्
प्लवाः=नौका हैं

एतत्=यह कर्ममार्ग
श्रेयः=कल्याणकारकहै
इति=ऐसा
+ज्ञात्वा=जानकर
ये=जो
मूढाः=मूर्ख
अभिनन्दन्ति=हर्षितहोतेहैं
ते=वे
पुनःएव=फ़िरफिर
जरामृत्युम्=जरामरण भावको
अपियन्ति=प्राप्तहोते हैं

भावार्थ ॥

प्लवाइति ॥ वैराग्य के लिये कर्म्म की निन्दाको करते हैं ॥ यह जो यज्ञरूपी नौका है, जिस में १६ ऋत्विज् एक यजमान दूसरी उसकी पत्नी सब मिलकर १८ हैं, वह यज्ञकर्त्ताको संसाररूपी समुद्रसे पार करनेको असमर्थ हैं, मगर जे मूढ़पुरुष उपासना से रहित हैं, वे इसी नौकाको मोक्षका साधन जानकर उसी में लिपटते हैं, और हर्षको प्राप्त होते हैं, और किंचित्काल स्वर्ग में निवास करके फिर जरामरण को प्राप्त होते हैं ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धीराः पण्डित म्मन्यमानाः जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढा अन्धे नैव नीयमाना यथाऽन्धाः ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

अविद्यायाम् अन्तरे वर्त्तमानाः स्वयम् धीराः पण्डितम्मन्यमानाः जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढाः अन्धेन इव नीयमानाः यथा अन्धाः ॥

अन्वयः	पदार्थ
ये	जो लोक
अविद्यायाम्	अविद्याके
अन्तरे	बिषे
वर्त्तमानाः	विद्यमान हैं
च	और
यथास्वयम्	हमहीं
धीराः	बुद्धिमान्
पण्डितम्मन्यमानाः	पण्डित हैं ऐसा अपनेको माननेवाले हैं
ते	वे
मूढाः	मूर्ख
जङ्घन्यमानाः	जन्म जरा व्याधि आदिदुःखोंसे पीड़ितहोते हुये
परियन्ति	जन्ममरणभाव में ऐसे भ्रमतेहैं
इव	जैसे
अन्धाः	अंधेलोक
अन्धेन	अंधेपुरुषकरके
नीयमानाः	लेजायेजातेहुये
+ गर्तादिषु	गढ़ेआदिकोंमें
+ पतन्ति	गिरतेहैं और क्लेश उठातेहैं

भावार्थ ॥

अविद्यायामिति ॥ अविद्याका कार्य जोकि कर्म है उन्हीं में मूढ़ विवेक से शून्य पुरुष अपने को बुद्धिमान् पण्डित मानतेहुये अहर्निश लगे रहते हैं, और निरन्तर क्लेश को प्राप्तहोते रहते हैं, और वही बार २ जरा मरणादि अनर्थों को प्राप्त होतेही रहते हैं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और दूसरोंको भी उपदेश करके अनेकप्रकार के अनर्थों कोही कर्मोंद्वारा प्राप्त करते रहते हैं वे वैसेही हैं, जैसे कि एक अन्धा दूसरे अन्धोंको मार्गपर चलानेके लिये लेजाय और दोनों अन्धे गड्ढे में गिरैं, जब अन्धाकर्मी गुरु है तो उस करके उपदेश कियाहुआ अन्धा शिष्य भी अन्धा होताहुआ जन्म मरणरूपी गड्ढों में गिरकर अनेकप्रकार के क्लेशको पाता है ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

अविद्यायां बहुधा वर्त्तमाना वयं कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः यत्कर्मिणो न प्रवेदयन्ति रागात्ते नातुराः क्षीणलोकाश्च्यवन्ते ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

अविद्यायाम् बहुधा वर्त्तमानाः वयम् कृतार्थाः इति अभिमन्यन्ति बालाः यत् कर्मिणः न प्रवेदयन्ति रागात् तेन आतुराः क्षीणलोकाः च्यवन्ते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	=जो	वयम्	=हमहीं
कर्मिणः	=कर्मीलोक	कृतार्थाः	=कृतकृत्य हैं
बहुधा	=अनेक प्रकार के	इति	=ऐसा
अविद्यायाम्	=अविद्या के बिषे	अभिमन्यन्ति	=अभिमान करते हैं
वर्त्तमानाः	=वर्तमान हैं	च	=और
+च	=और	रागात्	=कर्म फल की प्रीतिकेकारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नप्रवेदयन्ति = { कर्मफल के भागके अंतबिषे अपने पतनको नहीं जानते हैं } + ते=वे बालाः=मूढ़

च्यवन्ते = { स्वर्गादि लोक से च्युत होते हैं यानेमनुष्यलोकादि अधोलोक को प्राप्तहोते हैं }

तेन=ऐसेअज्ञानकरके आतुराः=पीड़ित होतेहुये

क्षीणलोकाः = { कर्मफलकी समाप्तिहोने से क्षीण हुये हैं लोक जिनके ऐसे }

भावार्थ ॥

अविद्यायामिति ॥ अविद्याकार्य जो कर्महै उस बिषे अभिमान से युक्त और आत्मज्ञानसे शून्य पुरुष अपनेकोही कृतकृत्य मानते हैं, और कर्म करके सहित अभिमान के मतंग की तरह चिक्कारते हैं कि हम बड़े कर्मकाण्डी हैं, हमारे तुल्य दूसरा कौन कर्मोंका करनेवाला है, ऐसे मूढ़ अज्ञानी कर्मों के करनेमेंही अतिरागी हैं, और कर्मोंमें अतिरागी होनेसे वह आत्मतत्त्व को नहीं जानते हैं. इसीवास्ते दुःखी हैं क्योंकि जब उनके कर्मोंका फल समाप्त होजाता है, तब वे स्वर्गसे गिरपड़ते हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

इष्टापूर्तं मन्यमाना वरिष्ठं नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रमूढाः नाकस्य पृष्ठे ते सुकृतेनुभूत्वेमं लोकं हीन तरञ्चाविशन्ति ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

इष्टापूर्तम् मन्यमानाः वरिष्ठम् न अन्यत् श्रेयः वेदयन्ते प्रमूढाः नाकस्य पृष्ठे ते सुकृते अनुभूत्वा इमम् लोकम् हीनतरम् च आविशन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ये	=जो कर्मी लोक
इष्टम्	=यज्ञ अग्निहोत्रादि श्रौत कर्म को
+च	=और
पूर्तम्	=वापीकूपतडागादिस्मार्तकर्म कोही
वरिष्ठम्	=श्रेष्ठ
मन्यमानाः	=माननेवाले हैं
+च	=और
अन्यत्	=आत्मज्ञान
श्रेयः	=श्रेयकासाधनहै
+इति	=ऐसा
न	=नहीं
वेदयन्ते	=जानते हैं
ते	=वे
प्रमूढाः	=अतिमूर्ख
नाकस्य	=स्वर्ग के
पृष्ठे	=मध्यबिषे
सुकृते	=सुकृतम् =कर्मफलको
अनुभूत्वा	=भोग करके
+कर्मफलक्षये	=कर्मफलकेक्षय होनेपर
इमम्	=इस
लोकम्	=मनुष्यलोकको
च	=या
हीनतरम्	=पशुयोनिनरकआदिहीनलोको
आविशन्ति	=प्राप्तहोते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

इष्टेति ॥ वैदिक यज्ञादिक कर्मों का नाम इष्टकर्म है, और वापी, कूप, तड़ागादिक स्मार्तकर्म्मों का नाम पूर्तकर्म्म है, इन्हीं कर्मोंको कर्मियों ने कल्याण का साधन मान रक्खा है, इसीसे वे मूढ़ हैं क्योंकि अनित्यफल जो पशु, पुत्रादिक हैं उन्हीं को उत्तम फल मानते हैं, और आत्मज्ञान जो कल्याण का साधक है, उसको वे नहीं जानते हैं, और वे कर्मी स्वर्ग में जाकर अपने सुकृतकर्मोंके फलको भोग करके फिर इस मनुष्य लोकमें आकर हीन, उत्तम, मध्यम व कनिष्ठ योनियों में जन्म लेते हैं, और घटीयन्त्रकी तरह संसारचक्रमें भ्रमते रहते हैं ॥१०॥

मूलम् ॥

तपःश्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये शान्ता विद्वांसो भैक्ष्यचर्यां चरन्तः सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

तपः श्रद्धे ये हि उपवसन्ति अरण्ये शान्ताः विद्वांसः भैक्ष्यचर्याम् चरन्तः सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति यत्र अमृतः सः पुरुषः हि अव्ययात्मा ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
हि	=निश्चय करके	विद्वांसः	=विद्वान् गृहस्थी हैं
शान्ताः	=ज्ञानहै प्रधान जिनको ऐसे	+च	=और
ये	=जो अपराविद्या के उपासक	+ये	=जो
		भैक्ष्यचर्याम्	=भिक्षाचार को
		चरन्तः	=धारणकरतेहुये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरण्ये=वानप्रस्थाश्रमबिषे
तपःश्रद्धे=तप नाम शास्त्रोक्तस्वाश्रम धर्म्म और श्रद्धा नामहिरण्यगर्भकी उपासनाको
उपवसन्ति=अनुष्ठानकरतेहैं
ते=वे
विरजाः=विरजसः=शुद्धकर्म्म के आचरण से निर्म्मल होते हुये
सूर्यद्वारेण=उत्तरायणमार्ग द्वारा
तत्र=उस सत्यलोक बिषे
प्रयान्ति=प्राप्त होते हैं
यत्र=जिस लोक बिषे
अमृतः=अमृत स्वरूप प्रथम उत्पन्न हुवा
अव्ययात्मा=अविनाशी स्वभाववाला
सः=वह
पुरुषः=हिरण्यगर्भ पुरुषस्थितहै

भावार्थ ॥

कर्मियों के फलकी प्राप्ति को कहकर अब सगुणब्रह्म की उपासना के सहित आश्रमी कर्मों को और उनके फल ब्रह्मलोक की प्राप्ति को कहते हैं ॥ तपःश्रद्धेय इति ॥ जो पुरुष वानप्रस्थ आश्रम में स्थित होकर वनमें एकान्त देश बिषे रहकर अपने आश्रम के अनुसार विहितकर्मों को और हिरण्यगर्भादिकों की उपासना को करते हैं, और जो गृहस्थ में ही रहकर इन्द्रियों को अपने वश में करके अपरा विद्या की उपासना और कर्मों को करते हैं, और जो यतीलोक भिक्षाचरणको करते हुये कर्म उपासना को करते हैं, वे सब पापकर्मों से रहित होकर सूर्य्यद्वारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तरायणमार्ग होकर सत्य ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं, जिस में शास्त्रप्रसिद्ध सब देवता निवास करते हैं ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेद मायान्नास्त्यकृतः कृतेन तद्विज्ञानार्थं सगुरुमेवाभि गच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ॥

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणः निर्वेदम् आयात् न अस्ति अकृतः कृतेन तद्विज्ञानार्थम् सः गुरुम् एव अभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियम् ब्रह्मनिष्ठम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+एवम्	=इसप्रकार	+येपरिणामेनश्वराःजन्मजरामरणदाः	जो परिणाम में नाशमान और जन्म जरा मरण के देनेवाले हैं
कर्मचितान्	=कर्मोंकरके प्राप्त		
लोकान्	=दक्षिणायन औरउत्तरायण मार्ग से पाने योग्य स्वर्गादि लोकों को	+तान्	=उनको
		परीक्ष्य	=भली प्रकार से विचार करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मणः=मुमुक्षुपुरुष
निर्वेदम्=वैराग्य को
आयात्=दृढ़ता से प्राप्त करै
+यतः=जिस कारण
अकृतः=कर्मरहितनित्य-रूप परमात्मा
कृतेन=कर्मकरके
न अस्ति=प्राप्तहोनेयोग्य नहीं है
+अतः=इसीकारण
सः=वह विचारवान् मुमुक्षु पुरुष
तद्विज्ञानार्थम्=उस परमात्माके जानने के अर्थ
समित्पाणिः=गुरुपूजाकी सामग्रीकोहाथमेंलेका
श्रोत्रियम्=वेद वेदान्तों का पारंगत
+च=और
ब्रह्मनिष्ठम्=आत्मज्ञानविषे निपुण
गुरुम्=गुरुकेही
एव=
अभिगच्छेत्=शरण में जावै

भावार्थ ॥

परीक्ष्येति ॥ दक्षिण और उत्तरमार्गद्वारा कर्मों करके प्राप्तहैं जो लोक उनमें कर्मों के फलरूप भोग को शास्त्र अनुमान से अनित्य निश्चय करके अधिकारी मुमुक्षु पुरुष उनसे वैराग्य को प्राप्त होवे, क्योंकि कर्मों करके नित्यब्रह्म की प्राप्तिरूप मोक्ष नहीं होता है, जो मुमुक्षु ब्रह्म के स्वरूप को जानने की इच्छा करै वह हाथ में कुछ भेंट लेकर आचार्य्य के समीप जावै, वह आचार्य्य कैसाहो ब्रह्मनेष्ठी हो, और ब्रह्मश्रोत्रिय भीहो, यदि वह केवल ब्रह्मनेष्ठी ही होगा तो शिष्य के संशयों को दूर नहीं करसकेगा, क्योंकि उसको उक्ती युक्ती नहीं फुरैगी, इसी लिये वह ब्रह्मश्रोत्रिय भी हो, अर्थात् वेदान्त शास्त्र पढ़ा भी होय, यदि केवल ब्रह्मश्रोत्रियही हो अर्थात् वेदशास्त्र केवल पढ़ा हो मगर आत्मदर्शी नहीं है, तो उसके उपदेश से भी मुमुक्षु को बोध नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होगा, अर्थात् आत्मा का साक्षात्कार नहीं होगा, इस लिये वह ब्रह्मनेष्ठी भी हो, ऐसेही गुरु से आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है, इतर वाचक ज्ञानी से नहीं ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्यक् प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम् ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः विद्वान् उपसन्नाय सम्यक् प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय येन अक्षरम् पुरुषम् वेद सत्यम् प्रोवाच ताम् तत्त्वतः ब्रह्मविद्याम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
सम्यक् प्रशान्त चित्ताय =	दृढ़ वैराग्य करके विरक्त है चित्त जिसका
+च =	और
शमान्विताय =	बाह्याभ्यंतर कामनाओं से विरक्त है जो ऐसे
उपसन्नाय =	शरण में आये हुये
तस्मै =	उस शिष्य के अर्थ
येन = यया =	जिस विद्या करके
सत्यम् =	सत्य
अक्षरम् =	अविनाशी
पुरुषम् =	परमात्मा को
तत्त्वतः =	यथार्थ
वेद = विद्यात् =	वह जानसकै
तांब्रह्मविद्याम् =	उस ब्रह्मविद्या को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्वान्=श्रोत्रियब्रह्म-निष्ठगुरु	प्रोवाच=ब्रूयाद्=उप-देश करै

इति प्रथममुण्डके द्वितीयःखण्डः ॥ २॥

भावार्थ ॥

तस्मइति॥जो ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मश्रोत्रिय गुरुहै वह शास्त्रोक्तविधि करके शांतचित्त, साधनचतुष्टयसम्पन्न, अधिकारी को जिसने बाह्येन्द्रियों को और मनको अपने वश में करलिया है वेदान्त शास्त्र करके प्रतिपाद्य ब्रह्मविद्या का उपदेश करै, जिस करके अक्षर ब्रह्मको वह जान लेवै ॥ १३ ॥

इति प्रथममुण्डके द्वितीयःखण्डः ॥ २ ॥

मूलम् ॥

तदेतत्सत्यं यथा सुदीप्तात् पावकाद्विस्फुलिङ्गाः सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः तथाऽक्षराद्विविधाः सौम्य भावाः प्रजायन्ते तत्र चैवापि यन्ति ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् सत्यम् यथा सुदीप्तात् पावकात् विस्फुलिङ्गाः सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः तथा अक्षरात् विविधाः सौम्य भावाः प्रजायन्ते तत्र च एव अपि यन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थ
सौम्य=	हे सौम्य शौनक
तत्=	वह
एतत्=	यह क्षर और अक्षरसे अतीत पुरुष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्यम्=परमार्थ करके सत्य है
यथा=जैसे
सुदीप्तात्=भली प्रकार प्रज्वलित
पावकात्=अग्नि से
सरूपाः=अग्निकेसमान
सहस्रशः=अनेक प्रकार की
विस्फुलिङ्गाः=चिनगारियां
प्रभवन्ते=उत्पन्न होतीहैं

तथा=तैसेही
अक्षरात्=मायोपाधि पुरुष याने ईश्वर से
विविधाः=अनेक देहोपाधि
भावाः=जीव
प्रजायन्ते=उत्पन्न होते हैं
च=और
तत्रएव=उसी ईश्वर में
अपियन्ति=लीन होजाते हैं

भावार्थ ॥

मुण्डक के प्रथम खण्ड में फल के सहित अपराविद्या का विषय जो कर्म है उनको कहा अब पराविद्या का विषय जो ब्रह्महै तिस ब्रह्मके स्वरूपके जानने के लिये मुण्डकके दूसरे खण्ड का आरम्भ करते हैं ॥ तदेतदिति ॥ यह जो वक्ष्यमाण अक्षर ब्रह्म है वह सद्रूप है, याने त्रिकालाबाध है, अर्थात् तीनों काल में तिसका बाध नहीं होता है ॥ (प्र०) जैसे धर्माऽधर्म का प्रत्यक्ष नहीं होता है परन्तु शास्त्र करके और अनुमान करके जाने जाते हैं तैसेही ब्रह्मभी प्रत्यक्ष नहीं है केवल अनुमान करकेही जानाजाताहै (प्र०) जब मुमुक्षुको तिस अक्षर ब्रह्म का प्रत्यक्ष नहीं भया तब वह मुक्त कैसे होवेगा किन्तु नहीं होवेगा ॥ (उ०) जीवात्मा नित्यही अपरोक्ष है, और उसके साथ ब्रह्मका अभेद है, इस लिये ब्रह्म सब को सदा अपरोक्षही है, इसी में दृष्टान्त को कहते हैं ॥ जैसे सुदीप्यमान अग्नि से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनन्त चिनगारियें अग्नि के समान रूपवाली निकलती हैं, और फिर तिसी में लयहोजाती हैं, तैसे माया करके युक्त ब्रह्मसे नाना देहोपाधियों के भेद से अनेकजीव उत्पन्नहोते हैं, और देह की उत्पत्तिहोने से जीव चेतन की भी उत्पत्ति कही जाती है, वास्तव से चेतनकी उत्पत्ति कभीहोती नहीं, और देहोपाधियों के लय होने पर तिसी अक्षर ब्रह्म में जीव भी लय होजाते हैं ॥ १ ॥

मूलम् ॥

दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः सबाह्याभ्यन्तरो ह्यजः
अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात्परतःपरः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

दिव्यः हि अमूर्त्तः पुरुषः स बाह्याभ्यन्तरः हि अजः
अप्राणः हि अमनाः शुभ्रः हि अक्षरात् परतः परः ॥

अन्वयः	पदार्थ
सः	=वह परमपुरुष
हि हि हि	=अत्यन्त निश्चय करके
दिव्यः	=अलौकिक और स्वयंप्रकाश है
अमूर्त्तः	=रूपरहित है
पुरुषः	=परिपूर्ण और सब शरीरों बिषे शयन करनेवाला है
बाह्याभ्यन्तरः	=चराचर जगत्के बाह्याभ्यन्तर बिषे व्याप्त है
अजः	=अजन्मा है
अप्राणः	=चलनात्मक प्राण वायु रहित है अर्थात् कर्मेन्द्रियों से रहित है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमनाः=संकल्पविकल्पात्मकमन से रहित है यानी ज्ञान इन्द्रियों से रहित है

अतः=इसीकारण

अक्षरात्=नामरूप उपाधिका बीजभूत हिरण्यगर्भ से

शुभ्रः=सर्वउपाधियों से रहित होनेकेकारण शुद्ध है

हि=च=और

परतः=मायोपाधि ईश्वरसे भी

परः=परे है

भावार्थ ॥

दिव्यइति ॥ जीवकी उत्पत्ति और प्रलयका हेतु जो उपाधि है उसको बीच में डालकरके जीव ब्रह्म की एकता कही है, अब इस मंत्र में तिसी अक्षर का उपाधि से रहित जो स्वरूप है उसको कहते हैं ॥ दिव्यइति ॥ वह ब्रह्म कैसा है दिव्य है याने दीप्तिमान् है, अर्थात् लौकिक प्रकाश से विलक्षण उसका प्रकाश है, फिर वह अमूर्त्त है, और अमूर्त्त होने सेही वह पूर्ण भी है, अर्थात् शरीरों के बाहर भीतर आकाशवत् व्यापक है, और जन्मादिकों से रहित है, वायुरूपी प्राणों से भी रहित है, और संकल्प विकल्परूपी मन से भी रहित है, इसी से वह शुद्ध है, और मायावशिष्ट चेतन जो ईश्वर है उससे भी वह श्रेष्ठहै ॥२॥

मूलम् ॥

एतस्माज्जायते प्राणो मनः सर्वेन्द्रियाणि च
खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

एतस्मात् जायते प्राणः मनः सर्वेन्द्रियाणि च
खम् वायुः ज्योतिः आपः पृथिवी विश्वस्य धारिणी ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एतस्मात्	=उसी सविशेष पुरुष से	ज्योतिः	=तेज
प्राणः	=प्राण	आपः	=जल
मनः	=मन	च	=और
सर्वेन्द्रियाणि	=दशोंइन्द्रियां	विश्वस्य	=सबको
खम्	=आकाश	धारिणी	=धारण करने वाली
वायुः	=वायु	पृथिवी	=पृथिवी
		जायते	=उत्पन्न होती है

नोट-जायते क्रियाका सम्बन्ध हर एक शब्द प्राणादि से है जैसे प्राणः जायते ॥

भावार्थ ॥

एतस्मादिति ॥ इसी अक्षर ब्रह्म से प्राणादिकों की उत्पत्ति होती भई, अर्थात् मायावशिष्ट ईश्वर से प्रथम शब्द गुणवाला आकाश उत्पन्न हुआ, फिर आकाश से शब्दस्पर्शगुणवाला वायु उत्पन्न हुआ, फिर वायु से शब्द स्पर्श और रूप गुणोंवाला अग्नि उत्पन्न हुआ, तिस अग्नि से शब्द स्पर्श रूपरसवाला जल उत्पन्न हुआ, और जल से शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध गुणोंवाली पृथ्वी उत्पन्न हुई, फिर सम्पूर्ण विश्व को धारण करनेवाला मायावशिष्ट चेतनसे प्राण उत्पन्न हुआ, बाद को संकल्प विकल्प रूप मन उत्पन्न हुआ, फिर सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय उत्पन्न हुये ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

अग्निर्मूर्द्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदाः वायुः प्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां पृथिवी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

अग्निः मूर्द्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताः च वेदाः वायुः प्राणः हृदयम् विश्वम् अस्य पद्भ्याम् पृथिवी हि एषः सर्वभूतान्तरात्मा ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अस्य	इस विराट् पुरुष का	यस्य	जिसका
अग्निः	स्वर्गलोक	वायुः	वायु
मूर्द्धा	मस्तक है	प्राणः	प्राण है
चन्द्रसूर्यौ	चन्द्रमा और सूर्य	विश्वम्	समस्त विश्व
चक्षुषी	दोनों नेत्र हैं	हृदयम्	अन्तःकरण है
दिशः	दशोंदिशा	पृथिवी	पृथिवी
श्रोत्रे	दोनों कर्ण हैं	यस्य	जिसके
च	और	पद्भ्याम्	चरणों से
वेदाः	सब वेद	जाता	उत्पन्न हुई है
वाग्विवृताः	उसकीविस्तृत वाणी हैं	एषः	वही सविशेष पुरुष
च	और	हि	निश्चय करके
		सर्वभूतान्तरात्मा	संपूर्ण भूतों का अंतरात्मा है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अग्निर्यस्येति ॥ विराट्रूपकरके सम्पूर्ण जगत्रूप ईश्वर रूप है, इसी वार्त्ता को अब दिखलाते हैं ॥ अग्निः ॥ जिस विराट्रूप परमेश्वर का स्वर्गलोक शिर है, चन्द्रमा और सूर्य्य जिसके नेत्र हैं, प्राच्यादि दिशा जिसके कान हैं, ऋगादि चारों वेद जिसके वागिन्द्रिय हैं, वायु जिसके प्राण हैं, और सम्पूर्ण विश्व जिसका हृदय है, और पृथिवी जिसके पाद है, ऐसा जिस परमात्मा का शरीर है, वही संपूर्ण भूतों का अन्तरात्मा है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः सोमात्पर्जन्य ओषधयः पृथिव्याम् पुमान् रेतः सिञ्चति योषिता यां बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मात् अग्निः समिधः यस्य सूर्यः सोमात् पर्जन्यः ओषधयः पृथिव्याम् पुमान् रेतः सिञ्चति योषितायाम् बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः ॥

अन्वयः	पदार्थ
यस्य	जिसके
सूर्यः	सूर्य
च	और
सोमात् सोमः	चन्द्र
समिधः	समिधहैं ऐसा
अग्निः	स्वर्गरूप प्रथम अग्नि
तस्मात्	उस
पुरुषात्	परमपुरुष से
+सम्प्रसूतः	उत्पन्न होताहै
च	और
ततः	उस स्वर्गरूप प्रथम अग्नि से
पर्जन्यः	मेघरूप द्वितीय अग्नि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रसूयते=उत्पन्न होताहै
ततः=तिस मेघरूपद्वितीय अग्नि से
पृथिव्याम्=पृथिवीरूप तृतीय अग्निबिषे
ओषधयः=अन्नादि ओषधिमान्
+ च=और
ततः=ओषधियों के परिणाम से
पुमान्=पुरुषरूप चतुर्थ अग्नि

+प्रसूयन्ते=उत्पन्न होताहैजो
रेतः=वीर्यको
योषिता याम्=स्त्रीरूपपंचम अग्निबिषे
=
सिञ्चति=सिंचन करताहै
+ एवं क्रमेण=इस क्रमसे
बह्वीः बह्वयः=बहुत याने असंख्य
प्रजाः=ब्राह्मणादि सब प्रजा
सम्प्रसूताः=सम्यक्प्रकार उत्पन्न होती हैं

भावार्थ ॥

तस्मादिति ॥ पूर्वोक्त परमात्मा से प्रथम द्युलोकरूपी अग्नि उत्पन्न होती है जिसकी समिध सूर्य और चन्द्रमाहैं,उसी प्रथम अग्नि से द्वितीय अग्नि मेघ उत्पन्न होतेहैं, मेघों से पृथिवीरूपी तृतीय अग्निबिषे अन्नादि ओषधियां उत्पन्न होती हैं ओषधियों से वीर्यरूपी चतुर्थ अग्निपुरुष द्वारा उत्पन्न होताहै,तिस वीर्य को स्त्रीरूपी पंचम अग्नि बिषे सिंचन करनेसे बहुतसी प्रजा उत्पन्न होती हैं ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

तस्माद्ऋचः सामयजूंषि दीक्षा यज्ञाश्च सर्वे क्रत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वो दक्षिणाश्च संवत्सरश्च यजमानश्च लोकाः सो मो यत्र पवते यत्र सूर्य्यः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मात् ऋचः सामयजूंषि दीक्षाः यज्ञाः च सर्वे क्रतवः दक्षिणाः च संवत्सरः च यजमानः च लोकाः सोमः यत्र पवते यत्र सूर्य्यः ॥

अन्वयः	पदार्थ
तस्मात्	=उसी पुरुषसे
ऋचः	=ऋग्वेद के मन्त्र
साम	=सामवेदके मन्त्र
यजूंषि	=यजुर्वेदकेमन्त्र
दीक्षा	=यज्ञकर्ता के नियम
सर्वेयज्ञाः	=अग्निहोत्रआदि सबयज्ञसु-वर्णखदिरादि स्तम्भरहित
च	=और
क्रतवः	=अश्वमेधआदियज्ञ स्वर्ण खदिरआदि स्तम्भसहित
दक्षिणाः	=एक गोदानसे लेकरसर्व्वस्व दानतक दक्षिणा
+ च	=और
संवत्सरः	=दिनरात आदिकालरूपसंवत्सरजिसकर केयज्ञादिकर्मों के काल का ज्ञान होता है
च	=और
यजमानः	=यज्ञादिकर्मोंका कर्ता यजमान
जायन्ते	=उत्पन्न होते हैं
च	=और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यत्र=जिस लोक बिषे
सोमः=चन्द्रमा
पवते={रहता है याने जो लोक दक्षिणायनमार्गकरकेप्राप्त होने योग्य है
+च=और
यत्र=जिस लोक बिषे
सूर्यः=सूर्य
+तपति={तपताहैयाने जोलोकउत्तरायण मार्ग करके प्राप्त होनेयोग्यहैं
+ ते=वे
लोकाः=सबलोक
+ तस्मात्=उसी
+ पुरुषात्=पुरुष से
+ जायन्ते=उत्पन्नहोते हैं

भावार्थ ॥

तस्माद्दचइति ॥ उसी परमात्मा से ऋग्वेद के मंत्र, सामवेद के मंत्र, यजुर्वेद के मंत्र, दीक्षा जिसमें यज्ञोपवीत मौञ्जीबंधन का नियम विशेष है, अग्निहोत्रादि रूप यज्ञस्तम्भरहित, अश्वमेधादि यज्ञस्तभ सहित, दक्षिणा जो यज्ञमें ब्राह्मणों के प्रति दीजाती है, संवत्सर जिसकरके यज्ञादि कर्मोंके करने के मुहूर्त का ज्ञान होता है, कर्मों के करनेवाला जो यजमान है और दक्षिणायन उत्तरायण मार्ग करके प्राप्त होने के योग्य जो लोकहैं सब उत्पन्न होते हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

तस्माच्च देवा बहुधा संप्रसूताः साध्या मनुष्याः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पशवो वयांसि प्राणापानौ व्रीहियवौ तपश्च श्र
सत्यं ब्रह्मचर्यं विधिश्च ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मात् च देवाः बहुधा संप्रसूताः साध्य
मनुष्याः पशवः वयांसि प्राणापानौ व्रीहियवौ तपः
श्रद्धा सत्यम् ब्रह्मचर्यम् विधिः च ॥

अन्वयः पदार्थ

च=और

तस्मात्=उसीपुरुषसे

देवाः = यज्ञादिकर्मोंके अंगभूतऔर यज्ञभागकोग्रहणकरकेफल दानदेनेमेंसमर्थ ऐसे देवता

बहुधा = इन्द्र वसुरुद्र आदि अनेक प्रकारके

सम्प्रसूताः =उत्पन्न होते हैं

साध्याः=साध्य नामक देवता

मनुष्याः = कर्मद्वारादेवतों को भाग देने वाले मनुष्य

अन्वयः पदा

पशवः =यज्ञों के अंग

पशुमात्र

वयांसि=सबजातिकेपक्षि

प्राणापानौ= सब प्राणि के जीवनभू प्राण और पान वायु

व्रीहियवौ= यज्ञोंविषेह द्रव्य के धान्यऔर

तपः = यज्ञआदि के अंग और पुरुष शरीरशोध स्वाश्रमध का आच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रद्धा=पुरुषार्थसाधकयज्ञादिकर्मों बिषे आस्तिक्यबुद्धि
सत्यम्=सत्यवचन और सत्याचरण
ब्रह्मचर्यम्=ब्रह्मचर्य
च=और
विधिः=सब कर्म्मों का विधान
+एतत्सर्वम्=यह सब
+तस्मात् पुरुषात्=उसी पुरुष से
सम्प्रसूयन्ते=सम्यक्प्रकार उत्पन्न होताहै

भावार्थ ॥

तस्मादिति ॥ तिसी पूर्वोक्त परमात्मा से कर्मों के अंगभूत, इन्द्रादि देवता, संपूर्ण कर्मों के अधिकारी मनुष्य, यज्ञों में बलिप्रदान देने के योग्य मृगादि पशु, सब जाति के पक्षी, प्राणीमात्र के जीवन के हेतु प्राणाऽपान वायु, व्रीहियवादिरूप अन्न, चांद्रायणादिरूप तप, पुरुषार्थ साधक यज्ञादिक कार्य्य बिषे सत्यभाषण और सत्य आचरण और ब्रह्मचर्य्य जो आठ प्रकार के मैथुन के त्याग का नाम है उत्पन्न होते हैं ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

सप्त प्राणाः प्रभवन्ति तस्मात् सप्तार्चिषः सप्त समिधः सप्त होमाः सप्त इमे लोका येषु चरन्ति प्राणा गुहाशया निहिताः सप्त सप्त ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

सप्त प्राणाः प्रभवन्ति तस्मात् सप्त अर्चिषः सप्त समिधः सप्त होमाः सप्त इमे लोकाः येषु चरन्ति प्राणाः गुहाशयाः निहिताः सप्त सप्त ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सप्त=सात	
प्राणाः=	मस्तक गत प्राण याने चक्षुरादि ज्ञानइन्द्रियां
+ च=और	
सप्त=सात	
अर्चिषः=ज्योतियां	याने स्वविषयज्ञान
+ च=और	
सप्त=सात	
समिधः=विषय	
+ च=और	
सप्त=सात	
होमाः=होम	याने विषय भोग
+ च=और	
सप्त=सात	

अन्वयः	पदार्थ
लोकाः=इन्द्रियों के	स्थान
येषु=जिनके बिषे	
गुहाशयाः=	स्वप्नावस्था हृदयाकाश बिषे शयन करनेवाले
प्राणाः=प्राण	
+ यान्=जिनको	
सप्तसप्त=सातसात	प्रकार से प्रतिदेह
निहिताः=स्थापित	किया है स्रष्टाने
चरन्ति=विचरते हैं	
+ ते=सो	
इमे=ये सब	
तस्मात्=उसीपुरुष से	
प्रभवन्ति=उत्पन्न होते	

॥ भावार्थ ॥

सप्तप्राणाइति ॥ दो कान, दो नेत्र, दो नासिका, एक वाक्, ये स जो शिरमें द्वार हैं, इन्हीं का नाम सप्तप्राण है, और इन्हीं प्राणों की जो वृत्तियां हैं, उन्हीं का नाम सप्तार्चिष है, और जो विषय हैं, सोई समिध हैं, याने ईंधन हैं, अर्चिष नाम की ज्वाला का है, सप्तप्राणरूपी अग्नि के सप्त वृत्तिरूपी ला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्हीं में सप्तविषयरूपी समिध हवन की जाती हैं, इन्हीं का नाम सप्तहोम भी है, और सातही पूर्वोक्त इन्द्रियों के जो गोलक हैं याने रहने के स्थान हैं, इन्हीं का नाम सप्तलोक है इन्हींमें सप्त इन्द्रियां संचारको करती हैं, येही सप्तप्राण जीवों के शिररूपी गुहामें शयन करतेहैं, ये सब उसी परमात्मासे उत्पन्न होते हैं॥८॥

मूलम् ॥

अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वेऽस्मात्स्यन्दन्ते सिन्धवः सर्वरूपाः अतश्च सर्वा ओषधयो रसाश्च येनैष भूतैस्तिष्ठते ह्यन्तरात्मा ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

अतः समुद्राः गिरयः च सर्वे अस्मात् स्यन्दन्ते सिन्धवः सर्वरूपाः अतः च सर्वाः ओषधयः रसाः च येन एषः भूतैः तिष्ठते हि अन्तरात्मा ॥

अन्वयः	पदार्थ
अतः	=उसीपुरुष से
सर्वे	=सब क्षारादि सात
समुद्राः	=समुद्र
च	=और
सर्वे	=सबसुवर्णाचल हिमाचलादि
गिरयः	=पर्वत
प्रभवन्ति	=उत्पन्न होतेहैं
च	=और
अस्मात्	=उसीपुरुषसे

अन्वयः	पदार्थ
सर्वरूपाः	=गंगायमुना आदिअनेक प्रकारकी
सिन्धवः	=नदियां
स्यन्दन्ते	=निकलती हैं
च	=और
अतः	=उसीपुरुषसे
सर्वाः	=सब व्रीहि यवादि
ओषधयः	=ओषधियां
[illegible]	=उत्पन्नहोती हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च=और
+अस्मात्=उसीपुरुष से
रसाः=मधुरआदि छै प्रकार का रस
येन=जिस करके
एषः=यह
अन्तरात्मा=यह अन्तर आत्मायानी लिंगशरीर
हि= निःसन्देह
भूतैः=स्थूलपंच महाभूतों करके परिवेष्टित
तिष्ठते=सबके मध्य बिषे स्थित होकर वर्त्तमान है
उत्पद्यते=उत्पन्न होत

भावार्थ ॥

अतइति ॥ उसी परमात्मा से सम्पूर्ण समुद्र, सम्पूर्ण प सम्पूर्ण नदियां, अनेक रूपों को धारण किये हुये उत्पन्न ह हैं, उसी परमात्मा से सम्पूर्ण व्रीहियवादिरूपी ओष उत्पन्न होती हैं और उसी परमात्मा से मधुरादि छःप्रकार के उत्पन्न होते हैं जिस करके पांचों भूत व्याप्त होरहे हैं और स सूक्ष्मादि शरीरों में परमात्माही अन्तरात्मा होकरके स्थित है॥

मूलम् ॥

पुरुष एवेदं विश्वं कर्म तपो ब्रह्म परामृतम् यो वेद निहितं गुहायां सोऽविद्याग्रन्थिं विकिर सौम्य ॥ १० ॥

इति द्वितीयमुण्डके प्रथमःखण्डः ॥

पदच्छेदः ॥

पुरुषः एव इदम् विश्वम् कर्म तपः ब्रह्म मृतम् एतत् यः वेद निहितम् गुहायाम् सः विद्याग्रन्थिम् विकिरति इह सौम्य ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सौम्य=	हे सौम्य !
इदम्=	यह दृश्यमान
विश्वम्=	सब जगत्
पुरुषः=	बाह्याभ्यन्तर सत्यात्मक पुरुषरूप
एव=	ही
+अस्ति=	है
+अन्यत् नामरूपा- त्मकंमिथ्या	औरनामरूप सब मिथ्याहै
कर्म=	निष्काम कर्म करके प्राप्य
च=	और
तपः=	तपरूप ज्ञान करके प्राप्य
+यत्=	जो
परामृतम्=	परम अमृत
ब्रह्म=	ब्रह्महै
च=	सोई
एतत्=	यह ब्रह्म
गुहायाम्=	सब प्राणियों के हृदय बिषे
निहितम्=	स्थितहै
इति=	ऐसा
यः=	जो पुरुष
वेद=	अभेद से जानता है
सः=	वह
इह=	इसी शरीर बिषे
अविद्या ग्रन्थिम् =	चिद्जड़ ग्रन्थिको याने वासनाको
विकिरति=	नाशकरता है अर्थात् जीवन्मुक्त होता है

इति द्वितीयमुण्डके प्रथमःखण्डः ॥

भावार्थ ॥

पुरुषइति ॥ मायाविशिष्ट परमात्मा के रूपको दिखलाकर अब

तिसी परमात्मा के शुद्ध स्वरूप को दिखलाते हैं॥ पुरुषः ॥ यह जो परमात्मासे उत्पन्न हुआ जगत् है सो परमात्मा काही स्वरूप है क्योंकि परमात्मा मेंही कल्पित है, और कल्पित वस्तु जो होती है सो अधिष्ठान से भिन्न नहीं होती है, इसी हेतु से सम्पूर्ण जगत् परमात्माका रूपही है। यह जो प्रश्न था कि किस एकके जाननेसे सब जानाजाता है उसी का यह उत्तर है कि एक परमात्मारूप कारण के जानने से सम्पूर्ण कार्यरूपी जगत् आप से आप जाना जाता है, यह जगत् क्या है इसके उत्तर में कहते हैं कि अग्निहोत्र आदिरूप जो कर्म हैं और उपासनारूपी जो तप है और कर्म और उपासना का प्रकाशक जो वेद है इन्हीं तीनों का नाम जगत् वा विश्व है अर्थात् एतद्रूपही विश्व है, सो विश्व ब्रह्म में अध्यस्त होने से ब्रह्मरूपही है, इसलिये ब्रह्म सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में स्थित है, तिस ब्रह्मको जो अधिकारी अपना आत्मारूप करके जानता है सो विद्वान् अविद्यारूपी ग्रन्थिको इसी जीवित शरीर में नाश करदेता है ॥ १० ॥

इति द्वितीयमुण्डके प्रथमः खण्डः ॥

मूलम् ॥

आविः सन्निहितं गुहाचरन्नाम महत्पदमत्रै त्समर्पितम् एजत्प्राणन्निमिषच्च यदेतज्जानथ सद सद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं प्रजानाम् ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

आविः सन्निहितम् गुहाचरन् नाम महत्पदम् अ एतत् समर्पितम् एजत् प्राणत् निमिषत् च यत् ए जानथ सदसत् वरेण्यम् परम् विज्ञानात् यत् वरिष्ठ प्रजानाम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
हे शिष्य	अहो शिष्य!
यत्	जो कुछ
एतत्	यह
एजत्	चलायमान
प्राणत्	प्राणवान्
निमिषत्	क्रियावान्
सदसत्	मूर्त और अमूर्त पदार्थ है
तत्सर्वम्	सो सब
अत्र	उसउक्तपरब्रह्म बिषे
समर्पितम्	सम्यक्प्रकार स्थित है
+अतः	इसी कारण
+तत्	वह ब्रह्म
महत्पदम्	सब विश्व का निधान है
आविः	बाह्याभ्यन्तर प्रकाशमान है
च	और
सन्निहितम्	हृदयाकाश बिषे सम्यक्प्रकार स्थितहै और
गुहाचरानाम्	गुहाबिषे बिचरनेवालाप्रसिद्ध है
च	और
यत्	जो कुछ
प्रजानाम्	मनुष्योंके
विज्ञानात्	ज्ञान से
परम्	परे है याने दिव्यज्ञानकरके ही जानने योग्य है
एतत्	उसको
+यूयम्	तुम सब
वरिष्ठम्	श्रेष्ठ
वरेण्यम्	नित्यजानने-योग्य ब्रह्म
जानथ	जानो

भावार्थ ॥

आविरिति ॥ एक बार कथन करने से जिसको आत्मबोध उत्पन्न नहीं होता है तिसके प्रति प्रकारान्तर करके ब्रह्मबोधका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निरूपण करते हैं ॥ आविः ॥ पूर्वोक्त ब्रह्म प्रकाश स्वरूप है, और वही ब्रह्म जीव रूप होकरके सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में स्थित है,इसी ब्रह्म में सम्पूर्ण जगत् इस तरह से अर्पित है, जैसे रथके पहियों में अरे अर्पित होते हैं, और जो कुछ चर अचर जगत् है वह ब्रह्म में समर्पित है, हे शिष्य ! पूर्वोक्त ब्रह्म कोही सर्व जगत् का कारण जानो, क्योंकि जितना स्थूल सूक्ष्म जगत् है,वह ब्रह्म से भिन्न नहीं है, वह ब्रह्म सब से श्रेष्ठ है, फिर वह इन्द्रियजन्य ज्ञान का विषय भी नहीं है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

यदर्चिमद्यदणुभ्योऽणु च यस्मिँल्लोका निहिता लोकिनश्च तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदुवाङ्मनः तदेतत्सत्यं तदमृतं तद्वेद्धव्यं सौम्य विद्धि ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

यत् अर्चिमत् यत् अणुभ्यः अणु च यस्मिन् लोकाः निहिताः लोकिनः च तत् एतत् अक्षरम् ब्रह्म सः प्राणः तत् उ वाङ्मनः तत् एतत् सत्यम् तत् अमृतम् तत् वेद्धव्यम् सौम्य विद्धि ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सौम्य	=हे सौम्य !	अणु	=अतिही सूक्ष्म है कि
यत्	=जो	यस्मिन्	=जिसविषे
अर्चिमत्	=स्वयंप्रकाश है	लोकाः	=चतुर्दशलोक
च	=और	च	=और
यत्	=जो	लोकिनः	=लोकनिवासी
अणुभ्यः	=परमाणुवोंसे भी		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निहिताः=स्थितहैं	एतत्=यह
तत्=सोई	सत्यम्=सत्यस्वरूप है
एतत्=यह	तत्=सोई
ब्रह्म=ब्रह्म	अमृतम्=अमृत है
अक्षरम्=अविनाशी है	तत्=सोई
सः=सोई	वेद्धव्यम्=भेदने याने चित्तसे भावना करने योग्य है
प्राणः=सूत्रात्माप्राणहै	+ इति=ऐसा
उ=और	+ त्वम्=तू
तत्=सोई	विद्धि=जान
वाङ्मनः=वाणी और मनहै	
तत्=सोई	

भावार्थ ॥

अर्चिमदिति ॥ फिर वही ब्रह्म प्रकाशमान है, सूर्य्यादिकों के प्रकाश से विलक्षण उसका प्रकाश है, सूक्ष्म जो परमाणु हैं वह उन से भी सूक्ष्म है, और स्थूल जो पृथिवी आदिक भूत हैं उन्न से भी स्थूलहै, जिस ब्रह्म में चतुर्दश लोक और लोकनिवासी मनुष्यादि जीव स्थित हैं सोई संपूर्ण जगत् का आधारभूत अक्षर है, याने नाश से रहित है, और वही ब्रह्म बृहद्रूप भी है वही प्राणाऽपानादिरूप भी है, वही वागादि इन्द्रियरूप भी है, और मनरूप भी है, और प्राणादिकों के अन्तर चेतन रूप भी है, वही सत्यरूप भी है, हे सौम्य ! पूर्वोक्त प्रकार ब्रह्मकी उपासना को करो ॥ २ ॥

मूलम् ॥

धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्रं शरं ह्युपासानिशि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तं सन्धयीत आयम्य तद्भावगतेन चेतसा लक्ष्यं तदेवाक्षरं सौम्य विद्धि ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

धनुः गृहीत्वा औपनिषदम् महास्त्रम् शरम् हि उपासानिशितम् सन्धयीत आयम्य तद्भावगतेन चेतसा लक्ष्यम् तत् एव अक्षरम् सौम्य विद्धि ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सौम्य	हे सौम्य !	सन्धयीत, सन्धय	=रखकर
त्वम्	=तु	तत्	=उस
औपनिषदम्	=उपनिषदों के विचार से उत्पन्न हुये	अक्षरम्	=अक्षर परब्रह्म को
महास्त्रम्	=अस्त्रों बिषे श्रेष्ठ ऐसे	लक्ष्यम्	=लक्ष्य
धनुः	=धनुष को	+ कृत्वा	=करके
गृहीत्वा	=ग्रहण करके	+ च	=और
हि	=और	तद्भावगतेन	=उसकी भावना करके तन्मय हुये
उपासानिशितम्	=तीव्र उपासना से उत्पन्न हुये तीक्ष्ण	चेतसा	=एकाग्रचित्त से
शरम्	=बाण को	एव	=भलीप्रकार
+ तत्र	=उस धनुष में	आयम्य	=खैंचके
		+ तस्य	=उसका
		विद्धि	=वेधनकर

भावार्थ ॥

जो पुरुष आत्मज्ञान की प्राप्ति में असमर्थ है उसके लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रणव की उपासना को कहते हैं ॥ धनुरिति ॥ प्रणवरूपी धनुष में बाणरूपी चित्तको जो लगावै अर्थात् उपनिषद् में प्रसिद्ध महान् अस्त्ररूपी जो ओंकारहै, उसको धनुष बनावै, और उसमें चित्त रूपी बाणको जोड़ै, यह ऐसा बाण है जो निरंतर ब्रह्मकी उपासना करके तीक्ष्ण कियागया है, याने शुद्धहुआ है, फिर उसबाण को विषयों से हटा करके लक्ष्यरूपी अविनाशी परमात्मा को वेधनकरै जैसे बाण लक्ष्यमें जाकर सरटजाता है, तैसे चित्त भी आत्मा में जाकर लगजावै, हे सौम्य ! अब तूभी अपने चित्त-रूपी बाण को ऐसे लक्ष्यरूपी ब्रह्ममें ओंकार रूपी धनुष के द्वारा लगादे ॥ ३ ॥ मूलम् ॥

प्रणवोधनुः शरोह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयोभवेत् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

प्रणवः धनुः शरः हि आत्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यम् उच्यते अप्रमत्तेन वेद्धव्यम् शरवत् तन्मयः भवेत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
हि=	इसलक्ष्यरूपक बिषे निश्चय करके	शरः=	बाण है
		तल्लक्ष्यम्=	उनदोनोंका लक्ष्य
प्रणवः=	प्रणव याने ओंकार	ब्रह्म=	ब्रह्म
धनुः=	धनुष है	उच्यते=	कहाजाताहै
आत्मा=	बुद्धिविशिष्ट चैतन्य	+तत्=	वह लक्ष्य
		अप्रमत्तेन=	प्रमादरहित पुरुषकरके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेद्धव्यम्=वेधनेयोग्य है	तन्मयः=तन्मय याने
+एवंवेद्धा=ऐसा वेधनेवाला	तदाकार
मुमुक्षु	भवेत्=होजाता है
शरवत्=बाणवत्	

भावार्थ ॥

प्रणाव इति ॥ ॐकाररूपी धनुष में चित्तरूपी बाण को रख करके चेतनरूपी लक्ष्य में सटा देवे, इस उपासना में ॐकार तो धनुष है, शुद्धचित्त बाणहै, और अक्षर ब्रह्म लक्ष्य है, अथवा पूर्वोक्त लक्षणोंकरके लक्षित जो ब्रह्महै, उस लक्ष्य में बाह्य विषयों की उपलब्धिरूपी प्रमाद से रहित होकर जितेन्द्रिय पुरुष अपने जीवआत्मारूपी ब्रह्ममें चित्तरूपी बाणको लगादेवै, अर्थात् उसके साथ अभेदभावको प्राप्त करदेवै, याने वह ब्रह्मरूपही होजावै॥४॥

मूलम् ॥

यस्मिन् द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षमोतं मनः सह प्राणैश्च सर्वैस्तमेवैकं जानथ आत्मानमन्या वाचो विमुञ्चथ अमृतस्यैषसेतुः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

यस्मिन् द्यौः पृथिवी च अन्तरिक्षम् ओतम् मनः सह प्राणैः च सर्वैः तम् एव एकम् जा नथ आत्मानम् अन्याः वाचः विमुञ्चथ अमृतस्य एषः सेतुः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+हेशिष्याः=अहोशिष्यो		द्यौः=स्वर्ग	
यस्मिन्=जिसबिषे		पृथिवी=पृथिवी	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च=और
अन्तरिक्षम्=आकाश
च=और
सर्वैः=सब
प्राणैः=प्राणों
सह=सहित
मनः=मन
ओतम्=समर्पितहै याने ओतप्रोतहै
तम्=उस
एव=ही
आत्मानं=अक्षरआत्मा को
+यूयम्=तुमसब
एकम्=अद्वितीयब्रह्म
जानथ=जानो
यतः=क्योंकि
एषः=यह पराविद्या की उपासना
अमृतस्य=मोक्षकी प्राप्ति बिषे
सेतुः=भवसागर से पारकरनेवाली सेतुहै
अन्याः=और
वाचः=अपराविद्या विषयक वाणीको यानी कर्म्मकाण्ड को
विमुञ्चथ=त्यागो

भावार्थ ॥

यस्मिन्निति ॥ अक्षर ब्रह्म का जानना अति कठिन होने से बार २ तिसी का निरूपण करते हैं ॥ यस्मिन् ॥ हे शिष्य ! जिस में आकाशलोक पृथिवीलोक अन्तरिक्षलोकादि ओतप्रोत हैं, और जिसमें वागादि संपूर्ण इंद्रिया और प्राणों के साहित संकल्प विकल्परूपी मन भी ओतप्रोत है उसी को तुम अद्वितीय ब्रह्म जानो, क्योंकि यह पराविद्याकी उपासना मोक्षकी प्राप्ति बिषे संसारसागर से पार करनेवाली सेतु है, इसलिये मुमुक्षु सम्पूर्ण जगत्के अधिष्ठानभूत आत्मा को अपना स्वरूप जानकर आत्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से अतिरिक्त पदार्थों को प्रतिपादन करनेवाली जितनी विद्या हैं, उन सबको त्याग देवै ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

अराइव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमानः ओमित्येवं ध्यायथ आत्मानं स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

अराः इव रथनाभौ संहताः यत्र नाड्यः सः एषः अन्तः चरते बहुधा जायमानः ओम् इति एवम् ध्यायथ आत्मानम् स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात् ॥

अन्वयः	पदार्थ
हे शिष्याः	= अहोशिष्यो
रथनाभौ	= रथचक्रनाभि पिण्डकामध्ये
अराः	= अरा
इव	= वत्
यत्र	= जिस हृदय बिषे
नाड्यः	= सबदेहकी नाड़ियां
निहिताः	= समर्पित हैं
+तत्र	= उस हृदयके
अन्तः	= मध्यभाग बिषे
सः	= वह पूर्वोक्त
एषः	= यह अविनाशीपरमात्मा
बहुधा	= हर्ष दीनता आदिअनेक उपाधियों के साथ अनेक प्रकारका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायमानः = होताहुवा
चरते = विचरता है
एवम् = इसप्रकार
+यूयम् = तुम
+तम् = उस
आत्मानम् = अविनाशी परमात्माको
ॐम् = प्रणव
इति = करके
ध्यायथ = ध्यानकरो
+ममआशीः = मेराआशीर्वाद है कि
वः = तुमसबको
तमसः = अविद्याके
परस्तात् = पल्ले
पाराय = पारजाने के लिये
स्वस्ति = निर्विघ्न कल्याणहोवै

भावार्थ ॥

अराइवरथनाभाविति ॥ जैसे रथकी नाभि में काष्ठकी बनी हुई पतली २ जो लकड़ियां लगी रहती हैं उनका नाम अरा है, और जैसे अरे पहियों की नाभि के बीचमें लगे रहते हैं तैसेही पुरुषके हृदय में हज़ारों नड़ियें लगी हैं, तिसी हृदयदेश में यह आत्मा रहता है, यद्यपि आत्मा सम्पूर्ण शरीर में व्यापक होकरके रहता है, तथापि हृदयाकाश अति शुद्ध होनेके कारण उस बिषे आत्मा विशेष अंशको प्राप्तहोकर स्थितहै, जैसे सूर्यका प्रतिबिंब शुद्ध जलमें अतिप्रकाशमान होताहै, और मैले जलमें पड़ते हुये भी दिखलाई नहीं देता है, यह आत्मा सदा उतपत्ति से रहित है पर शरीररूपी उपाधियों के उत्पन्न होनेसे उत्पत्तिवाला कहा-जाताहै, तिस आत्मा को ॐअक्षर आलम्बन करके अज्ञान से रहित परब्रह्म की प्राप्ति के लिये पुरुष चिन्तन करै, इसप्रकार आचार्य्य शिष्यों के प्रति उपदेश करते हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्यैष महिमा भुवि दिव्ये ब्रह्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरेह्येष व्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठितः मनोमयः प्राणशरी
रनेता प्रतिष्ठितोऽन्ने हृदयं सन्निधाय तद्विज्ञानेन परि
पश्यंति धीरा आनन्दरूपममृतं यद्विभाति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

यः सर्वज्ञः सर्ववित् यस्य एषः महिमा भुवि
दिव्ये ब्रह्मपरे हि एषः व्योम्नि आत्मा प्रतिष्ठितः
मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितः अन्ने हृदयं
सन्निधाय तत् विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीराः आ
नन्दरूपम् अमृतम् यत् विभाति ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो
आत्मा	= परमात्मा
सर्वज्ञः	= सर्वज्ञ है
सर्ववित्	= सर्ववेत्ता है
च	= और
यस्य	= जिसका
एषः	= यह पूर्वोक्त
महिमा	= ऐश्वर्य
भुवि	= लोकबिषे
विख्यातः	= प्रख्यात है
+च यः	= और जो
मनोमयः	= मनोमय है
प्राणशरीरनेता	= प्राणऔरशरीरका प्रेरक है

अन्वयः	पदार्थ
+च यः	= और जो
हृदयम्	= बुद्धिको
सन्निधाय	= हृदयकमलबिषेस्थापितकरके
अन्ने	= भुक्तअन्नपरिणामपवीर्यबिषे
+स्थितः	= स्थितहोय
+प्रतिष्ठितः	= स्थूलदेहसूक्ष्मदेहजाने कोप्रस्थानयेहुवे है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च = और
यत् = जो
आनन्दरूपम् = आनंदरूप
अमृतम् = अमृतरूप
विभाति = प्रकाशमान है
एषः = वह
दिव्ये = सूक्ष्मचैतन्यविशिष्ट बुद्धिकरके प्रकाशमान
ब्रह्मपुरे व्योम्नि = हृदयपुण्डरीक के आकाश बिषे
हि = निश्चय करके
प्रतिष्ठितः = स्थित है
तत् = उसको
धीराः = विवेकी पुरुष
विज्ञानेन = अनुभवसिद्ध ज्ञानद्वारा
परिपश्यन्ति = सम्यक्प्रकार देखते हैं

भावार्थ ॥

यः सर्वज्ञइति ॥ वह परमात्मा सर्वज्ञ है अर्थात् संपूर्ण वस्तुवों में समान्य ज्ञान से स्थित है, और सर्ववित् भी है, अर्थात् सम्पूर्ण वस्तुवों बिषे विशेष ज्ञान से भी स्थित है । उस आत्मा की यह सृष्टिरूपी विभूति इस लोक में प्रसिद्ध है, वही मनका, प्राण का और शरीर का प्रेरकहै, वही हृद्याकाश में रहता है, वही आकाशवत् सर्वव्यापक है, वही बीज में स्थित होकर लिंग शरीर के साथ पुरुष के मरते समय गमन करता है, और प्राणों के साहित लिंग शरीर को एक स्थूल शरीर से दूसरे स्थूल शरीर में प्राप्त करनेवाला भी है, और अन्नमय स्थूल देह के अन्तर बुद्धि को हृदयरूपी कमल में स्थापन करके उसके अन्तर उस का अधिष्ठानरूप होकरके भी वही स्थित है, और शमदमादिक साधनों करके जनित जो आत्मज्ञान है, तिसी आत्मज्ञान करके विवेकी पुरुष सर्वत्र आत्मा कोही देखते हैं, और सोई आत्मा आनन्दरूप है, अमृत रूपहै और साचीरूप है ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

भिद्यते हृदयग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः क्षीयन्ते चास्य कर्म्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

भिद्यते हृदयग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः क्षीयन्ते च अस्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥

अन्वयः	पदार्थ
परावरे	= कारणकार्यरूप
तस्मिन् दृष्टे	= उसब्रह्मके अनुभवसिद्धज्ञान द्वारा साक्षात्कार होनेपर
अस्य	= इसज्ञानी के
हृदयग्रन्थिः	= अविद्यासे उत्पन्नहुये कामरूपहृदयग्रन्थि
भिद्यते	= नाशकोप्राप्त होती है
+च	= और

अन्वयः	पदार्थ
+तत्नाशे	= उसके नाश होने पर
सर्वसंशयाः	= अज्ञानविषयक सर्व संशय
छिद्यन्ते	= नष्ट होते हैं
च	= और
+तत्नाशे	= उससंशयके नाश होनेपर
कर्माणि	= आदिसे लेकर ज्ञानोत्पत्ति पर्यंत सब कर्म
क्षीयन्ते	= क्षयको प्राप्त होते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अब आत्मज्ञान के फल को दिखाते हैं ॥ भिद्यते ॥ सम्पूर्ण जगत् कार्य है कारणरूप परमात्मा का, क्योंकि वह परमात्मा अभिन्निमित उपादान कारण माना जाता है, और कार्य्य कारण रूप परमात्मा के साक्षात्कार होने पर आत्मवित् विद्वान् की जड़ चेतन की तादात्म्याऽध्यासरूपी ग्रन्थी नाशको प्राप्त होती है, और ज्ञेय वस्तु अर्थात् जानने के योग्य जो आत्मवस्तु है, तद्विषयक सम्पूर्ण संशय भी इस विद्वान् के नाश हो जाते हैं फिर इस विद्वान् के प्रारब्ध कर्मों से अतिरिक्त जितने कर्म हैं वह सब नष्ट हो जाते हैं ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलं तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

हिरण्मये परे कोशे विरजम् ब्रह्म निष्कलम् तत् शुभ्रम् ज्योतिषाम् ज्योतिः तत् यत् आत्मविदः विदुः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	=जोचैतन्य	निष्कलम् =	प्राणादिसबकलावोंसे पृथक् है
हिरण्मये	=बुद्धिकरके प्रकाशमान	तत्	=वही
कोशे	=हृदयकमल बिषेस्थितहै	शुभ्रम्	=शुद्धहै
विरजम्	=अविद्यामल से रहितहै	+ च तत्	=और वही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्म = ब्रह्मको
ये = जो
विदुः = जानते हैं
ते = वे
आत्मविदः = आत्मवेत्ताहैं

ज्योतिषाम् = अग्नि सूर्यादि ज्योतियों का
ज्योतिः = प्रकाशकहै
तत् = उस

भावार्थ ॥

हिरण्मये इति ॥ हिरण्मय याने प्रकाशरूप जो सम्पूर्ण जीवोंके अन्तर है वह आनन्दमय कोश है, जैसे खड्ग का कोश खड्ग को आच्छादन करलेता है, तैसेही आनन्दमय कोश भी आत्मा को आच्छादन करता है, आनन्दमय कोश के भीतर वह आत्मा विराजमानहै, वही आत्मा अविद्यादि मल से रहित है, वही महान् है याने सब से बड़ा है, निर्विषय है, और मायामल से राहित होने के कारण शुद्ध है, और जगत् को प्रकाश करनेवाले जो सूर्य्यादिक हैं उनका भी वह प्रकाशक है, वही बुद्धिबिषे स्थित है, और विवेकी पुरुष उसी को अपना आत्मा जानता है, और इसी से वह आत्मवेत्ताकहलाता है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

न तत्र सूर्योभाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोयमग्निः तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

न तत्र सूर्य्यः भाति न चन्द्रतारकम् न इमाः विद्युतः भान्ति कुतः अयम् अग्निः तम् एव भान्तम् अनुभाति सर्वम् तस्य भासा सर्वम् इदम् विभाति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्र	= जिसपरब्रह्म बिषे	कुतः	= कैसे
सूर्यः	= सूर्य	+भास्वति	= प्रकाशकर सकेगा
न	= नहीं	+यतः	= जिसकारण
भाति	= प्रकाश करसक्त है	इदम्	= यहसूर्यचन्द्रमाआदि
च	= और	सर्वम्	= सब
चन्द्रतारकम्	= तारोंकेसहित चन्द्रमा	तम्	= उस
नभाति	= प्रकाशनहीं करसक्ताहै	भान्तम्	= प्रकाशमान के
च	= और	अनु	= पीछे
इमाः	= येआकाश में चमकतीहुई	भाति	= प्रकाशते हैं
विद्युतः	= बिजलियां	+अतः	= इसीलिये
नभान्ति	= नहीं प्रकाश करसकी हैं	इदम्	= यह
तत्र	= उसबिषे	सर्वम्	= सबजगत्
अयम्	= यहदृश्यमान	तस्य	= उसब्रह्म के
अग्निः	= अग्नि	भासा	= प्रकाशकरके
		एव	= ही
		विभाति	= प्रकाशितहोताहै

भावार्थ ॥

नतत्रेति ॥ उस ब्रह्मात्मा को सम्पूर्ण जगत् का प्रकाशक सूर्य प्रकाश नहीं करसक्ता है, न चन्द्रमा न तारे आदिक तिस ब्रह्मका प्रकाश करसक्ते हैं, और यह जो बड़ी प्रकाशवाली बिजुली है वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी उसको प्रकाश नहीं कर सक्ती है, और यह जो हमारी दृष्टि का विषय अग्नि है, सो भी तिसको प्रकाश नहीं कर सक्ती है उसी ब्रह्मके प्रकाश कर के सूर्य्यादिक सब प्रकाशमान होते हैं स्वतः इनमें प्रकाश करने की सामर्थ्य नहीं है ॥ १० ॥

मूलम् ॥

ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्ताद्ब्रह्म पश्चाद्ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण अधश्चोर्द्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम् ॥ ११ ॥ द्वितीयमुण्डके द्वितीयखंडः ॥

पदच्छेदः ॥

ब्रह्म एव इदम् अमृतम् पुरस्तात् ब्रह्म पश्चात् ब्रह्म दक्षिणतः च उत्तरेण अधः च ऊर्ध्वम् च प्रसृतम् ब्रह्म एव इदम् विश्वम् इदम् वरिष्ठम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
यतः	= जिसकारण
इदम्	= यह
ब्रह्म	= ब्रह्म
अमृतम्	= अमृतरूपहै
च	= और
इदम्	= यह ब्रह्म
प्रसृतम्	= सर्वगत है
च	= और
वरिष्ठम्	= सबसे श्रेष्ठहै
अतः	= इसीलिये
पुरस्तात्	= आगे
ब्रह्म	= ब्रह्म है
पश्चात्	= पीछे
ब्रह्म	= ब्रह्म है
दक्षिणतः	= दहिने
ब्रह्म	= ब्रह्म है
उत्तरेण	= बायें
+ ब्रह्म	= ब्रह्म है
अधः	= नीचे
+ ब्रह्म	= ब्रह्म है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊर्ध्वम् = ऊपर	ब्रह्मएव = ब्रह्मरूपही
+ ब्रह्म = ब्रह्म है	अस्ति = है
इदम् = यह	+ इतिवेदा = यह वेदका
विश्वम् = साराजगत्	नुशासनम् = उपदेश है

इति द्वितीयमुण्डके द्वितीयः खंडः
इति द्वितीयमुण्डकं समाप्तम् ॥

भावार्थ ॥

ब्रह्मैवेति ॥ यह ब्रह्म सर्वगत है, इसलिये जितनी वस्तु आगे पीछे दाहिने बायें ऊपर नीचे वर्तमान हैं, सब ब्रह्मही रूप हैं, बहुत कथन करने से क्या प्रयोजन है, यह जितना दृष्टि का गोचर वर्त्तमान जगत् दिखाई पड़ता है सब ब्रह्मरूपही है, (प्र०) दृष्टिका गोचर पदार्थ तो सब नाशी है, सो कैसे ब्रह्म होसक्ता है (उ०) पूर्व कथन कर आये हैं कि कल्पित वस्तु अधिष्ठान से भिन्न नहीं होती है, जैसे रज्जुमें कल्पित सर्प रज्जु से भिन्न नहीं है, किन्तु रज्जुरूपही है, तैसे ब्रह्म में कल्पित जगत् भी ब्रह्मरूप ही है, ब्रह्म से भिन्न नहीं, इसी युक्ति को लेकर संपूर्ण जगत् को ब्रह्मरूप कहा है ॥ ११ ॥

इति द्वितीयमुण्डके द्वितीयःखण्डः २ ॥

मूलम् ॥

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो ऽभिचाकशीति ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानम् वृक्षम् परिषस्वजाते तयोः अन्यः पिप्पलम् स्वादु अत्ति अनश्नन् अन्यः अभिचाकशीति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सखाया = सखायौ = परस्परामित्र	
सयुजा=सयुजौ=एक स्थान में मिलकर रहनेवाले	
सुपर्णा=सुपर्णौ=शोभायमान हैं पक्ष जिनके ऐसे	
द्वा = द्वौ = दोपक्षी यानी एकलिंगोपाधि क्षेत्रज्ञ आत्मा दूसरा ईश्वर	
समानम् = एकही	
वृक्षम् =	शरीररूपी वृक्षबिषे
परिषस्वजाते = स्थित हैं	
तयोः = उन में से	
अन्यः = एक तो क्षेत्रज्ञात्मा	
स्वादु =	कामनोंके स्वादिष्ट
पिप्पलम् = कर्मफल को	
अत्ति =	अज्ञानता भोक्ताहै
+ च = और	
अन्यः = दूसरा ज्ञानयुक्त ईश्वर	
अनश्नन् =	कर्मफलको भोक्ता हु
अभिचाकशीति =	भोग्य आ भोक्ता दो का प्रेरकहो केवल सा रूप से दे ताहै

भावार्थ ॥

द्वासुपर्णा इति ॥ पूर्वोक्त ब्रह्म अति दुर्विज्ञेय होनेके कारण उ
को और प्रकार से निर्णय करते हैं ॥ द्वासुपर्णा ॥ दोपक्षी हैं, अ
वे सर्वदा काल इकट्ठेही रहते हैं, और परस्पर सखा भी हैं, अथ
चेतनरूप करके दोनों समान हैं, उनमें से एक तो जीव
दूसरा ईश्वर है, दोनों एकही शरीररूपी वृक्ष पर रहते हैं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो जीवरूपी पक्षी है, वह कर्मों के फल का भोक्ताहै, दूसरा ईश्वर है, वह कर्मों के फल को न भोक्ता हुआ भोग्य और भोक्ता दोनों का साक्षी है, और उनका प्रेरक भी है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

समाने वृक्षे पुरुषोनिमग्नोऽनीशया शोचति मुह्यमानः जुष्टं यदा पश्यत्यन्यमीशस्य महिमानामिति वीतशोकः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

समाने वृक्षे पुरुषः निमग्नः अनीशया शोचति मुह्यमानः जुष्टम् यदा पश्यति अन्यम् ईशस्य महिमानम् इति वीतशोकः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
समाने	= पूर्वोक्त एकही	अनीशया	= इष्टानिष्टफल की प्राप्तिबिषे अपनी असमर्थतासे
वृक्षे	= शरीर रूपी वृक्ष बिषे	शोचति	= शोक करताहै
निमग्नः	= विषयस्वादमें डूबाहुआ	परन्तु	= परन्तु
पुरुषः	= अविद्याआधीन जीव आत्मा	यदा	= जब
मुह्यमानः	= अविवेक से मोहको प्राप्त होता हुआ	ईशस्य	= ईश्वरके
		महिमानम्	= योग ऐश्वर्य्य को
		यत्	= जो कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुष्टम्=	योगियों करके सेवित किया गया है	पश्यति=देखता है	
		इति=तब	
		वीतशोकः=शोकरहित	
अन्यम्=विलक्षण		+ भवति=होता है	

नोट—ईश्वर विलक्षण है याने अकर्ता और अभोक्ता हुआ भी कर्ता और भोक्ता उपाधि के सम्बन्ध से प्रतीत होता है-

भावार्थ ॥

समान इति ॥ एकही शरीररूपी वृक्षमें कर्मों के फल का भोगनेवाला जो जीव है, वह शरीर के साथ तादात्म्य अध्यास का इष्ट फल की प्राप्ति में और अनिष्ट फल की निवृत्ति में सामर्थ्य से हीन होकर नाना प्रकार की चिंता को प्राप्त होता है, और जिस कालमें यह जीव योगियों याने ब्रह्मवित् पुरुषों की संगति करके अपने को सबका नियंता जो ईश्वर है उससे अभिन्न पाताहै, तिसी काल में शोक से रहित होजाता है ॥ २ ॥

मूलम् ॥

यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं कर्त्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिं तदा विद्वान्पुण्यपापे विधूय निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णम् कर्तारम् ईशम् पुरुषम् ब्रह्मयोनिम् तदा विद्वान् पुण्यपापे विधूय निरञ्जनः परमम् साम्यम् उपैति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यदा	जब	पश्यते=पश्यति	देखताहै
पश्यः	पूर्वोक्तप्रकार ईश्वरके ऐश्वर्यको देखनेवालाय-हजीवात्मा	तदा	तब
		+ सः	वह
		विद्वान्	ज्ञानीपुरुष
		पुण्यपापे	पुण्य औरपाप दोनोंकर्मोंको
कर्तारम्	सबका कर्ता	विधूय	दग्धकरके
ईशम्	सबका ईश्वर	निरञ्जनः	मायामलसेनिर्मलहोताहुआ
ब्रह्मयोनिम्	हिरण्यगर्भकाभीउत्पत्तिस्थान	परमम्	उत्कृष्ट
रुक्मवर्णम्	स्वयंप्रकाश	साम्यम्	अद्वैतरूपसमताको
पुरुषम्	परमपुरुष को	उपैति	प्राप्तहोताहै

भावार्थ ॥

यदेति ॥ जो सब का ईश्वर और हिरण्यगर्भका भी उत्पत्ति स्थान है, उस स्वयं प्रकाश परम पुरुष को जब जीव अपना आत्मा करके जानता है, उसी ज्ञानकाल में वह ज्ञानवान् शुभ अशुभ कर्मों को दग्ध करके मायामल से निर्मल होकर ब्रह्मभाव को प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

प्राणोह्येष यः सर्वभूतैर्विभाति विजानन् विद्वान् भवते नातिवादी आत्मक्रीड आत्मरतिः क्रियावा नेष ब्रह्मविदां वरिष्ठः ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

प्राणः हि एष यः सर्वभूतैः विभाति विजानन् विद्वान् भवते न अतिवादी आत्मक्रीडः आत्मरतिः क्रियावान् एषः ब्रह्मविदाम् वरिष्ठः ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	जोपरमईश्वर
हि	निश्चयकरके
प्राणः	प्राणकाभीप्राणहै
एषः	वही
सर्वभूतैः	ब्रह्मासेलेकरतृणपर्यंतसबभूतोंकेबाह्याभ्यंतरव्याप्यव्यापकभावकरके
विभाति	अनेकप्रकारसेभासमानाहोरहाहै
ईदृशंईश्वरम्	ऐसेईश्वरको
विजानन्	"अहंब्रह्मास्मि"इसभावसेजानताहुआ
विद्वान्	विद्वान् कि
आत्मक्रीडः	आत्मामेंहीहै क्रीड़ाजिसकी
आत्मरतिः	आत्माहीबिषेहै प्रीतिजिसकी
च	और
क्रियावान्	ज्ञान ध्यानवैराग्यादिकोंसेसंपन्नहै जो
अतिवादी	द्वैतवादी
न	नहीं
भवते	भवति=होता है
किन्तु	किंतु
एषः	वह
सः	वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मविदाम्=ब्रह्मवेत्तों के मध्य बिषे	वरिष्ठः=श्रेष्ठ भवति=होता है

भावार्थ ॥

प्राणइति ॥ प्राणोपाधिक चेतन परमात्मा ब्रह्मा से लेकर स्तंबपर्यंत सम्पूर्ण भूतों का आत्मा होकर प्रकाशमान होरहा है, तिस प्राणोपाधिक ब्रह्म को जो विद्वान् आत्मभाव करके साक्षात्कार कर लेता है वह अपने आत्मा से भिन्न किसी को नहीं देखता है, और न वह अतिवादी होता है, जो अपने से भिन्न ब्रह्म को जानता है, वही अतिवादी कहा जाता है, और जो अपने से भिन्न ब्रह्म को नहीं जानता है वह अदिवादी नहीं होता है, आत्मा में ही है क्रीड़ा जिसकी उसका नाम है आत्मक्रीड़ा, और आत्मामेंही है प्रीति जिसकी उसीका नाम है आत्मरति अर्थात् बाह्य स्त्री पुत्रादिकों के शरीरों में जिसकी रति नहीं है परन्तु उनके अभ्यन्तर जो चेतन आत्मा है, और जिसकी वजहसे वे शरीरें प्रकाशमानहैं, उसमेंहै क्रीड़ा जिसकी वही आत्मराति है ऐसा जो पुरुष ज्ञान, ध्यान, वैराग्यादिकों से युक्त है वही ब्रह्मवेत्तावों के मध्य बिषे श्रेष्ठ है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्य्येण नित्यम् अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रोयं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

सत्येन लभ्यः तपसा हि एषः आत्मा सम्यक् ज्ञानेन ब्रह्मचर्य्येण नित्यम् अन्तःशरीरे ज्योतिर्मयः हि शुभ्रः अयम् पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
नित्यम्	=नित्य
सत्येन	=सत्यवचन औरसत्य आचरणकरके
तपसाहि	=इन्द्रियऔर मनकीएकाग्रतारूपी तपकरके
सम्यक् ज्ञानेन	=यथार्थपरिपूर्ण ज्ञान करके
ब्रह्मचर्य्येण	=नित्यब्रह्मचर्य करके
एषः	=यह पूर्वोक्त
आत्मा	=परमात्मा
लभ्यः	=प्राप्तहोने योग्यहै
+च	=और
हि	=निश्चयकरके
अयम्	=यहपरमात्मा
शुभ्रः	=शुद्ध
ज्योतिर्मयः	=स्वयंप्रकाशमान
अन्तः शरीरे	=हृदयाकाश बिषे
वर्तते	=वर्तमान है
तम्	=उस परमात्मा को
क्षीणदोषाः	=दोषरहित
यतयः	=तीक्ष्ण व्रत धारणकरने वाले यतिलोक
पश्यन्ति	=आत्मभावसे देखते हैं

भावार्थ ॥

सत्येनेति ॥ पूर्वोक्त ज्ञान के साधनों को अब कहते हैं सत्येन ॥ यह जो प्रसिद्ध आत्मा है अर्थात् वेदशास्त्र करके और विद्वानों के अनुभव करके जो आत्मा प्रसिद्ध है तिस आत्मा का लाभ सत्य भाषण से और मन इन्द्रियों की एकाग्रतारूपी तप करके होता है, जिसके मन इन्द्रिय अपने वश में नहीं हैं उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मज्ञान का लाभ नहीं होता है, और आठ प्रकार के मैथुन के त्याग का नाम ब्रह्मचर्य्य है, तिस ब्रह्मचर्य्य में जो पूरा है उसी को आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है, और तत् व त्वं पदों के विचार से आत्मज्ञान का लाभ होता है (प्र०) पूर्वोक्तसाधनों करके किस आत्मा की प्राप्ति होती है (उ०) जो शरीर के भीतर हृद्याकाश में प्रकाशमान है, और शुद्ध है, और जिसको तीव्र बुद्धिवाले यतिलोक अपने में देखते हैं ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

सत्यमेव जयति नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः येनाक्रमन्त्यृषयोह्याप्तकामा यत्र तत्स त्यस्य परमं निधानम् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

सत्यम् एव जयति न अनृतम् सत्येन पन्थाः विततः देवयानः येन आक्रमंति ऋषयः हि आप्त कामाः यत्र तत् सत्यस्य परमम् निधानम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
देवयानः	=स्वर्गआदि लोकोंका	ऋषयः	=सत्यदर्शी ऋषीश्वरआदि
पन्थाः	=मार्ग	तम्	=उसलोक को
सत्येन	=सत्यही करके	आक्रमन्ति	=प्राप्तहोते हैं
विततः	=व्याप्तहै	+ च	=और
येन	=जिस मार्ग्ग द्वारा	यत्र	=जहां
आप्तकामाः	=तृष्णारहित	सत्यस्य	=सत्यका
		निधानम्	=निधान है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्=वही	पाताहै
परम्=परब्रह्महै	अनृतम्=मायावी पुरु
+ अस्मात्=इस वेद प्रमा-	हि=कभी
णसे	न=नहीं
सत्यम्=सत्यपुरुष	+ जयति=जयको प्राप्त
जयते=जयति=जयको	होताहै

भावार्थ ॥

सत्यमेवेति ॥ और वासना के त्याग से शुद्ध हुआ है अन्त करण जिनका, और सत्को धारण किया है जिसने, वे देवमा द्वारा उसलोक को प्राप्त होते हैं जो सत्यकरके व्याप्त और जो सतका निधान है, और जहां परब्रह्म सत्स्वरूप स्थित है, ऐसे पुरुष मृत्युलोक में भी जय को प्राप्त होते हैं, भ कपटीलोक जय को नहीं प्राप्त होते हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

बृहच्च तद्दिव्यमचिन्त्यरूपं सूक्ष्माच्च तत् सूक्ष्म तरं विभाति दूरात्सुदूरे तादिहान्तिके च पश्यत्सि हैव निहितं गुहायाम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

बृहत् च तत् दिव्यम् अचिन्त्यरूपम् सूक्ष्मात् च तत् सूक्ष्मतरम् विभाति दूरात् सुदूरे तत् इ अन्तिके च पश्यत्सु इह एव निहितम् गुहायाम्

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदा
च=और		तत्=वह ब्रह्म	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बृहत्=सर्वव्यापी होने के कारण सब से बड़ा है
दिव्यम्=स्वयंप्रकाश है
अचिन्त्यरूपम्=मनबुद्धिकरके भी अचिंत्यहै
च तत्=और वह
सूक्ष्मात्=आकाश आदि सूक्ष्म से भी
सूक्ष्मतरम्=अतिसूक्ष्म है
इह=इसजगत्बिषे
विभाति=सूर्य चन्द्रआदि रूप से अनेक प्रकारका भासताहै

च=और
तत्=वह
दूरात्सुदूरे=अविद्वानों कोदूरसेभी दूर है
+च=और
पश्यत्सु=विद्वानों को
इह=इसी देह के
अन्तिके=समीप
एव=ही
गुहायाम्=बुद्धिरूपीगुहा बिषे
निहितम्=स्थितहै

भावार्थ ॥

बृहच्चेति ॥ अब फिर तिसी ब्रह्म के स्वरूप को दिखाते हैं ॥ बृहच्च ॥ वह ब्रह्म सबसे बड़ा है, क्योंकि वह आकाशादिकों का भी आधार है, वह स्वप्रकाश भी है, और उसका स्वरूप इदंता करके मन बुद्धि द्वारा चिंतन नहीं किया जासक्ता है, और सबसे सूक्ष्म जो परमाणु आदिक हैं, उनसे भी वह सूक्ष्म है, क्योंकि परमाणुवों के भी भीतर वह रहता है, और नानारूपों करके वह प्रकाशमान है, अविद्वानों को वह दूर से भी दूर है, और एकाग्र चित्तवाले विद्वानों को वह अत्यंत समीप है, क्योंकि वह उनके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धिरूपी गुहाविषे स्थित है, और इसीलिये वह ब्रह्म उनको अपना आत्मा प्रतीत होता है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु पश्यते निष्कलं ध्यायमानः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

न चक्षुषा गृह्यते न अपि वाचा न अन्यैः देवैः तपसा कर्मणा वा ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वः ततः तु तम् पश्यते निष्कलम् ध्यायमानः ॥

अन्वयः	पदार्थ
सः	वह ईश्वर
चक्षुषा	चक्षु करके
न	नहीं
गृह्यते	ग्रहण किया जासक्ता है
वाचा	वाणी करके
न	नहीं
गृह्यते	ग्रहण किया जासक्ता है
च	और
अन्यैः	अन्य
देवैः	इन्द्रियोंकरके
न	नहीं
गृह्यते	ग्रहण किया जासक्ता है
तपसा	तपकरके
च	और
कर्मणा	अग्निहोत्रादि कर्मकरके
अपि	भी
न	नहीं
गृह्यते	ग्रहण किया जासक्ता है
वा	परन्तु
ज्ञानप्रसादेन	ज्ञानके प्रसाद से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विशुद्धसत्त्वः = अतिशुद्धहुआ है अन्तःकरण जिसका ऐसा पुरुष
ध्यायमानः=मननकरता हुआ
ततः=तदनन्तर
तम्=उस
निष्कलं=प्राणादिकलारहितपरमात्मा को
तु=अवश्य
पश्यते=पश्यति=देखताहै

भावार्थ ॥

नक्षुषेति ॥ पूर्व जिस आत्मवस्तु के स्वरूप का निरूपण किया है वह आत्मतत्त्व चक्षु इन्द्रिय करके ग्रहण नहीं किया जासक्ता है अर्थात् कोई भी पुरुष उसको चक्षु इन्द्रिय करके नहीं देखसक्ता है, क्योंकि वह रूपादिक गुणों से रहित है, और वाणी करके भी इदंता का विषय नहीं है, और स्पर्श से रहित होने से त्वगिन्द्रिय का भी विषय नहीं है, और न बाकी किसी इन्द्रियों का वह विषय है, और कृच्छ्र चान्द्रायणरूपी तप करके भी वह विषय नहीं किया जासक्ता है ॥ और अग्निहोत्रादिरूप कर्मों करके भी नहीं जाना जाता है ॥ (प्र०) फिर किस करके उसका ग्रहण होता है (उ०) शुद्धअन्तःकरण करके उस ब्रह्मको विद्वान् लोक अपरोक्षता करके जान लेते हैं याने साक्षात्कार करलेते हैं ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यो यस्मिन्प्राणः पञ्चधा संविवेश प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां यस्मिन्विशुद्धे विभवत्येष आत्मा ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

एषः अणुः आत्मा चेतसा वेदितव्यः यस्मिन् प्राणः पञ्चधा संविवेश प्राणैः चित्तम् सर्वम् ओतम् प्रजानाम् यस्मिन् विशुद्धे विभवति एषः आत्मा ।

अन्वयः	पदार्थ
यस्मिन्	जिसशरीर बिषे
प्राणः	प्राण
पञ्चधा	पांचप्रकार का होकर
संविवेश	दुग्धबिषे घृतवत् और काष्ठबिषे अग्निवत् सम्यक् प्रकार प्रविष्ट है
+च	और
+यस्मिन्	जिस शरीर बिषे
प्राणैः	प्राण और इन्द्रियोंकेसाथ
प्रजानाम्	लोकों का
सर्वम्	संपूर्ण
चित्तम्	अन्तःकरण
ओतम्	व्याप्त है
+च	और
यस्मिन्	जिस
विशुद्धे	निर्मलअन्तः करण बिषे
एषः	यह पूर्वोक्त
आत्मा	ईश्वर
विभवति	प्रकाशमान है
एषः	वही
अणुः	सूक्ष्म से भी सूक्ष्म और प्राणकाभीप्राण
आत्मा	चैतन्यरूप आत्मा
चेतसा	चित्तद्वारा
वेदितव्यः	जानने योग्य है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

एषइति ॥ अब फिर तिसी ब्रह्मकी उपलब्धि के असाधारण साधन को कहते हैं ॥ एषः ॥ जिस शरीर में प्राणवायु पांच प्रकार को प्राप्त होकर प्रविष्ट हुई है उसी शरीर के हृद्याकाश बिषे यह सूक्ष्म चैतन्य भी आत्मा प्रकाशमान है, वह सब प्राणों में और इन्द्रियों में ओतप्रोत, है यही केवल शुद्ध चित्त करके जानने के योग्य है, याने जिसका चित्त शुद्ध है तिसको आत्मा का प्रकाश स्पष्ट प्रतीत होता है, दूसरे को नहीं होता है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

यं यं लोकं मनसा संविभाति विशुद्धसत्त्वः काम यते यांश्च कामान् तं तं लोकं जायते तांश्च कामां स्तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

यम् यम् लोकम् मनसा संविभाति विशुद्धसत्त्वः कामयते यान् च कामान् तम् तम् लोकम् जायते तान् च कामान् तस्मात् आत्मज्ञम् हि अर्चयेत् भूतिकामः ॥

इति तृतीयमुण्डके प्रथमःखण्डः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
विशुद्धसत्त्वः=	पूर्वोक्तप्रकारसे निर्मल अंतःकरण द्वाराआत्मज्ञानीपुरुष	मनसा=चित्तकरके	
		यम्=जिस	
		यम्=जिस	
		लोकम्=स्वर्गादिलोक को	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संविभाति=अपने निमित्त या दूसरे के निमित्त सङ्कल्पकरताहै
च=और
यान्=जिन
कामान्=कामनाओंको
कामयते=इच्छा करता है
तम्तम्=उस उस
लोकम्=लोकको
च तान्=और उन उन
कामान्=कामनाओं को
जायते=प्राप्त होता है
तस्मात्=इसलिये
भूतिकामः=आत्मश्रेय चाहनेवाला पुरुष
आत्मज्ञं=आत्मज्ञानी को
हि=निश्चय करके
अर्चयेत्=सत्कार शु श्रूषा नम स्कारआदि से पूजाको

भावार्थ ॥

यंयमिति ॥ जिस जिस लोक या कामनाओं की प्राप्ति इच्छा शुद्ध अन्तःकरणवाला आत्मवित् करता है, उस उ लोक और कामनाओं को वह प्राप्त होता है, और इसी का वह विद्वान् सत्य संकल्पवाला कहा जाता है, जिस पुरुष विभूतिकी इच्छाहो वह आत्मवित् ज्ञानीकाही पूजनकरै ॥१

इति तृतीयमुण्डके प्रथमःखण्डः ॥ १ ॥

मूलम् ॥

सवेदैतत्परमं ब्रह्म धाम यत्र विश्वं निहितं भा
शुभ्रम् उपासते पुरुषं ह्यकामास्ते शुक्रमतदे
वर्तति धीराः ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

सः वेद एतत् परमम् ब्रह्म धाम यत्र विश्वम् निहितम् भाति शुभ्रम् उपासते पुरुषम् ये हि अकामाः ते शुक्रम् एतत् अतिवर्तन्ति धीराः ॥

अन्वयः	पदार्थ
यत्र	= जिसब्रह्म बिषे
विश्वम्	= समस्त जगत्
निहितम्	=ओतप्रोतहै
च	=और
यत्	=जो
ब्रह्म	=ब्रह्म
परमम्	=सर्वोत्कृष्ट
धाम	=सबका आश्रयस्थान
शुभ्रम्	=शुद्ध
च	=और
भाति	=स्वयंप्रकाश है
एतत्	=उसको
सः	= वह पूर्वोक्त शुद्धअन्तःकरणवाला आत्मज्ञानी पुरुष
वेद	= जानता है और उसी के तद्रूप होताहै
ये	=जो
धीराः	=विवेकीजन
ईदृशम्	=ऐसे
पुरुषम्	=ज्ञानी पुरुष को
अकामाः	=निष्काम होतेहुये
उपासते	=उपासनाकरते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते=वे

एतत्=इस प्रसिद्ध

शुक्रम्=वीर्यको जो कि शरीरान्तरकाउपादानकारणहै

अतिवर्तन्ति=उल्लंघन जातेहैंया वीर्य्यद्वा फिर गा वास वि नहीं प्रा होते हैं

भावार्थ ॥

जिस ब्रह्म बिषे सम्पूर्ण जगत् ओतप्रोत है, और जो सब आश्रय स्थान है, और स्वयं प्रकाश है, उसको ज्ञानी जानकर तद्रूपही होताहै, जो पुरुष निष्काम होकर ऐसे ज्ञा उपासना करता है, वह फिर वीर्य द्वारा स्त्री की योनि में प्र को नहीं प्राप्त होता है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

कामान् यः कामयते मन्यमानः स कामभि यते तत्र तत्र पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इहैव प्रविलीयन्ति कामाः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

कामान् यः कामयते मन्यमानः सः काम जायते तत्र तत्र पर्याप्तकामस्य कृतात्मनः तु एव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
यः	जो मुमुक्षु
कामान्	दृष्ट अदृष्ट विषयोंकेकामनाओंको
मन्यमानः	स्मरणकरता हुआ
कामयते	भोगकरनेको इच्छाकरताहै
सः	वह
कामभिः	अपनीकामनोंकीवासनाकरके
तत्रतत्र	अनेकलोकों या योनियों बिषे
जायते	प्राप्त होताहै यानी जन्म मरण भाव सेमुक्त नहीं होता है
च	और
तु	इसके विपरीत
कृतात्मनः	कृतकृत्य हुआ है आत्मा जिसका याने अपना आत्माही परमात्माभास रहा है जिसको ऐसे
पर्याप्तकामस्य	परिपूर्णकामको प्राप्तहुये निष्काम मुमुक्षुके
सर्वे	सम्पूर्ण
कामाः	कामना
इह	इसी शरीरबिषे
एव	ही
प्रविलीयन्ते	लीनहोजाते हैं यानी वह जीवन्मुक्त होकर क्लेशोंसे रहित होजाता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

कामानिति ॥ जो पुरुष दृष्टाऽदृष्ट विषयों की प्राप्ति की इच्छ करता है वह अपनी कामनाओं की वासना करके अनेक लोक या योनि को प्राप्त होता है, अर्थात् जन्म मरण से रहित न होताहै, इसके विपरीत जिस पुरुष का अन्तःकरण शुद्ध हुआ और जिस को अपना आत्मा परमात्मा होकर भास रहाहै औ जिसकी सम्पूर्ण कामना इसी शरीर में लीन होगई हैं अर्थ बाकी कुछ भी जिसको करनेके लिये नहीं रहाहै, वह जीवन्मु होकर क्लेशों से रहित होजाता है ॥ २ ॥

मूलम् ॥

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहु श्रुतेन यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा वि णुते तनूं स्वाम् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

न अयम् आत्मा प्रवचनेन लभ्यः न मेधया बहुना श्रुतेन यम् एव एषः वृणुते तेन लभ्यः त एषः आत्मा विवृणुते तनूम् स्वाम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदा
अयम्=यह		न=न	
आत्मा=परमात्मा		मेधया=ग्रन्थधारण समर्थ बुद्धि	
न=न		न=न	
प्रवचनेन=वेद और शास्त्र के अध्ययन से		बहुना=बहुत	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रुतेन=श्रवणकरने से
लभ्यः=प्राप्त होनेयोग्यहै
+यदा=जब
एषः=यह विद्वान् मुमुक्षु
यम्=जिस परमात्मा को
वृणुते=अभेद दृष्टि करके प्राप्त होने की इच्छा करताहै
एषः=वह
आत्मा=परमात्मा
अपि=भी
तस्य=उस विद्वान्के निमित्त
स्वाम्=अपने
तनूम्=शरीरको
वृणुते=प्रकाशकरता है
+तदा=तब
तेन=उसअभेदपरस्पर संबंधसे
सः=यह परमात्मा
एव=निश्चय करके
लभ्यः=प्राप्त होनेयोग्य है

भावार्थ ॥

नायमिति ॥ यह प्रत्येक अभिन्न ब्रह्मरूप आत्मा शरीराभ्यन्तर न वेद के अध्ययन से न ग्रन्थके अर्थ धारण करनेवाली बुद्धि से, न अनेक ग्रन्थों के बहुत सुनने से प्राप्त होने योग्य है, जो मुमुक्षु श्रवण मननादिकों करके आत्मा की प्राप्ति की इच्छा करता है, और अहं ब्रह्मास्मि ऐसा अभेद चिन्तन भी करता है, उसी विद्वान् को परमात्मा अपने शरीर को प्रकाश करता है, और तबहीं उस मुमुक्षुके हृदय में ऐसा अनुभव होता है "कि मैं ब्रह्मस्वरूप हूँ" ॥ और फिर वह शान्त आनन्द अवाच होजाता है ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च प्रमादात्त
सोवाप्यलिंगात् एतैरुपायैर्यतते यस्तु विद्वांस्तस्यै
आत्मा विशते ब्रह्म धाम ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

न अयम् आत्मा बलहीनेन लभ्यः न च प्रमाद
तपसः वा अपि अलिंगात् एतैः उपायैः यतते यः
विद्वान् तस्य एषः आत्मा विशते ब्रह्म धाम ॥

अन्वयः	पदार्थ
न	न
बलहीनेन	ब्रह्मविषेनिष्ठारूपी बल हीनपुरुषसे
च	और
न	न
प्रमादात्	विषयसंग के प्रमादसे
वा	और
न	न
अलिंगात्	संन्यासरहित
तपसः	ज्ञानसे
अयम्	यह
आत्मा	परमात्मा
अपि	कभी

अन्वयः	पदा
लभ्यः	प्राप्तहोने योग्य है
तु	परन्तु
यः	जो
विद्वान्	ब्रह्मनिष्ठ
एतैः	इन
+चतुर्भिः	चारों
उपायैः	उपायोंसे या बल अप्रम त्याग औ ज्ञान से
यतते	उसकी प्रा के साधनों यत्न करता
तस्य	उसको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एषः=यह	विशते=	प्रवेशकरताहैया-	
आत्मा=जीवात्मा		नेउसकाआत्मा	
धाम=सर्वकाआश्रय		परमात्मा के साथ	
ब्रह्म=ब्रह्मबिषे		तन्मयहोजाता है	

भावार्थ ॥

नायमिति ॥ श्रवण मननादिक बलसे जो पुरुष हीनहै, और विषयों में आसक्त है चित्त जिसका, और ज्ञान विना वैराग्य के है जिसको, और प्रमादी है जो उस करके यह आत्मा अलभ्य है, परन्तु जो विद्वान् साधनचतुष्टय सम्पन्न है, और आत्मा की प्राप्ति का यत्न करता है, उसी का आत्मा परमात्मा के साथ तन्मय होजाता है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

संप्राप्यैनमृषयोज्ञानतृप्ताः कृतात्मानोवीतरागाः प्रशान्ताः ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा युक्तात्मानः सर्वमेवाविशन्ति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

सम्प्राप्य एनम् ऋषयः ज्ञानतृप्ताः कृतात्मानः वीतरागाः प्रशान्ताः ते सर्वगम् सर्वतः प्राप्य धीराः युक्तात्मानः सर्वम् एव आविशन्ति॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
युक्तात्मानः=	योग बिषे आरूढ़ है चित्तजिनका	कृतात्मानः=	कृतार्थ किया है याने अपने आत्माको परमात्मासमझा है जिन्हों ने
धीराः=	अत्यन्त है विवेक जिनका		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वगम्=सर्व व्यापी
रमात्माको
सर्वतः=सबओर से
सम्प्राप्य=सम्यक् प्रक
प्राप्तहोके
च=और
+देहाव
सानम्=देहावसा
को
प्राप्य=पाकर
सर्वम्=समस्त वि
बिषे
एव=निश्चय पू
आविश
न्ति=सर्वात्मभा
वसेप्रविष्ट
होते हैं

वीतरागाः=दूर होगया है विषयोंमें राग जिनका

शान्तात्मा=शान्तहुये हैं मनआदिइन्द्रियांजिनके

ज्ञानतृप्ताः=आत्मज्ञान से परिपूर्ण हैं जे

ते=वे

एनम्=उस

भावार्थ ॥

संप्राप्येति ॥ जिनका चित्त योग्य विषय आरूढ है, जिनको विवेक प्राप्त हुआ है, और जिसने अपने आत्मा को मात्मा समझा है, और जिनके मनआदि इन्द्रियां शान्त हो हैं, और आत्मज्ञान से परिपूर्ण हैं जो, वे परमात्मा को ओर से देखते हुये शरीर पात होने के पश्चात् ब्रह्म में लीन जाते हैं ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यः शुद्धसत्त्वाः ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यंतिसर्वे ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगात् यतयः शुद्धसत्त्वाः ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
संन्यास योगात्	= सबकर्मों के त्यागरूपी योगसे	ते	= वे
		सर्वे	= सब
		परामृताः	= जीवन्मुक्त होते हुये
शुद्धसत्त्वाः	= शुद्धहुआ है अन्तःकरण जिनका	यतयः	= यती लोक
		परान्तकाले	= देहके त्याग नेपर
च	= और		
वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्थाः	= वेदान्त के विचारसेउत्पन्नहुयेआत्मज्ञान बिषे है निश्चय जिनको ऐसे	ब्रह्मलोकेषु	= ब्रह्मबिषे
		परिमुच्यन्ति	= मुक्त होजातेहैं

भावार्थ ॥

वेदांतविज्ञानेति ॥ जिन्हों ने सब कामनाओं के त्याग से शुद्ध किया है अन्तःकरण अपना, और वेदांत वाक्यों के अर्थात् महावाक्यों के अर्थ का जो ज्ञान है उसको संशय विपर्यय से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहित होकर जिन्हों ने निश्चय करलिया है, वे जीवन्मुक्त यती लोक शरीर के त्याग के पश्चात् ब्रह्मरूप होजाते हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

गताः कलाः पंचदश प्रतिष्ठा देवाश्च सर्वे प्रतिदेवतासु कर्माणि विज्ञानमयश्च आत्मा परेऽव्येसर्वएकी भवन्ति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

गताः कलाः पञ्चदश प्रतिष्ठाः देवाः च सर्वे प्रतिदेवतासु कर्माणि विज्ञानमयः च आत्मा परे अव्यये सर्वे एकीभवन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
मोक्षकाले	मोक्षकाल बिषे	सर्वे	चक्षुरादिइन्द्रियोंबिषे स्थित हुये सब
पञ्चदश	देहकी उत्पत्तिकेकारण प्राणादिपंद्रह	देवाः	देवता
कलाः	कला	प्रतिदेवतासु	अपने अपने कारणआदित्यादि देवताओंबिषे
प्रतिष्ठाः	अपने अपने कारणोंको	गताः	प्राप्तहोते हुये
गताः	प्राप्तहोते हुये	च	और
च	और		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्माणि=संपूर्ण कर्म और उनके संस्कार
च=और
विज्ञानमयः=चिदाभासविशिष्ट
आत्मा=बुद्धि
एते=ये
सर्वे=सब
अव्यये=अविनाशी
परे=परमात्मा बिषे
एकीभवन्ति=एकताको प्राप्त होते हैं

भावार्थ ॥

गताइति ॥ प्राण, श्रद्धा, पञ्चमहाभूत, और ज्ञानेन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, कर्म, लोक, ये पन्द्रह कला देह के आरम्भक हैं अर्थात् इन्हीं पन्द्रह कलोंका देह बना है, सो मोक्षकाल में यह पन्द्रह कला अपने अपने कारण में लय होजाती हैं, और चक्षुरादिक करणोंमें जो देवता स्थित हैं, अर्थात् सूर्य्यादि देवतों की जितनी शक्तियें हैं, वे सब विद्वान् की मोक्षकाल में अपने २ देवता में प्राप्त होजाती हैं, और प्रारब्ध कर्म से अतिरिक्त जितने कर्म हैं वे भी सब नष्टहोजाते हैं, और विज्ञान स्वरूप चिदाभास बुद्धि विशिष्ट जो आत्माहै, वह आनन्दरूप ब्रह्ममें एकताको प्राप्त होजाता है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परंपुरुषमुपैति दिव्यम् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे अस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय तथा विद्वान् नामरूपात् विमुक्तः परात्परम् पुरुषम् उपैति दिव्यम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यथा	=जैसे	विद्वान्	=ज्ञानीविद्वान्
स्यन्दमानः	=बहतीहुई	नामरूपात्	=नाम और रूप दोनोंसे
नद्यः	=नदियां	विमुक्तः	=रहित होता हुआ
समुद्रे	=समुद्रविषे	दिव्यम्	=प्रकाशमान
नामरूपे	=नाम और रूपदोनोंको	परात्परम्	=अविनाशी
विहाय	=त्याग के	पुरुषम्	=पुरुषयानी ब्रह्मको
अस्तम्	=अभाव को	उपैति	=प्राप्तहोता
गच्छन्ति	=प्राप्त होतीहैं		
तथा	=तैसेही		

भावार्थ ॥

यथेति ॥ जैसे गङ्गा और यमुना आदिक नदियें गमन करती हुई अपने अपने नामों और रूपों का त्याग करके समुद्र में जाकर लयभाव को प्राप्त होजाती हैं तैसे आत्मावित् भी मोक्षकाल में नामरूप से रहित होकर परमपुरुष जो परमात्मा ब्रह्म है उस में लयभाव को प्राप्त होजाता है ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

सयोह वै तत्परमं ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति नास्य ब्रह्मवित्कुले भवति तरति शोकं तरति पाप्मानं गुहाग्रंथिभ्यो विमुक्तोऽमृतोभवति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

सः यः ह वै तत् परमम् ब्रह्म वेद ब्रह्म भवति न अस्य अब्रह्मवित् कुले भवति त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शोकम् तरति पाप्मानम् गुहा ग्रन्थिभ्यः विमुक्तः अमृतः भवति ॥

अन्वयः	पदार्थ
हवै	निश्चयकरके
यः	जो कोई
तत्	उस
परमम्	परम
ब्रह्म	ब्रह्मको
वेद	अहंब्रह्मास्मिभावसे जानता है
सः	वह
ब्रह्म	ब्रह्म
एव	ही
भवति	होता है
च	और
शोकम्	शोक याने मनके संतापसे
तरति	उत्तीर्णहोता है

अन्वयः	पदार्थ
पाप्मानम्	धर्म और अधर्मदोनोंसे
तरति	छूटजाता है
च	और
गुहाग्रन्थिभ्यः	हृदयके संशयरूपग्रन्थियों से
विमुक्तः	छुटाहुआ
अमृतः	मरण धर्म रहित
भवति	होता है
अस्य	उस विद्वान् के
कुले	कुल बिषे
अब्रह्मवित्	ब्रह्मका न जाननेवाला कोई
न	नहीं
भवति	होता है

Bhavan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

सयोहवैइति ॥ जो कोई पुरुष निश्चय करके उस परम ब्रह्मको अहं ब्रह्मास्मि भाव से जान लेताहै, और मनके सन्तापसे उत्तीर्ण होजाता है, उस विद्वान्के कुलमें या शिष्यादि वंश में ब्रह्मज्ञान से रहित कोई नहीं होता है, अर्थात् कोई न कोई ब्रह्म वित् बनाही रहता है, और वह आत्मवित् संसाररूपी शोक से तर जाता है याने जीते जीतेही शोक से रहित होजाता है, और पापों से भी छूट जाता है, और बुद्धिगत जोकि अविद्या की ग्रन्थि है, उससे भी रहित होजाता है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

तदेतदृचाऽभ्युक्तं क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठा स्वयं जुह्वते एकर्षिं श्रद्धयंतस्तेषामेवैतां ब्रह्मविद्यां वदेत शिरोव्रतं विधिवद्यैस्तु चीर्णम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् ऋचा अभ्युक्तम् क्रियावन्तः श्रोत्रियाः ब्रह्मनिष्ठाः स्वयम् जुह्वते एकर्षिम् श्रद्धयन्तः तेषाम् एव एताम् ब्रह्मविद्याम् वदेत् शिरोव्रतम् विधिवत् यैः तु चीर्णम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ ये	=जो
क्रियावंतः	=यथोक्तकर्मके अनुष्ठान करने वालेहैं
श्रोत्रियाः	=वेदवेदांग पारङ्गत हैं
ब्रह्मनिष्ठाः	=परब्रह्मकेज्ञानमें तत्पर हैं
श्रद्धयन्तः	=श्रद्धावान् हैं
च	=और
स्वयम्	=अपने बिषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकर्षिम्=एकर्षि नामक अग्नि को
जुह्वते=जुह्वति=उपासते हैं
तु=और
यैः=जिनों करके
शिरोव्रत तम्=शिरोव्रत
विधिवत्=यथाविधान
चीर्णम्=धारणकिया गया है
तेषाम्=ऐसे मुमुक्षुओं के अर्थ
एताम्=इस
ब्रह्मविद्याम्=ब्रह्मविद्याको
+गुरुः=गुरु
एव=अवश्य
वदेत्=उपदेश करै
तत्=इस प्रकार
एतत्=इसब्रह्मविद्या केसंप्रदायका विधान
ऋचा=मन्त्र करके
अभ्युक्तम्=प्रकाशित कियागया है

भावार्थ ॥

तदेतदिति ॥ जो वेद वेदांग के जाननेवाले हैं, और निष्काम कर्मोंको अनुष्ठान करके जिसका चित्त शुद्ध होगया है, और जो श्रद्धालु हैं, और एक ऋषिसंज्ञिक अग्नि को जिसने उपासन किया है, और जिसने शिरोव्रत यथाविधा न धारण किया है वह यह ब्रह्मविद्या पानेयोग्य है, उसको ब्रह्मवित् गुरु अवश्य उपदेश करैं, इसप्रकार ब्रह्मविद्या के सम्प्रदाय का विधान मंत्रों करके प्रकाशित किया गया है ॥ १० ॥

नोट–शिरोव्रत एक व्रत है जिसकी उपासनाके बलसे अथर्व वेदवाले अपने शरीराग्निको मस्तकगत करलेते हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तदेतत्सत्यमृषिरंगिराः पुरोवाच नैतदचीर्ण व्रतोऽधीते नमः परमऋषिभ्योनमः परमऋषिभ्यः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् सत्यम् ऋषिः अङ्गिराः पुरा उवाच न एतत् अचीर्णव्रतः अधीते नमः परमऋषिभ्यः नमः परमऋषिभ्यः ॥

अन्वयः	पदार्थ
तत्=इस प्रकार	
एतत्=इस	
सत्यम्=सत्यअविनाशी	पुरुष को
अङ्गिराः=अंगिरानामक	
ऋषिः=ऋषि	
पुरा=पहले	
उवाच=शौनकऋषि	के अर्थ कहता भया
एतत्=इस सत्यबोधकशास्त्रको	
अचीर्णव्रतः=व्रत रहित	पुरुष
नअधीते=	अध्ययन करनेकेयोग्यनहीं है
नमःपरमऋषिभ्यः=	विद्यासंप्रदायकेचलानेवाले जोब्रह्माआदिऋषीश्वरहैंउनकेअर्थनमस्कारहै
नमःपरमऋषिभ्यः=	परमऋषियोंके अर्थ नमस्कार है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

तदेतादिति ॥ यह पूर्व कथन कियाहुआ अविनाशी पुरुषसद्रूप है, इसी अक्षर पुरुष को पूर्वकाल में अङ्गिराऋषि ने शौनकऋषि के प्रति उपदेश किया था, यह सत्य बोधक शास्त्र व्रत रहित पुरुष के अध्ययन करने योग्य नहीं है, जो कोई आचार्य्य के समीप विधिपूर्वक शिष्य भावसे जाय उसके प्रति आचार्य्य भी उसी अक्षर पुरुष का उपदेश करै, और जिसने विधिपूर्वक पूर्वोक्त अग्नि को शिरपर धारण नहीं किया है, उसके प्रति गुरु उपदेश न करै, परमऋषियों के प्रति नमस्कार हो ॥ ११ ॥

इति तृतीयमुण्डके द्वितीयः खंडः ॥

भद्रङ्करणेभिरितिशान्तिपाठः ॥

नोट–द्वितीयवारनमस्कारअत्यन्त आदरकेअर्थ और उपनिषद् के समाप्तिके अर्थ है ॥

इति तृतीयमुण्डके द्वितीयः खण्डः समाप्तः मुण्डकोपनिषत्

ॐहरिः ॐम्

...Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञापन

भाषाटीका पण्डित यमुनाशंकर ॥

केनोपनिषद्	=)
ईशावास्य उपनिषद्	-)॥
प्रश्नोपनिषद्	=)
मांडूक्योपनिषद्	॥=)
कठवल्लीउपनिषद्	=)॥
तैत्तिरीयोपनिषद्	१-)॥
ऐतरेयोपनिषद्	=)॥
मुंडकउपनिषद्	=)॥
छान्दोग्य उपनिषद्	१-)

भाषाटीका बाबूज्वालिमसिंह ॥

१ केनोपनिषद्	=)
२ ईशावास्यउपनिषद्	-)॥
३ प्रश्नोपनिषद्	१-)
४ मांडूक्योपनिषद्	-)॥
५ कठवल्लीउपनिषद्	॥=)
६ तैत्तिरीयोपनिषद्	॥)
७ ऐतरेयोपनिषद्	=)
उपनिषदसार राजा शिवप्रसाद	-)॥

मिलने का पता

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,
मालिक नवलकिशोर प्रेस लखनऊ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माण्डूक्य उपनिषद्

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषामें रायबहादुर बाबू जालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर जिला फैजाबाद ने पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशी की सहायता से अनुवाद किया।

उसीको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुंशी प्रयागनारायणजी ने सर्वलोकहितार्थ

दूसरी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के यन्त्रालय में मुद्रित हुआ

सन् १९१२ ई० ॥

सर्वाधिकार स्वाधीन है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

3
२६०

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् । यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिल सिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्य वाकृतीर्थजलाभिषिक्ताशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः । षट्चक्रादि विचारसारकुशला नन्दन्ति योगीश्वरा तं वन्दे परमात्मरूपम नघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करों वन्दना ब्रह्मको, जो अनन्त निजरूप ।
जेहि जाने जगभ्रमसकल, मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं, नहीं जाति अरु भेद ।
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं, रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद्, ताका करूं विचार ।
भाषा में तिस अर्थ को, लखै सुकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो, सो मैं करूं बखान ।
परमानन्द सहाय ते, जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट, अकबरपुर है गांव ।
जन्मभूमि मम जान तू, जालिमसिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागर के पार होगये हैं और होतेजाते हैं और भविष्यत्काल में होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषाटीका रची गई है । इस टीका में पहिले मूल मन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्त

की ओर पदार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफ का लिखा हुआ ऊपर से नीचे तक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्त के तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्र का मध्यदेशीय भाषा में मिलेगा और यदि बायें तरफ से दहिने तरफ को पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलेगा जहांतक होसका है प्रत्येक संस्कृतपदका अर्थ विभक्ति के अनुसार लिखागया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृतविद्या का भी अभ्यास होगा इस टीका में मूल का कोई शब्द छूटने नहीं पाया है और मन्त्र का पूरा २ अर्थ उसी के शब्दोंही से सिद्ध कियागया है अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है हां कहीं कहीं ऊपर से संस्कृत पद मन्त्र के अर्थ स्पष्ट करनेके लिये रक्खागया है और उस पदके प्रथम यह + चिह्न लगादियागया है ताकि पाठकजनों को विदित होजावै कि यह पद मूल का नहीं है । इस टीका को बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद हेडपोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गङ्गादत्त ज्योतिर्विद् निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद् निवासी अल्मोड़ाख्य नगर के रचकर शुद्ध निर्मलहृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धता हो उस से टीकाकर्ता को सूचना करैं ताकि अशुद्धता दूर होजावै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

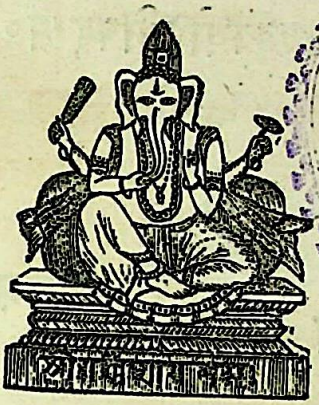

अथ माण्डूक्योपनिषद् सटीक ॥

मूलम् ।

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्ष भिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहिदे वहितंयदायुः ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

भद्रम् कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रम् पश्येम अक्षभिः यजत्राः स्थिरैः अङ्गैः तुष्टुवांसः तनूभिः व्यशेमहि देवहितम् यत् आयुः ॥ १ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।	अन्वयः ।	पदार्थः ।
यजत्राः	हे पूजन करनेवाले की रक्षा करने वाले	कर्णेभिः	कानोंद्वारा
देवाः	देवताओ	भद्रम्	कल्याणको
+भवत्प्रसादात्	तुम्हारे प्रसादसे	शृणुयाम	सुनैं हम
		च	और
		अक्षभिः	नेत्रोंद्वारा
		भद्रम्	कल्याण को
		पश्येम	देखैं हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च=और
स्थिरैः=स्थिर याने दृढ़
अङ्गैः=अंगों करके
च=और
+स्थिराभिः=स्थिर याने दृढ़
तनूभिः=शरीरों करके
+युष्माकम्=आपकी
तुष्टुवांसः=सदा स्तुति करते हुये
वयम्=हम
आयुः=आयु को
यत्=जोकि
देवहितम्=देवतोंके लिये हित है याने यज्ञदानादिकों से देवतों का हितकरने वाला है
व्यशेमहि=प्राप्त होवैं
ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः=हमारे तापत्रय याने आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक की शांति होवै

अथ अथर्ववेदीय माण्डूक्योपनिषदारम्भः ॥

मूलम् ।

ॐमित्येतदक्षरमिदꣳ सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमोंकारएव यच्चान्यत्त्रि कालातीतं तदप्योंकारएव ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

ॐ इति एतत् अक्षरम् इदम् सर्वम् तस्य उपव्याख्यानम् भूतम् भवत् भविष्यत् इति सर्वम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐकारः एव यत् च अन्यत् त्रिकालातीतम् तत् अपि ॐकारः एव ॥ १ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।	अन्वयः ।	पदार्थः ।
+यत्	=जो	भवत्	=वर्त्तमान
इदम्	=यहवाच्य वाचक अथवा शब्द शब्दार्थ	इति	=करके है
		तत्	=सो
सर्वम्	=सब है	सर्वम्	=सब
एतत्	=वह	ॐकारः	=प्रणवरूप
ॐ	=ॐकार	एव	=ही
अक्षरम्	=अक्षर	+अस्ति	=है
इति	=करके है	च	=और
तस्य	=उसीप्रणव के	यत्	=जो
उपव्याख्यानम्	=विशेषज्ञान द्वारा परब्रह्म के प्राप्ति का कथन	त्रिकालातीतम्	=कालत्रयसे पृथक्
		अन्यत्	=अव्याकृतादि है
+क्रियते	=कियाजाताहै	तत्	=वह
यत्	=जो	अपि	=भी
भूतम्	=भूत	ॐकारः	=प्रणवरूप
भविष्यत्	=भविष्यत्	एव	=ही
		अस्ति	=है

भावार्थः ।

ॐ मित्येतदक्षरमिदं सर्वं ॥ यह जो कुछ प्रत्यक्ष का विषय दृश्यमान प्रपंच जड़ चेतनरूप जगत् है सो सब ॐकाररूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही है ॥ अनेक श्रुतियें संपूर्ण जगत् को रज्जु में कल्पित
की तरह ॐकाररूप करकेही कथन करती हैं, याने जैसे
के ज्ञान से उस बिषे अध्यस्त सर्प का पता नहीं लगता है
तरह ॐकारके यथार्थ ज्ञान पश्चात् उस बिषे कल्पित
गत् का पता नहीं लगता है, क्योंकि कल्पित वस्तु अपने
ष्ठान से भिन्न नहीं होती है ॥ ॐमिति ब्रह्म ॥ ॐमित्येदक्षर
ॐकारही ब्रह्म है ऐसी जो श्रुति कहती है इससे यही
होता है कि ब्रह्म के आश्रय ॐकार है, और ऊपर के कथन
सार ॐकार के आश्रय जगत् है, इसलिये सम्पूर्ण जगत्
आश्रय है, याने ब्रह्मरूपही है, ब्रह्म से अतिरिक्त नहीं है ॥ प्रश्न
ॐकार शब्दरूप है, और ब्रह्म शब्द से रहित है, तब ॐकार
ब्रह्मरूप कैसे होसक्ता है, ॐकार शब्द ब्रह्म का वाचक है,
र्थात् संपूर्ण ब्रह्म के नामों में से उत्तम है, और ब्रह्म उस
वाच्य है, वाच्य वाचक का अभेद होता है, जिस नाम के
से जिस वस्तु का बोध हो वह नाम उस वस्तु का वाचक हो
है, और वह वस्तु उस नाम का वाच्य कही जाती है, ॐकार
उच्चारण करनेसे ब्रह्मका बोध होता है, इसलिये ॐकार ब्रह्म
वाचक है, और ब्रह्म उसका वाच्य है ॥ और वाच्य वाचक
अभेदहै, क्योंकि वाचक से विना वाच्य पदार्थ की सिद्धि न
होती है, और वाच्यसे विना वाचककी सिद्धि नहीं होती है,
हेतु से दोनों का अभेदही सिद्ध होता है, इसलिये ॐकार
ब्रह्म है, और जितना जगत् में नाम रूप है सो सब वाणी का
कथनमात्र है, सब प्रपंच का आश्रयभूत ब्रह्मही सत्य है, जित
संसार में पदार्थ है वह सब वाचक से भिन्न नहीं है, और
चक ॐकार से भिन्न नहीं, क्योंकि ॐकार से शब्द व शब्द
आकाशादि पंचमहाभूत उत्पन्न हुये हैं, और उन्हीं से सम्
प्रपंच संसार हुआ है, इसलिये संपूर्ण प्रपंच ॐकाररूप है,
उसी पर अपर रूप अक्षर ॐकार काही स्पष्ट कथन है, क्यों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐकारही ब्रह्म की प्राप्ति का उपाय है, और भूत भविष्यत् वर्त्तमान इन तीनों कालों करके जितने पदार्थ परिच्छेदवाले हैं वे भी सब ॐकाररूपही हैं, और जो तीनों कालों से अतीत है अर्थात् काल परिच्छेद से रहित है, और कार्य्यद्वारा जाना जाताहै, वह भी अव्याकृतरूप ॐकारही है, शब्द दो प्रकार का होता है, एक ध्वनिआत्मक दूसरा वर्ण आत्मक, पहिले ध्वनि होती है, फिर उसीसे वर्ण आत्मक शब्द निकलता है, इस लेये दोनों प्रकारके शब्द ॐकाररूप हैं, याने जो कुछ शब्दों करके जाना जाय वह सब ॐकाररूपही है, वाच्य वाचक का भेद है, इसलिये श्रुति ने एक बार वाचक को प्रधान मान करके यह संपूर्ण जगत् ॐकाररूपही है ऐसा कहती है और दूसरी बार वाच्य को प्रधान करके श्रुति फिर कहती है ॥ १ ॥

मूलम् ।

सर्वंह्येतद्ब्रह्मायमात्मा ब्रह्म सोयमात्मा चतुष्पात् ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

सर्वम् हि एतत् ब्रह्म अयम् आत्मा ब्रह्म सः अयम् आत्मा चतुष्पात् ॥ २ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।	अन्वयः ।	पदार्थः ।
एतत्	यह	अयम्	यह
सर्वम्	सब	ब्रह्म	ब्रह्म
ब्रह्म	ॐकाररूप ब्रह्म है	आत्मा	प्रसिद्ध आत्मा हृदयाकाशविषे स्थित है
तत्	वही		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च=और सः=वह हि=ही अयम्=यह आत्मा=आत्मा	चतुष्पात्=	विश्व तैज प्राज्ञ अ तुरीय के से चार पा वाला है

भावार्थः।

सर्वह्येतद्ब्रह्मायमात्मा ॥ संपूर्ण जगत् जो ॐकाररूप निश्चय करके ब्रह्मरूपही है, या जो अपना आत्मा अपरो सोई ब्रह्म है, और यह आत्माही चतुष्पाद है, ॥ आत्मा ह तरह चतुष्पाद है सो दिखाते हैं ॥ वास्तव से तो आत्म पादों का अभाव है, तथापि आत्मज्ञान की प्राप्ति के उ करके पादों की कल्पंना करते हैं, चारों पादों में प्रथम जागरित है ॥ २ ॥

मूलम्।

जागरितस्थानोबहिःप्रज्ञः सप्तांगएकोनविं मुखः स्थूलभुग्वैश्वानरः प्रथमः पादः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः।

जागरितस्थानः बहिःप्रज्ञः सप्ताङ्गः एको शातिमुखः स्थूलभुक् वैश्वानरः प्रथमः पादः ॥ ३

अन्वयः।	पदार्थः।	अन्वयः।	पदा
जागरित स्थानः=	जाग्रत् अ- वस्था है स्थान जि- सका	बहिःप्रज्ञः=	बाह्य हि योंविषे द्धि जि
		सप्ताङ्गः=	सातहैं ग जि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकोनविंशतिमुखः = उन्नीस हैं मुखजिसके	+तत्=सो
	प्रथमः=प्रथम
स्थूलभुक्= शब्दादि स्थूलविषयों का भोक्ता है जो	पादः=पाद
	वैश्वानरः=वैश्वानर है

नोट–सप्ताङ्गः (१) मस्तक स्थानी स्वर्गलोक (२) नेत्रस्थानी सूर्य (३) प्राणस्थानी वायु (४) मध्य देहस्थानी आकाश (५) मूत्रस्थानी जल (६) पादस्थानी पृथिवी (७) मुखस्थानी अग्नि एकोनविंशतिमुखः ५ कर्मेन्द्रिय ५ ज्ञानेन्द्रिय ५ प्राण मन बुद्धि चित्त और अहंकार ॥

भावार्थः ।

जागरितस्थानःबहिःप्रज्ञः ॥ बाह्य विषयोंकी तरफ है बुद्धि जिस की, और सात हैं अंग जिसके याने मस्तकस्थानी स्वर्गलोक (१) नेत्रस्थानी सूर्य (२) प्राणस्थानी वायु (३) मध्य स्थानी आकाश (४) मूलस्थानी जल (५) पादस्थानी पृथिवी (६) मुखस्थानी अग्नि (७) और उन्नीस हैं मुख यानी ज्ञान की प्राप्ति का द्वार जिसमें याने पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय और पांच प्राण और मन बुद्धि चित्त अहंकार, और जाग्रत् अवस्था विचरने का है स्थान जिसका, ऐसा जो है वही वैश्वानर नामवाला आत्मा है, वही पूर्वोक्त एकोनविंशतिमुखों करके शब्दादिक स्थूलविषयों को भोगता है, और इसी से उसको स्थूलभुक् भी कहते हैं, सो यह वैश्वानर प्रथम पाद है, और समष्टि स्थूल शरीरों के साथ उसका तादात्म्याऽध्यास होने से उसी को विराट् भी कहते हैं ॥ प्रश्न ॥ विश्व की तैजस से उत्पत्ति होती है इसलिये प्रथम कारणरूप तैजस को कहना उचित था और पश्चात् कार्य को कहना चाहिये था ॥ उत्तर ॥ यहां पर सृष्टि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की प्रक्रिया को लेकरके नहीं कहा है, किंतु लयक्रम को लेकर के कहा है, इसी से वैश्वानर को प्रथमपादरूप करके कहा है, क्योंकि वैश्वानर काही प्रथम तैजस में लय करना होता है, फिर तैजस को प्राज्ञ में और प्राज्ञ को तुर्य में, और अद्वैत आत्मा की सिद्धि जब होगी जब संपूर्ण प्रपंचका लय होगा ॥ ३ ॥

मूलम् ।

स्वप्नस्थानोऽन्तःप्रज्ञःसप्तांगएकोनविंशतिमुखः प्रविविक्तभुक्तैजसोद्वितीयःपादः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

स्वप्नस्थानः अन्तःप्रज्ञः सप्ताङ्गः एकोनविंशति मुखः प्रविविक्तभुक् तैजसः द्वितीयः पादः ॥ ४ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।	अन्वयः ।	पदार्थः ।
स्वप्नस्थानः	= स्वप्न अवस्था है स्थान जिसका	प्रविविक्तभुक्	= अंतःकरणाकी वृत्ति द्वारा वासनामय सूक्ष्म भोगों का भोक्ता है जो
अन्तःप्रज्ञः	= अन्तर्मुख है प्रज्ञाजिसकी	तत्	= सो
सप्ताङ्गः	= पूर्वोक्त सात हैं अंग जिसके	द्वितीयः	= दूसरा
एकोनविंशतिमुखः	= पूर्वोक्त उन्नीस हैं मुख जिसके	पादः	= पाद
		तैजसः	= तैजस नाम वाला है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट ॥ तैजसः—अग्नि अथवा सूर्य की अपेक्षा न करके अपने प्रकाशरूप तेज से सूक्ष्म भोगों का भोक्ता स्वप्न अवस्था बिषे है जो सो कहिये तैजस—

भावार्थः ।

स्वप्नस्थान इति ॥ स्वप्नअवस्था है स्थान जिसका, अर्थात् स्वप्नअवस्था मेंही जो व्यवहार का करनेवाला है उसी का नाम तैजस आत्मा है, यथार्थ में चेतन आत्मा एकही है, जब वह जाग्रत्अवस्था में स्थूलशरीरके साथ अभिमानवाला होकर बाह्य इन्द्रियों द्वारा व्यवहार करता है तब उसका नाम विश्व है, और जब वही आत्मा सूक्ष्मशरीर के साथ अभिमानवाला होकर स्वप्नअवस्था में व्यवहार करता है तब उसका नाम तैजस है, ॥ उसका नाम अन्तःप्रज्ञभी है, वह मनके विलासमें रमण किया करता है ॥ स्वप्न में जाग्रत्सम्बन्धी चेतन आत्मा की वासना से अनेक प्रकार के प्रपंच को मन रचलेता है, क्योंकि स्वप्नावस्था में मन का लय नहीं होता है, किन्तु बाह्य इन्द्रियों का ही लय होता है, मन बनारहता है, इसी से स्वप्न में मनविशिष्ट चेतन इन्द्रियों को भी रचलेता है, फिर सप्त अंगवाला और उन्नीस मुखवाला होने से अन्तर कल्पना कियेहुये में मानसिक विषयों का भोक्ता है, इसी से वह प्राविविक्तभुक् भी कहाजाता है, अथवा वासनाही मात्र है भोग जिसका उसी का नाम प्रविविक्तभुक् है, ऐसा तैजस नामवाला द्वितीय पाद है, ॥ ४ ॥

मूलम् ।

यत्रसुप्तोन कंचन कामं कामयते न कंचनस्वप्नं पश्यति तत्सुषुप्तम् सुषुप्तस्थानएकीभूतः प्रज्ञानघन एवानन्दमयोह्यानन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयःपादः ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ।

यत्र सुप्तः न कञ्चन वेद कामम् कामयते न कञ्चन स्वप्नम् पश्यति तत् सुषुप्तम् सुषुप्तस्थानः एकीभूतः प्रज्ञानघनः एव आनन्दमयः हि आनन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञः तृतीयः पादः ॥ ५ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
यत्र	= जिस कालविषे
सुप्तः	= सोयाहुआ पुरुष
नकञ्चन	= न किसी स्थूल या सूक्ष्म भोग को
वेद	= जानता है
+च	= और
नकञ्चन	= न किसी
कामम्	= कामना को
कामयते	= चाहता है
नकञ्चन	= न किसी
स्वप्नम्	= स्वप्नको
पश्यति	= देखता है
तत्	= वह
सुषुप्तम्	= सुषुप्ति अवस्था का लक्षण है
सुषुप्त स्थानः	= सुषुप्ति है स्थान जिसका
एकीभूतः	= एकरस है जो
प्रज्ञान घनः	= अविद्या के रके आच्छादित है प्रज्ञा जिसकी
आनन्द मयः	= आनन्दमय हुआ
एवहि	= अवश्य
आनन्द भुक्	= आनन्द का भोक्ता है जो
चेतो मुखः	= बोधस्वरूप जो
तत्	= सो
तृतीयः	= तीसरा
पादः	= पाद
प्राज्ञः	= प्राज्ञनाम वाला है

भावार्थः ॥

यत्रेति ॥ जिस काल में जिस स्थान में सोयाहुआ पुरुष स्वप्न नहीं देखता है, उस अवस्था का नाम सुषुप्ति है, यह सुषुप्तिअवस्था जाग्रत् और स्वप्न से भिन्न है, इस अवस्था में संपूर्ण प्रपंच एकता को प्राप्त होता है, अर्थात् अविद्या में लय होजाता है, क्योंकि जाग्रत् और स्वप्नअवस्था का जितना ज्ञान है वह सब सुषुप्ति अवस्था में एक भाव को प्राप्त होता है, सुषुप्तिअवस्था में किसी तरह का विवेक ज्ञान नहीं रहता है, इससे यह अवस्था प्रज्ञानघन कही जाती है, जैसे रात्री में अन्धकार करके कोई वस्तु भी विभाग करके प्रतीत नहीं होती है किंतु सर्व वस्तु अंधकार करके घनीभूत हुई प्रतीत होती है, अर्थात् घन अन्धकार की तरह सब पदार्थ प्रतीत होते हैं, तैसेही सुषुप्तिअवस्था में भी संपूर्ण वस्तु घनीभूत होजाती हैं, इस वास्ते वह अवस्था प्रज्ञानघन उस काल में कहाजाता है, और मन भी जो सुख दुःख का कारण है, सुषुप्तिअवस्था में लय रहता है, केवल आनंदमात्र सुख सुषुप्ति में होता है, और इस आनन्द का अनुभव करनेवाला आत्मा है, वही आनन्दभुक् कहाजाता है, और वही सुषुप्ति में प्रधान होता है, और वह ज्ञानस्वरूपवाला होने से प्राज्ञ कहाजाता है, ॥ प्रश्न ॥ सुषुप्तिअवस्था में पुरुष को तो आनन्द प्रतीत होता नहीं तो यह कैसे मालूम हो कि उसको उस अवस्था में आनन्द प्राप्त होता है ॥ उत्तर ॥ जब कि सोयाहुआ पुरुष उठता है तब पूछने पर वह कहता है कि बड़े आनन्द से सोया यह उसका ज्ञान स्मृतिज्ञान है, और स्मृतिज्ञान अनुभव कीहुई वस्तु की होती है, इसी से मालूम होता है कि सुषुप्ति में सोया हुआ पुरुष आनन्द को भोगता है, सो यह प्राज्ञ तीसरा पाद है ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ।

एषसर्वेश्वरएषसर्वज्ञएषोऽन्तर्य्याम्येषयोनिः स्यप्रभवाप्ययौहिभूतानाम् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

एषः सर्वेश्वरः एषः सर्वज्ञः एषः अन्तर्यामी एषः योनिः सर्वस्य प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम् ॥ ६ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।	अन्वयः ।	पदार्थः ।
एषः =	यही प्राज्ञ जब उपाधि माया को त्यागके अपने चैतन्य स्वरूप बिषे स्थित होता है	एषः =	यही
		अन्तर्यामी =	अन्तर्यामी है
		एषः =	यही
		सर्वस्य =	सब का
		योनिः =	आदिकारण है
+तदा =	तब	एषः हि =	यही
सर्वेश्वरः =	सब का ईश्वर है	भूतानाम् =	संपूर्ण भूतोंके
		प्रभवाप्ययौ =	उत्पत्ति और लयकास्थान
एषः =	यही		
सर्वज्ञः =	सर्वज्ञ है		

भावार्थः ।

एषइति ॥ अब प्राज्ञ और अन्तर्यामी का अभेद कहते हैं एषः ॥ जब यह प्राज्ञ अपने स्वरूप में समष्टिरूप से उपाधि रहित स्थित है, तब यहही सर्वेश्वर है, याने सर्व का ईश्वर सबका नियंता है, प्रेरक है, और सर्वज्ञ है, अर्थात् संपूर्ण अवस्था के भेद का ज्ञाता है, और यही अन्तर्यामी है, याने संपू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूतों के अन्तर प्रवेश करके सर्व का नियंता है, और फिर यही संपूर्ण भूतों का योनि याने कारण है, और संपूर्ण भूतों की उत्पत्ति और लय का स्थान भी है ॥ ६ ॥

मूलम् ।

नान्तःप्रज्ञंनबहिःप्रज्ञं नोभयतःप्रज्ञं न प्रज्ञानघनं नप्रज्ञंनाप्रज्ञं अदृष्टमव्यवहार्य्यमग्राह्यमलक्षणमचिन्त्यमव्यपदेश्यमेकात्म्यप्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं शान्तंशिवमद्वैतंचतुर्थंमन्यन्तेसआत्मासविज्ञेयः७

पदच्छेदः ।

न अन्तःप्रज्ञम् न बहिःप्रज्ञम् न उभयतःप्रज्ञम् न प्रज्ञानघनम् न प्रज्ञम् न अप्रज्ञम् अदृष्टम् अव्यवहार्यम् अग्राह्यम् अलक्षणम् अचिन्त्यम् अव्यपदेश्यम् एकात्म्यप्रत्ययसारम् प्रपञ्चोपशमम् शान्तम् शिवम् अद्वैतम् चतुर्थम् मन्यन्ते सः आत्मा सः विज्ञेयः ॥ ७ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।	अन्वयः ।	पदार्थः ।
+ यम्	= जिस	अन्तः प्रज्ञम्	= तैजससंज्ञक
चतुर्थम्	= चतुर्थ पाद तुरीयको	न	= न
न	= न	उभयतः प्रज्ञम्	= जाग्रत् स्वप्न दोनों के मध्य अवस्थावाला
बहिः प्रज्ञम्	= विश्वसंज्ञक	न	= न
न	= न		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रज्ञानघनम् = प्राज्ञसंज्ञक
न = न
प्रज्ञम् = ज्ञानस्वरूप
न = न
अप्रज्ञम् = अज्ञानस्वरूप
अदृष्टम् = नदेखनेयोग्य
अव्यवहार्यम् = न व्यवहार के योग्य
अग्राह्यम् = नकर्मेन्द्रियों करके ग्रहण करने योग्य
अलक्षणम् = नलिंगरूप
अचिन्त्यम् = न चिन्तन करने योग्य

अव्यपदेश्यम् = न शब्द के कहने योग्य
प्रपञ्चोपशमम् = सृष्टि से पृथक्
शान्तम् = रागद्वेषादि रहित
शिवम् = कल्याणरूप
अद्वैतम् = द्वैतरहित
एकात्म्यप्रत्ययसारम् = जाग्रत् आदि चारों अवस्था बिषे एक
मन्यन्ते = मानते हैं
सः सः आत्मा = वही आत्मा
विज्ञेयः = जानने योग्य

भावार्थः ।

नान्तइति ॥ अब चतुर्थ पाद को दिखलाते हैं ॥ सआत्मा वही आत्मा है, ॥ नान्तःप्रज्ञम् ॥ जो अन्तःप्रज्ञ नहीं है अर्थात् मनकी वासना करके जन्य जो अन्तरस्वप्नावस्था का विलास है उसके दर्शन की लालसा नहीं है जिसको ॥ न बहिष्प्रज्ञम् ॥ जिसको जाग्रत्अवस्था में इन्द्रियों करके बाह्य विषय के दर्शन की लालसा नहीं है अर्थात् जो जाग्रत् और स्वप्न दोनों के व्यवहारों से रहित है, ॥ न प्रज्ञानघनं ॥ इस करके सुषुप्ति अवस्था का निषेध किया ॥ नान्तःप्रज्ञम् ॥ इस करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवस्था का निषेध किया ॥ नोभयतःप्रज्ञं ॥ इस करके जाग्रत् स्वप्न के मध्य का निषेध किया और ॥ नप्रज्ञं ॥ वह निर्विकल्पक बोध से भी रहित है, इस करके सम्पूर्ण विषयों की ज्ञातृतता का निषेध किया ॥ अप्रज्ञं ॥ याने बोध का अभाववाला भी नहीं है, इस करके अचेतनता का निषेध किया ॥ अदृष्टं ॥ बाह्य इन्द्रियों करके देखा भी नहीं जाता है ॥ अव्यवहार्य्यं ॥ व्यवहार करने के योग्य भी नहीं है, और ॥ अग्राह्यम् ॥ कर्मेन्द्रियों करके ग्रहण करने योग्य नहीं ॥ अलक्षणं ॥ अचिह्न है याने लिङ्गरहित है ॥ अचिन्त्यं ॥ मन करके भी चिंतन नहीं कियाजाता है ॥ अव्यपदेश्यं ॥ शब्द का विषय भी नहीं है ॥ एकात्मप्रत्यय सारं ॥ जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति इन तीनों अवस्थों में व्यभिचार से रहित है, याने एकही आत्मा तीनों अवस्थाओं में अनुगत है ॥ प्रपञ्चोपशमं ॥ जाग्रदादि अवस्था का अभाव है जिस में ॥ शिवं ॥ कल्याणरूप है जो ॥ अद्वैतं ॥ भेदकल्पना से रहित है जो सोई तुरीयपद आत्मा ॥ विज्ञेयः ॥ जानने के योग्य है ॥ ७ ॥

मूलम् ।

सोऽयमात्मा अध्यक्षरमोंकारोऽधिमात्रं पादा मात्रामात्राश्च पादाअकारउकारोमकार इति ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

सः अयम् आत्मा अध्यक्षरम् ॐकारः अधिमात्रम् पादाः मात्राः मात्राः च पादाः अकारः उकारः मकारः इति ॥ ८ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।	अन्वयः ।	पदार्थः ।
+ यः	= जो	सः	= सोई
आत्मा	= चतुष्पादवाला आत्माहै	अयम्	= यह
		ॐकारः	= ॐकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अध्यक्षरम् = अक्षर बिषे स्थित है
सःओंकारः = वही ओंकार
अधिमात्रम् = मात्राबिषे स्थित है
+ताःमात्राः = वेमात्रा
अकारः = अकार
उकारः = उकार
मकारः = मकार
इति = करके
+स्थिताः = स्थित हैं
अतः = इसीकारण
मात्राः = मात्राही
पादाः = पाद हैं
च = और
पादाः = पादही
मात्राः = मात्रा हैं

भावार्थः।

सोयमात्मेति॥ जिस ओंकार का चतुष्पाद आत्मारूप करके व्याख्यान किया गया है सोई आत्मा अध्यक्षर है, याने ओंकार वाचक का वह वाच्य है और ओंकारही अक्षर (अविनाशी) है और अक्षरही ओंकार है और ओंकारही आत्मा है और यह ओंकार पादों करके विभाग कियाहुआ अधिमात्र कहाजाता है, जो मात्रा को आश्रयण करके वर्तमान हो उसी का नाम अधिमात्र है, अकार उकार मकार यह तीनहीं ओंकार की मात्रा हैं, और इन्हीं को अगले मंत्र विस्तारपूर्वक कहैंगे॥ ८।

मूलम्।

जागरितस्थानो वैश्वानरोऽकारः प्रथमामात्राऽऽप्तेरादिमत्वाद्वाऽऽप्नोति हवै सर्वान्कामानादिश्च भवति य एवं वेद॥ ९॥

पदच्छेदः।

जागरितस्थानः वैश्वानरः अकारः प्रथमा मात्रा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप्तेः आदिमत्वात् वा आप्नोति ह वै सर्वान् कामान् आदिः च भवति यः एवम् वेद ॥ ९ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
आप्तेः	= व्याप्ति के कारण
+ च	= और
आदिमत्वात्	= प्रथमहोने के कारण
जागरितस्थानः	= जाग्रतवाला
वैश्वानरः	= वैश्वानर
वा	= ही
अकारः	= अकाररूप
प्रथमा	= प्रथम
मात्रा	= मात्रा है
यः	= जो प्रथम मात्रा का उपासक

अन्वयः ।	पदार्थः ।
ह वै	= निश्चय करके
एवम्	= इसप्रकार अकार और वैश्वानर के अभेद को
वेद	= जानता है
सः	= वह
सर्वान्	= सम्पूर्ण
कामान्	= कामनाओं को
आप्नोति	= प्राप्त होता है
च	= और
आदिः	= ज्येष्ठ श्रेष्ठों के मध्य प्रतिष्ठा वाला
भवति	= होता है

भावार्थः ।

जागरितस्थान इति ॥ जाग्रत्अवस्था का जो अभिमानी वैश्वानर संज्ञक जीवात्मा है, सोई ॐकार की प्रथम मात्रा अकार है, दोनों तद्रूप हैं, क्योंकि जैसे अकार करके संपूर्ण वाक् व्याप्त है, तैसेही वैश्वानर करके संपूर्ण जगत् व्याप्त है, जैसे वाक् करके या अक्षर करके जाग्रत् के सब वस्तु सिद्ध होते हैं, तैसे वैश्वानर आत्मा करके सम्पूर्ण जगत की सिद्धि है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जैसे ॐकार में अकार प्रथम अक्षर है तैसे वैश्वानरपद को जो पुरुष अकार में आरोप करके भजता है और दोनों को एक समुझता है वह संपूर्ण कामना को प्राप्त होता है और महान्पुरुषों में प्रतिष्ठा पाता है ॥ ९ ॥

मूलम् ।

स्वप्नस्थानस्तैजस उकारोद्वितीयामात्रोत्कर्षादुभयत्वाद्वोत्कर्षति हवैज्ञानसन्ततिं समानश्चभवति नास्याऽब्रह्मवित्कुलेभवति यएवंवेद ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

स्वप्नस्थानः तैजसः उकारः द्वितीया मात्रा उत्कर्षात् उभयत्वात् वा उत्कर्षति हवै ज्ञानसन्ततिम् स मानः च भवति न अस्य अब्रह्मवित् कुले भवति यः एवम् वेद ॥ १० ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
उत्कर्षात्	= प्रथम मात्रा से उत्कृष्ट होने के कारण
वा	= और
उभयत्वात्	= अकार और मकार के मध्य बिषे स्थित होने के कारण
उकारः	= उकार

अन्वयः ।	पदार्थः ।
स्वप्नस्थानः	= स्वप्नस्थानी
तैजसः	= तैजस
द्वितीया	= दूसरी
मात्रा	= मात्रा है
यः	= जो उपासक
एवम्	= इस प्रकार उकार और तैजस की एकता को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेद = जानता है	भवति = होता है
सः = वह उपासक	+ च = और
ज्ञानसन्ततिम् = ज्ञान की वृद्धिको	अस्य = उसके
उत्कर्षति = बढ़ाता है	कुले = कुल बिषे
च = और	+ कश्चित् = कोई
समानः = शत्रु मित्रादिकों से समभाववाला	अब्रह्मवित् = ब्रह्म का न जाननेवाला
	न = नहीं
	भवति = होता है

भावार्थः ।

स्वप्नस्थान इति ॥ स्वप्नअवस्था का अभिमानी जो तैजस नामक जीव यानी आत्मा है सोई ॐकार अक्षर की दूसरी मात्रा उकार है, दोनों तद्रूप हैं, क्योंकि जैसे अकार से उकार में उत्कृष्टता है तैसे विश्व से तैजस में भी उत्कृष्टता है, और जैसे अकार मकार के मध्य में उकार है तैसे विश्व और प्राज्ञके मध्य में तैजस है, इसलिये दोनों एकही हैं, जो पुरुष तैजस नामक जीव आत्मा को उकार अक्षर में आरोप करके जपता है, और इन दोनों को एक समझता है उसके ज्ञान की वृद्धि होती है, उस को मित्र और शत्रुपक्ष तुल्य होता है और उसकी सन्तती ब्रह्मज्ञानी होती है ॥ १० ॥

मूलम् ।

सुषुप्तस्थानःप्राज्ञो मकारस्तृतीयामात्रामितेरपीतेर्वा मिनोति हवा इदꣳ सर्वमपीतिश्च भवति यएवं वेद ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ।

सुषुप्तस्थानः प्राज्ञः मकारः तृतीया मात्रा मिः अपीतेः वा मिनोति हवा इदम् सर्वम् अपीतिः भवति यः एवं वेद ॥ ११ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
मितेः	अकार और उकार अथवा विश्व और तैजस मकार या प्राज्ञ बिषे लीनहोकर उत्पन्न होने से
वा	और
अपीतेः	अज्ञानरूप कारण तीनों अवस्थाओं बिषे एक होनेसे अथवा अकार उकार मकार की एकता होने से
सुषुप्तस्थानः	सुषुप्तिअवस्था वाला
प्राज्ञः	प्राज्ञ
मकारः	मकाररूप
तृतीया	तीसरी
मात्रा	मात्रा है
यः	जो उपासक
एवम्	इस प्रकार
वेद	जानता है
हवै	निश्चय करके
+ सः	वह
इदम्	इस
सर्वम्	सारे जगत् को
मिनोति	यथार्थ जानता है
च	और
अपीतिः	जगत् का कारणरूपआत्म
भवति	होता है

भावार्थः ।

सुषुप्तस्थानइति ॥ सुषुप्तिअवस्था का अभिमानी देव यानी जीवआत्मा जो प्राज्ञ है सो ॐकार अक्षर की तीस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मात्रा जो मकार है उसके तद्रूप है क्योंकि विश्व और तैजस के तिरोभावका स्थान जैसे प्राज्ञ है तैसेही अकार और उकार के लयका स्थान मकार है, और जैसे ॐकार के उच्चारण करने काल में अन्तिम अक्षर मकार में अकार उकार लयको प्राप्त होजाते हैं तैसे सुषुप्तिकाल में विश्व तैजस भी प्राज्ञ में लय-भाव को प्राप्त होजाते हैं, जो उपासक प्राज्ञ को मकार अक्षर में आरोप करके जपता है और दोनों को एक समुझता है वह सारे जगत् के यथार्थरूपताको जानता है, और अन्त में जगत् का कारण आत्मारूप होजाता है ॥ ११ ॥

मूलम् ।

अमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्य्यः प्रपञ्चोपशमः शिवोऽद्वैत एवमोंकार आत्मैवसंविशत्यात्मनाऽऽत्मानं य एवं वेद य एवं वेद ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

अमात्रः चतुर्थः अव्यवहार्य्यः प्रपञ्चोपशमः शिवः अद्वैतः एवम् ॐकारः आत्मा एव संविशति आत्मना आत्मानम् यः एवम् वेद यः एवम् वेद ॥ १२ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।	अन्वयः ।	पदार्थः ।
एवम्	= उक्तप्रकार	प्रपञ्चोपशमः	= सकारण प्रपंच का नाशक
अमात्रः	= अमात्र	शिवः	= कल्याण स्वरूप
चतुर्थः	= तुरीय	अद्वैतः	= द्वैतरहित
अव्यवहार्यः	= मन और वाणी का अगम्य		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मा = आत्मरूप	सः = वह
ॐकारः = ॐकार है	आत्मना = आत्माक
यः = जो उपासक	आत्मानम् = आत्मा
एवम् = इस प्रकार	एवम् = निःसंदेह
वेद = जानता है	संविशति = लीन हो
यः = जो उपासक	है य
एवम् = इस प्रकार	ब्रह्मरूप
वेद = जानता है	होजाता

भावार्थः ।

अमात्रइति ॥ मात्रासे जो रहित है उसीका नाम अमात्र वही अविद्या और अविद्याके कर्म से पृथक् सूत्रात्मा है, ॐकार चतुर्थपाद तुरीय आत्मा कहलाता है, और वह वाणी का विषय नहीं है, अर्थात् उसमें मन वाणी का व्यव नहीं होता है, संपूर्ण प्रपंच उसमें लय हैं, वह कल्याण अद्वैत है, वही अन्तःकरण उपहित चेतन है, वही उपाधिरि साक्षी है, वही एकरस सदा ज्यों का त्यों है, उसी के स जीव की एकता बाद नाश होने अज्ञान और उसके कर्म शरीर के होती है, यही जानने योग्य वस्तु है, इसी को जा कर पुरुष जीवन्मुक्त कहलाता है, और आवागमन से रि होकर ब्रह्मरूप होजाता है, यही मात्रारहित ॐकार है, ॐकार का वाच्य है ॥ १२ ॥

इति श्रीमाण्डूक्योपनिषत्समाप्ता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इश्तहार ॥

निम्नलिखित उपनिषद् पञ्चोली यमुनाशंकर नागर कृत हैं यह उपनिषद् देखने योग्य हैं।

ईशावास्य उपनिषद् भाषाटीका सहित	।)
केनोपनिषद् भाषाटीका सहित	)
कठवल्ली उपनिषद् भाषाटीका सहित	॥)
प्रश्नोपनिषद् भाषाटीका सहित	)
मुंडक उपनिषद् भाषाटीका सहित	)
माण्डूक्योपनिषद् भाषाटीका सहित	॥)
तैत्तिरीयोपनिषद् भाषाटीका सहित	।)
ऐतरेयोपनिषद् भाषाटीका सहित	॥)
छान्दोग्योपनिषद् भाषाटीका दो जिल्दों में	१)
तथा पूर्वार्द्ध	।)
तथा उत्तरार्द्ध	॥)
उपनिषत्सार	।)

मिलने का पता—

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस-लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

3/१६८

ऐतरेयोपनिषद्

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषामें बाबूज्वालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद ने पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशी की सहायता से अनुवाद किया—

तिसको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुन्शी प्रयाग नारायणजी ने सर्वलोकहितार्थ

पहिली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के यन्त्रालय में मुद्रित किया

सन् १९०० ई० ॥

केनोपनिषद् भाषा टीका सहित, क़ीमत =

सामवेदीय तलबकार शाखीय भाषा टीका सरल मध्य हि
हिन्दी भाषामें है—जिसको पण्डित यमुनाशङ्कर ने राजशास्त्री
हिरचन्द की सहायता से अनुवाद किया इसमेंभी पदों के अ
पूर्वक भावार्थ स्पष्ट कियाहै और ऐसा टीका कियाहै कि अ
मनुष्यों के भी समझ में आजावे ॥

ईशावास्य उपनिषद् भाषा टीकासहित, क़ी०

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—जि
में मन्त्रों के अर्थ समझने के लिये पदों के अन्वय किये गये
फिर पदार्थकी रीति पर समझाकर भावार्थ स्पष्ट किया गया॥

प्रश्नोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत =)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित
में भी सब ऊपर के लिखे हुये अलङ्कारहैं शिष्य के पूछे हुये
प्रश्नों का उत्तर गुरूने बताकर ब्रह्मरूप लखायाहै ॥

मांडूक्योपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत ॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषा टीका सहि
जिसमें ॐकार स्वरूप का प्रतिपादन व ब्रह्म और आत्माकी
भेदताका निरूपण चार प्रकरणों में अच्छी तरह से किया है

कठवल्लीउपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम्। यद्दो धोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः। षट्चक्रादिविचार-सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वे श्वरं ज्ञानदम् २ ॥

दो० करौं वन्दना ब्रह्मको। जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल। मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं। नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं। रहितत्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद। ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको। लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो। सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते। जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट। अकबर पुरहै गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू। जालिम सिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौकाहै जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्कालमें होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफका लिखा हुआ ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशीय भाषा में मिलेगा और यदि बायेंतरफ से दहिने तरफको पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलैगा जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पायाहै और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसी के शब्दोंहीं से सिद्ध कियागयाहै अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करने के लिये रखागया है और उसपदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनोंको विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है I इस टीकाको बाबू ज्ञालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फैजाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरैं ताकि अशुद्धता दूर होजावै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐतरेयोपनिषद् ॥

मूलम् ॥

ॐआत्मावाइदमेकएवाग्रआसीन्नान्यत्किञ्चन मिषत्सईक्षतलोकान्नुसृजाइति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

आत्मा वै इदम् एकः एव अग्रे आसीत् न अन्यत् किञ्चन मिषत् सः ईक्षत् लोकान् नु सृजै इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वै	= निश्चय करके
इदम्	= यह नामरूपात्मक
जगत्	= जगत्
एकः	= एक
आत्मा	= आत्मा
एव	= ही
अग्रे	= सृष्टिसेपूर्व
आसीत्	= विद्यमानथा
च	= और
अन्यत्	= आत्मासेइतर
मिषत्	= चैतन्य
किञ्चन	= कुछ
न	= नहींथा
नु	= और
लोकान्	= लोकोंकोयानी पंचभूतों को
सृजै	= मैंसृजूं
इति	= ऐसा
सः	= वहआत्मा
ईक्षत	= विचार करताभया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

सइमाँल्लोकानसृजताम्भोमरीचीर्मरमापोऽदो
म्भः परेणदिवन्द्यौः प्रतिष्ठाऽन्तरिक्षंमरीचयः
थिवीमरोया अधस्तात्ताआपः ॥ २ ॥

पदच्छेदः

सः इमान् लोकान् असृजत अम्भः मरी
मरम् आपः अदः अम्भः परेण दिवम् द्यौः
प्रतिष्ठा अन्तरिक्षम् मरीचयः पृथिवी मरः
अधस्तात् ताः आपः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	= वहआत्मा
इमान्	= इन
लोकान्	= लोकोंकोयानी
अम्भः	= महदादिलोक को
मरीचीः	= अन्तरिक्षलोकोंको
मरम्	= पृथिवीलोक को
+ च	= और

अन्वयः	पदार्थसहि सूक्ष्म भाव
आपः	= पृथिवी से धोलोकोंक
असृजत	= सृजताभय
द्यौःप्रतिष्ठा	= स्वर्गहै श्रय जिस ऐसे
देवंपरेण	= देवलोकसे परे
अदः	= ये महदा लोक
अम्भः	= अम्भलोक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्तरिक्षं = अन्तरिक्षलोकयानी वह लोक जो पृथिवीसेऊपर और स्वर्गसे नीचेहै सो
मरीचयः = मरीचिलोकहै
पृथिवी = भूलोक
मरः = मरलोकहैमरणधर्मी होनेसे
+च = और
याः = जो लोक
अधस्तात् = पृथिवी से नीचे हैं
ताः = वे
आपः = आपःशब्द से प्रसिद्धहैं

मूलम् ॥

सईक्षतेमेनुलोकालोकपालानुसृजाइति सोऽद्भ्यएवपुरुषंसमुद्धृत्यामूर्च्छयत् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

सः ईक्षत इमे नु लोकाः लोकपालान् नु सृजै इति सः अद्भ्यः एव पुरुषम् समुद्धृत्य अमूर्च्छयत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इमेलोकाः = ये अम्भादि लोक
नु = होनेपर

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
लोकपालान् = लोकपालों को यानी लोकाभिमानी देवगणों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नु = निश्चयकर के
सृजै = मैं सृजूं
इति = ऐसा
सः = वहईश्वर
ईक्षत = विचार करता भया
+ च = और
+ सः = सो ईश्वर
अद्भ्यः = जलादिपञ्च महाभूतोंसे
एव = ही
पुरुषम् = विराट्रूप पिण्डको
समुद्धृत्य = ग्रहण कर
अमूर्च्छयत् = रचताभय

मूलम् ॥

तमभ्यतपत्तस्याभितप्तस्यमुखं निरभिद्यत यथाण्डम्मुखाद्वाग्वाचोऽग्निर्नासिके निरभिद्येतां नासिकाभ्यांप्राणः प्राणाद्वायुरक्षिणी निरभिद्येतां क्षीभ्यांचक्षुश्चक्षुषआदित्यः कर्णौ निरभिद्येतां र्णाभ्यांश्रोत्रं श्रोत्राद्दिशस्त्वङ्निरभिद्यत त्वचो मानिलोमभ्यओषधिवनस्पतयोहृदयंनिरभिद्य हृदयान्मनोमनसश्चन्द्रमानाभिर्निरभिद्यतनाभ्य अपानोऽपानान्मृत्युः शिश्नंनिरभिद्यताशिश्ना तोरेतसआपः ४ इति प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

पदच्छेदः

तम् अभ्यतपत् तस्य अभितप्तस्य मुखम् नि रभिद्यत यथा अण्डम् मुखात् वाक् वाचः अग्नि नासिके निरभिद्येताम् नासिकाभ्याम् प्राणः प्रा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त् वायुः अक्षिणी निरभिद्येताम् अक्षिभ्याम् चक्षुः चक्षुषः आदित्यः कर्णौ निरभिद्येताम् कर्णाभ्याम् श्रोत्रम् श्रोत्रात् दिशः त्वक् निरभिद्यत त्वचः लोमानि लोमभ्यः औषधिवनस्पतयः हृदयम् निरभिद्यत हृदयात् मनः मनसः चन्द्रमाः नाभिः निरभिद्यत नाभ्याः अपानः अपानात् मृत्युः शिश्नम् निरभिद्यत शिश्नात् रेतः रेतसः आपः

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तम् =	तिस विराट् पुरुषाकार पिंडको	निरभिद्यत =	निकलता भया
अभ्यतपत् =	ईश्वरअपनेज्ञानरूप तप करके तपाता भया	यथाऽण्डम् =	जैसे पक्षीका अण्डा फूटता है
तस्य =	तिस	+ च =	और
अभितप्तस्य =	ईश्वरसंकल्पसे अभितप्त पुरुष का	मुखात् =	उस मुखसे
मुखम् =	मुखाकार छिद्र	वाक् =	वाणी इन्द्रिय उत्पन्न भया
		वाचः =	वाणी से
		अग्निः =	अग्निदेवता होता भया
		नासिके =	दोनों नासिकाके छिद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निरभिद्ये ताम् = निकलते भये
नासिका भ्याम् = नासिकाके छिद्रों से
प्राणः = घ्राण इन्द्रिय होता भया
प्राणात् = घ्राणइन्द्रियसे
वायुः = वायुदेवता होता भया
अक्षिणी = दोनों नेत्र
निरभिद्ये ताम् = निकलतेभये
अक्षिभ्याम् = उन नेत्रों से
चक्षुः = दर्शन इन्द्रिय होता भया
चक्षुषः = दर्शनेन्द्रियसे
आदित्यः = सूर्य होता भया
कर्णौ = दोनों कर्ण
निरभिद्ये ताम् = निकलते भये
कर्णाभ्याम् = दोनों कर्णोंसे
श्रोत्रम् = श्रवणेन्द्रिय होता भया
श्रोत्रात् = श्रवणेन्द्रिय
दिशः = दिशाऽभिमा नी देवते हों भये
त्वक् = त्वचा
निरभिद्यत = निकलतीभ
त्वचः = त्वचासे
लोमानि = लोमसहर रीस्पर्शेंद्रि होताभया
लोमभ्यः = स्पर्शइन्द्रि से
औषधी वनस्पत-यः = औषधिवन तियों का धिष्ठातावायु वताहोताभ
हृदयम् = हृदय कम
निरभिद्यत = निकलता भया.
हृदयात् = हृत्कमलसे
मनः = मनहोताभ
मनसः = मनसे
चन्द्रमाः = चन्द्रमाहो भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाभिः = नाभिस्थान
निरभिद्यत = निकलता भया
नाभ्याः = नाभिसे
अपानः = गुदेन्द्रियउत्पन्नहोताभया
अपानात् = गुदेन्द्रियसे
मृत्युः = मृत्युदेवता उत्पन्न भया
शिश्नम् = उपस्थेन्द्रिय स्थान
निरभिद्यत = निकलता भया
शिश्नात् = उपस्थेन्द्रिय से
रेतः = वीर्य होता भया
रेतसः = वीर्यसे
आपः = जलाभिमानी देवताहोताभया

मूलम् ॥

ताएतादेवताः सृष्टाअस्मिन् महत्यर्णवेप्रापतंस्तमशनायापिपासाभ्यामन्ववार्जत्ताएनमब्रुवन्नायतनंनः प्रजानीहि यस्मिन् प्रतिष्ठिताअन्नमदामेति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

ताः एताः देवताः सृष्टाः अस्मिन् महति अर्णवे प्रापतन् तम् अशनायापिपासाभ्याम् अन्ववार्जत् ताः एनम् अब्रुवन् आयतनम् नः प्रजानीहि यस्मिन् प्रतिष्ठिताः अन्नम् अदाम इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ताः	= वे
एताः देवताः	= येलोकाऽभिमानी देवता अग्निआदि
सृष्टाः	= उत्पन्नकियेहुये
अस्मिन्	= इस
महति	= बड़े
अर्णवे	= संसाररूपीसमुद्र में
प्रापतन्	= गिरतेभये
तम्	= उस प्रथमउत्पादितपुरुषको
अशनायापिपासाभ्याम्	= भूख और प्यासकरके

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ ईश्वरः	= ईश्वर
अन्ववार्जत्	= युक्त करतेभया
ताः	= वे देवता
इति	= इसप्रकार
एनम्	= इसईश्वरसे
अब्रुवन्	= कहतेभये कि
नः	= हमारेलिये
आयतनम्	= कोईस्थान
प्रजानीहि	= विधानकर
यस्मिन्	= जिसमें
प्रतिष्ठिताः	= रहतेहुये
अन्नम्	= भोग्यवस्तुको
अदाम	= भोगैं हम

मूलम् ॥

ताभ्योगामानयत्ताअब्रुवन्नवैनोयमलमितिताभ्योऽश्वमानयत्ताअब्रुवन्नवैनोऽयमलमिति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

ताभ्यः गाम् आनयत् ताः अब्रुवन् न वै नः अयम् अलम् इति ताभ्यः अश्वम् आनयत् ताः अब्रुवन् न वै नः अयम् अलम् इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ताभ्यः	= तिन अग्नि आदिदेवताओं के लिये
गाम्	= गवाकार पिण्ड को
+ईश्वरः	= ईश्वर
आनयत्	= दिखाता भया
ताः	= वे देवता
इति	= इस प्रकार
अब्रुवन्	= कहते भये कि
नः	= हमारे लिये
अयम्	= यह गवाकृति पिण्ड
वै	= निश्चय करके
अलम्	= योग्य
न	= नहीं है

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ताभ्यः	= तिनकेअर्थ
+पुनः	= फिर
अश्वम्	= अश्वाकृतिपिण्डको
ईश्वरः	= ईश्वर
आनयत्	= दिखाताभया
ताः	= वे देवता
इति	= इसप्रकार
अब्रुवन्	= कहतेभये कि
नः	= हमारेलिये
अयम्	= यह अश्वाकृतिपिण्ड
वै	= निश्चयकरके
अलम्	= योग्य
न	= नहीं है

मूलम्॥

ताभ्यःपुरुषमानयत् ताअब्रुवन्सुकृतं वतेति पुरुषोवावसुकृतम् ताअब्रवीद्यथाऽऽयतनम्प्रविशतेति ॥ ३ ॥ ७ ॥

पदच्छेदः॥

ताभ्यः पुरुषम् आनयत् ताः अब्रुवन् सु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृतम् वत इति पुरुषः वाव सुकृतम् ताः ब्रवीत् यथायतनम् प्रविशत इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ताभ्यः	= तिन देवताओं के लिये	+ ईश्वरः	= ईश्वर
+ पुनः	= फिर	इति	= इसप्रकार
पुरुषम्	= पुरुष शरीरको	अब्रवीत्	= कहताभया
आनयत्	= दिखाताभया	यथायतनं	= अपने २ निस्थान
ताः	= वे देवता	प्रविशत	= तुमसब प्रवेश शकरो
इति	= इसप्रकार	तस्मात्	= इसीलिये
अब्रुवन्	= कहतेभये कि	पुरुषः	= पुरुष
सुकृतम्	= शोभन यहअधिष्ठान है	वाव	= ही
वत	= इसमें हम सन्तुष्ट हैं	सुकृतम्	= सुकृतहै पुण्य ने पुण्य हेतु है
ताः	= तिनदेवताओं से		

मूलम् ॥

अग्निर्वाग्भूत्वामुखंप्राविशद्वायुःप्राणोभूत्वानासिके प्राविशदादित्यश्चक्षुर्भूत्वाऽक्षिणीप्राविशद्दिशः श्रोत्रंभूत्वा कर्णौ प्राविशन्नोषधिवनस्पतयोलोमानिभूत्वात्वचम्प्राविशंश्चन्द्रमामनोभूत्वाहृदयं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राविशन्मृत्युरपानोभूत्वा नाभिम्प्राविशदापोरेतोभूत्वाशिश्नम्प्राविशन् ॥ ४ । ८ ॥

पदच्छेदः ॥

अग्निः वाक् भूत्वा मुखम् प्राविशत् वायुः प्राणः भूत्वा नासिके प्राविशत् आदित्यः चक्षुः भूत्वा अक्षिणी प्राविशत् दिशः श्रोत्रम् भूत्वा कर्णौ प्राविशन् औषधिवनस्पतयः लोमानि भूत्वा त्वचम् प्राविशन् चन्द्रमाः मनः भूत्वा हृदयम् प्राविशत् मृत्युः अपानः भूत्वा नाभिम् प्राविशत् आपः रेतः भूत्वा शिश्नम् प्राविशन् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अग्निः =	अग्निदेवताईश्वरकीआज्ञासे	नासिके =	नासिकाकेदोनोंछिद्रोंबिषे
वाक् =	वाणीरूप	प्राविशत् =	प्रवेश करता भया
भूत्वा =	हो करके	आदित्यः =	सूर्यदेवता
मुखम् =	स्वयोनि मुख बिषे	चक्षुः =	दर्शनइन्द्रिय
प्राविशत् =	प्रवेशकरता भया	भूत्वा =	होके
वायुः =	वायुदेवता	अक्षिणी =	दोनों नेत्रों बिषे
प्राणः =	प्राणरूप	प्राविशत् =	प्रवेश करता भया
भूत्वा =	होके		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिशः = दिग्देवते
श्रोत्रम् = श्रवणेन्द्रिय
भूत्वा = होके
कर्णौ = कानोंके दोनों छिद्रों बिषे
प्राविशन् = प्रवेश करते भये
औषधिवनस्पतयः = औषधीओं-रवनस्पति अभिमानी देवते
लोमानि = रोमरूप
भूत्वा = होके
त्वचम् = त्वचा बिषे
प्राविशन् = प्रवेश करते भये
चन्द्रमाः = चंद्रमादेवता
मनः = मनरूप
भूत्वा = होके
हृदयम् = हृदय का बिषे
प्राविशत् = प्रवेश का भया
मृत्युः = मृत्युदेवत
अपानः = अपानरू
भूत्वा = होके
नाभिम् = नाभिबिषे
प्राविशत् = प्रवेश का भया
आपः = जलदेवते
रेतः = वीर्यरूप
भूत्वा = होके
शिश्नम् = शिश्नस्था बिषे
प्राविशन् = प्रवेश का भये

मूलम्॥

तमशनायापिपासेअब्रूतामावाभ्यामभिप्र
नीहीति सते अब्रवीदेतास्वेववांदेवतास्वाभजा
तासुभागिन्यौ करोमीति तस्माद्यस्यै कस्यैच
तायैहविर्गृह्यते भागिन्यावेवास्यामशनायापि
सेभवतः ५॥ ९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

तम् अशनायापिपासे अब्रूताम् आवाभ्याम् अभिप्रजानीहि इति सः ते अब्रवीत् एतासु एव वाम् देवतासु आभजामि एतासु भागिन्यौ करोमि इति तस्मात् यस्यै कस्यै च देवतायै हविः गृह्यते भागिन्यौ एव अस्याम् अशनायापिपासे भवतः॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अशनायापिपासे	= भूख और प्यास दोनों	अब्रवीत्	= कहता भया कि
तम्	= तिस ईश्वर से	एतासु	= इन
इति	= इस प्रकार	एव	= ही
अब्रूताम्	= कहती भई कि	देवतासु	= अग्नि आदि देवताओंबिषे
आवाभ्याम्	= हम दोनों के लिये	वाम्	= तुमदोनोंको
अभिप्रजानीहि	= अधिष्ठान बना	आभजामि	= जीविका देताहूं मैं
सः	= वह ईश्वर	+ च	= और
ते	= उन क्षुधा पिपासा से	एतासु	= इन देवताओं बिषे
इति	= इस प्रकार	+ वाम्	= तुम दोनोंको
		भागिन्यौ	= भागपाने योग्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करोमि = करताहूं मैं
च = और
तस्मात् = इसी कारण
यस्यै = जिस
कस्यै = किसी
देवतायै = देवताके देने के अर्थ
हविः = होमद्रव्य
गृह्यते = ग्रहण किया जाता है
अस्याम् = उस देवता बिषे
अशनाया पिपासे = भूख और प्यास दोनों
भागिन्यौ = भागपाने वाली
एव = निश्चयकरके
भवतः = होती हैं

मूलम् ॥

सईक्षतेमेनुलोकाश्च लोकपालाश्चान्नमेभ्यः जाइति १ ॥ १० ॥

पदच्छेदः

सः ईक्षत इमे नु लोकाः च लोकपालाः च अन्नं एभ्यः सृजै इति ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सः = वह ईश्वर
इति = इस प्रकार
नु = फिर
ईक्षत = विचार करता भया कि
+ ये = जो
इमे = ये
लोकाः = लोक
च = और
लोकपालाः = लोकपाल
+ सन्ति = हैं
एभ्यः = इनके लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = निश्चयकरके
अन्नम् = भोग्यवस्तुको
सृजै = सृजूं मैं

मूलम् ॥

सोऽपोऽभ्यतपत्ताभ्योऽभितप्ताभ्योमूर्त्तिरजायत यावैसामूर्त्तिरजायतान्नं वैतत् ॥ २ ॥ ११ ॥

पदच्छेदः

सः अपः अभ्यतपत् ताभ्यः अभितप्ताभ्यः मूर्त्तिः अजायत या वै सा मूर्त्तिः अजायत अन्नम् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	= सो ईश्वर
अपः	= जल आदिपंचमहाभूतोंको
अभ्यतपत्	= अन्नभावना सेभावित करताभया यानेपञ्चमहाभूतों से अन्न उत्पन्न होऐसासंकल्पकरता भया
अभितप्ताभ्यः	= ईश्वर करके भावितहुये
ताभ्यः	= उन पञ्चमहाभूतों से
मूर्त्तिः	= घनअर्थात्कठिनरूपचराचरअन्न
अजायत	= उत्पन्न होता भया
च	= और
या	= जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामूर्त्तिः = वह चराचर लक्षण वाली मूर्त्ति घनरूप	एव = ही वै = निश्चय का अन्नम् = अन्न यानी भो ग्यवस्तु है
अजायत = उत्पन्न भई तत् = सो	

नोट-चराचर = चर चलने फिरने वाला जो भोग्य है जैसे हा भोग्यहै बिल्ली का। अचर स्थिर वस्तु जो भोग्य है जैसे स्पति आदिक भोग्यहैं मनुष्यों के ॥

मूलम् ॥

तदेतदभिसृष्टंपराङत्यजिघांसत्तद्वाचाऽजिघृ
त्तन्नाशक्नोद्वाचागृहीतुं सयद्धैनद्वाचाऽग्रहैष्यदन्न
व्याहृत्यहैवन्नमत्रप्स्यत् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

तत् एतत् अभिसृष्टम् पराङ् अत्यजिघांस
तत् वाचा अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् वा
गृहीतुम् सः यद्धा एनत् वाचा अग्रहैष्यत् अ
व्याहृत्य हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत्

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहि सूक्ष्म भाव
तत् = सो	
अभिसृष्टम् = सृजाहुआ	पराङ् = विमुखहुवा य मुँह मोड़कर
एतत् = यह अन्न	अत्याजिघांसत् = भागनेको हता भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् = तिस अन्नको
वाचा = वाक् इन्द्रिय से याने मुख करके
सःपुरुषः = वह पुरुष
अजिघृक्षत् = ग्रहणकरनेको चाहता भया
+ परन्तु = परन्तु
+ तत् = तिस अन्नको
वाचा = वाक्इन्द्रियसे
गृहीतुम् = ग्रहणकरने को
न = नहीं
अशक्नोत् = समर्थ होता भया

यद्धा = अगर
सः = वह आदिपुरुष
एनत् = इस अन्नको
वाचा = वागिन्द्रियसे
अग्रहैष्यत् = ग्रहण कर सक्ता
हा = तो
अन्नम् = भोग्य वस्तु अन्नको
अभिव्याहृत्य = वाणी के उच्चारणमात्र सेही
अत्रप्स्यत् = लोक तृप्त हो जाता

मूलम् ॥

तत्प्राणेनाजिघृक्षत् तन्नाशक्नोत्प्राणेनगृहीतुम् सयद्धैनत्प्राणेनाऽग्रहैष्यदभिप्राण्यहैवान्नमत्रप्स्यत् ॥ ४ ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

तत् प्राणेन अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् प्राणेन गृहीतुम् सः यद्धा एनत् प्राणेन अग्रहैष्यत् अभिप्राण्य हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत् १३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
तत्	= तिस अन्नको
प्राणेन	= घ्राणेन्द्रिय द्वारा
+ सः	= वह आदिपुरुष
अजिघृक्षत्	= ग्रहण करने को इच्छता भया
+ परन्तु	= परन्तु
तत्	= तिस अन्नको
प्राणेन	= घ्राण इन्द्रिय करके
गृहीतुम्	= ग्रहण करनेको
न	= नहीं
अशक्नोत्	= समर्थ होता भया
यद्वा	= अगर
सः	= वह आदिपुरु
एनत्	= इस भोग्य अन्न को
प्राणेन	= घ्राणेन्द्रियद्वा
अग्रहैष्यत्	= ग्रहणकरसह
हा	= तो
अन्नम्	= भोग्यवस्तु
अभिप्राण्य	= सूंघ करके
एव	= ही
अत्रप्स्यत्	= लोक तृप्त होजाता

मूलम् ॥

तच्चक्षुषाऽजिघृक्षत् तन्नाशक्नोच्चक्षुषा गृहीतुं स यद्धैनच्चक्षुषाऽग्रहैष्यत् दृष्ट्वा हैवान्नमभिप्राण्य प्स्यत् ॥ ५ ॥ १४ ॥

पदच्छेदः

तत् चक्षुषा अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् चक्षुषा गृहीतुम् सः यद्वा एनत् चक्षुषा अग्रहैष्यत् दृष्ट्वा हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत् ॥ १४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहितं सूक्ष्म भावार्थ
+ सः	= वह आदि पुरुष
तत्	= तिस अन्नको
चक्षुषा	= नेत्रेन्द्रिय द्वारा
अजिघृक्षत्	= ग्रहणकरने की इच्छा करताभया
+ परन्तु	= परन्तु
तत्	= तिस भोग्य अन्न को
चक्षुषा	= चक्षु इन्द्रिय करके
गृहीतुम्	= ग्रहण करने को
न	= नहीं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अशक्नोत्	= समर्थ होता भया
यद्वा	= अगर
सः	= वह पुरुष
एनत्	= इस भोग्य अन्न को
चक्षुषा	= नेत्र इन्द्रिय करके
अग्रहैष्यत्	= ग्रहण कर सक्ता
हा	= तो
अन्नम्	= भोग्यवस्तु को
दृष्ट्वा	= देखकरके
एव	= ही
अत्रप्स्यत्	= लोक तृप्त होजाता

मूलम् ॥

तच्छ्रोत्रेणाजिघृक्षत् तन्नाशक्नोच्छ्रोत्रेणगृहीतुम् सयद्वैनच्छ्रोत्रेणाग्रहैष्यच्छ्रुत्वा हैवान्नमत्रप्स्यत् ६ ॥ १५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

तत् श्रोत्रेण अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् श्रोत्रेण गृहीतुम् सः यद्धा एनत् श्रोत्रेण अग्रहैष्यत् श्रुत्वा हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत्

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	= तिस अन्नको	अशक्नोत्	= समर्थ होता भया
श्रोत्रेण	= श्रवणेन्द्रिय द्वारा	यद्धा	= अगर
+ सः	= वह आदि पुरुष	सः	= वह
अजिघृक्षत्	= ग्रहण करना चाहता भया	एनत्	= इस भोग्य अन्नको
+ परन्तु	= परन्तु	श्रोत्रेण	= श्रवणेन्द्रिय द्वारा
तत्	= तिस भोग्य अन्नको	अग्रहैष्यत्	= ग्रहण करसकता
श्रोत्रेण	= श्रवणेन्द्रिय करके	हा	= तो
गृहीतुम्	= ग्रहण करने को	अन्नम्	= अन्नको
न	= नहीं	श्रुत्वा	= सुनकरके
		एव	= ही
		अत्रप्स्यत्	= लोकतृप्त हो जाता

मूलम् ॥

तत्त्वचाऽजिघृक्षत्तन्नाशक्नोत्त्वचागृहीतुम् स

यद्धैनत्त्वचाऽग्रहैष्यत्स्पृष्ट्वाहैवान्नमत्रप्स्यत् ७।१६

पदच्छेदः

तत् त्वचा अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् त्वचा गृहीतुम् सः यद्धा एनत् त्वचा अग्रहैष्यत् स्पृष्ट्वा हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत्

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	= तिस अन्नको	अशक्नोत्	= समर्थ होता भया
त्वचा	= स्पर्शनेन्द्रिय द्वारा	यद्धा	= अगर
+ सः	= वह आदिपुरुष	सः	= वह पुरुष
अजिघृक्षत्	= ग्रहण करने को इच्छाकरता भया	एनत्	= इस भोग्य अन्नको
+ परन्तु	= परंतु	त्वचा	= स्पर्शनेन्द्रिय करके
तत्	= तिस अन्नको	अग्रहैष्यत्	= ग्रहणकरसक्ता
त्वचा	= स्पर्शनेन्द्रिय करके	हा	= तो
गृहीतुम्	= ग्रहणकरने को	अन्नम्	= भोग्यअन्नको
न	= नहीं	स्पृष्ट्वा	= स्पर्शकरके
		एव	= ही
		अत्रप्स्यत्	= लोकतृप्तहोजाता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तन्मनसाऽजिघृक्षत् तन्नाशक्नोन्मनसा गृ
तुम् सयद्धैनन्मनसाऽग्रहैष्यद्ध्यात्वाहैवान्नम
प्स्यत् ८ ॥ १७ ॥

पदच्छेदः

तत् मनसा अजिघृक्षत् तत् न अशक्नो
मनसा गृहीतुम् सः यद्धा एनत् मनसा अग्रहै
त् ध्यात्वा हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहि सूक्ष्म भा
तत्	= तिसअन्नको	अशक्नोत्	= समर्थहोत भया
मनसा	= मनसे	यद्धा	= अगर
+ सः	= वहआदिपु रुष	सः	= वहपुरुष
अजिघृक्षत्	= ग्रहणकरने को इच्छाकर- ताभया	एनत्	= इसभोग अन्नको
+ परंतु	= परंतु	मनसा	= मनसे
तत्	= तिसभोग्य अन्नको	अग्रहैष्यत्	= ग्रहणकर क्ता
मनसा	= मनकरके	हा	= तो
गृहीतुम्	= ग्रहणकरनेको	अन्नम्	= भोग्यवस् को
न	= नहीं		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्यात्वा = ध्यानकरके	अत्रप्स्यत् = लोकतृप्तहो
एव = ही	जाता

मूलम् ॥

तच्छिश्नेनाजिघृक्षत्तन्नाशक्नोच्छिश्नेनगृहीतुम् सयद्धैनच्छिश्नेनाग्रहैष्यद्विसृज्यहैवान्नमत्रप्स्यत् ॥ ६ ॥ १८ ॥

पदच्छेदः

तत् शिश्नेन अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् शिश्नेन गृहीतुम् सः यद्धा एनत् शिश्नेन अग्रहैष्यत् विसृज्य हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत् =	तिसअन्न को	शिश्नेन =	प्रजनन इन्द्रिय करके
शिश्नेन =	प्रजननइन्द्रियद्वारा	गृहीतुम् =	ग्रहणकरनेको
+ सः =	वहआदिपुरुष	न =	नहीं
अजिघृक्षत् =	ग्रहणकरने को इच्छता भया	अशक्नोत् =	समर्थहोता भया
+ परन्तु =	परन्तु	यद्धा =	अगर
तत् =	तिसअन्नको	सः =	वह
		एनत् =	इसअन्नको
		शिश्नेन =	प्रजननेन्द्रियसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अग्रहैष्यत् = ग्रहणकरस का	विसृज्य = त्यागकरके
हा = तो	एव = ही
अन्नम् = भोग्यवस्तुको	अत्रप्स्यत् = लोकतृप्तहो जाता

मूलम् ॥

तदपानेनाजिघृक्षत् तदावयत्सएषोऽन्नस्य ग्रहोयद्वायुरन्नायुर्वाएषयद्वायुः १० ॥ १९ ॥

पदच्छेदः

तत् अपानेन अजिघृक्षत् तदा आवयत् स एषः अन्नस्य ग्रहः यद्वायुः अन्नायुः वै एष यद्वायुः ॥ १९ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहि सूक्ष्म भाव
तत् = तिस अन्न को		अजिघृक्षत् = ग्रहण कर की इच्छा करताभय	
अपानेन = अपानवायु से यानी मुखद्वारा		तदा = तब	
सः = वह आदि- पुरुष		आवयत् = ग्रहण कर सक्ताभया	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यद्वायुः = जो अपान वायु है
सः = सो
एषः = यह
अन्नस्य = अन्नका
ग्रहः = ग्राहक है
च = और
एषः = यह
यद्वायुः = जो अपान वायु है

सः = सो
वै = निश्चय करके
अन्नायुः = अन्न भोग द्वारा भोक्ता का आयुर्वृद्धि करनेवाला है

मूलम् ॥

स ईक्षत कथं न्विदं मदृते स्यादिति स ईक्षत कतरेण प्रपद्याइति स ईक्षत यदि वाचाऽभिव्याहृतम् यदि प्राणेनाभिप्राणितं यदि चक्षुषा दृष्टं श्रोत्रेण श्रुतं यदि त्वचा स्पृष्टं यदि मनसा ध्यातं यद्यपानेनाभ्यवपानितं यदि शिश्नेन विसृष्टमथ कोहमिति ॥ ११ ॥ २० ॥

पदच्छेदः

सः ईक्षत कथम् नु इदम् मदृते स्यात् इति सः ईक्षत कतरेण प्रपद्यै इति सः ईक्षत यदि वाचा अभिव्याहृतम् यदि प्राणेन अभिप्राणितम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि चक्षुषा दृष्टम् यदि श्रोत्रेण श्रुतम् यदि त्वचा स्पृष्टम् यदि मनसा ध्यातम् यदि अपानेन अभ्यवपानितम् यदि शिश्नेन विसृष्टम् अथ कः अहम् इति ॥ २० ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
सः	= सो ईश्वर
इति	= ऐसा
नु	= पुनः
ईक्षत	= विचार करता भया कि
इदम्	= यह कार्यकारणरूपपिंड
मदृते	= मुझ विना
कथम्	= कैसे
स्यात्	= रहेगा
च	= और
कतरेण	= किस मार्गसे
प्रपद्यै	= मैं प्रवेश करूं इस पिण्डरूप पुरमें
इति	= ऐसा
सः	= वह ईश्वर
ईक्षत	= विचार करता भया
अथ	= फिर
इति	= इस प्रकार
सः	= वह ईश्वर
ईक्षत	= विचार करता भया कि
यदि	= अगर
इन्द्रियाभिमानीदेवः	= इन्द्रियाभिमानी देवता
वाचा	= वाणी करके
अभिव्याहृतम्	= बोला
यदि	= अगर
प्राणेन	= घ्राणेन्द्रिय करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिप्राणितम् = सूंघा
यदि = अगर
चक्षुषा = नेत्र करके
दृष्टम् = देखा
यदि = अगर
श्रोत्रेण = श्रोत्रेन्द्रिय करके
श्रुतम् = सुना
यदि = अगर
त्वचा = स्पर्शेन्द्रिय करके
स्पृष्टम् = स्पर्श किया
यदि = अगर
मनसा = मनकरके
ध्यातम् = ध्यान किया
यदि = अगर
अपानेन = अपानवायु करके
अभ्यवपानितम् = अशनकिया याने खाया
यदि = अगर
शिश्नेन = शिश्नेन्द्रिय करके
विसृष्टम् = विसर्जनकिया यानेत्याग किया
+ तु = तो
अहम् = मैं
कः = कौनहूं

मूलम् ॥

सएतमेवसीमानंविदार्य्यैतयाद्वारा प्रापद्यत सैषाविदृतिर्नामद्वास्तदेतन्नान्दनंतस्य त्रयआवसथास्त्रयः स्वप्नाअयमावसथोऽयमावसथोऽयमावसथ इति १२ ॥ २१ ॥

पदच्छेदः

सः एतम् एव सीमानम् विदार्य एतया द्वारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रापद्यत सा एषा विदृतिः नाम द्वाः तदेतत् नान्दनम् तस्य त्रयः आवसथाः त्रयः स्वप्नाः अयम् आवसथः अयम् आवसथः अयम् आवसथः इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	= वह ईश्वर
एतम्	= इस
एव	= ही
सीमानम्	= त्रिकपाल संधि ब्रह्मरन्ध्र को
विदार्य	= छिद्रकरके
एतया	= उसी
द्वारा	= मार्गसे
प्रापद्यत	= प्रवेशकरता भया
सा	= सो
एषा	= यह
द्वाः	= मार्ग
विदृतिः	= विदृति किया हुआ याने छेदा हुआ
तदेतत्	= वह यह
नान्दनम्	= ब्रह्मानंदप्राप्ति काद्वारहै यानी आनन्दकादेने वाला है
तस्य	= तिसपुराधीश ईश्वरके
त्रयः	= तीन
आवसथाः	= स्थान हैं
त्रयः	= तीन
स्वप्नाः	= स्वप्न हैं
सः	= वह
अयम्	= यही
आवसथः	= स्थान है
अयम्	= यही
आवसथः	= स्थान है
अयम्	= यही
आवसथः	= स्थान है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट–जो कि श्रुतिने आवसथ याने स्थान तीनबार दिखाया इसका अभिप्राय यह है कि जाग्रत् अवस्था में दक्षिण नेत्र और स्वप्न में कंठस्थ प्राण सुषुप्ति में हृदयकमल ये तीन स्थान हैं परमात्मा के रहने का ॥

मूलम् ॥

सजातो भूतान्यभिव्यैक्षत् किमिहान्यंवावदिषदिति सएतमेव पुरुषंब्रह्मततममपश्यादिदमदर्शमिति ॥ १३ । २२ ॥

पदच्छेदः

सः जातः भूतानि अभिव्यैक्षत् किम् इह अन्यम् वा अवदिषत् इति सः एतम् एव पुरुषम् ब्रह्म तत् तमम् अपश्यत् इदम् अदर्शम् इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः =	वहपुरुष यानेअंतः करण विशिष्टचैतन्य आत्मा	अभिव्यैक्षत् =	भली प्रकार विचार करता भया कि
जातः =	उत्पन्नहुआ	इति =	ऐसे
भूतानि =	भूतों को	इह =	शरीर बिषे
		अन्यम् =	अपने से भिन्न औरों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किम् = क्या
वा = निश्चय करके
अवदिषत् = कहै
+अतः = इसलिये
एतमेव = इसही
पुरुषम् = पुरुषकोयाने अपने आपको ही
ततमम् = अत्यन्त करकेव्याप्त
ब्रह्म = ब्रह्मरूप
अपश्यत् = देखताभय और कहत भया कि
इति = वारंवार इस प्रकार
इदम् = इस ब्रह्मको याने अपने आपको
अदर्शम् = मैंसाक्षात्दे खता भया

मूलम् ॥

तस्मादिदन्द्रोनामेदन्द्रोहवैनामतमिदन्द्रंसन्त मिन्द्रमित्याचक्षते परोक्षेणपरोक्षप्रियाइवहिदेवाः परोक्षप्रियाइवहिदेवाः ॥ १४ । २३ ॥

इति तृतीयखण्डः ॥

पदच्छेदः

तस्मात् इदन्द्रः नाम इदन्द्रः हवै नाम तम् इदन्द्रम् सन्तम् इन्द्रम् इति आचक्षते परोक्षेण परोक्षप्रियाः इव हि देवाः परोक्षप्रियाः इव हिदेवाः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मात्	= तिस कारण से
इदन्द्रः	= इदन्द्रनाम
नाम	= प्रसिद्ध है परमात्मा
+च	= और
इदन्द्रः	= इदन्द्र नाम
ह्वै	= निश्चय करके
नाम	= प्रसिद्धहैलोकमें
तम्	= तिस
इदन्द्रम्	= इदन्द्र नाम
सन्तम्	= होतेहुये को
परोक्षेण	= परोक्ष से
इन्द्रम्	= इन्द्रनाम
इति	= करके
आचक्षते	= कहते हैं ब्रह्मवेत्ता आचार्य
हि	= क्योंकि
इव	= प्रत्यक्ष है कि
देवाः	= पूज्यपुरुष
परोक्षप्रियाः	= परोक्ष नाम से प्रसन्नहोते हैं

नोट-परोक्षप्रियाः इव देवाः=इस वाक्यको द्वितीयबार कहने से यह अभिप्राय है कि कहीहुई बात सत्यहै और अध्याय की समाप्तिभी है इदम् द्रः=इदंपश्यति यः=इसको देखता है जो याने इस शरीर को जो भली प्रकारसे देखता सो इदन्द्रःहै अर्थात् क्षेत्रज्ञ है उस इदन्द्रको परोक्षतासे याने भयसे या लज्जासे एक अक्षर कम करके इन्द्र ऐसा उसको बोलते हैं ॥

इति तृतीयखण्डः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

पुरुषेहवाअ्रयमादितोगर्भोभवति यदेतद्रेतस्त
तत् सर्वेभ्योऽङ्गेभ्यस्तेजः सम्भूतमात्मन्येवात्म
नंबिभर्तितद्यदास्त्रियां सिञ्चत्यथैनञ्जनयति
दस्यप्रथमंजन्म १ ॥ २४ ॥

पदच्छेदः

पुरुषे हवै अयम् आदितः गर्भः भवति य
एतत् रेतः तत् एतत् सर्वेभ्यः अङ्गेभ्यः तेः
सम्भूतम् आत्मनि एव आत्मानम् बिभर्ति त
तदा स्त्रियाम् सिञ्चति अथ एनम् जनयति त
अस्य प्रथमम् जन्म ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अयम्	= यह संसारी जीव
हवै	= निश्चयकरके
पुरुषे	= पुरुष बिषे
आदितः	= पहिले
गर्भः	= वीर्यरूप
भवति	= होता है
यत्	= जो
एतत्	= यह
रेतः	= वीर्यहै
तत्	= सो
एतत्	= यह
तेजः	= साररूप
सर्वेभ्यः अङ्गेभ्यः	= अन्नमयादि के सबअंगों
सम्भूतम्	= उत्पन्नहुआ
आत्मानम्	= पुरुषकोयात जीवको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मनि = अपने शरीर बिषे
एव = ही
बिभर्ति = धारणकरताहै
तत् = तिस वीर्यको
यदा = जब ऋतु-काल बिषे
पुरुषः = पुरुष
स्त्रियाम् = स्त्रीरूप अग्नि में
सिञ्चति = सिंचनकरता है
अथ = तब
एवम् = इस पुरुष को याने जीवको
जनयति = उत्पन्नकरताहै
तस्मात् = तिसकारण
अस्य = इस जीवका
तत् = वह सिंचन
प्रथमम् = पहिला
जन्म = जन्म है

मूलम्॥

तत् स्त्रिया आत्मभूयं गच्छति यथा स्वमङ्गं तथा तस्मादेनां न हिनस्ति साऽस्यैतमात्मानमत्र गतं भावयति॥ २॥ २५॥

पदच्छेदः

तत् स्त्रियाः आत्मभूयम् गच्छति यथा स्वम् अङ्गम् तथा तस्मात् एनाम् न हिनस्ति सा अस्य एतम् आत्मानम् अत्र गतम् भावयति॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा = जैसे
स्वम् = अपना
अंगम् = अंग है
तथा = तैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सा = वह गर्भवती स्त्री
अत्र = अपने गर्भरूप आत्मा में
अस्य = इस भर्ताके
एतम् = इसवीर्यरूप
गतम् = प्राप्त हुये
आत्मानम् = आत्माको
भावयति = पालन पोषण करती है

तत् = वह वीर्य
स्त्रियाः = स्त्री के
आत्मभूयम् = आत्मभाव याने शरीरभाव को
गच्छति = प्राप्तहोताहै
तस्मात् = तिस कारण
एनाम् = इसमाताको
तत् = वह वीर्य
न = नहीं
हिनस्ति = पीड़ित करता है

मूलम् ॥

सा भावयित्री भावयितव्या भवति तं स्त्रीगर्भं बिभर्ति सोऽग्रएव कुमारं जन्मनोऽग्रेऽधिभावयति सयत् कुमारं जन्मनोऽग्रेऽधिभावयति आत्मानमेव तद्भावयत्येषां लोकानां सन्तत्या एवं सन्तता हीमे लोकास्तदस्य द्वितीयं जन्म ३ ॥ २६ ।

पदच्छेदः

सा भावयित्री भावयितव्या भवति तम् स्त्रीगर्भम् बिभर्ति सः अग्रे एव कुमारम् जन्मनः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अग्रे अधिभावयति सः यत् कुमारम् जन्मनः अग्रे अधिभावयति आत्मानम् एव तत् भावयति एषाम् लोकानाम् सन्तत्यै एवम् सन्ततः हि इमे लोकाः तत् अस्य द्वितीयम् जन्म ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ यावत्	= जबतक
स्त्री	= स्त्री
तम्	= उस
गर्भम्	= गर्भको
बिभर्ति	= धारण करती है
+ तावत्	= तबतक
सा	= वह
भावयित्री	= गर्भवती स्त्री
भावयितव्या	= भर्ता करके पालन पोषण करने योग्य
भवति	= होती है
एषाम्	= इन
लोकानाम्	= लोकों की
सन्तत्यै	= वृद्धिके अर्थ
सः	= वह पिता
अग्रे	= पूर्व
एव	= ही याने गर्भ में ही
कुमारम्	= बच्चे को
जन्मनः	= उत्पत्ति से
अग्रे	= पहले
यत्	= जो पुंसवनादि
अधिभावयति	= संस्कार करता है
च	= और
जन्मनः	= जन्म के
अग्रे	= पीछे
सः	= वह पिता
कुमारम्	= बालक को
यत्	= जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिभावयति = जातकर्मादि संस्कार करता है
तत् = सो
सः = वह पिता
आत्मानम् = अपने को
एव = ही
भावयति = संस्कार करता है
हि = क्योंकि
इमे लोकाः = ये लोक
एवम् = इसी प्रकार
सन्ततिः = वृद्धिको प्राप्त हुये हैं
तत् = तिस लिये
अस्य = इस संसारी जीव का
इदम् = यह
द्वितीयम् = दूसरा
जन्म = जन्म है ॥

मूलम् ॥

सोऽस्यायमात्मापुण्येभ्यः कर्मभ्यःप्रतिधीयतेऽथास्यायमितरआत्मा कृत्यकृत्योवयोगतः प्रैतिसइतः प्रयन्नेवपुनर्जायते तदस्यतृतीयंजन्म ४ ॥ २७ ॥

पदच्छेदः

सः अस्य अयम् आत्मा पुण्येभ्यः कर्मभ्यः प्रतिधीयते अथ अस्य अयम् इतरः आत्मा कृत्यकृत्यः वयोगतः प्रैति सः इतः प्रयन् एव पुनः जायते तत् अस्य तृतीयम् जन्म २७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	= वह
अयम्	= यह पुत्र
आत्मा	= आत्मारूप
अस्य	= इस पिताके स्थान बिषे
पुण्येभ्यः	= पुण्य
कर्मभ्यः	= कर्म करने के अर्थ
प्रतिधीयते	= स्थापित किया जाता है
अथ	= इसके पीछे
अस्य	= इसका पिता
अयमितरः	= यह दूसरा
आत्मा	= शरीर
कृतकृत्यः	= कृतकार्य होता हुआ
च	= और
वयोगतः	= वृद्ध होता हुआ
प्रैति	= मरण को प्राप्त होताहै
च	= और
सः	= वह लिंग शरीर
इतः	= इस लोकसे-
प्रयन्	= गयाहुआ
एव पुनः	= फिर भी
जायते	= उत्पन्नहोताहै
तत्	= सो
अस्य	= इस जीवका
तृतीयम्	= तीसरा
जन्म	= जन्म है ॥

मूलम् ॥

तदुक्तमृषिणागर्भेनुसन्नन्वेषामवेदमहं देवानां जनिमानिविश्वाः शतंमापुरआयसीररक्षन्नधःश्येनोजवसानिरदीयमिति गर्भएवैतच्छयानोवामदेवएवमुवाच ५ ॥ २८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

तत् उक्तम् ऋषिणा गर्भे नु सन् ननु एषाम् अवेदम् अहम् देवानाम् जनिमानि विश्वाः शतम् मा पुरः आयसीः अरक्षन् अधः श्येनः जवसा निरदीयम् इति गर्भे एव एतत् शयानः वामदेव एवम् उवाच २८ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
गर्भे	= गर्भ में
नु	= ही
सन्	= स्थितहोता हुआ
वामदेवः	= वामदेव-ऋषि
एवम्	= इस प्रकार
उवाच	= कहता भया कि
ननु	= निश्चयकरके
अहम्	= मैं
एषाम्	= इन
देवानाम्	= अग्नि आदि देवों के
विश्वाः	= सम्पूर्ण
जनिमानि	= जन्मोंको
अवेदम्	= जानताभया
मा	= मुझको
शतम्	= अनेक
आयसीः	= लोहेके तुल्य बनेहुये
पुरः	= शरीरें
अधः	= अधोगतिके प्रति
अरक्षन्	= रक्षा करते भये यानें पने अन्द रखते भये
परन्तु	= परंतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ = अब	निरदीयम् = ज्ञानवैराग्य के बलकरके निकलआ याहूं यानी मुक्तहुआहूं
अहम् = मैं	
श्येनःइति = बाज चिड़िया की तरह	
जवसा = वेगसे	
एतत् = इस	तत् = सोई
गर्भेएव = गर्भमेंही	ऋषिणा = मंत्रकरके
शयानः = सोताहुआ	उक्तम् = कहागया है ॥

मूलम् ॥

सएवंविद्वानस्माच्छरीरभेदादूर्ध्व उत्क्रम्यामुष्मिन्स्वर्गेलोकेसर्वान् कामानाप्त्वाऽमृतः समभवत्समभवत् ६ ॥ २९ ॥

इति चतुर्थःखण्डः ॥

पदच्छेदः

सः एवम् विद्वान् अस्मात् शरीरभेदात् ऊर्ध्वः उत्क्रम्य अमुष्मिन् स्वर्गे लोके सर्वान् कामान् आप्त्वा अमृतः समभवत् समभवत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एवम् =	इसप्रकार	विद्वान् =	विद्वान्वाम देव
सः =	वह		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्मात् = इस	स्वर्गे = ब्रह्मानंदरू
शरीरभेदात् = शरीरनाश के पीछे	लोके = स्वर्गलोकमें
ऊर्ध्वः = ऊर्ध्वगतिक होताहुआ	सर्वान् = सम्पूर्ण कामान् = कामनाओं को
उत्क्रम्य = अधोगति को उल्लंघन करके	आप्त्वा = प्राप्त होके अमृतः = जन्म मरण रहित
अमुष्मिन् = इस	समभवत् = होता भया

इति चतुर्थःखण्डः ॥

अथ ऐतरीयउपनिषद्गततृतीयोऽध्यायः ॥

मूलम् ॥

कोऽयमात्मेति वयमुपास्महे कतरः स आत्मा येन वा रूपम्पश्यति येन वा शब्दं शृणोति येन वा गन्धानाजिघ्रति येन वाचं व्याकरोति येन स्वादु चास्वादु च विजानाति ॥ १ ॥ ३० ॥

पदच्छेदः

कः अयम् आत्मा इति वयम् उपास्महे कतरः सः आत्मा येन वा रूपम् पश्यति येन वा शब्दम् शृणोति येन वा गन्धान् आजिघ्रति येन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाचम् व्याकरोति येन वा स्वादु च अस्वादु च विजानाति ॥ ३० ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
कः	= कौन	शृणोति	= सुनता है
अयम्	= यह	येन	= जिस करके
आत्मा	= आत्मा है	वा	= ही
+ यम्	= जिसको	गन्धान्	= गन्धोंको
वयम्	= हमलोक	आजिघ्रति	= सूंघताहै
इति	= इस प्रकार	येन	= जिस करके
उपास्महे	= उपासनाकरैं	वा	= ही
कतरः	= कौन	वाचम्	= वाणी को
सः	= वह	व्याकरोति	= प्रकट करता है
आत्मा	= आत्मा है	च	= और
येन	= जिसकरके	येन	= जिसकरके
वा	= ही	वा	= ही
पुरुषः	= पुरुष	स्वादु	= स्वादु को
रूपम्	= रूपको	च	= अथवा
पश्यति	= देखता है	अस्वादु	= अस्वादु को
येन	= जिस करके	विजानाति	= अनुभवकरता है
वा	= ही		
शब्दम्	= शब्द को		

मूलम् ॥

यदेतद्धृदयं मनश्चैतत् संज्ञानमाज्ञानं विज्ञानं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रज्ञानं मेधा दृष्टिर्धृतिर्मतिर्मनीषा जूतिः स्मृतिः सङ्कल्पः क्रतुरसुः कामोवशइति सर्वाण्येवैतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति १ ॥ ३१ ॥

पदच्छेदः

यत् एतत् हृदयम् मनः च एतत् सञ्ज्ञानम् आज्ञानम् विज्ञानम् प्रज्ञानम् मेधा दृष्टिः धृतिः मतिः मनीषा जूतिः स्मृतिः सङ्कल्पः क्रतुः असुः कामः वशः इति सर्वाणि एव एतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति ॥ ३१ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत् =	जो
एतत् =	यह
हृदयम् =	हृदय है
च =	सोई
एतत् =	यह
मनः =	मन है
सञ्ज्ञानम् =	सम्यक् ज्ञप्ति रूप चैतन्य भाव
आज्ञानम् =	सबओर से ज्ञप्तिरूपईश्वर भाव
विज्ञानम् =	चौंसठ कला यानेविद्यासे जन्यलौकिक व्यवहार ज्ञान
प्रज्ञानम् =	तत्काल जन्य भावरूप ज्ञान
मेधा =	ग्रन्थार्थधारण की शक्तिज्ञान
दृष्टिः =	इन्द्रिय द्वारा सर्व विषयों का ज्ञान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धृतिः = वहज्ञानशक्ति जिसकरकेशरीरकी शिथिलता सावधानकी जावै

संकल्पः = जिसज्ञानशक्तिकरकेरूपादिकोंकाशुक्लकृष्णादिभावसे कल्पनाकी जावै

मतिः = वहज्ञानशक्ति जिसकरकेमननध्यानेविचार कियाजावै

क्रतुः = निश्चयकरनेका ज्ञान

मनीषाः = मननजन्य स्वतन्त्रताया मनकानियामकपनाजिसज्ञानशक्तिकरके सिद्धहो

असुः = वहज्ञानशक्ति जिसकरकेप्राणधारणकरनेका उद्यमकियाजाय

जूतिः = जिसज्ञानशक्तिकरकेचित्तके रोगादिनिमित्तसेदुखित होनाहो

कामः = वहज्ञानशक्ति जिसकरकेदूरस्थितवस्तुकीइच्छाकी जावै

स्मृतिः = स्मरणज्ञान

वशः = वहशक्तिजिसकरके स्त्रीसंगादिकोंकी इच्छाहो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति = इसप्रकार	एव = ही
एतानि = ये	नामधेयानि = नाम
सर्वाणि = सब	भवन्ति = हैं
प्रज्ञानस्य = ज्ञानके	

मूलम् ॥

एषब्रह्मैषइन्द्रएषप्रजापतिरेतेसर्वेदेवाइमानि पञ्चमहाभूतानि पृथिवीवायुराकाशआपोज्योतींषित्येतानीमानि चक्षुद्रमिश्राणीव बीजानीतराणिचेतराणिचाण्डजानिच जरायुजानिच स्वेदजानिचोद्भिज्जानिचाश्वागावः पुरुषाहस्तिनोयत्किञ्चेदं प्राणिजंगमंच पतत्रिचयच्चस्थावरम्सर्वं तत्प्रज्ञानेत्रम् प्रज्ञाने प्रतिष्ठितम् प्रज्ञानेत्रोलोकः प्रज्ञाप्रतिष्ठिताप्रज्ञानंब्रह्म ३ ॥ ३२ ॥

पदच्छेदः

एषः ब्रह्म एषः इन्द्रः एषः प्रजापतिः एते सर्वे देवाः इमानि च पञ्चमहाभूतानि पृथिवी वायु आकाशः आपः ज्योतींषि इति एतानि इमानि च क्षुद्रमिश्राणि इव बीजानि इतराणि च इतराणि च अण्डजानि च जरायुजानि च स्वेदजानि च उद्भिज्जानि च अश्वाः गावः पुरुषाः हस्तिनः यत्किञ्च इदम् प्राणिजंगमम् च पतत्रि च यच्च

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थावरम् सर्वम् तत् प्रज्ञानेत्रम् प्रज्ञाने प्रतिष्ठितम् प्रज्ञानेत्रः लोकः प्रज्ञा प्रतिष्ठिता प्रज्ञानम् ब्रह्म ॥ ३२ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः	= यह प्रज्ञान रूपात्मा
ब्रह्म	= ब्रह्म है
+च	= और
एषः	= यही
इन्द्रः	= इन्द्र है
च	= और
एषः	= यही
प्रजापतिः	= प्रजापति है
च	= और
सर्वे	= सब
एते	= ये
देवाः	= अग्न्यादि देवता
ब्रह्म	= ब्रह्म हैं
+ च	= और
पञ्चमहाभूतानि	= पंचमहा भूत यानी
पृथिवी	= पृथिवी
वायुः	= वायु
आकाशः	= आकाश
आपः	= जल
ज्योतींषि	= तेज़
इमानि	= ये सब
ब्रह्म	= ब्रह्महैं
च	= और
क्षुद्रमिश्राणि	= सर्पादिक कीडेमकोड़े
अपि	= भी
च	= और
बीजानि	= कारण
इतराणि	= कार्य
च	= और
इतराणि	= अलावां इन के
अण्डजानि	= अंडासेउत्पन्नहुये पक्षी आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = और

जारुजानि = { जरायुज सृष्टियाने नृगवादि (नर गऊ आदि)

च = और

स्वेदजानि = { स्वेदजयाने पसीनेसे है उत्पत्तिजिनकी जैसे कीड़े मछर आदि

च = और

उद्भिजानि = { उद्भिजसृष्टि याने जो पृथिवी को फोड़केउत्पन्नहोतेहैं जैसे वृक्षवल्ली आदि

इमानि = ये सब

ब्रह्म = ब्रह्मही हैं

च = और

अश्वाः = घोड़े

गावः = गऊ और बैल

पुरुषाः = मनुष्य

हस्तिनः = हाथी

च = और

यत्किञ्च = जो कुछ

इदम् = यह दृश्यमान

प्राणिजंगमम् = प्राणवाला चरजीव

च = और

पतत्रि = परवाला

च = और

यत् = जो

स्थावरम् = अचरपदार्थ है यानें स्थिरवृक्षादि

तत् = सो

सर्वम् = संब

प्रज्ञानेत्रम् = प्रज्ञानरूप नेत्रवाला

च = और

प्रज्ञाने = प्रज्ञानवि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिष्ठितम् = स्थित है
च = और
लोकः = लोक
प्रज्ञानेत्रः = प्रज्ञानेत्र है
च = और
प्रज्ञा = प्रज्ञा
जगतः = जगत् का
प्रतिष्ठा = आश्रयभूतहै
तस्मात् = तिस कारण
प्रज्ञानम् = प्रज्ञान
एव = ही
ब्रह्म = परब्रह्म है

मूलम् ॥

स एतेन प्रज्ञेनात्मनाऽस्माँल्लोकादुत्क्रम्यामुष्मिन्स्वर्गे लोकेसर्वान् कामानाऽऽप्त्वाऽमृतः समभवत्समभवत् इत्योम् ४।३३॥

पदच्छेदः

सः एतेन प्रज्ञेन आत्मना अस्मात् लोकात् उत्क्रम्य अमुष्मिन् स्वर्गे लोके सर्व्वान् कामान् आप्त्वा अमृतः समभवत् समभवत् इति ओम् ॥ ३३ ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः = वह वामदेव ऋषि	आत्मना = आत्माकरके
एतेन = इस	अस्मात् = इस
प्रज्ञेन = ज्ञानस्वरूप	लोकात् = लोक से
	उत्क्रम्य = देहत्यागकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमुष्मिन् = उसब्रह्मानंद
स्वर्गे = स्वर्ग
लोके = लोक में
सर्वान् = संपूर्ण
कामान् = कामनाओं को

आप्त्वा = प्राप्तहोकर
अमृतः = जन्म मरण
रहित
समभवत् = होताभया
समभवत् = होताभया

इति ऐतरेयारण्यकेषष्ठोऽध्यायः ॥

उपनिषत्सुतृतीयोध्यायः समाप्तः ओं तत्सत्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐतरेयोपनिषद्

शुद्धिपत्रिका

अशुद्धिः	शुद्धिः	मंत्र	मू.वा भा.	पृष्ठ
महदादिलो ककी	महदादिलो कोंकी	२	भा०	२
हैवन्न	हैवान्न	३	मू०	१६
संघकरकेहा	संघकरकेही	४	भा०	१८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी ऊपर लिख हुये के अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया और समझने की सुगमताके लिये गुरु शिष्य सम्बाद पूर्वक पूर्ण ज्ञान लखाया है ॥

मुंडकउपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत =)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—जिसमें वादी प्रतिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदुत्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का संभव व अग्निहोत्रादि क्रियाओंका बिधान मन्त्रों द्वारा बर्णित है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद्भाषाटीका सहित,क़ीमत।—)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीकासहित—जिस में तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होनेका उदाहरण और स्वरमात्रा व बर्णों के उच्चारणकी शिक्षाका नियम व बर्णों के संबन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मीकी कामनावाले पुरुषोंके अर्थ साधन जप और हवनादि की क्रियायें बर्णित हैं ॥

ऐतरेयोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत =)॥।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—जिसमें आत्मा व ब्रह्मका निरूपण और प्राण व प्रणवकी उपासना की व्याख्या व संन्यासादि आश्रमों के लक्षण व धर्म अच्छे प्रकार बर्णित हैं ॥

उपनिषद्सार, क़ीमत —)॥ पु०

मुंडक, मांडूक्य, तैत्तरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वर, ईशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, छांदोग्य,बृहदारण्यक, कौषीतकि, ब्राह्मण और मैत्री की भाषा टीका राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्दने रचनाकर अपने पुत्र पौत्र मित्र बान्धव योग्य अधिकारियों के निमित्त छपवायाहै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छान्दोग्य उपनिषद् भाषा टीका, क़ीमत॥=)

पंडित यमुनाशङ्करजी कृत टीका भाषा ॥

ब्राह्मधर्मदोखंड में ग़ैरमतबा, क़ीमत १) पु०

तथा प्रथमखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ॥=) पु०

तथा द्वितीयखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ।=) पु०

यह अत्युत्तम उपनिषद् है इसको पंडित लक्ष्मणप्रसादजी ने बंगाली भाषा से हिन्दी भाषा में उल्थाकिया है मूलश्लोक और भाषा टीका समेत है ॥

(वेदान्त)

योगवाशिष्ठ दोभागों में, क़ीमत ५॥) पु०

श्रीमद्भागवत भाषाटीकासंयुक्त ७) रु० पु० ॥

इस ग्रन्थ के उत्तम होनेमें कदापि सन्देह नहींहै—इसका भाषा तिलक ब्रजबोली में बहुतही प्याराहै आशय प्रत्येक श्लोकों का है क्यों न हो इस के तिलककार महात्मा ब्रजवासी अङ्गदजी शास्त्रीहैं—यह तिलक ऐसा सरलहै कि इसके द्वारा अल्प संस्कृतज्ञ पुरुषों का पूराकार्य निकल सक्ताहै—संस्कृत पाठकभी इससे श्लोकोंका पूराआशय समझ सक्तेहैं इसबार यह ग्रन्थ टैपके अक्षरों में उम्दा काग़ज़ सफ़ेद चिकना में छापागयाहै और विशेष विद्वान् शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध कराया गया है जिससे बम्बई की छपीहुई पुस्तकसे किसी काम में न्यून नहीं है उम्दा तसावीर भीप्रत्येक स्कन्धमें युक्तहैं—आशाहै कि इस अमूल्य रत्न के लेने में महाशय लोग विलम्ब न करेंगे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तैत्तरीयोपनिषद्

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशीभाषामें बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद ने पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशी की सहायतासे अनुवाद किया.

उसीको

श्रीमान् परमधार्मिक शुभगुणनिधान मुंशी प्रयागनारायणजी भार्गव ने सर्वलोकहितार्थ

दूसरी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से मुंशी नवलकिशोर सी.आई.ई., के यन्त्रालयमें मुद्रितकिया

सन् १९१४ ई० ॥

हक़ तसनीफ़ महफ़ूज़ है बहक़ इस आपेखाने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका।

वेदव्यासजी के शिष्य वैशंपायनऋषि के पास याज्ञवल्क्य आदिक विद्यार्थी ब्रह्मचर्य व्रतको धारण किये हुये यजुर्वेद का अध्ययन करते रहे तिस वैशंपायनऋषि को किसी एक निमित्त करके ब्रह्महत्या प्राप्त हुई उस हत्या के निवारणार्थ वैशंपायन ऋषि याज्ञवल्क्य से इतर अपने शिष्यों से नियमाचरण यानी प्रायश्चित्त कर्म करने को आज्ञा दिया तब याज्ञवल्क्य ने कहा कि हे भगवन्! यह व्रत अतिकठिन है इन दुर्बल बालक विद्यार्थियों से अशक्य है मैं परिपक्व और शरीर करके दृढ़हूं मैं अकेला ही इस कठिन व्रत को करके आपकी ब्रह्महत्या निवारण करने में समर्थ हूं ताते इस कठिन व्रत के करने की आज्ञा मुझको ही दीजिये इस प्रकार जब याज्ञवल्क्य ने अपने गुरु वैशंपायन से विनय किया तब वह ऋषि ब्रह्महत्या के वश होनेके कारण क्रोधित हो ऐसा कहता भया कि हे याज्ञवल्क्य! तू बड़ा गर्विष्ठ है अपने को श्रेष्ठ मानताहै और इन बेचारे ब्राह्मण के बालक विद्यार्थियों का अपमान करताहै अब तू मुझसे पढ़ी हुई विद्याको शीघ्र त्याग दे नहीं तो तुझको मैं मरणसंबंधी शाप दूंगा जब इस प्रकार वैशंपायनऋषि ने कहा तब शापके भयसे भयभीत हो याज्ञवल्क्य गजक्रिया के बलसे वमन करके अध्ययन कीहुई विद्याको त्यागता भया तब तिस त्यागी हुई विद्याको अन्य कई एक ब्राह्मणके बालक विद्यार्थियों ने तीतरका रूप धारण करके अपने गुरुकी आज्ञा से ग्रहण करलिया तभी से उस विद्या का नाम तैत्तिरीय विद्या पड़ा तिस तैत्तिरीय विद्या या शाखा का यह उपनिषद् भी तैत्तिरीयउपनिषद् करके विख्यातहै इस उपनिषद् बिषे गुरु शिष्य का संवाद है॥

ॐतत्सत् ॐतत्सत् ॐतत्सत्॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

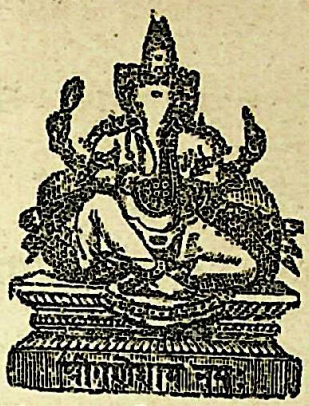

कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तरीयोपनिषद्.

अथ शिक्षाध्यायरूपा प्रथमावल्ली प्रारभ्यते.

मूलम् ॥

हरिः ॐ ॥ शंनोमित्रः शंवरुणः शंनोभवत्वर्यमा शंन इन्द्रो बृहस्पतिः शंनो विष्णुरुरुक्रमः नमोब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु अवतुमाम् अवतु वक्तारम् ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ १ ॥

इति प्रथमोऽनुवाकः ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

शम् नः मित्रः शम् वरुणः शम् नः भवतु अर्यमा शम् नः इन्द्रः बृहस्पतिः शम् नः विष्णुः उरुक्रमः नमः ब्रह्मणे नमः ते वायो त्वम् एव प्रत्यक्षम् ब्रह्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असि त्वाम् एव प्रत्यक्षम् ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं
वदिष्यामि सत्यम् वदिष्यामि तत् माम् अवतु त
वक्तारम् अवतु अवतु माम् अवतु वक्तारम् अ
शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ १ ॥

अन्वयः	पदार्थ
मित्रः=	प्राण और दिन अभिमानी देवता
नः=	हमको
शम्=	सुखकारी
भवतु=	होवैं
वरुणः=	अपान और रात्री अभिमानी देवता
नः=	हमको
शम्=	सुखकारी
भवतु=	होवैं
अर्यमा=	नेत्र और सूर्य अभिमानी देवता
नः=	हमको
शम्=	सुखकारी

अन्वयः	पदार्थ
भवतु=	होवैं
इन्द्रः=	बल अभिमानी देवता
नः=	हमको
शम्=	सुखकारी
भवतु=	होवैं
बृहस्पतिः=	वाणी और बुद्धि अभिमानी देवता
नः=	हमको
शम्=	सुखकारी
भवतु=	होवैं
उरुक्रमः=	बढ़ानेवाला है तीन पाद का जो राजबलि के यज्ञ बिषे ऐसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णुः=चरणोंका अभिमानी देवता
नः=हमको
शम्=सुखकारी
भवतु=होवैं
ब्रह्मणे=व्यापक है जो ऐसे उस ब्रह्म के लिये
नमः=नमस्कार है
वायो=हे वायुदेवता
ते=तेरे अर्थ याने तुझको
नमः=नमस्कार है
त्वम् एव=तूही
प्रत्यक्षम्=प्रत्यक्ष
ब्रह्म=ब्रह्म
असि=है
त्वाम्=तुझको
एव=ही
प्रत्यक्षम्=प्रत्यक्ष
ब्रह्म=ब्रह्म
वदिष्यामि=मैं कहूंगा
त्वाम्=तुझको
एव=ही
ऋतम्=निश्चयात्मक बुद्धि
वदिष्यामि=मैं कहूंगा
त्वाम्=तुझको
एव=ही
सत्यम्=सद्रूप
वदिष्यामि=मैं कहूंगा
तत्=वह वायुरूप ब्रह्म
माम्=मुझविद्यार्थी को
अवतु=रक्षा करै याने विद्या से युक्तकरै
तत्=वह वायुरूप ब्रह्म
वक्तारम्=आचार्य याने गुरुकी
अवतु=रक्षाकरै याने वक्तृत्वसामर्थ्य से युक्त करै
माम्=मुझको
अवतु=रक्षित करै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वक्तारम्=आचार्य्य को	शान्तिः=आधिभौतिक विघ्नों से शान्ति हो
अवतु=रक्षितकरै द्विवचनआदरार्थहै	
ॐशान्तिः=आध्यात्मिक विघ्नों से शान्ति हो	शान्तिः=आधिदैविक विघ्नों से शान्ति हो

भावार्थः ॥

मित्रइति ॥ प्राणवृत्ति का अभिमानी मित्रसंज्ञक देवता हम लोगों को सुखकारी हो, अपानवृत्ति का अभिमानी वरुणसंज्ञक देवता हमलोगों को सुखकारी हो, चक्षु का अभिमानी अर्य्यमासंज्ञक देवता हमलोगों को सुख का कारकहो, भुजा का अभिमानी इन्द्रसंज्ञक देवता हमको सुखकारक हो, बुद्धि का अभिमानी बृहस्पतिनामक देवता हमलोगों को सुखकारक हो, और चरणों का अभिमानी विष्णु देवता जिस ने राजा बलिके यज्ञ में अपने तीन पादों से तीनों लोकों को आच्छादन किया है हमको सुखकारी हो, हे सूत्रात्मा वायु! तेरेको मैं नमस्कार करताहूं, तूही प्राणरूप से सब शरीरों में स्थित है, तेरे इस रूपको भी नमस्कार है, तूही प्रत्यक्ष ब्रह्म है, तुझको मैं ब्रह्म कहूंगा, और शास्त्र के निश्चित अर्थके ग्रहण के लिये मैं तेरेही को निश्चयात्मक बुद्धि कहूंगा, तूही साररूप ब्रह्महै, समष्टिरूप सूत्रात्मा वायुहै, हेव्यष्टिरूप प्राणात्मक वायु ! तू मुझ विद्यार्थियों की रक्षा करै, और विद्या ग्रहण करने की सामर्थ्य को दे ब्रह्मरूप वायु मेरे गुरु वक्ता को वक्तृत्व शक्ति दे, मुझ को और मेरे आचार्य को रक्षा करै और जो आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविक तीन प्रकार के विघ्न हैं उनसे हम दोनों की शान्ति होवै ॥ १ ॥

इति प्रथमोऽनुवाकः ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

ॐ शिक्षां व्याख्यास्यामः वर्णः स्वरो मात्रा बलम् सामसन्तानः इत्युक्तःशिक्षाध्यायः शिक्षां पञ्च ॥ २ ॥

इति द्वितीयोऽनुवाकः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

शिक्षाम् व्याख्यास्यामः वर्णः स्वरः मात्राः बलम् साम सन्तानः इति उक्तः शिक्षाध्यायः ॥ २ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित भावार्थ
वर्णः=	अक्षर यानी अकारादिवर्ण	साम=	समता यानी वर्णोच्चार बिषे मध्यमता
स्वरः=	उदात्त अनुदात्त स्वरितयानेऊंचा नीचामध्यमस्वर से उच्चारणकरना	सन्तानः=	संहिता यानी शब्दों की सन्धि
मात्राः=	ह्रस्वादि यानी ह्रस्व दीर्घ प्लुत	इति=	यह
बलम्=	प्रयत्न यानी शब्दों के उच्चारणमें जो यत्नक रनापड़ताहै वह	शिक्षाध्यायः=	शिक्षाध्याय
		उक्तः=	कहागया है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिक्षाम्= इस शिक्षा को यानी वेदोच्चारण बिषे वर्ण स्वर आदिविवेक को | व्याख्या स्यामः = हम अच्छी कार कहेंगे

भावार्थः ॥

अथ शिक्षां व्याख्यास्यामः ।

शिक्षतेऽनयेति शिक्षा ॥ शिष्य के प्रति जिस करके शि कीजावे उसका नाम शिक्षाहै, अथवा शिष्य के प्रति वर्णादि के उच्चारण करने के उपदेश करने का नाम शिक्षा है, उ शिक्षा को हम व्याख्यान करेंगे, ॥ वर्णः ॥ अकार आदि वर्ण और उदात्त, अनुदात्त, स्वरितये स्वर हैं, इन्हीं स्वरों करके सं वर्णों का उच्चारण होता है,जिस स्वर करके वर्णका धीरे से उच्च रणकिया जाता है उसका नाम उदात्त है, जिस स्वर करके दू जोर से वर्ण का उच्चारण कियाजाता है उसका नाम अनुदा है, और जिस स्वर करके बहुत जोर से वर्ण का उच्चारण कि जाता है उसका नाम स्वरितहै, और जिनके मिलाने से वि ककारादिक वर्णों का उच्चारण न होसकै उसका नाम मात्रा सो अकार इकार उकारादिक हैं, इनके साथ जब ककार खक रादिक वर्ण मिलते हैं तभी उनका उच्चारण होता है, वि उनके मिलने से ककारादि वर्णों का उच्चारण नहीं होता जो अकार,इकार, उकारादि मात्रा हैं सो ह्रस्व दीर्घ और प्लु रूप से उच्चारण कियेजातेहैं, याने हरएक मात्रा इसप्रकार तीन भेदोंवाली होती है, और बलनाम प्रयत्न विशेष का है, एक वर्णों का स्थान होता है, दूसरा प्रयत्न होता है, जिस स्थान से वर्ण निकलता है, वह वर्ण का स्थान कहाजाता है, कोई वर्ण कण्ठस्थान से निकलता है, कोई तालवादि स्थानों से अका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ककार और विसर्ग इनका उच्चारण कण्ठसे होताहै, इसीलिये इन का कण्ठस्थान कहाजाता है, और ईकार चकार यकार शकार इनका उच्चारण तालु से होता है इसलिये इनका तालुस्थान कहाजाताहै, और स्पृष्ट,ईषत्स्पृष्ट,ईषद्विवृत,विवृत और संवृत ये प्रयत्न कहलाते हैं, जिस वर्ण के उच्चारण करने में जिन अवयवों का बल लगता है अर्थात् जिन अवयवों के प्रयत्न से जो वर्ण उच्चारण कियेजाते हैं, वे प्रयत्न उन्हीं वर्णों के कहलाते हैं सो दिखाते हैं, जिस वर्ण के उच्चारण करने में जिह्वा के अग्रभाग में और कण्ठादिक शरीर के अवयवों में पूर्णरूप से परस्पर स्पर्श होता है वह स्पृष्टप्रयत्न कहाजाता है, सो ककार से लेकर मकार पर्य्यन्त जितने वर्णहैं इनका स्पृष्टप्रयत्न है, इसी प्रकार और वर्णों के विषे भी जानलेना,विस्तार के भय से यहां नहीं लिखतेहैं, और वर्णों का मध्यम स्वर से उच्चारण करने का नाम साम है, अर्थात् अतिशीघ्रता और अतिविलम्बता को त्याग करके जितना उसके उच्चारण करने के काल का नियम है उतने काल में जो उसका उच्चारण करना है उसी का नाम साम है, और वर्णों का अव्यवधारता करके जो उच्चारण करना है उसका नाम सन्तान है, और वर्णोंकी शिक्षा होवै जिस अध्यायमें उस अध्यायका नाम शिक्षाध्याय है ॥ २ ॥

इति द्वितीयोऽनुवाकः ॥ २ ॥

मूलम् ॥

सहनौयशःसहनौब्रह्मवर्चसम् अथातःसंहिताया उपनिषदं व्याख्यास्यामः पञ्चस्वधिकरणेषुअधिलोकमधिज्योतिषमधिविद्यमधिप्रजमध्यात्मं ता महासंहिता इत्याचक्षते अथाधिलोकम् पृथिवी पूर्वरूपम् द्यौरुत्तररूपम् आकाशःसन्धिः (३)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायुःसन्धानम् इत्यधिलोकम् अथाधिज्योतिष
अग्निः पूर्वरूपम् आदित्य उत्तररूपम् आपः
न्धिः वैद्युतः सन्धानम् इत्यधिज्योतिषम् अथा
विद्यम् आचार्य्यःपूर्वरूपम् (४) अन्तेवास्युत्त
रूपम् विद्यासन्धिःप्रवचनं सन्धानम् इत्यधि
द्यम् अथाधिप्रजम् मातापूर्वरूपम् पितोत्तररूप
प्रजासन्धिः प्रजननंसन्धानम् इत्यधिप्रजम् (५)
अथाध्यात्मम् अधराहनुः पूर्वरूपम् उत्तराहनुरुत्त
रूपम् वाक्सन्धिः जिह्वासंधानम् इत्यध्यात्म
इति महासंहिताः यएवमेतामहासंहिता व्याख्या
तावेदसंधीयते प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्ये
स्वर्गेणलोकेनसन्धिराचार्य्यः पूर्वरूपमित्यधिप्रज
लोकेन ॥ ६ ॥

इति तृतीयोऽनुवाकः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

सह नौ यशः सह नौ ब्रह्मवर्चसम् अथातः संहि
तायाः उपनिषदम् व्याख्यास्यामः पञ्चसु अधिक
रणेषु अधिलोकम् अधिज्योतिषम् अधिविद्यम् अ
धिप्रजम् अध्यात्मम् ताः महासंहिताः इति आचक्षते
अथ अधिलोकम् पृथिवी पूर्वरूपम् द्यौः उत्तररूपम्
आकाशः सन्धिः वायुः सन्धानम् इति अधिलोकम्
अथ अधिज्योतिषम् अग्निः पूर्वरूपम् आदित्यः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तररूपम् आपः सन्धिः वैद्युतः सन्धानम् इति अधिज्योतिषम् अथ अधिविद्यम् आचार्य्यः पूर्वरूपम् अन्तेवासी उत्तररूपम् विद्यासन्धिः प्रवचनम् सन्धानम् इति अधिविद्यम् अथ अधिप्रजम् माता पूर्वरूपम् पिता उत्तररूपम् प्रजा सन्धिः प्रजननम् सन्धानम् इति अधिप्रजम् अथ अध्यात्मम् अधरा हनुः पूर्व्वरूपम् उत्तराहनुः उत्तररूपम् वाक् सन्धिः जिह्वा सन्धानम् इति अध्यात्मम् इति अध्यातमम् इमाः महासंहिताः यः एवम् एताः महासंहिताः व्याख्याताः वेद सन्धीयते प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन अन्नाद्येन स्वर्गेण लोकेन ॥ ३ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
नौ	हम दोनों यानी गुरु शिष्य को	संहिता याः	वेद की
सह	साथही	उपनिषदम्	उपासना को
यशः	यश	पञ्चसु	पांच
अस्तु	होवै	अधिकरणेषु	ज्ञानाश्रयों में
नौ	हम दोनों को	व्याख्यास्यामः	हम व्याख्यान करैंगे
सह	साथही	अधिलोकम्	लोकसम्बन्धी उपासना
ब्रह्मवर्चसम्	ब्रह्मतेज		
भवतु	होवै		
अथातः	अब		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिज्यो तिषम् = ज्योतिसम्बन्धीउपासना
अधिवि द्यम् = विद्यासम्बन्धीउपासना
अधिप्र जम् = प्रजासम्बन्धीउपासना
अध्या त्मम् = आत्मसम्बन्धीउपासना
ताः = इन पांचज्ञान सम्बन्धीउपासनाओं को
महासं हिताः = महासंहिता
इति = करके
आचार्यः = आचार्यलोग
आचक्षते = कहते हैं
अथ = अब
अधिलो कम् = लोकआश्रय उपासनाको
कथयामः = हम कहते हैं
पृथिवी = पृथिवी
पूर्वरूपम् = पूर्वरूप है
द्यौः = स्वर्ग
उत्तररू पम् = उत्तररूप
आकाशः = आकाश
सन्धिः = सन्धि है
वायुः = वायु
सन्धानम् = दोनोंकाजि लानेवाला
इति = इसप्रकार
अधिलो कम् = अधिलोक उपासनाहै
अथ = अब
अधिज्यो तिषम् = ज्योतिष विषयक
कथयामः = उपासना को कहते
अग्निः = अग्नि
पूर्वरूपम् = पूर्वरूप है
आदित्यः = सूर्य
उत्तर रूपम् = उत्तररूपहै
आपः = जल
सन्धिः = सन्धि है
वैद्युतः = बिजुली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन्धानम्=दोनोंको मिलानेवाली है
इति=इसप्रकार
अधिज्यो तिषम्=ज्योति उपासना है
अथ=अब
अधिविद्यम्=विद्याश्रय उपासना को
कथयामः=कहते हैं
आचार्य्यः=आचार्य्य
पूर्वरूपम्=पूर्वरूप है
अन्तेवासी=शिष्य
उत्तररूपम्=उत्तररूप है
विद्या = विद्या
सन्धिः= सन्धि है
प्रवचनम्=वेद शास्त्र का कथन
सन्धानम्=मिलाने वाला है
इति = इसप्रकार
अधिविद्यम्=विद्योपासनाहै
अथ = अब
अधिप्रजम्=प्रजाविषयक उपासना को
कथयामः = कहते हैं
माता = माता
पूर्वरूपम् = पूर्वरूप है
पिता = पिता
उत्तररूपम् = उत्तररूपहै
प्रजा = सन्तति
सन्धिः =सन्धि है
प्रजननम्=ऋतुकाल में स्वभार्य्या को गर्भदान देना
सन्धानम्=सन्धान है यानेमिलानेवाला है
इति = इसप्रकार
अधिप्रजम्=प्रजाश्रय उपासना है
अथाध्यात्मम्=अब आत्मसम्बन्धी उपासना को
कथयामः=कहते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधराहनुः=नीचेका ओठ
पूर्वरूपम्=पूर्वरूप है
उत्तराहनुः=ऊपरका ओठ
उत्तररूपम्=उत्तररूप है
वाक्सन्धिः=वाणी सन्धि है
जिह्वा=जिह्वा
सन्धानम्=मिलानेवाली है
इति=इस प्रकार
अध्यात्मम्=आत्माश्रय उपासना है
इति=ऐसी
इमाः=ये पांच उपासना
महासंहिताः=महासंहिताकरके कहीगई हैं
यः=जो
एवम्=इसप्रकार
एताः=इन
व्याख्याताः=कहीहुई
महासंहिताः=महासंहिताओं
वेद=उपासना करता
सः=वह
प्रजया=सन्ततिकरके
पशुभिः=पशुओं करके
ब्रह्मवर्चसेन=ब्रह्मतेज करके
अन्नाद्येन=अन्न धन करके
स्वर्गेण=स्वर्ग
लोकेन=लोक करके
सन्धीयते=युक्त होता

भावार्थः ॥

शिक्षामिति ॥ पूर्वोक्त शान्तिपाठ के करने से जो विघ्नों शान्ति होती है उसकी प्रार्थना कीगई है, अब विद्या और क्रि फलकी उत्कर्षता के लिये शिष्य प्रार्थना करता है, हमारी गुरु आचार्य्य की उपासना करके जगत् में कीर्ति हो, और दोनों के मुखकी कान्ति ब्रह्मतेज करकेहो ॥ अब संहिताविष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपासना को कहते हैं ॥ अथेति ॥ जो वर्णवेदकी उपासना पांच प्रकारकी है उसी को अब हम कहते हैं ॥ पृथिवी आदिक लोकों को ध्येयरूप करके देखना जिससे चित्त की एकाग्रता होती है वह (१) अधिलोकसम्बन्धी उपासना है ॥ चित्तकी एकाग्रता के लिये जो अग्नि सूर्य्य चन्द्रमा आदिकी ज्योतियों का ध्यान करना है वह ज्योतिसम्बन्धी (२) उपासना है ॥ विद्या की प्राप्ति के लिये जो आचार्य्य का ध्यानकरना है वह विद्यासम्बन्धी (३) उपासनाहै ॥ माता पिता का जो चिन्तन करना या ध्यान करनाहै वह प्रजासम्बन्धी (४) उपासनाहै ॥ आत्मा शब्द देह का भी वाचक है, देह के अवयवों के विषय में जो ध्यान करना है वह (५) अध्यात्मसम्बन्धी उपासना है ॥ यह उपासना पांच विषयोंवाली महासंहिता याने महोपनिषद् कही जाती है ॥ संहिता के विषय जो लोकहैं वह बड़े २ हैं इसी वास्ते संहिता को भी वेद के वेत्ता महासंहिता कहते हैं और अधिलोकादि पांच संहिता के पांचअवयव हैं, सब से पहले अधिलोक है, इसलिये प्रथम अधिलोक की उपासना को कहते हैं ॥ उपासनामें चार भाग रक्खे हैं (१) पूर्व (२) उत्तर (३) सन्धि (४) सन्धान, इनका ध्यान एक दूसरे के बाद करना चाहिये संहिता का पूर्वरूप याने पूर्वभाग पृथिवी है, याने पहिले पृथिवी में दृष्टि करै और कोई लोक पृथिवी शब्दकरके पृथिवी अभिमानी देवताओं का ग्रहणकरते हैं, उन के मत में पृथिवी अभिमानी देवता में दृष्टि करनी कही है, क्योंकि जड़की उपासना को वह नहीं मानते हैं, और संहिता के उत्तरभाग में याने बाद को स्वर्गलोक का ध्यानकरै, और संहिता के पूर्वोत्तर भागों की जो संधि याने मध्य देश है उसमें अन्तरिक्ष लोक की दृष्टि करै, संहिता के पूर्वोत्तर भागों का चिन्तन कियाजावे जिस करके उसका नाम सन्धान है, वही पूर्व और उत्तरभागों को मिलाता है, स्वर्ग और पृथिवी का मिलानेवाला वायु है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसका ध्यान सब के पीछे करना चाहिये, इसप्रकार संहिता
अधिलोक विषयक उपासना कही है, अब अधिज्योति विषय
उपासना को कहते हैं महासंहिता का पूर्वभाग अग्नि है, यह
पहिले अग्नि का ध्यान करै, और फिर आदित्य याने सूर्य का
उत्तरभाग है ध्यान करै, और फिर दोनों भागोंकी सन्धिरूप
जल है उस जल का ध्यान करै उनदोनोंको मिलानेवाली विद्यु
सन्धानहै उसका ध्यानकरै, यह अधिज्योति विषयक उपासन
है अब विद्या विषयक उपासना को कहते हैं ॥ आचार्य्य पू
रूप है, अर्थात् प्रथम आचार्य्य का ध्यान करै, और शिष्य
संहिता का उत्तररूप है, इसलिये महासंहिता के उत्तरभाग
शिष्य दृष्टि करै, और विद्या का प्रतिपादक जो ग्रन्थ है क
सन्धि है, दोनों भागों की सन्धि में विद्या का ध्यान करै।
और ग्रन्थ का जो अध्ययन है वह सन्धान स्वरूप है, उस
भी शिष्य ध्यान करै यह विद्या विषयक उपासना है ॥ ३ ॥

इति तृतीयोऽनुवाकः ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

यश्छन्दसामृषभोविश्वरूपः छन्दोभ्योऽध्य
तात्सम्बभूवसमेन्द्रोमेधयास्पृणोतु अमृतस्यदे
धारणोभूयासम् शरीरंमेविचर्षणम् जिह्वामेमधुम
त्तमाकर्णाभ्याम् भूरीविश्रुवम् ब्राह्मणःकोशोऽसि
मेधयापिहितःश्रुतं मे गोपाय आवहन्ति वितन्वान
(७) कुर्वाणाचिरमात्मनःवासांसिममगावश
अन्नपानेचसर्वदा ततोमेश्रियमावह लोमशांपशुभि
सहस्वाहा आमायन्तु ब्रह्मचारिणःस्वाहा विमायन्तु
ब्रह्मचारिणः स्वाहा प्रमायन्तु ब्रह्मचारिणःस्वाहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दमायन्तुब्रह्मचारिणःस्वाहा शमायन्तुब्रह्मचारिणः स्वाहा (८) यशोजनेऽसानिस्वाहा श्रेयान् वस्य सोऽसानिस्वाहातंत्वा भगप्रविशानिस्वाहासमाभग प्रविशस्वाहातस्मिंस्तुसहस्रशाखे निभगाहंत्वयिमृ जेस्वाहा यथाऽऽपःप्रवतायन्ति यथामासाअहर्ज रम्एवंमांब्रह्मचारिणोधातरायन्तुसर्वतःस्वाहाप्रतिवे शोसिप्रमाभाहिप्रमापद्यस्व ॥ ९ ॥

इति चतुर्थानुवाकः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

यः छन्दसाम् ऋषभः विश्वरूपः छन्दोभ्यः अधि अमृतात् सम्बभूव सः मा इन्द्रः मेधया स्पृणोतु अमृतस्य देव धारणः भूयासम् शरीरम् मे विच र्षणम् जिह्वा मे मधुमत्तमा कर्णाभ्याम् भूरिविश्रु वम् ब्रह्मणः कोशः असि मेधया अपिहितः श्रुतम् मे गोपाय आवहन्ती वितन्वाना कुर्वाणा अचिरम् आत्मनः वासांसि मम गावः च अन्नपाने च सर्वदा ततः मे श्रियम् आवह लोमशाम् पशुभिः सह स्वाहा आमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा विमायन्तु ब्रह्मचा रिणः स्वाहा प्रमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा दमा यन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा शमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा यशः जने असानि स्वाहा श्रेयान् वस्यसः असानि स्वाहा तम् त्वा भग प्रविशानि स्वाहा सः मा भग प्रविश स्वाहा तस्मिन् सहस्रशाखे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नि भग अहम् त्वयि मृजे स्वाहा यथा आप
प्रवतायन्ति यथा मासाः अहर्जरम् एवम् मा
ब्रह्मचारिणः धातः आयन्तु सर्वतः स्वाहा प्रतिवेश
असि प्रमाभाहि प्रमा पद्यस्व ॥ ४ ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	जो प्रणव
छन्दसाम्	वेदों बिषे
ऋषभः	श्रेष्ठ
च	और
विश्वरूपः	सर्ववाणीरूप
अस्ति	है
च	और
यः	जो
अभिअमृतात्	अमृतरूप
छन्दोभ्यः	वेदों से
सम्बभूव	उत्पन्न भया है
सः	वह प्रणव
इन्द्रः	सर्व्वकामना का स्वामी ईश्वर
मा	मुझको
मेधया	प्रज्ञा करके
स्पृणोतु	बलवान् करै

अन्वयः	पदार्थ
देव	हे देव !
अमृतस्य	ब्रह्मज्ञान का
धारणः	धारण करनेवाला
भूयासम्	होऊं मैं
मे	मेरा
शरीरम्	देह
विचर्षणम्	ब्रह्मज्ञानधारणयोग्य
भूयात्	होवै
मे	मेरी
जिह्वा	जिह्वा
मधुमत्तमा	अत्यन्तमधुर भाषण करनेवाली
भूयात्	होवै
अहम्	मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्णाभ्याम्={दोनों कर्णों करके
भूरि=बहुत
विश्रुवम्=सुननेवाला
भूयासम्=होऊं
त्वम्=तू
मेधया={लौकिकबुद्धि करके
अपिहितः=ढकाहुआ
ब्रह्मणः=परब्रह्मका
कोशः=कोश
असि=है
मे=मेरे
श्रुतम्={सुनेहुये आत्मज्ञानको
गोपाय=तू रक्षाकर
या=जो
श्रीः=श्री
अचिरं कुर्वाणा={जल्दीकरती हुईयानीशीघ्र
मम=मेरे
आत्मनः=शरीरकेलिये
वासांसि=वस्त्रों को
च=और
गावः=गौवों को
च=और
अन्नपाने=खानपानको
च=और
लोमशाम्={बालवालीधनयानीअज अवि बकरी भेड़ी इत्यादिकों को
पशुभिः={अश्वआदि पशुवों
सह=सहित
आवहन्ती={सब ओर से लातीहुई
च=और
वितन्वाना={विस्तार करतीहुई यानेबढ़ाती हुई
भवति=होती है
तत्=सो
हे इन्द्र=अहोप्रणव !
ततः={बुद्धिव्याप्तिके पश्चात्
त्वम्=तू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मे=मेरे अर्थ
एवम्=ऐसी
श्रियम्=यागादिसम्पर्थ लक्ष्मी को
आवह=प्राप्तकर
अतः=इसलिये
ते=तेरे अर्थ
स्वाहा=यहहविर्दानहै
च=और
ब्रह्मचारिणः=ब्रह्मचारी लोक
मा=मेरेपास
आयन्तु=आवैं
अतः=इसलिये
ते=तेरे अर्थ
स्वाहा=यहहविर्दानहै
ब्रह्मचारिणः=ब्रह्मचारी
मा=न
वियन्तु=चलेजावैं
अतः=इसलिये
ते=तेरे अर्थ
स्वाहा=यहहविर्दानहै
ब्रह्मचारिणः=ब्रह्मचारी
विद्यां=विद्या को
प्रमायन्तु=प्राप्तहोवैं
अतः=इसलिये
ते=तेरे अर्थ
स्वाहा=यहहविर्दा
ब्रह्मचारिणः=ब्रह्मचारी
दमायन्तु=दमनको तहोवैं इन्द्रियों निग्रहक
अतः=इसलिये
ते=तेरे अर्थ
स्वाहा=यहहविर्दा
ब्रह्मचारिणः=ब्रह्मचारी
शमायन्तु=शान्ति प्राप्तहोवैं
अतः=इसलिये
ते=तेरे अर्थ
स्वाहा=यहहविर्दा
च=और
अहम्=मैं
जने=लोकविषे
यशः=यशस्वी
असानि=होऊं
अतः=इसलिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते=तेरे अर्थ
स्वाहा=यहहविर्दान है
वस्यसः=और धनवा-
नूसे भी
श्रेयान्=श्रेष्ठ
असानि=मैं होऊं
अतः=इसलिये
ते=तेरे अर्थ
स्वाहा=यह हविर्दान
है
भग=हे प्रणवरूप
भगवन् !
तम्=तिस
त्वाम्=तुझ बिषे
प्रविशानि=मैं प्रवेशकरूं
अतः=इसलिये
ते=तेरे अर्थ
स्वाहा=यहहविर्दानहै
भग=हे ॐकाररूप
भगवन् !
सः=सो
त्वम्=तू
मा=मुझ बिषे
प्रविश=प्रवेशकर
अतः=इसलिये
ते=तेरे अर्थ
स्वाहा=यह हविर्दा-
नहै
भग=अहोभगवन्!
सहस्रशाखे=बहुभेदवाले
तस्मिन्=तिस
त्वयि=तेरे बिषे
अहम्=मैं
पापकृत्याम्=अपने पाप
कर्मको
निमृजे=शोधनकरूं
अतः=इसलिये
ते=तेरे अर्थ
स्वाहा=यह हविर्दानहै
धातः=हेसर्वविधाता !
हेजगत्कर्त्ता !
यथा=जैसे
आपः=जल
प्रवता=ढालवाले दे-
शकरके
यन्ति=बहतेहैं
च=और
यथा=जैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मासाः=चैत्रादिमास
अहर्जरम्=संवत्सर को यानेवर्षको
यन्ति=प्राप्त होते हैं
एवम्=इसीप्रकार
ब्रह्मचारिणः=ब्रह्मचारीलोक
माम्=मुझप्रतियाने मेरे पास
सर्वतः=सब ओरसे
आयन्तु=आवैं
अतः=इसलिये
ते=तेरेअर्थ
स्वाहा=यह हविर्दानहै
यतः=चूंकि

त्वम्=तू
प्रतिवेशः=उपासकों पापओं खके दूर नेकास्था
तस्मात्=इस लिये
त्वम्=तू
मा=मुझ उपास के प्रति
प्रभाहि=प्रकाशहो
च=और
माम्=मुझे
प्रपद्यस्व=आत्मभाव को प्राप्तकर

भावार्थः ॥

यश्छन्दसामिति ॥ जो पुरुष बुद्धिहीन है उसको सुनाहुआ भ का अर्थ विस्मरण होजाता है इसलिये उसकी बुद्धि में ब्रह्मवि का उदय होना असम्भव है उसको शुद्धबुद्धिकी प्राप्ति के लि प्रणवकी उपासना करनी कही है सो दिखाते हैं ॥ यः ॥ ॐ वेदों में श्रेष्ठ है और अमृतरूप है सो मुझ उपासक की बुद्धि स्पर्शकरै अर्थात् मेरी बुद्धिमें विद्या के ग्रहण करने की सामर्थ्य देवै ताकि मैं ब्रह्मज्ञानका धारण करनेवाला होऊं और मे देह ब्रह्मज्ञान के धारण करने योग्य होवै और मेरी जिह्वा म भाषण करनेवाली हो हे प्रणवदेव ! तू विश्वरूप है अर्थात् सम्प जगत् तेराही रूप है और तू वाणियों का अन्तर्भाव होने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्पूर्ण वाणीरूप भी है तू इन्द्र है याने परमेश्वरहै हे दीप्तिमन्, प्रणव! मोक्ष का साधनभूत जो ज्ञान है उसका मैं धारण करने वाला होजाऊं और मेरा जो शरीर है सो रोगोंसे रहितहो और मेरी जिह्वा अतिशय करके मधुर भाषण करनेवाली हो और मेरे कानों में वेद के श्रवण करने की सामर्थ्यहो हे प्रणव ! ब्रह्म परमात्मा का तू कोश है याने परमात्मा की उपलब्धि का तू स्थान है और अलौकिक प्रज्ञा करके तू आच्छादित है इस लिये सामान्य बुद्धिवाले तुझ को नहीं जानसक्ते हैं विशेष बुद्धिवाले ही पुरुष तुझ को जानसक्ते हैं मेरे श्रवण किये हुये आत्मज्ञान की तुम रक्षा करो॥ आवहन्तीति ॥ बुद्धि की प्राप्तिकी कामनावाला जो पुरुष है उसके श्री की प्राप्ति के लिये होममन्त्रों को अब लिखते हैं ॥ आवहन्तीति ॥ हे प्रणव ! हे परमेश्वर ! जो श्री मुझ उपासकके लिये वस्त्र बकरी गौवें और अन्न पानादिक को शीघ्र प्राप्त करती है और प्राप्त हुओं को विस्तार करती है तिसी को मेरे प्रति तुम प्राप्तकरो हे प्रणव ! बुद्धिकी प्राप्ति के पश्चात् तू मेरे अर्थ योगादि के लिये लक्ष्मी प्राप्तकर इसी लिये यह हविर्दान है और ब्रह्मचारीलोग शान्तचित्त होते हुये मेरे पास आवैं और चले न जावैं इसलिये यह हविर्दान तेरेप्रति है और लोक में यश को प्राप्त होऊं और धनवान् होऊं या उससे भी अतिश्रेष्ठ होऊं इसलिये यह हविर्दान तेरे अर्थ है हे प्रणवरूप, परमात्मन् ! मैं तेरे में और तू मेरे में प्रवेश करै और तेरे स्पर्श से मेरे सब पाप नाशहोजावैं इसलिये यह हविर्दान तेरे वास्ते है ॥ यथेति ॥ जैसे जलरूपी नदियां नीचे के देशमें गमन करतीहैं और जैसे चैत्रादिक मास दिनों के सहित संवत्सरके अन्तर्भूत होजाते हैं तैसे हे सम्पूर्ण जगत् के कर्त्ता ! मुझ आचार्य को ब्रह्मचारी शिष्य चारो दिशाओं से प्राप्तहों याने मेरे गृह में प्रवेश करैं इसलिये तेरे अर्थ यह हविर्दान है हे प्रणवदेव ! तू उपासकों के पाप व दुःख दूर करने का स्थान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है इसलिये मेरी प्रार्थना है कि तू मुझ उपासकके प्रति प्रकाश मानहो और मुझे आत्मभाव को प्राप्तकर ॥ ७ । ८ । ९ ॥

इति चतुर्थोऽनुवाकः ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

भूर्भुवः स्वरिति वा एतास्तिस्रो व्याहृतय तासामुहस्मैतां चतुर्थीं महाचमस्यः प्रवेदयते म इति तद्ब्रह्म स आत्माऽङ्गान्यन्यादेवताः भूरिति अयंलोकः भुव इत्यन्तरिक्षम् स्व इत्यसौलोकः॥ १० मह इत्यादित्यः आदित्येन वाव सर्वेलोकामही न्तेभूरितिवाअग्निः भुवइतिवायुः स्वरित्यादित्य मह इतिचन्द्रमाः चन्द्रमसा वावसर्वाणिज्योतीं महीयन्ते भूरितिवा ऋचः भुवइतिसामानि स्व तियजूंषि ॥ ११ ॥ महइतिब्रह्म ब्रह्मणावावसर्वेवेद महीयन्ते भूरितिवैप्राणः भुवइत्यपानः स्वरि व्यानः मह इत्यन्नम् अन्नेनवावसर्वे प्राणामही न्तेतावाएताश्चतस्रश्चतुर्द्धा चतस्रोऽव्याहृतयःता वेद सवेद ब्रह्म सर्वेऽस्मैदेवाबलिमावहन्तिअसौ कोयजूंऽषिवेदद्वेच ॥ १२ ॥

इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

भूः भुवः स्वः इति वै एताः तिस्रः व्याहृतयः तासा उ ह स्म एताम् चतुर्थीम् महाचमस्यः प्रवेदयते म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति तत् ब्रह्म सः आत्मा अङ्गानि अन्याः देवताः भूः इति वै अयम् लोकः भुवः इति अन्तरिक्षम् स्वः इति असौ लोकः महः इति आदित्यः आदित्येन वाव सर्वे लोकाः महीयन्ते भूः इति वै अग्निः भुवः इति वायुः स्वः इति आदित्यः महः इति चन्द्रमाः चन्द्रमसा वाव सर्वाणि ज्योतींषि महीयन्ते भूः इति वै ऋचः भुवः इति सामानि स्वः इति यजूंषि महः इति ब्रह्म ब्रह्मणा वाव सर्वे वेदाः महीयन्ते भूः इति वै प्राणः भुवः इति अपानः स्वः इति व्यानः महः इति अन्नम् अन्नेन वाव सर्वे प्राणाः महीयन्ते ताः वै एताः चतस्रः चतुर्धा चतस्रः व्याहृतयः ताः यः वेद सः वेद ब्रह्म सर्वे अस्मै देवाः बलिम् आवहन्ति असौ लोकः यजूंषि वेद द्वे च ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
भूः	भूः	इयम्	यह
भुवः	भुवः	चतुर्थी	चौथी
स्वः	स्वः	व्याहृतिः	व्याहृति
इति	इसप्रकार	महः इति	महःकरके प्रसिद्ध है
एताः	ये	एताम्	इस
तिस्रः	तीन	चतुर्थी	चौथी
व्याहृतयः	व्याहृति	महः	महः
वै	प्रसिद्ध हैं	इति	व्याहृतिको
तासाम्	उनतीनों की		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाचमस्यः=महाचमस्यनामकऋषि
उहस्म=अच्छीप्रकार
प्रवेदयते=जानताभया
तत्=वह व्याहति
ब्रह्म=ब्रह्मरूप है
सः=वह महःरूप ब्रह्म
आत्मा=देवलोकवेदादिका शरीरभूत है
अन्याः=और
देवताः=देवलोकवेदादि
तस्य=उसमहर्ब्रह्मके
अङ्गानि=अवयवभूत हैं
अयम्=यहमनुष्य
लोकः=लोक
भूः=भूः
इति=करके
वै=प्रसिद्धहै
भुवः=भुवः
इति=करके
अन्तरिक्षम्=अन्तरिक्षलोक
वै=प्रसिद्ध है
स्वः=स्वः
इति=करके
असौ=स्वर्ग
लोकः=लोक
वै=प्रसिद्धहै
महः=महः
इति=करके
आदित्यः=सूर्यलोक
वै=प्रसिद्ध है
आदित्येन=सूर्यसे
वाव=ही
सर्वे=सब
लोकाः=भूरादिलोक
महीयन्ते=वृद्धिकोप्राप्त होते हैं
अग्निः=अग्निदेवता
भूः=भूः
इति=करके
वै=प्रसिद्ध है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायुः=वायु देवता
भुवः=भुवः
इति=करके
वै=प्रसिद्ध है
आदित्यः=सूर्यदेवता
महः=महः
इति=करके
वै=प्रसिद्ध है
चन्द्रमाः=चन्द्रमादेवता
स्वः=स्वः
इति=करके
वै=प्रसिद्ध है
वाव=निश्चयकरके
सर्वाणि=ये सब
ज्योतींषि=ज्योतिर्लोक
चन्द्रमाः=चन्द्रमाकरके
महीयन्ते=वृद्धिको प्राप्त
होते हैं
ऋचः=ऋग्वेद
भूः=भूः
इति=करके
वै=प्रसिद्ध है
सामानि=सामवेद
भुवः=भुवः
इति=करके
वै=प्रसिद्ध है
यजूंषि=यजुर्वेद
स्वः=स्वः
इति=करके
वै=प्रसिद्ध है
ब्रह्म=प्रणव
महः=महः
इति=करकेप्रसिद्धहैं
ब्रह्मणा=प्रणवसे
वाव=ही
सर्वे=सब
वेदाः=वेद
महीयन्ते=वृद्धिको प्राप्त
होते हैं
प्राणः=प्राणवायु
भूः=भूः
इति=करके
वै=प्रसिद्ध है
अपानः=अपानवायु
भुवः=भुवः
इति=करके
वै=प्रसिद्ध है
व्यानः=व्यानवायु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वः=स्वः
इति=करके
वै=प्रसिद्ध है
अन्नम्=अन्न
महः=महः
इति=करके
वै=प्रसिद्ध है
अन्नेन=अन्नसे
वाव=ही
सर्वे=सब
प्राणाः=प्राणभूतजीव
महीयन्ते=वृद्धिको प्राप्त होते हैं
वै=निश्चयकरके
ताः=वे
एताः=ये
चतस्रः=चार
व्याहृतयः=व्याहृतियां
चतस्रः=प्रत्येक चार चार होके

चतुर्धा=चारप्रकार की
भवन्ति=होती हैं
यः=जो
ताः=पूर्वोक्तव्याहृतियों को
वेद=जानता है
सः=सो
ब्रह्म=ब्रह्मको
वेद=जानता है
अस्मै=इसब्रह्मवेत्ताके अर्थ
देवाः=अंगभूत देवता
बलिम्=भागधा यानी राजको
आवहन्ति=सब तरफ़ लाते हैं

भावार्थः ॥

भूर्भुवः स्व रिति ॥ भू र्भुवःस्वः इसप्रकार ये तीन व्याहृतियां हैं, उन तीन व्याहृतियों से पृथक् एक महाव्याहृति महाचमस्य आचार्य इसको भलीप्रकार जानते थे, वह ब्रह्म वही देवलोक और वेदादि का शरीरहै, और जितने देवता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोक अथवा प्राण हैं वे सब इस महाव्याहृति के ही अंग हैं, इसी को दिखाते हैं, भूःरूप यह मनुष्यलोक है अर्थात् यह जो प्रत्यक्ष का विषय पृथ्वीलोक है उसी का नाम भूः है, और भुवः करके अन्तरिक्षलोक है, और स्वः करके स्वर्गलोक है, और महः करके सूर्यलोक है, सूर्य करके ही पृथ्वीलोक, अन्तरिक्षलोक, और स्वर्गलोक प्रकाशित होते हैं, इसी वास्ते इस महःव्याहृति को आदित्यरूप कहते हैं, भूःव्याहृति अग्निरूप है, इसमें अग्निदेवता की दृष्टि को करै, भुवःव्याहृति वायुरूप है, इस में वायुदेवता की दृष्टि को करै, और स्वःव्याहृति सूर्यरूप है, इस में सूर्यदेवता की दृष्टि को करै, और महःव्याहृति चन्द्रमारूप है, इस में चन्द्रदेवता की दृष्टि को करै, यह सम्पूर्ण ज्योतिर्लोक चन्द्रमा करके वृद्धिको प्राप्त होते हैं ॥ भूरितीति ॥ अब उन्हीं व्याहृतियों में वेददृष्टि को विधान करते हैं ॥ ऋग्वेद में भूः दृष्टि करै, साम में भुवः दृष्टि करै, यजुर्वेद में स्वः दृष्टि करै और ब्रह्म में महः दृष्टि करै, याने ॐकार दृष्टि करै अर्थात् भूः को ऋग्वेद करके जानै, भुवःको सामवेद करके जानै, स्वःको यजुर्वेद करके जानै, और महःको ब्रह्मरूप या ॐकाररूप करके जानै, उन्हीं व्याहृतियों में अब प्राणादि दृष्टियों के विधान को करते हैं ॥ भूरिति ॥ भूःव्याहृति प्राणरूप है, अर्थात् भूः में उपासक प्राणदृष्टि को करै, भुवः में अपानदृष्टि को करै, स्वः में व्यानदृष्टि को करै, और महः में अन्नदृष्टिको करै, क्योंकि अन्न के भोजन करनेसेही सम्पूर्ण प्राण अपानादि तृप्ति को प्राप्त होते हैं, विना अन्न के प्राण अपानादिक सूखजाते हैं ॥ ताइति ॥ भूः, भुवः, स्वः, महः ये जो चार व्याहृतियां हैं, इनमें से एक २ व्याहृति चार २ प्रकार की होनेसे षोड़श भेद इनके बनजाते हैं, इन्हीं सोलहो का नाम षोड़श कला भी है, इन्हीं के सम्बन्धसे पुरुष जीवात्मा भी षोड़श कलावाला कहाजाता है, वह जो व्याहृतियों की उपासना को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता है और उनकी उपासना को जानता है वह ब्रह्मको जानता है, और ब्रह्म को ही प्राप्त होताहै, उस उपासकके सम्पूर्ण देवता बलि को प्राप्त करते हैं ॥ १० । ११ । १२ ॥

इति पञ्चमोनुवाकः ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

सय एषोन्तर्हृदयआकाशः तस्मिन्नयं पुरु नोमयः अमृतो हिरण्मयः अन्तरेण तालुके य स्तनइवावलम्बते सेन्द्रयोनिः यत्रासौ केशान्तो र्तते व्यपोह्य शीर्षकपाले भूरित्यग्नौ प्रतितिष्ठति इति वायौ ॥ १३ ॥ स्वरित्यादित्ये मह इति ब्रह्म आप्नोति स्वाराज्यम् आप्नोति मनसस्पतिम् वा तिश्चक्षुष्पतिः श्रोत्रपतिर्विज्ञानपतिः एतत्तदोभ आकाशशरीरंब्रह्म सत्यात्मप्राणारामं मन आन शान्तिसमृद्धममृतं इति प्राचीनयोग्योपास्व यावमृतमेकंच ॥ १४ ॥

इति षष्ठोनुवाकः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

सः यः एषः अन्तर्हृदये आकाशः तस्मिन् अ पुरुषः मनोमयः अमृतः हिरण्मयः अन्तरेण लुके यः एषः स्तनः इव अवलम्बते सा इन्द्रयो यत्र असौ केशान्तः विवर्तते व्यपोह्य शीर्षकप भूः इति अग्नौ प्रतितिष्ठति भुवः इति वायौ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति आदित्ये महः इति ब्रह्मणि आप्नोति स्वाराज्यम् आप्नोति मनसस्पतिम् वाक्पतिः चक्षुष्पतिः श्रोत्रपतिः विज्ञानपतिः एतत्तदः भवति आकाश शरीरम् ब्रह्म सत्यात्मप्राणारामम् मनः आनन्दम् शान्तिसमृद्धम् अमृतम् इति प्राचीनयोग्य उपास्स्व॥

अन्वयः	पदार्थ
अन्त र्हृदये	= हृदय के मध्य बिषे जो ऊर्ध्व नालअधोमुख कमलाकारमांसपिण्डप्रसिद्धहै उसके भीतर जो
आकाशः	=आकाश है
तस्मिन्	=तिस बिषे
यः	=जो
एषः	=यह
पुरुषः	=पुरुष है
सः	=सो
मनो मयः	= विज्ञानरूप मनकरकेप्राप्त होनेयोग्य है
अयम्	=यह
अमृतः	=मरणरहित
हिरण्मयः	=ज्योतिःस्वरूप
प्रतिति ष्ठति	=प्रतिष्ठित है
तत्प्राप्तये	=तिसकी प्राप्ति के लिये
या	=जो
हृदयात्	=हृदयसे
प्रवृत्ता	=आरम्भ हुई
सुषुम्णा	= सुषुम्णा योगशास्त्रमेंप्रसिद्ध
नाडी	=नाड़ी
अस्ति	=है
च	=और
तालुके	=दोनों तालुवों के
अन्तरेण	=बीचमें
यः	=जो
एषः	=यह
स्तनः	=स्तन यानी थन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इव=सा
अवलम्बते=लटकता है
तस्य=तिसके
अन्तरेण=मध्यबिषे
गत्वा=निकलके
यत्र=जहां
असौ=प्रसिद्ध
केशान्तः=केशमूल
वर्तते=वर्तमान है यानी जो ब्रह्मरन्ध्रहै
तत्र=तहांपर
शीर्षकपाले=शीर्षकपालों को
व्यपोह्य=विदारण करके
विनिर्गता=निकली है
सा=सो नाड़ी
इन्द्रयोनिः=ब्रह्मप्राप्तिका मार्गहै
एवंविद्वान्=इस मार्ग का ज्ञाता
भूः=भूःव्याहृति
इति=करके
अग्नौ=अग्निबिषे
प्रतितिष्ठति=स्थितहोता है यानेअग्निवत् तेजस्वी और व्यापक होता है
भुवः=भुवःव्याहृति
इति=करके
वायौ=वायुबिषे
प्रतितिष्ठति=स्थितहोताहै
स्वः=स्वःव्याहृति
इति=करके
आदित्ये=सूर्यबिषे
प्रतितिष्ठति=स्थितहोताहै
महः=महःव्याहृति
इति=करके
ब्रह्मणि=ब्रह्मबिषे
प्रतितिष्ठति=स्थितहोताहै
च=और
अन्ते=अन्तमें
स्वाराज्यम्=स्वाराजको
आप्नोति=प्राप्त होताहै
तदन्तः=तिसके पीछे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सः=वह
मनस्पतिम्=सर्वमनोमय भावको
आप्नोति=प्राप्तहोता है
च=और
वाक्पतिः=सर्ववाणीका पति
भवति=होता है
चक्षुष्पतिः=सर्वकाद्रष्टा
भवति=होता है
श्रोत्रपतिः=सर्वकाश्रोता
भवति=होता है
विज्ञानपतिः=सर्वकाजाननेवाला
भवति=होता है
एतत्तदः=सर्वरूप
भवति=होता है
च=और
आकाश शरीरम्=आकाशवत् सूक्ष्म शरीर है जिसका
सत्यात्म=सत्यरूप है
आत्मा जिसका
प्राणारामम्=प्राणों को सुखस्थान है जो
मनआनन्दम्=मन का आनन्दबढ़ानेवाला है जो
शान्तिसमृद्धम्=शान्ति करके पूर्ण है जो
अमृतम्=मरणधर्मरहित है जो
इति ब्रह्म=ऐसा ब्रह्म है
प्राचीन योग्य=अहो प्राचीन योग्य नामक शिष्य
तत्=उसको
त्वम्=तू
उपास्स्व=उपासना कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थः ॥

सयइति ॥ पांचवें अनुवाक में अंगों की उपासना कहा है, अब इस छठवें अनुवाक में अंगी ब्रह्म है तिसकी उपासनाको कहते हैं, ब्रह्मका स्वरूप कैसा है सो कहते हैं ॥ सयइति ॥ इस स्थूलशरीर के अन्तर अंगुष्ठप्रमाणवाला हृदयहै, उसके भीतर जो आकाश है वहभी उपाधि के परिच्छेद करके अंगुष्ठप्रमाणवाला कहाजाता है, तिस आकाश के अन्तर जोकि आत्मा है वहभी उपाधि के परिच्छेद से अंगुष्ठप्रमाणवालाही कहाजाताहै, जैसे घट और उपाधि करके आकाश भी घटाकाश कहाजाता है, जैसे आकाश व्यापक है, तैसे आत्मा भी व्यापक है, वह जो हृदय के अन्तर आकाश है तिस आकाश के भीतर यह पुरुषरूप आत्मा स्थित है, भूः आदि लोक जिस करके पूर्ण हों उसका नाम पुरुष है, यद्यपि वह सर्वत्र स्थित है तथापि उसकी उपलब्धि का स्थान हृदयही है, क्योंकि मन के निरोध करनेसे ही आत्मा का साक्षात्कार होता है, वह आत्मा मनोमय है, अर्थात् ज्ञानस्वरूप है, क्योंकि मनन करने का नाम मनहै, और मनन नाम ज्ञान का है, और मयशब्द का अर्थ स्वरूप है, तब मनोमयका अर्थ ज्ञानस्वरूप हुआ, सोई आत्मा है, वही मरणधर्म से रहितहै, वह प्रकाशस्वरूप है, इतना कहकरके उपास्य जो ब्रह्म है तिसके स्वरूप को दिखलाया है, अब उपासक को ब्रह्मलोक की प्राप्ति के लिये मार्गविशेष को कहते हैं, और तालु के बीच में स्तन के तुल्य एक मांस का टुकड़ा लटकता है, उसके समीप सुषुम्णानाड़ी ऊर्ध्व को गईहै, उसी सुषुम्णा नाड़ी का नाम इन्द्रयोनि है, अर्थात् वही ब्रह्मलोक की प्राप्ति का मार्ग है, उसी नाड़ीद्वारा ऊपर ब्रह्मलोक को गमन करता हुआ उपासक मोक्ष को प्राप्त होता है, क्योंकि वह नाड़ी शीर्ष कपाल को भेदन करके ब्रह्मलोक में गई है, उसी नाड़ीद्वारा वह उपासक ब्रह्मलोक को गमन कर जाता है ॥ ब्रह्मलोक की प्राप्ति को कहकरके अब उपासक की फल की प्राप्ति को कहते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं ॥ भूरिति ॥"भूः" यह जो व्याहृतिरूप अग्नि है सोई इस लोक का अधिष्ठाताहै, तिस में व्यष्टिरूपी अग्नि व्याप्त होती है, और "भुवः" यह जो दूसरी व्याहृतिरूप वायु है तिस में व्यष्टिवायु अन्तरिक्षलोक को व्याप्त करके स्थित है, और "स्वः" यह जो तीसरी व्याहृति है सो आदित्यरूप है उसने तीनों लोकों को अपने तेजकरके ढकरक्खा है, और "महः" यह जो चौथी व्याहृति है वह ब्रह्मरूप है इसमें तीनों व्याहृतियां स्थित हैं, और इसका उपासक स्वराजभाव को प्राप्त होता है, सम्पूर्ण प्राणियों के मनोंका भी अधिपति याने स्वामी होजाता है, सम्पूर्ण प्राणियों की वाणियों का भी अधिपति होजाता है, सम्पूर्ण चक्षु इन्द्रियों का भी अधिपति होजाताहै, सम्पूर्ण प्राणियों के श्रोत्र इन्द्रियों का और सम्पूर्ण प्राणियों की बुद्धियों का भी अधिपति याने प्रेरक होजाता है, उपासक को समष्टिरूप विराट् भाव की प्राप्ति होने पश्चात् ब्रह्मज्ञानकी प्राप्ति होती है, और फिर वह ब्रह्मस्वरूप होजाताहै (प्र०) कैसा वह ब्रह्महै (उ०) आकाशकी तरह मूर्ति से रहितहै, सद्रूपहै याने बाध्य से रहितहै, वागादिक इन्द्रियों की उत्पत्ति का स्थान है, मनको भी उसी में आनन्द मिलता है, क्योंकि वह मनके आनन्द का स्थान है, वह शान्तस्वरूप है, मरणधर्म से रहित है ॥ ऐसा जो ब्रह्म है हे शिष्य ! तिसकी तुम उपासना करो ॥ १३ । १४ ॥

इति षष्ठोऽनुवाकः ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्दिशोऽवान्तरदिशः अग्निर्वायुरादित्यश्चन्द्रमा नक्षत्राणि आप ओषधयो वनस्पतयः आकाशआत्मा इत्यधिभूतम् अथाध्यात्मम् प्राणोऽपानोव्यान उदानः समानः चक्षुः श्रोत्रं मनो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाक् त्वक् चर्म्म मांसꣳस्नावास्थिमज्जा ए
धिविधाय ऋषिरवोचत् पाङ्क्तं वा इदꣳसर्वम् ।
क्तेनैव पाङ्क्तꣳस्पृणोतीति सर्वमेकञ्च ॥ १५ ॥

इति सप्तमोऽनुवाकः ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

पृथिवी अन्तरिक्षम् द्यौः दिशः अवान्तरदि
अग्निः वायुः आदित्यः चन्द्रमाः नक्षत्राणि अ
ओषधयः वनस्पतयः आकाशः आत्मा इति अ
भूतम् अथ अध्यात्मम् प्राणः अपानः व्यानः
दानः समानः चक्षुः श्रोत्रम् मनः वाक् त्
चर्म्म मांसम् स्नावा अस्थि मज्जा एतत् अ
विधाय ऋषिः अवोचत् पाङ्क्तम् वै इदम् स
पाङ्क्तेन एव पाङ्क्तम् स्पृणोति इति सर्वम् एकम्

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पद
पृथिवी	=पृथ्वीलोक	+एतत्लो कपञ्चकम्	=ये पांच लो पंचक हैं
अन्तरिक्षम्	=अन्तरिक्ष लोक		
द्यौः	=स्वर्गलोक		
दिशः	=दिशा		
अन्तरदिशः	=विदिशा यानी चा-रोकोने		
		अग्निः	=अग्नि
		वायुः	=वायु
		आदित्यः	=सूर्य
		चन्द्रमाः	=चन्द्रमा
		नक्षत्राणि	=नक्षत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+एतत्देव पञ्चकम् = ये पांच देव-पंचक हैं

आपः=जल
ओषधयः=ओषधी
वनस्पतयः=वनस्पति
आकाशः=आकाश
च=और
आत्मा=विराट्रूप

+एतत् भूतपञ्चकम् = ये पांच भूत-पंचक हैं

इति=इसप्रकार तीनोंपंचक
अधिभूतम्=अधिभूत हैं
अथ=और
प्राणः=प्राण
अपानः=अपान
व्यानः=व्यान
उदानः=उदान
समानः=समान

+एतत्वायुपञ्चकम् = ये पांच वायुपंचक हैं

चक्षुः=नेत्र
श्रोत्रम्=कर्ण
मनः=मन
वाक्=वाणी
त्वक्=त्वचा

+एतत् इन्द्रियपञ्चकम् = ये पांच इन्द्रियपंचक हैं

च=और
चर्म=चर्म
मांसम्=मांस
स्नावा=नाड़ी
अस्थि=हाड़
मज्जा=मज्जा

+एतत् धातुपञ्चकम् = ये पांच धातु-पंचक हैं

इति=इस प्रकार ये तीनों पंचक

अध्यात्मम् = अध्यात्म हैं

एतत्= उस पूर्वोक्त अधिभूत और अध्यात्मको

अधिविधाय = कल्पनाकरके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इदम्=यह
सर्वम्=सब बाह्याभ्यन्तर
वै=निश्चय करके
पाङ्क्तम्=पांक्त याने पंचात्मक हैं

पाङ्क्तेन={आध्यात्मिक पंचात्मकका}
एव=ही
सर्वम्=सबको
एकम्=एकाकारता से
स्पृणोति=अनुभव करता
एवम्=ऐसा
ऋषिः=वेदने

एवम्=इसप्रकार
विद्वान्=बुद्धिमान् पुरुष
पाङ्क्तम्=अधिभूत बाह्य पंचात्मक को

अवो चत्}=कहा है

भावार्थः ॥

पृथिवीति ॥ पूर्व अतीन्द्रिय मनोमयत्वादि गुण विशिष्ट ब्र की उपासना को कहा है, अब इस सप्तम अनुवाक में म अधिकारियों के प्रति स्थूल पृथ्वी आदिकों की पंचात्म स्वरूप करके उपासना को कहते हैं ॥ पृथ्वीलोक, अन्त क्षलोक, स्वर्गलोक, प्राची, अवाची, उदीची, प्रतीची च दिशा, और अग्निकोण, नैर्ऋत्यकोण, वायुकोण, ईशानको चारो अवान्तरादिशा मिलकर ये पांच लोकपंचक हैं ॥ अग्नि वायु, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र ये पांच देवपंचक हैं ॥ व्री यवादि ओषधी, जल, वृक्षादि वनस्पति, आकाश, और वि राट् आत्मा, ये पांच भूतपंचक हैं ॥ इसप्रकार ये तीनों पंच अधिभूत हैं, अब आध्यात्मिक को कहते हैं ॥ प्राणइति ॥ प्रा व्यान, अपान, उदान, समान ये पांच वायुपंचक हैं ॥ हृदय प्राण का स्थान है, अपान का गुदा स्थान है, समान का ना स्थान है, उदान का कण्ठ स्थान है, और व्यान समग्र शरीर रहता है, और चक्षु, श्रोत्र, मन, वाक्, त्वक् ये पांच इन्द्रियपंचक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और चर्म, मांस, नाड़ियां, हाड़, मज्जा ये पांच धातुपंचक हैं, इसप्रकार ये तीनों पंचक अध्यात्म हैं, इसलिये अधिभूत और अध्यात्म को लेकर यह सम्पूर्ण जगत् पंचात्मक कहाजाता है, और पृथ्वी आदि लोक तथा अग्नि आदिक देवता भी पंचात्मक कहाते हैं, इसप्रकार पंचात्मकविशिष्ट ब्रह्म की उपासना करने से उपासक विराट् अभिमानी प्रजापति को प्राप्तहोताहै ॥ १५ ॥

इति सप्तमोऽनुवाकः ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

ॐमिति ब्रह्म ॐमितीदꣳ सर्वम् ॐमित्येतदनुकृतिर्हस्म वा अप्योश्रावयेत्याश्रावयन्ति ॐमिति सामानि गायन्ति ॐशोमिति शस्त्राणि शꣳसन्ति ॐमित्यध्वर्य्युः प्रतिगरं प्रतिगृणाति ॐमिति ब्रह्मा प्रसौति ॐमित्यग्निहोत्रमनुजानाति ॐमिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मोपाप्नुवानीति ब्रह्मैवोपाप्नोति ॐदꣳश ॥ १६ ॥

इत्यष्टमोऽनुवाकः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

ॐम् इति ब्रह्म ॐम् इति इदम् सर्वम् ॐम् इति एतत् अनुकृतिः ह स्म वै अपि ॐम् श्रावय इति आश्रावयन्ति ॐम् इति सामानि गायन्ति ॐम् शोम् इति शस्त्राणि शंसन्ति ॐम् इति अध्वर्य्युः प्रतिगरम् प्रति गृणाति ॐम् इति ब्रह्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रसौति ॐम् इति अग्निहोत्रम् अनुजानाति ॐ इति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन् आह ब्रह्म उपाप्नुवानि ॐ ब्रह्म एव उपाप्नोति ॐम् दश ॥

अन्वयः	पदार्थ
+यतः	=चूंकि
सर्वम्	=सब
इदम्	=यह जगत्
ॐम्	=ॐम्
इति	=शब्द करके
व्याप्तम्	=व्याप्तहै
अतः	=इसलिये
ह, स्म, वै	=निश्चय करके
ॐम्	=ॐम्
इति	=ऐसा
एतत्	=यह शब्द
अनुकृतिः	=सब वाणी में अनुकरण है याने प्रतिध्वनिरूपहै
च	=और
अपि=य ज्ञेषुअपि	=यज्ञोंबिषेभी
ॐम्वै	=ॐम् प्रसिद्धहै
ॐम्	=ॐम्

अन्वयः	पदार्थ
श्रावय	=सुनाव तू
इति	=यह यजुर्वेदीय अध्वर्यु होता जब कहता है
+तदा	=तब
आश्रावयन्ति	=देवताओं को मन्त्र सुनाते हैं वे यह ऋत्विक्लोग बोलते हैं
च	=और
ॐम्	=ॐम् शब्द
इति	=उच्चारणकरके
सामानि	=सामवेदको
गायन्ति	=गायन करते हैं
च	=और
ॐम्	=ॐम्
शोम्	=शोम् शब्द
इति	=करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शस्त्राणि=ऋग्वेदकी ऋचाओं को
शंसन्ति=उच्चारण करते हैं
च=और
ओम्=ओम् शब्द
इति=उच्चारण करके
अध्वर्य्युः=यजुर्वेदी
प्रति गरम्=यजुर्वेदको
प्रति गृणाति=पठनकरताहै
च=और
ओम्=ओम्शब्द
इति=उच्चारणकरके
ब्रह्मा=ब्रह्मा(यज्ञबिषे)
प्रसौति=प्रेरणाकरताहै
च=और
ओम्=ओम् शब्द
इति=उच्चारणकरके
अग्निहोत्रम्=अग्निहोत्रको
अनुजानाति=होमकरनेकी आज्ञा होता को देताहै
च=और
+यदा=जब
प्रवक्ष्यन्=वेदपढ़नेकी इच्छावाला
ब्राह्मणः=ब्राह्मण
इति=ऐसाविचार करके कि
ब्रह्म=वेदको
उपाप्नु वानि=मैं प्राप्त होजाऊं
पूर्वम्=आरम्भबिषे
ओम्इति=ओम् शब्द को
आह=उच्चारणकरताहै
तदा=तब
सः=वह ब्राह्मण
ब्रह्म=वेद को
एव=निश्चयकरके
उपाप्नोति=प्राप्त होताहै
ततः=इसीलिये
ओम्=ओम् शब्द
इति=करके
ब्रह्म=शब्दब्रह्मको
उपासीत=उपासनाकरै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थः ॥

ॐमितीति ॥ पूर्व षष्ठ अनुवाक में किंचित् सूक्ष्मदर्शी मध्यमाधिकारी के प्रति मन आदिक उपाधिक ब्रह्मकी उपासना कही है, और सप्तम अनुवाक में स्थूलदर्शी मन्दअधिकारी के लिये पृथ्वी आदि उपाधिक ब्रह्मकी उपासना को कहा है, अब उत्तमाधिकारी के लिये ॐकार में ब्रह्मदृष्टि का विधान करते हैं ॥ ॐमितीति ॥ ॐ यह जो अक्षर है सो परब्रह्म का वाचक है, और परब्रह्म इसका वाच्य है, वाच्य वाचक का अभेद होता है इसलिये ॐकार ब्रह्मरूपही है, ऐसा चिन्तन उपासकको करना चाहिये, और यह जो नानाप्रकार की प्रतीतियों का विषय चराऽचरात्मक सम्पूर्ण जगत् है, सो सब ॐकाररूपही है, और जितना शब्द करके ज्ञात होने योग्य है, वह सब ॐकार करके ही व्याप्त है, क्योंकि वाच्य जो है सो वाचककेही अधीन होता है, इसलिये सम्पूर्ण जगत् ॐकाररूपही है, शब्द दो प्रकार का होता है, एक ध्वन्यात्मक, दूसरा वर्णात्मक यावत् लोक लोकान्तर में वस्तु है, वह इन शब्दों करके व्याप्त है, और शब्द ॐकार है, इसलिये सब वस्तु ॐकाररूप है, और विना ॐकार के कुछ भी सिद्ध नहीं होता है, अब ॐकार की स्तुति को करते हैं, यह वार्ता लोक में प्रसिद्ध है, जैसे किसी ने कहा मैं इस काम को करता हूं, तब दूसरा आगे से ॐ ऐसे कहता है अर्थात् ऐसा कहा ॐ अक्षर को उच्चारण करके वैदिककर्म का प्रारम्भ कियाजाता है, और ॐ कहकरके वैदिककर्म की समाप्ति कीजाती है, जब देवताओं के प्रति वेद का मन्त्र पढ़ाजाता है, तो ॐ कहकरके पढ़ाजाता है, और जो सुनता है वह भी ॐ कहकरके सुनता है, और यज्ञ में सामवेद के गायन करनेवाले ॐकार कोही उच्चारण करके सामवेदकी ऋचा का गायन करतेहैं, और ॐ यह शब्द उच्चारण करके ऋग्वेद की ऋचाओंका यज्ञमें पाठ करते हैं, अर्थात् यज्ञके कर्म का कर्ता जोकि अध्वर्यु है, सो शोंसावो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस गीति मंत्र को यज्ञ में पढ़ता है, और ॐ इस अक्षर का उच्चारण करके ब्रह्मा जो कि ऋत्विग् है स्तुति करता है, ॐ इस को उच्चारण करके ही अग्निहोत्र करनेकी आज्ञा होता को देता है, ॐ शब्दको उच्चारण करके यजुर्वेदी यजुर्वेद के मंत्रों को पढ़ता है, और जब ब्राह्मण ॐ उच्चारण करके ही पाठ के आदि में कहता है कि मैं ब्रह्मको प्राप्त होजाऊं और फिर पाठ करता है, तब वह ब्रह्म को प्राप्त होजाता है, इसलिये ॐ शब्द करके ब्रह्म की उपासना करै ॥ १६ ॥

इत्यष्टमोऽनुवाकः ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

ऋतंचस्वाध्यायप्रवचनेच सत्यंचस्वाध्यायप्रवचनेच तपश्च स्वाध्यायप्रवचनेच दमश्चस्वाध्यायप्रवचनेच शमश्चस्वाध्यायप्रवचनेच अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवचनेच अग्निहोत्रञ्च स्वाध्यायप्रवचनेच अतिथयश्चस्वाध्यायप्रवचनेच मानुषञ्चस्वाध्यायप्रवचनेचप्रजाचस्वाध्यायप्रवचनेचप्रजनश्चस्वाध्यायप्रवचनेचप्रजापतिश्चस्वाध्यायप्रवचनेच सत्यमितिसत्यवचाराथीतरः तपइतितपोनित्यः पौरुशिष्टिः स्वाध्यायप्रवचनेएवेतिनाकोमौद्गल्यः तद्धितपस्तद्धितपः ॥ १७ ॥

इति नवमोऽनुवाकः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

ऋतम् च स्वाध्यायप्रवचने च सत्यम् च स्वा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्यायप्रवचने च तपः च स्वाध्यायप्रवचने च द
च स्वाध्यायप्रवचने च शमः च स्वाध्यायप्रवचने
अग्नयः च स्वाध्यायप्रवचने च अग्निहोत्रम् च
ध्यायप्रवचने च अतिथयः च स्वाध्यायप्रवचने
मानुषम् च स्वाध्यायप्रवचने च प्रजा च स्वाध्या
प्रवचने च प्रजनः च स्वाध्यायप्रवचने च सत्य
इति सत्यवचाः राथीतरः तपः इति तपः नित्यः
रुशिष्टिः स्वाध्यायप्रवचने एव इति नाकः मौद्गल
तत् हि तपः तत् हि तपः ॥

अन्वयः	पदार्थ
ऋतम्	वेदके सूक्ष्म अर्थ का विचारकरना
च	और
सत्यम्	सत्यबोलना
च	और
स्वाध्यायप्रवचने	वेदका पढ़ना और पढ़ाना
च	और
तपः	तपकरना
च	और
स्वाध्यायप्रवचने	वेदका पढ़ना और पढ़ाना

अन्वयः	पदा
च	और
तपः	तपकरना
च	और
स्वाध्यायप्रवचने	वेदका पढ़ना और पढ़ाना
च	और
दमः	बाह्य इन्द्रियों रोकना
च	और
स्वाध्यायप्रवचने	वेदका पढ़ना और पढ़ाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च=और

शमः=मनका रोकना

च=और

स्वाध्यायप्रवचने=वेदका पढ़ना और पढ़ाना

च=और

अग्नयः=अग्नि धारण करना

च=और

स्वाध्यायप्रवचने=वेदका पढ़ना और पढ़ाना

च=और

अग्निहोत्रम्=अग्निहोत्र करना

च=और

स्वाध्यायप्रवचने=वेदका पढ़ना और पढ़ाना

च=और

अतिथयः=अभ्यागतोंका पूजन करना

च=और

स्वाध्यायप्रवचने=वेदका पढ़ना और पढ़ाना

च=और

मानुषम्=लौकिक व्यवहार याने विवाह आदि कर्म करना

च=और

स्वाध्यायप्रवचने=वेदका पढ़ना और पढ़ाना

च=और

प्रजा=सन्तति का उत्पन्नकरना

च=और

स्वाध्यायप्रवचने=वेदका पढ़ना और पढ़ाना

च=और

प्रजनः=स्वभार्या बिषे गर्भदान ऋतुकाल में देना

च=और

स्वाध्यायप्रवचने=वेदका पढ़ना और पढ़ाना

च=और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रजातिः=विवाह पुत्र पौत्रकी उत्पत्तिके लिये करना

च=और

स्वाध्याय प्रवचने=वेदका पढ़ना और पढ़ाना

+एता निवेद विहित कर्माणि=ये सब ऊपर लिखेहुये वेद विहित कर्म

अवश्यकर्तव्यानि=अवश्य करने योग्य हैं

च=और

राथीतरः=राथीतर गो में उत्पन्नहु

सत्यवचने=सत्यवचा न मकऋषि

सत्यम्=सत्यको

इति=ही

मनुते=श्रेष्ठमानता

पौरुशिष्टिः=पुरुशिष्ट गोत्र बिषे उत्प हुवा

भावार्थः ॥

अब उपासक के नियमों को विधान करते हैं ॥ वेद के सूत्र अर्थ का जो निश्चय करना है उसका नाम ऋत है, और अध्ययन किया हुआ जो वेद है तिस का जो प्रतिदिन पाठ करना है इसी का नाम स्वाध्याय है, और वेद के अर्थ का जो व्याख्यान करना है उसका नाम प्रवचन है, और जिस वार्त्ता को वेद और शास्त्र करके और युक्तियों करके निश्चय करना है वह यथार्थ कहा जाता है, सत्यभाषण और कृच्छ्रचान्द्रायणादि व्रत तप कहे जाते हैं ॥ चक्षुरादिक इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाने का नाम दम है, और मन को निषिद्ध विषय के चिंतन करने से हटाने का नाम शम है, और गार्हपत्यादि अग्नियों का स्थापन करना अर्थात् प्रातःकाल और सायंकाल अग्निहोत्र कर्म करना नित्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्त्तव्य है, और घर में आये हुये अतिथियों की पूजा करना और विवाहादिकों में बधू आदिकों का पूजन करना कर्त्तव्य है, इसी का नाम मानुष्य कर्त्तव्य है, और पुत्र की उत्पत्ति के लिये गर्भाधानादि संस्कार का नाम प्रजा कर्त्तव्य है, और पुत्रोत्पत्ति के लिये ऋतुकाल में स्वभार्या के पास जाने का नाम प्रजनः कर्त्तव्य है, और अपने वर्णाश्रम के अनुसार पुत्र की उत्पत्ति का नाम प्रजाति है, यह सब कर्म कर्त्तव्य हैं, तात्पर्य सब का यह है कि वेद पढ़ै और पढ़ावै, वेद के सूक्ष्म अर्थ को विचार करै, तप करै, बाह्य इन्द्रियों को रोके, मन को रोके, हवन करै, अग्नि धारण करै अभ्यागतों की पूजा करै, विवाह करै, सन्तति उत्पन्न करै, अपनी भार्या से ऋतुकाल बिषे भोग करै, राथीतर आचार्य्य ऐसा मानता है कि सत्यभाषण सदा करना चाहिये, और सत्य-भाषण ही उत्तम कर्म है, पौरुशिष्टि आचार्य्य नित्य तप करता था, इसलिये वह कहता है कि तप ही उत्तम कर्म है, और मौद्गल्य आचार्य्य ऐसा मानता है कि वेद का सदा पढ़ना व पढ़ाना ही उत्तम कर्म है, इसलिये ऊपर के लिखे हुये कर्म अवश्य नित्य कर्त्तव्य हैं ॥ १७ ॥

इति नवमोऽनुवाकः ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

अहंवृक्षस्यरेरिवा कीर्त्तिःपृष्ठंगिरेरिव ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि द्रविणꣳ सुवर्चसम् सुमेधा अमृतोऽक्षितः इति त्रिशङ्कोर्वेदानुवचनम् अहꣳषट् ॥ १८ ॥

इति दशमोऽनुवाकः ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

अहम् वृक्षस्य रेरिवा कीर्त्तिः पृष्ठम् गिरेः इव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊर्ध्वपवित्रः वाजिनि इव स्वमृतम् अस्मि द्रवि
सुवर्चसम् सुमेधाः अमृतोऽक्षितः इति त्रिशङ्कोः वे
नुवचनम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
अहम्	मैं
वृक्षस्य	संसाररूपी वृक्ष का
रेरिवा	प्रेरक अन्तर्यामी
अस्मि	हूं
च	और
मे	मेरा
कीर्तिः	यश
गिरेः	पर्वतके
पृष्ठम्	शिखर
इव	समान
उन्नतम्	ऊंचाहै
च	और
इव	जैसे
वाजिनि	सूर्यबिषे
स्वमृतम्	शुद्धअमृतहै
तद्वत्	तैसेही
अहम्	मैं
ऊर्ध्वपवित्रः	निर्मलब्रह्म ज्ञानस्वरूप

अन्वयः	पद
अस्मि	हूं
च	और
सुवर्च सम्	प्रकाशमान
द्रविणम्	ब्रह्मरूपीद्र
मया	मुझकरके
प्राप्तम्	पायागयाहै
च	और
अहम्	मैं
सुमेधाः	कार्यकारणात्मक जगत् का आदि ध्यांतजानेवाला
अस्मि	हूं
अतएव	इसीकारण
अहम्	मैं
अमृतो क्षितः	अमृतसेसिं तकियाहुआ
अस्मि	हूं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति=इसप्रकार	
त्रिशङ्कोः=त्रिशंकुमुनिका	
वेदानुवचनम्=आत्मानुभव के पश्चात्यहवाक्य	अस्ति=है(जैसेवामदेवऋषिकाअनुभववाक्यगर्भबिषेहीउत्पन्नहुवाथा)॥

भावार्थः ॥

अहमिति ॥ जिसका तत्त्वज्ञान करके छेदनकिया जाय उसका नाम वृक्ष है सो संसाररूपी वृक्षका तत्त्वज्ञान करके छेदन होसक्ता है इसलिये ज्ञानवैराग्यरूपी शस्त्र करके संसाररूपी वृक्ष का मैं छेदन करनेवाला हूं, और जब मैं संसाररूपी वृक्ष का छेदन कर देऊंगा तब मेरी कीर्त्ति पर्वत के शिखर के ऐसी अत्यंत ऊंची होगी, और जैसे सूर्य बिषे शुद्ध अमृत है तैसे मैं निर्मल ज्ञानस्वरूप ब्रह्मरूप हूं, क्योंकि प्रकाशमान ब्रह्मरूपी द्रव्य मुझ करके पाया गया है, मैं कार्य कारणात्मक जगत् को भली प्रकार जानता हूं, मैं अमृतरूपी तत्त्वज्ञान को प्राप्त हुआ हूं, धारणा शक्तिवाला मैंही हूं ऐसा अनुभव त्रिशंकुमुनि का है ॥ १८ ॥ * असन्निसं

इति दशमोऽनुवाकः ॥ १० ॥ ॐ। ॐ॥ ॐ

मूलम् ॥

वेदमनूच्याचार्य्योऽन्तेवासिनमनुशास्तिसत्यं वदधर्म्मञ्च २ स्वाध्यायान्माप्रमदः आचार्याय प्रियंधनमाहृत्य प्रजातन्तुंमाव्यवच्छेत्सीः सत्या न्न प्रमदितव्यम् धर्म्मान्नप्रमदितव्यम् कुशलान्न

* शब्दार्थ इस कदर साफ है कि भावार्थ की जरूरत नहीं इसी ख्याल से भावार्थ सूक्ष्म तौर से लिखागया है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रमदितव्यम् भूत्यैनप्रमदितव्यम् स्वाध्याय
चनाभ्यां नप्रमदितव्यम् देवपितृकार्य्याभ्यां न
दितव्यम् ॥ १९ ॥ मातृदेवोभवपितृदेवोभव आ
र्य्यदेवोभव अतिथिदेवोभव यान्यनवद्यानि क
र्माणितानिसेवितव्यानि नोइतराणि यान्यनवद्यानि
र्माणितानिसेवितव्यानि नोइतराणियान्यस्माक
सुचरितानि तानित्वयोपास्यानिनोइतराणि॥२०
एकेचास्मच्छ्रेया ꣳसोब्राह्मणाः तेषांत्वया
न प्रश्वसितव्यम् श्रद्धयादेयम् अश्रद्धयाऽदेय
श्रियादेयम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदादेय
अथयदितेकर्म्म विचिकित्सावावृत्तविचिकित्सा
स्यात् ॥२१॥ येतत्रब्राह्मणाः सम्मर्शिनः युक्ताआ
क्षाधर्म्मकामाः स्युः यथातेतत्रवर्तेरन् तथातत्र
थाः अथाभ्याख्यातेषु येतत्रब्राह्मणाः सम्मर्शि
युक्ताअयुक्ताः अलूक्षाधर्म्मकामाःस्युः यथातेतेषु
र्तेरन् तथातेषुवर्तेथाःएषआदेशः एषउपदेशः ए
वेदोपनिषद् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्य
एवमुचैतदुपास्यम् स्वाध्यायप्रवचनाभ्याम् न
मदितव्यम् तानित्वयोपास्यानि विचिकित्सा
स्यातेषुवर्तेरन् ॥ २२ ॥

इत्येकादशोऽनुवाकः ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

वेदम् अनूच्य आचार्य्यः अन्तेवासिनम् अनुशास्ति सत्यम् वद धर्म्मम् चर स्वाध्यायात् माप्रमदः आचार्य्याय प्रियम् धनम् आहृत्य प्रजातन्तुम् माव्यवच्छेत्सीः सत्यात् न प्रमदितव्यम् धर्म्मात् न प्रमदितव्यम् कुशलात् न प्रमदितव्यम् भूत्यै न प्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम् देवपितृकार्य्याभ्याम् न प्रमदितव्यम् मातृदेवः भव पितृदेवः भव आचार्य्यदेवः भव अतिथिदेवः भव यानि अनवद्यानि कर्म्माणि तानि सेवितव्यानि नोइतराणि यानि अस्माकम् सुचरितानि तानि त्वया उपास्यानि नो इतराणि ये के च अस्मच्छ्रेयांसः ब्राह्मणाः तेषाम् त्वया आसनेन प्रश्वसितव्यम् श्रद्धया देयम् अश्रद्धया अदेयम् श्रिया देयम् ह्रिया देयम् भिया देयम् संविदा देयम् अथ यदि ते कर्म्मविचिकित्सा वा वृत्त विचिकित्सा वा स्यात् ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः युक्ताः अयुक्ताः अलूक्षाः धर्म्मकामाः स्युः यथा ते तत्र वर्त्तेरन् तथा तत्र वर्त्तेथाः अथ अभ्याख्यातेषु ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः युक्ताः अयुक्ताः अलूक्षाः धर्म्मकामाः स्युः यथा ते तेषु वर्त्तेरन् तथा तेषु वर्त्तेथाः एषः आदेशः एषः उपदेशः एषा वेदोपनिषत् एतत्, अनुशासनम्, एवम्, उपासितव्यम् एवम्, उ, च, एतत् उपास्यम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
आचार्य्यः	=गुरु
अन्तेवासिनम्	=शिष्यको
वेदम्	=वेद
अनूच्य	=पढ़ाके
अनुशास्ति	=कर्त्तव्य की शिक्षादेता है
हे शिष्य	=हे सौम्य
त्वम्	=तू
सत्यम्	=सत्य
वद	=बोल
धर्मम्	=धर्म
चर	=कर
स्वाध्यायात्	=वेदपाठ से
माप्रमदः	=प्रमाद याने भूलमतकर
आचार्याय	=गुरु के अर्थ
धनम्	=धनको याने गुरुदक्षिणा को
आहृत्य	=देकर
प्रजातन्तुम्	=संतानरूपी तंतको
माव्यवच्छेत्सीः	=उच्छेद मत कर याने रूपी तागे मत तोड़ गृहस्थाश्रम कर
सत्यात्	=सत्यसे
प्रमदितव्यम्	=प्रमाद करने योग्य
न	=नहीं है
धर्मात्	=धर्मसे
प्रमदितव्यम्	=प्रमादकरना योग्य
न	=नहीं है
कुशलात्	=देहरक्षार्थ कर्म से
प्रमदितव्यम्	=प्रमादकरना योग्य
न	=नहीं है
भूत्यै	=संपत्ति के लिये
प्रमदितव्यम्	=प्रमादकरना योग्य
न	=नहीं है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वाध्याय प्रवचना=वेद के पठन और पाठन से
भ्याम्

प्रमादित व्यम्=प्रमादकरना योग्य

न=नहीं है

देवपितृका र्य्याभ्याम्=यज्ञ श्राद्ध तर्पणादिकर्म से

प्रमादित व्यम्=प्रमादकरना योग्य

न=नहीं है

हे शिष्य=हे सौम्य

त्वम्=तू

मातृदेवः=माताको देवता तुल्य मानने वाला

भव=हो

पितृदेवः=पिताकोदेवता तुल्य मानने वाला

भव=हो

आचार्य देवः=आचार्य्यको देवता के तुल्य पूजन करनेवाला

भव=हो

अतिथि देवः=अभ्यागतों को देवतातुल्य पूजनकरनेवाला

भव=हो

यानि=जे

अनवद्यानि=अनिन्दित

कर्माणि=कर्म हैं

तानि=वे

त्वया=तुझकरके

सेवितव्यानि=सेवन करने योग्य हैं

इतराणि=निन्दितकर्म

नो=सेवनकरनेयोग्य नहीं हैं

च=और

यानि=जे कर्म

अस्माकम्=हमारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुचरितानि=अच्छी तरह से सेवन किये हुये हैं
तानि=वे कर्म
त्वया=तुझकरके
उपास्यानि=उपासना करने योग्य हैं
इतराणि=हमारे त्याग कियेहुये कर्म
त्वया=तुझकरके
नो=नहीं सेवन करने योग्य हैं
च=और
ये=जो
के=कोई
ब्राह्मणाः=ब्राह्मण
अस्मच्छ्रेयांसः=आचार्य्यादि कर्म करके हम से विशेष हैं
तेषाम्=उनका
आसनेन=आसनदानादि सत्कार से
त्वया=तुझकरके
प्रश्वसितव्यम्=आश्वासन करना योग्य है
श्रद्धया=श्रद्धाकरके
देयम्=दान करना चाहिये
अश्रद्धया=अश्रद्धाकरके
अदेयम्=दान नहीं देना चाहिये
श्रिया=आत्मश्री के अनुसार यानी यथाशक्ति
देयम्=देना चाहिये
ह्रिया=लज्जाकरके
देयम्=देना योग्य है
भिया=डरकरके
देयम्=देना योग्य है
संविदा=मित्रादि कार्य करके याने मित्रप्रभृति के कार्य में
देयम्=देना योग्य है
अथ=जब
यदि=कभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते=तुझको
कर्मविचिकित्सा = श्रौतस्मार्त्त कर्म बिषे संदेह
वा=अथवा
वृत्तिविचिकित्सा = आचार लक्षणवृत्त बिषे संदेह
स्यात्=होवै
तदा=तब
तत्र=तिस समय में
ये=जो
सम्मर्शिनः=विचारवान्
युक्ताः=लौकिक कर्म युक्त
आयुक्ताः=शास्त्रोक्त कर्म युक्त
अलूक्षाः=अक्रूरबुद्धि वाले
धर्मकामाः=धर्मबिषे कामना रखनेवाले
ब्राह्मणाः=ब्राह्मण
स्युः=होवैं
ते=वे
यथा=जैसे
तत्र=उस संशय बिषे
वर्त्तेरन्=बर्ताव करैं
तत्र=तिस संशय बिषे
त्वम्=तू
अपि=भी
तथा=तैसाही
वर्तेथाः=बर्तावकर
अथ=और
तत्र=उन
अभ्याख्या तेषु = अतिप्रसिद्ध ब्राह्मणोंबिषे
ये=जो
ब्राह्मणाः=ब्राह्मण
सम्मर्शिनः=विचारवान्
युक्ताः=लौकिककर्म युक्त
आयुक्ताः=वैदिककर्म्म युक्त
अलूक्षाः=अक्रूरबुद्धि वाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्मकामाः=धर्मबिषे कामना रखने वाले
स्युः=होवें
ते=वे
यथा=जैसे
तेषु=उन संशयों बिषे
वर्त्तेरन्=बर्तैं
तथा=वैसाही
त्वम्=तू
अपि=भी
तेषु=उन संशयों बिषे
वर्तेथाः=बर्तावकर
एषः=यही
आदेशः=बुद्धि है
एषः=यही

उपदेशः=पुत्र हि आदिक उपदेशः
एषा=यही
वेदोपनिषत्=वेदका र और ग अर्थ है
एतत्=यही
अनुशासनम्=ईश्वरक है
एवम्=इसप्रकार
उपासितव्यम्=उपासन रनेयोग
च=और
उ=निश्चयकर
एवम्=इसप्रकार
एतत्=यह
उपास्यम्=उपासना रने योग्य ह

भावार्थः ॥

वेदमिति ॥ आचार्य्य शिष्यको प्रथम उपनयन कराकर का अध्ययन कराते हैं पश्चात् वेद के अर्थ को शिष्यके प्रति प्रकार ग्रहण कराते हैं ॥ हे शिष्य ! सदैवकाल तुम सत्यभाषण कदापि मिथ्याभाषण न करो और प्रतिदिन वेदविहित धर्मका तुम आचरण करो और वेद के अध्ययनसे तुम प्रमाद कदापि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करो और विद्या की प्राप्ति के लिये आचार्य के प्रति धनको लाकरके देवो, और विद्याकी समाप्तिके अनन्तर आचार्य्यकी आज्ञा को लेकर विवाह करके संतान उत्पन्न करो, और यदि विवाह करने से पुत्र उत्पन्न न हो तो पुत्रइष्टीयज्ञ करके पुत्रकी उत्पत्तिके लिये यत्न करो, ॥ प्र० ॥ मुक्ति के साधनोंके प्रकरणमें प्रजा की उत्पत्ति का निरूपण करना असंगत है ॥ उ० ॥ असंगत नहीं है, क्योंकि पितृऋण भी मोक्ष का प्रतिबंधक है, उससे छूटना भी मुक्ति का एक साधनही है ॥ सो प्रजाके उत्पन्न करनेसे ही पुरुष पितृऋण से छूटताहै, और आचार्य फिर शिष्यके प्रति कहते हैं, हे शिष्य ! सत्यभाषण से कभी भी तुम प्रमाद न करना, धर्म के आचरण से कभी भी तुम प्रमाद न करना, सर्वदा काल धर्म का ही तुम अनुष्ठान करना, कुशलता से अर्थात् शरीर की रक्षाके करनेवाले जो कर्म हैं उनसे भी कभी तुम प्रमाद न करना, और विभूति याने ऐश्वर्य के प्राप्त करनेवाले जो कर्म हैं, उनसे भी तुम प्रमाद न करना, और वेद के पढ़ने पढ़ाने से भी तुम कभी प्रमाद न करना, और देवकार्य्य जो कि यज्ञादिक हैं और पितृकार्य्य जोकि श्राद्धादिक हैं, इनसे भी तुम प्रमाद न करना ॥ १९ ॥ मातृदेव इति ॥ माता को देवता जानना, और देवता की तरह माताका पूजन तुम करना, पिताको देवता जान करके पूजा करना, आचार्य्यको देवता जानकर पूजन करना, अतिथिको देवता जान करके पूजन करना ॥ दो प्रकार के कर्म हैं, एक निंदित कर्म हैं, दूसरे अनिन्दित कर्म हैं, दोनोंमें से जो कर्म लोकप्रसिद्ध शिष्टाचार रूप अनिंदित हैं, उन्हीं का आचरण तुम करना, निंदित कर्मोंका आचरण कभी तुम न करना, जो कर्म आचार्य्यों के सुचरित हैं याने श्रुतिस्मृति से अविरुद्ध हैं, उन्हीं का आचरण तुम करना, इतर कर्मों का आचरण मत करना ॥ २० ॥ येके चेति ॥ जो लोक में प्रसिद्ध ब्राह्मण हैं, और जो हमारे से अतिश्रेष्ठ हैं, उन ब्राह्मणोंकी तुम आसनादि प्रदान करके सेवा करना, और वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मण जो कि तुमको उपदेश करैं उनके उपदेश को भलीप्रकार तुम ग्रहण करना, और श्रद्धा करके याने आस्तिकबुद्धि करके उनके प्रति अन्नादिकों को देना, अश्रद्धा करके न देना, क्योंकि श्रद्धा से रहित जो दान है उसका किंचित् भी फल नहीं होता है, इसलिये श्रद्धासे युक्त होकरके ही देना और आस्तिकबुद्धि करके जो दान दिया जाताहै, वह श्रिया दान कहा जाता है, और लज्जा करके दान देना और शास्त्रके भय करके देना और विवेक करके अर्थात् अधिकारी को विचार करके दान देना ॥ २१ ॥ अथेति॥ आचार्य शिष्यके प्रति कहते हैं, जब तुम्हारे को श्रौतकर्म में अथवा स्मार्तकर्म में संशय उत्पन्नहो जैसे कि ॥ उदिते जुहोति॥ अनुदिते जुहोति ॥ ये दो श्रुतिवाक्य हैं, एक तो कहता कि सूर्य्य के उदय होनेपर अग्निहोत्र कर्म करना चाहिये, दूसरा कहता है कि सूर्य्य के उदयसे पहिले ही अग्निहोत्रकर्म करना चाहिये अब यहां पर संदेह होता है कि कौनसे वाक्यके अनुसार करना चाहिये और स्मार्त कर्म संध्या में कहीं तो संध्या के देवता की मूर्ति पुरुषरूप करके कही है और कहीं स्त्रीरूप करके कही है यहांपर भी संदेह होता है कि किसरूप का ध्यान करना चाहिये एक कर्मविचिकित्सा कहीजाती है, दूसरी वृत्तविचिकित्सा कही जाती है ॥ वृत्त नाम कुल की परंपरा करके जो कर्म चला आता है जैसे कहीं आज्ञा है कि मातुलकन्या के साथ विवाह करना चाहिये और मांस भक्षण करना चाहिये और कहीं लिखा है नहीं करना चाहिये हे शिष्य ! जब तुम्हारे मन में इस तरह का संशय उत्पन्न हों तब तुम वैसेही कर्म में प्रवृत्त हो जैसे प्रसिद्ध वेदके वेत्ता ब्राह्मण नित्य विचारवान् संदर्शी क्रोधादिकोंसे रहित शांत स्वभाववाले धर्म की कामना से संयुक्त नित्य नैमित्तिक कर्मों में प्रवृत्त होते हैं ॥ अथेति ॥ अब और उपदेश को आचार्य करते हैं हे शिष्य ! यदि पातक की शङ्का करके दूषित पुरुषों में तुमको संशय हो कि इनके साथ व्यवहार करना चाहिये या नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब तिस देश में जो ब्राह्मण हों वे जिस प्रकार उनके साथ व्यवहार करते हों वैसे ही तुम भी करो, वे ब्राह्मण कैसे हों कि विचारवान् हों, और नित्य नैमित्तिक कर्मों में प्रवृत्त हों, और स्वतन्त्र हों, और क्रोध आदिकों से रहित हों, और धर्म की कामना से युक्त हों ॥५॥ एष इति ॥ हे शिष्य जैसे राजा अपने भृत्यों को आज्ञा करता है और तैसेही वैदिक कर्मों के करनेवालोंको वेद भी आज्ञा करता है, और सत्य भाषण करने का ही वेद का मुख्य उपदेश है, यह वेद में विधिमंत्र है, पूर्वोक्त वेदवाक्य सब ईश्वर की आज्ञा हैं, यह सब उपासना और अनुष्ठान करने के योग्य हैं ॥२२॥

इत्येकादशोऽनुवाकः ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

शन्नोमित्रःशंवरुणःशन्नोभवत्वर्य्यमा शन्नइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नोविष्णुरुरुक्रमः नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायोत्वमेव प्रत्यक्षंब्रह्मासित्वामेवप्रत्यक्षंब्रह्मावादिषम् ऋतमवादिषम् सत्यमवादिषम् तन्मामावीत् तद्वक्तारमावीत् आवीन्माम् आवीद्वक्तारम् सत्यमवादिषं पञ्च च ॥ ओं शान्तिःशान्तिःशान्तिः॥२३॥

इति शिक्षाध्यायः प्रथमावल्ली ॥

पदच्छेदः ॥

शम् नः मित्रः शम् वरुणः शम् नः भवतु अर्य्यमा शम् नः इन्द्रः बृहस्पतिः शम् नः विष्णुः उरुक्रमः नमः ब्रह्मणे नमः ते वायो त्वम् एव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्यक्षम् ब्रह्म असि त्वाम् एव प्रत्यक्षम् ब्रह्म अ-
वादिषम् ऋतम् अवादिषम् सत्यम् अवादिषम्
तत् माम् आवीत् तत् वक्तारम् आवीत् आवीत्
माम् आवीत् वक्तारम् ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अन्वयः	पदार्थ
मित्रः=	प्राण और दिन अभिमानी देवता
नः=	हमको
शम्=	सुखकारी
भवतु=	होवैं
वरुणः=	अपान और रात्री अभिमानी देवता
नः=	हमको
शम्=	सुखकारी
भवतु=	होवैं
अर्यमा=	नेत्र और सूर्य अभिमानी देवता
नः=	हमको
शम्=	सुखकारी
भवतु=	होवैं
इन्द्रः=	बल अभिमानी देवता
नः=	हमको
शम्=	सुखकारी
भवतु=	होवैं
बृहस्पतिः=	वाणी और बुद्धि अभिमानी देवता
नः=	हमको
शम्=	सुखकारी
भवतु=	होवैं
उरुक्रमः=	बढ़ानेवाला है तीनपाद का जो राजा बलि के यज्ञ बिषे ऐसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णुः=चरणों का अभिमानीदेवता
नः=हमको
शम्=सुखकारी
भवतु=होवैं
ब्रह्मणे=व्यापक है जो ऐसेब्रह्मकेलिये
नमः=नमस्कार है
वायो=हे वायुदेवता
ते=तेरे अर्थ
नमः=नमस्कार है
त्वम्=तू
प्रत्यक्षम्=प्रत्यक्ष
ब्रह्म=ब्रह्म
असि=है
त्वाम्=तुझको
एव=ही
प्रत्यक्षम्=प्रत्यक्ष
ब्रह्म=ब्रह्म
अवादिषम्=मैंने कहा है
त्वाम्=तुझको
एव=ही
ऋतम्=निश्चयात्मक बुद्धि
अवादिषम्=मैंने कहा है
त्वाम्=तुझको
एव=ही
सत्यम्=सत्य
अवादिषम्=मैंने कहा है
तत्=उस वायुरूप ब्रह्म ने
माम्=मुझविद्यार्थी को
आवीत्=रक्षित किया है याने विद्या से संयुक्त किया है
तत्=उस वायुरूप ब्रह्म ने
वक्तारम्=आचार्य्य याने गुरुको
आवीत्=रक्षित किया है याने वक्तृत्वशक्ति से युक्त किया है
माम्=मुझको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवीत्=उसने रक्षित किया है
वक्तारम्=आचार्य्यको
आवीत्=उसने रक्षित किया है
ॐम्शान्तिः=आध्यात्मिक विघ्नों से शान्ति होवै
शान्तिः=आधि क विघ्न शान्ति
शान्तिः=आधि क विघ्न शान्ति

भावार्थः ॥

ओंशन्नोमित्रः शं वरुणः ॥ इस शान्तिपाठ का अर्थ पहिले आये हैं वही अर्थ यहां पर भी जान लेना चाहिये दुबारा लि की जरूरत नहीं है शब्दार्थ ऊपर दियाहै वह इसी प्रकार स्प

इति शिक्षावल्ली समाप्ता ॥ १ ॥

मूलम् ॥

हरिः ॐम् सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वी करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषा ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

पदच्छेदः ॥

सह नौ अवतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यम् करवावहै तेजस्विनौ अधीतम् अस्तु मा विद्विषा ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
+सः	=वह ईश्वर
नौ	=हम दोनोंको याने गुरु और शिष्य को
सह	=साथ
+एव	=ही
अवतु	=रक्षा करै
नौ	=हम दोनों को
सह	=साथ
+एव	=ही
भुनक्तु	=भोगप्राप्तकरै
+आवाम्	=हम दोनों
सह	=साथ
एव	=ही
वीर्यम्	=विद्यादान और विद्या ग्रहण सामर्थ्य को
करवावहै	=प्राप्त होवैं
नौ	=हम दोनों का
अधीतम्	=पढ़ा हुआ
तेजस्वि	=अर्थ ज्ञान योग्य यानी सफल
अस्तु	=होवै
आवाम्	=हम दोनों
मा विद्विषावहै	=पठन पाठन में प्रमादरूपविद्वेषको न प्राप्त होवैं
ॐ शान्तिः	=आध्यात्मिक
शान्तिः	=आधिभौतिक
शान्तिः	=आधिदैविक ये त्रिविध ताप हमारे शान्त होवैं ॥

भावार्थः ॥

अब वक्ष्यमाण परा विद्या की प्राप्ति के लिये और विघ्नों की शान्ति के लिये प्रथम शान्तिमंत्र के अर्थ को कहते हैं ॥ सहेति ॥ परमेश्वर हम दोनों को याने आचार्य और शिष्य के हृदय में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मविद्या के स्वरूप को प्रकाश करके रक्षा करै, परमेश्व
दोनों को विद्या के फल को प्राप्त करै, वह परमेश्वर हम दो
ब्रह्मविद्याकृत सामर्थ्य को बढ़ावै, हम दोनों अतिशय करके तेज
होवैं, हम दोनों में प्रमाद करके परस्पर द्वेष कभी न होवै
दोनोंकी आध्यात्मिक, आधिभौतिक, और आधिदैविक विघ्
शान्ति होवै ॥ ओं शांतिः, शांतिः, शांतिः ॥

मूलम् ॥

ॐ ब्रह्मविदाप्नोतिपरम् तदेषाऽभ्युक्ता सत्
नमनन्तं ब्रह्म योवेद निहितं गुहायां परमेव्यो
सोश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चि
तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः
काशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृ
पृथिव्या ओषधयः ओषधीभ्योऽन्नम् अन्नाद्
रेतसः पुरुषः सवाएष पुरुषोऽन्नरसमयः तस्येद
शिरः अयं दक्षिणः पक्षः अयमुत्तरः पक्ष अयमा
इदं पुच्छं प्रतिष्ठा तदप्येष श्लोको भवति ॥

इति प्रथमोऽनुवाकः ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

ब्रह्मवित् आप्नोति परम् तत् एषा अभ्युक्ता स
ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म यः वेद निहितम् गुहा
परमे व्योमन् सः अश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्र
विपश्चिता इति तस्मात् वै एतस्मात् आत्मनः आ
सम्भूतः आकाशात् वायुः वायोः अग्निः अग्नेः
अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्याः ओषधयः ओषधीभ्यः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्नात् पुरुषः सः वै एषः पुरुषः अन्नरसमयः तस्य इदम् एव शिरः अयम् दक्षिणः पक्षः अयम् उत्तरः पक्षः अयम् आत्मा इदम् पुच्छम् प्रतिष्ठा तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥

अन्वयः	पदार्थ
ब्रह्मवित्	ब्रह्मवेत्ता
परम्	निरतिशय ब्रह्म को
आप्नोति	प्राप्त होता है याने स्वयं ब्रह्मरूपहोजाता है
तत् = तत्र	उसब्रह्मके ज्ञान बिषे
एषा	यह ऋचा
अभ्युक्ता	वेदने कही है कि
सत्यम्	विकारशून्य
ज्ञानम्	ज्ञानस्वरूप
अनन्तम्	त्रिविध परिच्छेदशून्य या नीकालदिक् देशके अवधिसे शून्य
इति	ऐसा
ब्रह्म	ब्रह्म है
परमे	उत्कृष्ट
व्योमन्	हृदयाकाशमें
गुहायाम्	बुद्धिरूपी गुहाबिषे
+ यत्	जो
निहितम्	साक्षिरूपसे स्थित है
+ तत्	उस ब्रह्म को
यः	जो
वेद	जानता है
सः	वह
विपश्चिता	सर्वज्ञ
ब्रह्मणा	ब्रह्मस्वरूप
सहैव	एककाल बिषे ही याने तत्कालही
सर्वान्	संपूर्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कामान्=कामनाओं को
अश्नुते=प्राप्तहोता है यानेसर्वात्मा होजाता है
तस्मात्=तिस
एतस्मात्=उस पूर्वोक्त
आत्मनः=आत्मा से
आकाशः=आकाश शब्द गुणवाला
वै=प्रसिद्ध
सम्भूतः=उत्पन्नहुवा है
आकाशात्=आकाश से
वायुः=वायुशब्दस्पर्श गुणवाला
सम्भूतः=उत्पन्नहुवा है
वायोः=वायुसे
अग्निः=अग्नि शब्द स्पर्शरूप गुणवाला
सम्भूतः=उत्पन्नहुवा है
अग्नेः=अग्नि से
आपः=जल शब्द स्पर्शरूपरस गुणवाले
सम्भूताः=उत्पन्नहुये
अद्भ्यः=जलों से
पृथिवी=पृथिवी स्पर्श रूप गंधगुणवा
सम्भूता=उत्पन्न हुई
पृथिव्याः=पृथिवीसे
ओषधयः=अन्नवृक्ष
सम्भूताः=उत्पन्न हुये
ओषधीभ्यः=अन्नवृक्षों से
अन्नम्=अन्न
सम्भूतम्=उत्पन्न हुवा
अन्नात्=वीर्यरूप अन्न
पुरुषः=पुरुष
सम्भूतः=उत्पन्न होता
एषः=यह
वै=प्रसिद्ध है कि
सः पुरुषः=वह पुरुष
अन्नरसमयः=अन्नरससे
अस्ति=सिद्ध है यानेउत्पन्न हुआ
तस्य=उस पुरुष का
इदम्=यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिरः=शिर है
अयम्=यह
दक्षिणः=दहना
पक्षः=भुजा है
अयम्=यह
उत्तरः=वाम
पक्षः=भुजा है

अयम् आत्मा = यह कंठसे कटिपर्यन्त अंगीमध्यभाग आत्मा है

इदम्=यहकटिसेनीचे पादतलपर्यंत
पुच्छम्=पूंछ है
तत्=वह पूंछ
प्रतिष्ठा=ऊर्ध्व देह का आधार है
तत्=तत्र=ऐसे अन्नमय कोशविषे
अपि=ही
एषः=यह आगेवाला
श्लोकः=मंत्र
भवति=प्रमाण है

भावार्थः ॥

ओमिति ॥ पूर्व वल्ली में उपासना का निरूपण किया है, मगर केवल उपासना से जन्ममरणरूपी संसार का नाश नहीं होता है, किन्तु संपूर्ण अनर्थों का बीजभूत अविद्या है, तिसके नाश होने से ही संसाररूपी बीज का नाश होता है, इसलिये अब अविद्या का नाशक आत्मज्ञान है, तिसी को श्रुति उपदेश करती है ॥ ब्रह्मविदाप्नोतीति ॥ जो वस्तु सब से बड़ी हो अर्थात् जगत् जिसके अन्तर्भूत हो उसीका नाम ब्रह्म है, उसी व्यापक ब्रह्म को जो कोई अपना आत्मा करके जानता है उसी का नाम ब्रह्मवित् है, वह ब्रह्मवित्ही देहत्यागके अनंतर ब्रह्मको प्राप्त होता है, अर्थात् ब्रह्म में लय होकर ब्रह्मरूप होजाता है, इसी अर्थ को और भी श्रुति कहती हैं ॥ ब्रह्मविद्ब्रह्मैव भवति ॥ जो ब्रह्म को जानता है वही ब्रह्मरूप होता है, इसी वार्ता को मंत्र ने भी कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है ॥ सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म ॥ वह ब्रह्म सद्रूप है, ज्ञानस्वरूप
अनंतरूप है, श्रुति ने ब्रह्म के स्वरूप का यह लक्षण कहा है,
वस्तु स्वरूपभूत हो, और इतर पदार्थों से भेद करके लक्षक
हो, उसीका नाम स्वरूपलक्षणा है, सो सत्यादि ब्रह्मके स्वरूप
और इतर जड़पदार्थोंसे भेदकभी हैं, इसीवास्ते यह ब्रह्मका स्व
लक्षणा है ॥ और ब्रह्म के लक्षण में सत्यपद देने से मिथ्या
व्यावृत्ति होतीहै, अर्थात् मिथ्या पदार्थोंसे वह भिन्न है, और ज्ञा
पद से जड़ की व्यावृत्ति होती है, याने वह ब्रह्म जड़पदार्थो
भिन्न चेतन है, अनंतपदसे परिच्छिन्न पदार्थों से व्यावृत्ति हो
है, अर्थात् देश, काल, वस्तु परिच्छेदवाले जितने पदार्थ हैं,
सब से वह भिन्न है, अर्थात् वह सत्यस्वरूप है, ज्ञानस्वरूप
और अनंतस्वरूप है, ऐसे ब्रह्मको ॥ यो वेद निहितं गुहायाम् ॥
विद्वान् पुरुष बुद्धिरूपी गुहा में स्थित देखता है, और जानता
अर्थात् अहं ब्रह्मास्मि करके साक्षात्कार करलेता है, सो विद्व
ब्रह्मके साथ अभेद को प्राप्त होकर संपूर्ण भोगों को एकही क
में भोगता है, याने ब्रह्मानन्द को प्राप्त होता है ॥ तस्माद्वेति
ब्राह्मणवाक्य करके और ब्रह्म मंत्रवाक्य करके, जो ब्र
कथन कियागया है उसी ब्रह्म से शब्द तन्मात्रा आकाश प्र
उत्पन्न हुआ, फिर तिसी आकाश से स्पर्शतन्मात्रा वायु उ
हुई, उसी वायु से रूपतन्मात्रा अग्नि उत्पन्न हुई, उस अग्नि
फिर रसतन्मात्रा जल उत्पन्न हुआ, उस जल से गंधतन्मा
पृथिवी उत्पन्न हुई, तिस पृथिवी से व्रीहियवादि औषधि
उत्पन्न हुई, उन औषधियों से भातरूपी अन्न उत्पन्न हुआ, फि
अन्न से वीर्य्य उत्पन्न हुआ, उस वीर्य्य से हाथ पांववाला स्थू
शरीर उत्पन्न हुआ, इसलिये यह स्थूल देह अन्न के रसका
विकार है, तिस अन्न रसमय पुरुष का यह प्रसिद्ध शिर है,
प्रसिद्ध दक्षिण भुजा है, यह प्रसिद्ध सव्य उत्तर भुजा है,
दोनों भुजाओं के बीच में जो मध्यम भाग है सो सम्पूर्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का आत्मा है, याने अपना आप है, और जो यह प्रसिद्ध नाभी का अधोभाग है सो पुच्छ है, याने पुच्छ की तरह अन्नमय शरीर का आधार है सो तिस बाह्य अन्नमय कोश की उपासना विषे यह अगला मन्त्र प्रमाण है ॥

इति प्रथमोनुवाकः ॥ १ ॥

मूलम् ॥

अन्नाद्वैप्रजाःप्रजायन्ते याः काश्चपृथिवीꣳश्रिताः अथोअन्नेनैवजीवन्ति अथैनदपियन्त्यन्ततः अन्नꣳहिभूतानां ज्येष्ठम् तस्मात्सर्वौषधमुच्यते सर्वं वैतेऽन्नमाप्नुवन्ति येऽन्नंब्रह्मोपासते अन्नꣳहि भूतानां ज्येष्ठम् तस्मात्सर्वौषधमुच्यते अन्नाद्भूतानिजायन्ते जातान्यन्नेनवर्द्धन्ते अद्यतेऽत्तिचभूतानि तस्मादन्नं तदुच्यते इति तस्माद्वा एतस्मादन्नरसमयात् अन्योऽन्तरात्मा प्राणमयः तेनैषपूर्णः सवाएषपुरुषविधएव तस्य पुरुषविधताम् अन्वयं पुरुषविधः तस्य प्राणएवशिरः व्यानोदक्षिणः पक्षः अपान उत्तरः पक्षः आकाश आत्मा पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा तदप्येषश्लोकोभवति ॥

इति द्वितीयोऽनुवाकः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

अन्नात् वै प्रजाः प्रजायन्ते याः काः च पृथिवीम् श्रिताः अथो अन्नेन एव जीवन्ति अथ एनत् अपि यन्ति अन्ततः अन्नम् हि भूतानाम् ज्येष्ठम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्मात् सर्वौषधम् उच्यते सर्वम् वा एते अन्न
आप्नुवन्ति ये अन्नम् ब्रह्म उपासते अन्नम् हि भू
नाम् ज्येष्ठम् तस्मात् सर्वौषधम् उच्यते अन्ना
भूतानि जायन्ते जातानि अन्नेन वर्द्धन्ते अद्य
अत्ति च भूतानि तस्मात् अन्नम् तत् उच्यते इ
तस्मात् वै एतस्मात् अन्नरसमयात् अन्यः अ
रात्मा प्राणमयः तेन एषः पूर्णः सः वै एषः
रुषविधः एव तस्य पुरुषविधताम् अनु अय
पुरुषविधः तस्य प्राणः एव शिरः व्यानः दक्षि
पक्षः अपानः उत्तरः पक्षः आकाशः आत्मा पृथि
पुच्छम् प्रतिष्ठा तत् अपि एषः श्लोकः भवति ।

अन्वयः	पदार्थ
च	और
यः	जो
काः	कोई
प्रजाः	प्रजा
पृथिवीम्	पृथिवी के
श्रिताः	आश्रित हैं
+ ताः	वे सब
अन्नात्	रसपरिणामी अन्न से
वै	ही
प्रजायन्ते	उत्पन्न होती हैं
च	और

अन्वयः	पदार्थ
अथो	उत्पत्ति के पश्चात्
अन्नेन	अन्न से
एव	ही
जीवन्ति	जीती हैं और बढ़ती हैं
अथ	जीवन वर्धन के पश्चात्
अन्ततः	अन्तसमय याने जीवन त्याग के समय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एनत्=इस अन्नही
अपि=में
यन्ति=लीन होती हैं
तस्मात्=इसीकारण
अन्नम्=अन्न
हि=निश्चयकरके
भूतानाम्=प्राणियों का
ज्येष्ठम्=प्रथमतत्त्व है
च=और
सर्वौषधम्={सबके लिये क्षुधानिवारणार्थऔषध
उच्यते=कहाजाताहै

ये=जे
अन्नम्=अन्नको
ब्रह्म=ब्रह्म
+इति=करके
उपासते=उपासना करतेहैं
ते=वे
सर्वम्=सब
अन्नम्=अन्नको
वा=निश्चय करके
आप्नुवन्ति=प्राप्त होते हैं

यस्मात्=जिस कारण
अन्नम्=अन्न
हि=ही
भूतानाम्=प्राणियों का
ज्येष्ठम्=प्रथमतत्त्व है
तस्मात्=तिसी कारण
सर्वौषधम्={सब देहधारियों के देह दाहका याने क्षुधा शान्त करनेवाला
उच्यते=कहाजाता है
भूतानि=सम्पूर्णभूत
अन्नात्=अन्न से
जायन्ते=उत्पन्न होते हैं
+च=और
जातानि=उत्पन्नभये
अन्नेन=अन्नकरके
वर्द्धन्ते=वृद्धिको प्राप्त होते हैं

+यतः=जिसकारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्=वह अन्न
भूतैः=भूतों करके
अद्यते=खायाजाता है
+परम्=और वह
भूतानि=भूतों को
च=भी
अत्ति=खाता है
तस्मात्=तिसी कारण
अन्नम्=अन्न
उच्यते=कहाजाता है

इति=यह अन्नमय कोशकी उपासना का मन्त्र है

वै=स्मरण रहै कि
तस्मात्=तिस
एतस्मात्=पूर्वोक्त
अन्नरसमयात्=अन्नरस करके बनेहुये देहसे याने अन्नमय कोश से
अन्यः=पृथक्
अन्तरात्मा=अभ्यन्तर शरीर
प्राणमयः=प्राणमय
+अस्ति=है

तेन=उस प्राणम कोश करके
एषः=यह अन्नम कोश
पूर्णः=पूरित है भराहुआ जैसे हव धौंकनी होती है

वै=पुनः स्मर रहै कि
सः=वह
एषः=यह प्राणम कोश
+अपि=भी
पुरुषविधः=पुरुषाकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एव=ही
+ अस्ति=है

तस्य=उस पूर्वोक्त अन्नमय कोश
पुरुषविधताम्=पुरुषाकारके
अनु=समान
अयम्=यह प्राणमय कोश
अपि=भी
पुरुषविधः=पुरुषाकार है

तस्य=उस प्राणमय शरीरका
प्राणः=प्राण
एव=ही
शिरः=शिर है

व्यानः=व्यानवायु
दक्षिणः=दहना
पक्षः=भुजा है

अपानः=अपानवायु
उत्तरः=बाम
पक्षः=भुजा है

आकाशः=अभ्यंतरआकाश याने समानवायु
आत्मा=शरीर है याने धड़ है

पृथिवी=अपानवायु के रहनेका स्थान
+ तस्य=उसका
पुच्छम्=पूंछ है याने नीचेका धड़ है
+ तत्=वह पुच्छस्थानरूप पृथिवी
प्रतिष्ठा=उस प्राणमय शरीर का आधार स्थान है

तत्=तत्र=उस प्राणमय कोशकी उपासना विषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपि=ही
एषः=यह
श्लोकः=मंत्र प्रमाण
भवति=है (जिस व्याख्यान आगे कि जावैगा)

भावार्थः ॥

अन्नाद्धाइति ॥ समष्टि बीजभावापन्न विराडात्मा से प्रथ स्थावर जंगमरूप प्रजा उत्पन्न होती हैं, और जितनी पृथि पर प्रजा हैं वे सब अन्न से ही उत्पन्न होती हैं, और अन्न के भक्षण करके जीती हैं ॥ इसलिये सब प्रजा अन्न के तरफ़ दौड़ हैं, और फिर पृथिवीरूपी अन्न में ही सब लय को प्राप्त होत हैं, समष्टिरूप अन्न संपूर्ण प्रजा की उत्पत्ति का कारण होने प्रथम उत्पन्न हुआ है, और सबसे प्रथम होने के कारण सब रोगों का नाशक है, इसी वास्ते वह औषध करके कहा है, जो उपासक अन्न को ही ब्रह्मरूप करके उपासना करते अर्थात् अन्न में ही ब्रह्मबुद्धि को करते हैं, वे निश्चय करके को प्राप्त होते हैं, और अन्न से ही संपूर्ण प्राणि उत्पन्न होते हैं, अन्न करके ही उत्पन्न हुये २ जीते हैं और बढ़ते हैं, इसीवा अन्न को ही जीवन का कारण कहते हैं यह अन्नमय कोश उपासना का मंत्र है ॥ जो अन्नमय कोश ब्रह्म की उपासना क हैं वे अन्न से सदा पूर्ण रहते हैं ॥ पूर्ववाले मंत्र करके अन्नम कोश का निरूपण करके अब प्राणमय कोश को दिखलाते हैं तस्मादिति ॥ ब्राह्मणभाग करके और मंत्रभाग करके कथन कि जो अन्नमय कोश है तिसके अन्तर और तिससे भिन्न प्राणम कोश है, जैसे धौकनी विषे वायु व्याप्त है उसी प्रकार प्राणम कोश करके यह स्थूल देह व्याप्त है सो जो स्थूल देह में वर्तम प्राणमय कोश है सो शिर आदि अवयवों करके पुरुषाकार तिस अन्नमय कोश पुरुषाकारके अनन्तर यह प्राणमय कोश भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरुषाकार है, अन्नमय कोश की तरह यह प्राणमय कोश स्वतंत्र पुरुषाकार नहीं है, बल्कि अन्नमय कोश के पुरुषाकारता को आश्रय करके उसीके आकार ऐसा इसका आकार है, इसीप्रकार पूर्व २ कोश की पुरुषाकारता के अनन्तर उत्तर २ कोश की पुरुषाकारता आतीजातीहै, और तिस प्राणमय कोश का मुख और नासिका में संचार करनेवाली जो कि प्राणवायु है वही शिर है, और सम्पूर्ण नाड़ियों में संचरण करनेवाली जो व्यानवायु है, वही दहिना पक्ष है, और नीचे को संचार करनेवाली जो अपान वायु है वह उत्तर पक्ष है, और सम्पूर्ण शरीरमें विचरनेवाली जो समान वायु है वह शरीर है याने धड़ है, और उदान वायु पूंछ याने शरीर का आधार स्थान है, प्राणमय कोश की उपासना बिषे यह आगेवाला मंत्र प्रमाण है ॥ २ ॥

इति द्वितीयोऽनुवाकः ॥ २ ॥

मूलम् ॥

प्राणंदेवाअनुप्राणन्ति मनुष्याः पशवश्चये प्राणोहिभूतानामायुः तस्मात्सर्वायुषमुच्यते सर्वमेव आयुर्यन्ति येप्राणंब्रह्मोपासते प्राणोहिभूतानामायुस्तस्मात्सर्वायुषमुच्यतइति तस्यैषएवशारीर आत्मायःपूर्वस्य तस्माद्वा एतस्मात्प्राणमयात्अन्योऽन्तरात्मामनोमयः तेनैषपूर्णः सवाएषपुरुषविधएव तस्यपुरुषविधताम् अन्वयं पुरुषविधः तस्य यजुरेवशिरः ऋग्दक्षिणः पक्षः सामोत्तरः पक्षः आदेशआत्माअथर्वाङ्गिरसः पुच्छंप्रतिष्ठातदप्येष श्लोकोभवति ॥

इति तृतीयोऽनुवाकः ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

प्राणम् देवाः अनु प्राणन्ति मनुष्याः पशवः च ये प्राणाः हि भूतानाम् आयुः तस्मात् सर्वायुषम् उच्यते सर्वम् एव ते आयुः यन्ति ये प्राणम् ब्रह्म उपासते प्राणाः हि भूतानाम् आयुः तस्मात् सर्वायुषम् उच्यते इति तस्य एषः एव शारीरः आत्मा यः पूर्वस्य तस्मात् वै एतस्मात् प्राणमयात् अन्यः अन्तरः आत्मा मनोमयः तेन एषः पूर्णः सः वै एषः पुरुषविधः एव तस्य पुरुषविधताम् अनु अयम् पुरुषविधः तस्य यजुः एव शिरः ऋक् दक्षिणः पक्षः साम उत्तरः पक्षः आदेशः आत्मा अथर्वाङ्गिरसः पुच्छम् प्रतिष्ठा तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
ये	जो	अनु	पश्चात्
देवाः	इन्द्रियाभिमानीदेवताहैं	प्राणन्ति	चेष्टावान् होते हैं
च	और	हि	क्योंकि
+ ये	जो	प्राणाः	प्राण
मनुष्याः	मनुष्य	भूतानाम्	सर्व भूतों का
पशवः	पशु आदि प्राणी हैं	आयुः	जीवन है
+ ते	वे सब	तस्मात्	इसी कारण से (वह)
प्राणम्	प्राणके		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वायुषम्=सब का जीवन
उच्यते=कहाजाता है
ये=जो कोई
प्राणम्=प्राणको
ब्रह्म=ब्रह्म
इति=करके
उपासते=उपासना करते हैं
ते=वे
सर्वम्=पूर्ण याने सौ वर्षतक
आयुः=आयुको
एव=अवश्य
यन्ति=प्राप्तहोतेहैं याने अल्प मृत्यु और अपमृत्यु से रहित होते हैं
हि=जिस कारण
प्राणः=प्राण
भूतानाम्=सब प्राणियोंका
आयुः=आयुहै
तस्मात्=तिस कारण
सर्वायुषम्=सबका जीवन
उच्यते=कहाजाता है
+च=और
पूर्वस्य=अन्नमयकोशका
यः=जो
आत्मा=चिदात्मा
शारीरः=शरीर बिषे स्थित
+अस्ति=है
एषः=वह
एव=ही
तस्य=इसप्राणमयकोशका
अपि=भी
आत्मा=चिदात्मा
+अस्ति=है
इति=यह प्राणमय कोश की उपासना का मंत्र है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वै=पुनः स्मरण रहै कि
तस्मात्=उस
एतस्मात्=इस
प्राणमयात्=प्राणमय कोशके
अन्तरः=अभ्यन्तर
+च=और
अन्यः=पृथक्
आत्मा=शरीर
मनोमयः=मनोमय कोशकरके प्रसिद्ध

+अस्ति=है
तेन=इस मनोमय कोश करके
एषः=यह प्राणमय कोश
पूर्णः=पूरित है याने व्याप्तहै

वै=स्मरण रहै कि
सः=सो
एषः=यह मनोम कोश
अपि=भी
पुरुषविधः=पुरुषाकार
एव=ही
अस्ति=है

तस्य=उसप्राणम कोश के
पुरुषविधताम्=पुरुषप्र-कारके
अनु=समान
अयम्=यह मनोम कोश
+अपि=भी
पुरुषविधः=पुरुषाकारहै
तस्य=इस मनोम शरीरका
यजुः=यजुर्वेद
एव=निश्चय क
शिरः=शिर है
ऋक्=ऋग्वेद
दक्षिणः=दक्षिण
पक्षः=भुजा है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साम=सामवेद
उत्तरः=वाम
पक्षः=भुजाहै
आदेशः=ब्राह्मणग्रन्थया-
नेब्राह्मणभाग
आत्मा=मध्य शरीरहै
अथर्वाङ्गिरसः } =अथर्वणवेद
पुच्छम्=पूंछ है
+तत्=सोई
प्रतिष्ठा=उसमनोमयको-
शका अधिष्ठान
+अस्ति=है
तत्=तत्र= { इसमनोमय कोशकी उपा-सना बिषे
अपि=भी
एषः=यह
श्लोकः=मंत्र प्रमाण
भवति=है

भावार्थः ॥

प्राणमिति ॥ पांचवृत्तिरूप जो मुख्य प्राण है उसको आश्रयण करके ही देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि सब चेष्टा को करते हैं, और प्राणों की क्रिया करके ही सम्पूर्ण क्रियावाले होते हैं, इसी कारण प्राण प्राणियों का जीवन है, जबतक इस शरीर में प्राण निवास करता है तावत्पर्यंत सबही जीते हैं, जो अधिकारी प्राणमय कोश आत्मा की ब्रह्मरूप करके उपासना करता है वह उपासक पूर्ण शतवर्ष की आयुपर्यंत जीता है, जो पुरुष जिस इच्छा करके ब्रह्म की उपासना को करता है वह पुरुष उसी इच्छा को प्राप्त होता है, जो पुरुष दीर्घ आयु की इच्छा करके ब्रह्म की उपासना को करता है वह दीर्घ आयु को प्राप्त होता है, और जो चैतन्य आत्मा अन्नमय कोशवाले शरीर में है वही प्राणमय कोश बिषे भी स्थित है ॥ और ब्राह्मण भाग करके और मन्त्र भाग करके कथन किया हुआ जो प्राणमय कोश है उससे भिन्न और उसके भीतर मनोमय कोश है, तिस मनोमय कोश करके यह प्राणमय कोश पूर्ण है, और इसीलिये जो चेतन प्राणमय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोश का आत्मा है वही मनोमय कोशका भी आत्मा है, व
वह मनोमय कोश भी पुरुषाकार है, अर्थात् वह भी शिर आ
अवयवोंवाला है, इसीवास्ते वह भी पुरुषाकारवाला कहा जा
है, तिस पुरुषाकार को दिखलाते हैं, इस मनोमय कोश
यजुर्वेद शिर है, ऋग्वेद दक्षिण पक्ष है, साम वेद उत्तर पक्ष
और ब्राह्मणभाग जो है वह तिस मनोमय कोश का मध्य भ
है, और अथर्ववेद मनोमय कोश की पूंछ है, याने अधिष्ठान
ऐसा जानकर चिन्तन करै, इसी अर्थ को मन्त्र भी कहता है।

इति तृतीयोऽनुवाकः ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

यतोवाचोनिवर्त्तन्ते अप्राप्यमनसासह आनन्
ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कदाचनेति तस्यैषएवश
रीरआत्मायः पूर्वस्य तस्माद्वा एतस्माद्वा एतस्म
न्मनोमयात् अन्योऽन्तर आत्मा विज्ञानमयः
नैषपूर्णः सवाएषपुरुषविध एव तस्य पुरुषविधता
अन्वयं पुरुषविधः तस्य श्रद्धैवशिरः ऋतंदक्षिण
पक्षः सत्यमुत्तरः पक्षःयोगआत्मामहः पुच्छंप्रतिष्ठ
तदप्येषश्लोकोभवति ॥

इतिचतुर्थोऽनुवाकः ४ ॥

पदच्छेदः ॥

यतः वाचः निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह आ
नन्दम् ब्रह्मणः विद्वान् न बिभेति कदाचन तस्
एषः एव शारीरः आत्मा यः पूर्वस्य तस्मात्
एतस्मात् मनोमयात् अन्यः अन्तरः आत्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञानमयः तेन एषः पूर्णः सः वै एषः पुरुषविधः एव तस्य पुरुषविधताम् अनु अयम् पुरुषविधः तस्य श्रद्धा एव शिरः ऋतम् दक्षिणः पक्षः सत्यम् उत्तरः पक्षः योगः आत्मा महः पुच्छम् प्रतिष्ठा तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥

अन्वयः	पदार्थ
वाचः	=वाणीरूपवेद
मनसासह	=मनद्वारा
यतः	=जिस ब्रह्मको
अप्राप्य	=न प्राप्त होकर केअर्थात् घटादिवत्नसाक्षातकार करके
निवर्तन्ते	=लौट आते हैं याने प्रत्यक्ष नहीं करसक्के हैं
तस्य	=उस
ब्रह्मणः	=ब्रह्मके
आनन्दम्	=आनन्दको
+ यः	=जो मनोमयकोशका उपासक
विद्वान्	=वेद जानताहै

अन्वयः	पदार्थ
सः	=वह उपासक
कदाचन	=जन्म मरण आदिसे कभी
न	=नहीं
बिभेति	=डरताहैयाने आवागमन से रहित हो करस्वयंब्रह्म होजाताहै

तस्य	=उस
पूर्वस्य	=पूर्वोक्त प्राणमयकोशका
यः	=जो
शारीरः	=शरीर बिषे स्थित
आत्मा	=चिदात्मा है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एषः=वह
एव=ही
+ अस्य=इस मनोमय कोश का
+ अपि=भी
+ आत्मा=आत्माहै
इति=यह मनोमय कोशके उपासनाकामंत्रहै

वै=स्मरण रहै कि
तस्मात्=उस
एतस्मात्=इस
मनोमयात्=मनोमय कोशके
अन्तरः=अभ्यन्तर
च=और
अन्यः=पृथक्
आत्मा=शरीर
विज्ञानमयः=विज्ञानमय कोश
+ अस्ति=है

तेन=इसविज्ञानमय कोशसे
एषः=वह पूर्वोक्त मनोमयकोश
पूर्णः=व्याप्त है

वै=पुनःस्मरण रहै कि
सः=वह
एषः=यह विज्ञानमयकोश
पुरुषविधः=पुरुषाकार
एव=ही
अस्ति=है

तस्य=उस मनोमय कोशके
पुरुषविधताम्=पुरुषप्रकार के
अनु=समान
अयम्=यह विज्ञानमयकोश
पुरुषविधः=पुरुषाकार

तस्य=उसविज्ञानमयशरीरका
श्रद्धा=यागादि उपासना श्रद्धा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एव=निश्चयकरके
शिरः=शिर है

ऋतम्=मानसिक निश्चय सत्य
दक्षिणः=दहना
पक्षः=भुजा है
सत्यम्=कायकवाचिक सत्य
उत्तरः=वाम
पक्षः=भुजा है
योगः=मनका समाधान
आत्मा=मध्यशरीर है

महः=महत्तत्व
पुच्छम्=पूंछ है
तत्=वह पूंछ याने महत्तत्व
प्रतिष्ठा=विज्ञानमयशरीरका आधार है
तत्=तत्र=उस विज्ञानमय शरीर कीउपासना बिषे
अपि=भी
एषः=यह
श्लोकः=मंत्र प्रमाण
भवति=है

भावार्थः ॥

यतइति ॥ जिस ब्रह्म आत्मा को सम्पूर्ण वेद वाणी इदंता करके नहीं कहसक्ती है तिसको मन में आरोप्य करने से मनोमय कोश हुआ है, तिस मनोमय कोश की उपासना के फल को कहते हैं ॥ मनोमय कोश का जो उपासक ब्रह्म के आनन्द को प्राप्त होता है वह जन्म मरण आदि दुःखों से छूट जाता है, क्योंकि दुःख का हेतु जो अविद्या है वह मनोमय कोश की उपासना करके ब्रह्म के साक्षात्कार होने पर नाश होजाती है, और पूर्वोक्त प्राणमय कोश का जो आत्मा है वही मनोमय कोश का भी आत्मा है, आनन्द की प्राप्ति के लिये प्राणमय कोश से आत्मत्व दृष्टि को उठाकरके मनोमयकोश में आत्मत्व दृष्टि को करै, तिस ब्राह्मणप्रतिपाद्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेदभाग करके और मन्त्रप्रतिपाद्य वेदभाग करके जो मनोम
कोश है तिसके आवान्तर और तिससे पृथक् और तिस
ही समान विज्ञानमयकोश है, विज्ञान नाम निश्चयात्म
अन्तःकरण की वृत्ति का है, उस विज्ञानमयकोश करके
मनोमयकोश व्याप्त है, वह विज्ञानमय भी पुरुषाकार है, वि
विज्ञानमय पुरुषाकार के पांच अवयवों को कहते हैं, विज्ञानम
कोश की आस्तिक बुद्धिरूपी जो श्रद्धा है वही शिर है,
शास्त्र के अनुसार जो कर्त्तव्य है वही उसका दक्षिणपक्ष
और सत्यभाषण उसका उत्तरपक्ष है, और चित्त की वृत्तिका
रोधरूप जो योग है सो उसका मध्य भाग है, और हिरण्य
की समष्टिरूप बुद्धि याने महत्तत्त्व उसका आधार है, इसी
को मन्त्र भी प्रकाश करता है ॥

इति चतुर्थोऽनुवाकः ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

विज्ञानंयज्ञंतनुतेकर्माणितनुतेपि च विज्ञानंदे
सर्वे ब्रह्मज्येष्ठमुपासते विज्ञानंब्रह्मचेद्वेदतस्मा
प्रमाद्यति शरीरे पाप्मनोहित्वा सर्वान् काम
समश्नुत इति तस्यैष एव शारीर आत्मा यःपूर्व
तस्माद्वा एतस्माद्विज्ञानमयात्अन्योऽन्तरआत्
ऽऽनन्दमयः तेनैष पूर्णःसवाएषपुरुषविधएवत
पुरुष विधतामन्वयं पुरुष विधः तस्यप्रिय
शिरः मोदोदक्षिणःपक्षः प्रमोद उत्तरः आनन्दा
ब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठातदप्येषश्लोकोभवति॥

इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

विज्ञानम् यज्ञम् तनुते कर्माणि तनुते अपि च विज्ञानम् देवाः सर्वे ब्रह्म ज्येष्ठम् उपासते विज्ञानम् ब्रह्म चेत् वेद तस्मात् चेत् न प्रमाद्यति शरीरे पाप्मनः हित्वा सर्वान् कामान् समश्नुते इति तस्य एषः एव शारीरः आत्मा यः पूर्वस्य तस्मात् वै एतस्मात् विज्ञानमयात् अन्यः अन्तरः आत्मा आनन्दमयः तेन एषः पूर्णः सः वै एषः पुरुषविधः एव तस्य पुरुषविधताम् अनु अयम् पुरुषविधः तस्य प्रियम् एव शिरः मोदः दक्षिणः पक्षः प्रमोदः उत्तरः पक्षः आनन्दः आत्मा ब्रह्म पुच्छम् प्रतिष्ठा तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥

अन्वयः	पदार्थ
विज्ञानम्	=निश्चयपूर्वक ज्ञान
यज्ञम्	=यज्ञको
अपि	=अवश्य
तनुते	=विस्तारकरताहै
च	=और
कर्माणि	=संपूर्णकर्मों को
तनुते	=विस्तार करता है
यतः	=जिस कारण
सर्वे	=सब
देवाः	=इन्द्रियादि देवता
ज्येष्ठम्	=प्रथम उत्पन्न हुये
विज्ञानम्	=विज्ञानरूप
ब्रह्म	=ब्रह्मको
उपासते	=उपासनाकरतेहैं
ततः	=तिसीकारण
चेत्	=जब
विज्ञानम्	=विज्ञानको
ब्रह्म	=ब्रह्म
+इति	=करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ यः=जो
वेद=जानता है
चेत्=और
तस्मात्=उसविज्ञानमय ब्रह्म से
न=नहीं
प्रमाद्यति=चूकताहै याने दृढ़ निश्चय करके उसकी उपासना करताहै
+सः=वह उपासक
शरीरे=शरीरके
पाप्मनः=पापोंको
हित्वा=नाशकरके
सर्वान्=सम्पूर्ण
कामान्=कामनाओं को
समश्नुते=सम्यक्प्रकार भोक्ता है
तस्य=उस
पूर्वस्य=पूर्वोक्त मनोमय कोशका
यः=जो
आत्मा=चिदात्मा
शारीरः=शरीर में स्थितहै
एषः=वह
एव=ही
+अस्य=इस विज्ञानमय कोशका
+अपि=भी
+अस्ति=आत्मा है

वै=पुनः स्मरण रहै कि
तस्मात्=उस
एतस्मात्=इस
विज्ञानमयात्=विज्ञानमय कोशके
अन्तरः=अभ्यन्तर
च=दूसरा
अन्यः=पृथक्
आत्मा=शरीर
आनन्दमयः=आनन्दमयकोश के प्रसिद्ध
+अस्ति=है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेन={इस आनन्दमय को शकरके
एषः=वह विज्ञानमय कोश
पूर्णः=पूरित है याने व्याप्त है

वै=स्मरण रहै कि
सः=वही
एषः=यह आनन्दमय कोश
पुरुषविधः=पुरुषाकार
एव=ही
+अस्ति=है
तस्य={उस पूर्वोक्त विज्ञानमयकोशके
पुरुषविधताम्}=पुरुषाकार के
अनु=समान
अयम्=यह आनन्दमय कोश
+अपि=भी
पुरुषविधः=पुरुषाकार है

तस्य=इस आनन्दमय पुरुष का
प्रियम्={पुत्र धनआदि इष्टवस्तु केदर्शनसेउत्पन्नभयाप्रेम
एव=ही
शिरः=शिर है
मोदः={प्रियपदार्थके लाभसे उत्पन्नहुआ हर्ष
दक्षिणः=दहना
पक्षः=भुजा है
प्रमोदः=पूर्वोक्त अत्यन्त हर्ष
उत्तरः=वाम
पक्षः=भुजा है
आनन्दः=जो सबप्रकार से आनन्द है
सः=वही
आत्मा=मध्यशरीर है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्म=ब्रह्म
पुच्छम्=पूंछ है
तत्=वह ब्रह्मरूप पूंछ
प्रतिष्ठा=आनन्दमय शरीर का आधार स्थान है

तत्=तत्र=इस आनन्दमय कोश की उपासना बिषे
अपि=भी
एषः=यह
श्लोकः=मन्त्र प्रमाण
भवति=है

भावार्थः ॥

विज्ञानमिति ॥ विज्ञान याने निश्चयात्मक जो बुद्धि है वैदिक कर्म या ज्ञात को श्रद्धापूर्वक विस्तार करती है, और स कर्मों को भी विस्तार करती है, और सम्पूर्ण जितने इन्द्रिय देवता हैं वे सब विज्ञानमय आत्मा को ब्रह्मरूप करके उपास करते हैं ॥ और इसी कारण जो पुरुष विज्ञानमय आत्मा ब्रह्मरूप करके जानता है, और विज्ञानमय से अतिरिक्त जि अन्नमयादि कोश हैं, उनमें जो ब्रह्मबुद्धि को नहीं करता है जीवित दशा में ही पापों को नाश करके सम्पूर्ण दिव्य भोगों भोगता है ॥ और जो पूर्वोक्त मनोमय कोश का आत्मा है वही विज्ञानमयकोश का भी आत्मा है, मनोमयकोश से उपास आत्मत्वदृष्टि को उठाकर विज्ञानमयकोश में आत्मदृष्टि करै, अब आनन्दमयकोश को कहते हैं ॥ ब्राह्मणभाग और मन्त्रभाग करके प्रतिपाद्य जो विज्ञानमयकोश है तिस भीतर और तिससे भिन्न आनन्दमयकोश है, जिस काल में पु शुभकर्मों के फल को अनुभव करता है तिसी काल अन्तःकर की वृत्ति अन्तर्मुख होजाती है, और तब तिसमें आत्मा का प्र बिंब पड़ता है, और प्रतिबिंब करके युक्त हुई २ वह वृत्ति आनन्दम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहीजाती है, और उसमें अधिक आनन्द प्राप्त होने से उसका नाम आनन्दमयकोश है, जब कर्म का फल समाप्त हो-जाता है, तब वह वृत्ति लीन होजाती है, और वही आनन्दमय आत्मा भोक्तारूप भी होता है, उसी आनन्दमयकोश करके यह विज्ञानमयकोश व्याप्त है, और यह आनन्दमयकोश भी पुरुषा-कार है, तिसी आनन्दमयकोश के पांच अवयवों को दिखलाते हैं, प्रिय और इष्ट वस्तु के दर्शन से जन्य जो सुख है वह तिस आ-नन्दमयआत्मा का शिर है, और इष्टपदार्थ के लाभजन्य जो सुख है वह तिस आनन्दमयकोश का दक्षिण पक्ष है, और इष्ट पदार्थ के भोग से जन्य जो सुख है वह तिस आनन्दमय का उत्तरपक्ष है और प्रिय प्रमोदादि अवयवों में सामान्यरूप करके अनुगत जो सुख है वह आनन्दमय का मध्य भाग है, और जिस ब्रह्म के बोध के लिये अन्नमयादिक पांच कोशों का निरूपण किया है, वह ब्रह्म आनन्दमयकोश का पुच्छरूप करके आधार है, यही ध्यान करने के योग्य है, और जो कुछ अज्ञान करके कल्पित द्वैत प्रपंच है उस सबकी अवधि ब्रह्मही है क्योंकि ब्रह्ममें ही सब कल्पित है इसी अर्थ को मन्त्र ने भी कहा है ॥

इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

असन्नेवभवतिअसद्ब्रह्मेतिवेदचेत्अस्तिब्रह्मेति चेद्वेदसन्तमेनं ततो विदुरिति तस्यैष एव शरीरआ त्मा यः पूर्वस्य अथातोऽनुप्रश्नाः उताविद्वानमुंलो कं प्रेत्य कश्चन गच्छति (३) अहोविद्वानमुंलोकं प्रेत्य कश्चित्समश्नुता (३) उशोऽकामयत बहु स्यां प्रजायेयेति स तपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वाइदꣳ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वमसृजत यदिदंकिञ्च तत् सृष्ट्वातदेवानु प्राविश
तदनुप्रविश्य सच्चत्यच्चाभवत् निरुक्तञ्चानिरुक्त
निलयनञ्चानिलयनञ्च विज्ञानञ्चाविज्ञानञ्च स
ञ्चानृतञ्च सत्यमभवत् यदिदं किञ्चतत्सत्यमि
चक्षते तदप्येषश्लोकोभवति ॥

इतिषष्ठोऽनुवाकः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

असन् एव भवति असत् ब्रह्म इति वेद
अस्ति ब्रह्म इति चेत् वेद सन्तम् एनम् ततः वि
इति तस्य एषः एव शारीरः आत्मा यः पूर्व
अथ अतः अनु प्रश्नाः उत अविद्वान् अ
लोकम् प्रेत्य कश्चन गच्छति आहो विद्वान् अ
लोकं प्रेत्य कश्चित् समश्नुता उ सः अकाम
बहु स्याम् प्रजायेय इति सः तपः अतप्यत
तपः तप्त्वा इदम् सर्वम् असृजत यत् इदम् कि
तत् सृष्ट्वा तत् एव अनुप्राविशत् तत् अनुप्रवि
सत् च त्यत् च अभवत् निरुक्तम् च अनिरु
च निलयनम् च अनिलयनम् च विज्ञानम्
अविज्ञानम् च सत्यम् च अनृतम् च सत्य
अभवत् यत् इदम् किञ्च तत् सत्यम् इति आ
क्षते तत अपि एषः श्लोकः भवति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
चेत्	=अगर
ब्रह्म	=ब्रह्म
असत्	=नहीं है
इति	=ऐसा
वेद	=जानताहैजोतो
+सः	=वहब्रह्मकानहीं जाननेवाला
एव	=आपही
असन्	=नास्तिक याने सत्ता शून्यहोताहै
चेत्	=अगर
ब्रह्म	=ब्रह्म
अस्ति	=है
इति	=ऐसा
वेद	=जानता है जो
ततः	=तो
एनम्	=उसको याने ब्रह्मसत्तामाननेवाले को
सन्तम्	=सत्तासहितआस्तिक सज्जन
इति	=करके

अन्वयः	पदार्थ
विदुः	=जानतेहैं संसारीलोक
तस्य	=उस पूर्वोक्त
पूर्वस्य	=विज्ञानमय कोशका
यः	=जो
आत्मा	=चिदात्मा
शारीरः	=शरीरविषे स्थित है
एषः	=वह
एव	=ही
+आत्मा	=आत्मा
+अस्य	=इस आनन्दमयकोश का
+अपि	=भी
+अस्ति	=है
अथ	=अब
अनु	=इसकेपश्चात्
प्रश्नाः	=प्रश्न
भवन्ति	=उत्पन्न होते हैं कि
अतः	=ब्रह्महैअथवा ब्रह्म नहीं है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत=अगर ब्रह्महै
+तदा=तो (क्या)
कश्चन=कोई
अविद्वान्=अज्ञपुरुष
अपि=भी
प्रेत्य=देहत्याग करके
अमुम्=उस
लोकम्=ब्रह्मभाव को
गच्छतिइ=प्राप्त होताहै (यह विचार करना योग्य है)
अहो=अगर पहले कहे हुए के विपरीत ब्रह्म नहीं है
+तदा=तौ (क्या)
कश्चन=कोई
विद्वान्=विद्वान्पुरुष
उ=भी
प्रेत्य=देहत्याग करके
अमुम्=उस
लोकम्=ब्रह्मभावको
समश्नुते=नहीं प्रा होताहै भी विच रनायोग

इस प्रकार शिष्योंकी पर सिद्धान्ती "सत्यं ज्ञ मनन्तं ब्रह्म" इस पूर्व महावाक्य को प्रथ रखके आत्माकी सत्यत निमित्त आगे ग्रन्थ आरम्भ करते हैं

सः=वह आत्म जिससे अ काशआदि पञ्चमहाभू उत्पन्न हु हैं
इति=इसप्रकार
अकामयत=कामना करत भया कि
+अहम्=मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अप्रजायेय=अप्रजाये यम्=नाम रूप प्रकट करके
बहु=बहुत
स्याम्=होऊं

सः=वह आत्मा
तपः=सृष्टि की उत्पत्ति की इच्छा बिषे
अतप्यत=विचार करता भया
सः=वह आत्मा
एवम्=इसप्रकार
तपः=विचार
तप्त्वा=करके
इदम्=इस
सर्वम्=सबनामरूपात्मकजगत्को
असृजत=सृजताभया

यत्=जो
किञ्च=कुछ
इदम्=यह दृश्यमान जगत् है
तत्=उसको
सृष्ट्वा=सृजकरके
तत्=उसमें
+स्वयम्=आप
एव=ही
अनु=पश्चात्
प्राविशत्=चैतन्य कला से प्रवेश करताभया

तत्=तिस जगत् बिषे
प्रविश्य=प्रवेश करके
अनु=फेर
सत्=मूर्त्तद्रव्ययाने पृथिवी जल तेजरूप
च=और
त्यत्=अमूर्त्त याने वायु आकाशरूप
च=भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+स्वयमेव=आपही
अभवत्=होता भया

निरुक्तम्=निकृष्ट याने
नीच जाति
च=और
अनिरुक्तम्=ऊंचजाति
च=भी
+स्वयमेव=आपही
अभवत्=होताभया

निलयनम्=आश्रय
च=और
अनिलयनम्=अनाश्रय
च=भी
+स्वयमेव=आपही
+अभवत्=होताभया

विज्ञानम्=चेतन
च=और
अविज्ञानम्=अचेतन
च=भी
+स्वयमेव=आपही
+अभवत्=होताभया

सत्यम्=सत्य
च=और
अनृतम्=असत्य
च=भी
+स्वयमेव=आपही
+अभवत्=होताभया

यत्सत्यात्=जिसकी स-
त्यता से
यत्=जो
किञ्च=कुछ
इदम्=यहकार्यरूप
जगत् है
तत्=सोभी
सत्यम्=सत्य
अभवत्=होता भया

तत्=उस सत्य ज्ञानानन्द रूपब्रह्मको
सत्यम्=परमार्थ से
सत्य
इति=करके
आचक्षते=कहते हैं (ब्र
ह्मवेत्तालोक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्=तत्र={उस परमार्थ सत्यकी उपासना बिषें
अपि=भी
एषः=यह
श्लोकः=मंत्र प्रमाण
भवति=है

भावार्थः ॥

असन्नेवेति ॥ सम्पूर्ण व्यवहारों से रहित और सम्पूर्ण इन्द्रियों का अविषय जो ब्रह्म है वह असत् है अर्थात् वह है नहीं, इस प्रकार जो पुरुष जानता है वह पुरुष पुरुषार्थ से रहित असत् के तुल्य नास्तिक श्रद्धाहीन होताहै और इसीकारण वह असाधु समझाजाताहै, और जो पुरुष सम्पूर्ण द्वैत जगत् का अधिष्ठान और कर्ता और लयका आधार ब्रह्मको जानताहै, उसको ब्रह्मवेत्ता लोक ब्रह्मस्वरूप और परमार्थ से सद्रूपकरके मानते हैं, इसलिये ब्रह्म है ऐसा जानना चाहिये, क्योंकि जो विज्ञानमयकोश का आत्मा है, वही आनन्दमयकोश का भी आत्मा है, और उसी विज्ञानमयकोश के अभ्यन्तर आनन्दमयकोश स्थित है, पूर्व श्रवणविधि करके आत्मतत्त्व को दिखाया है, यहां पर मनन विधि करके आत्मतत्त्व के दिखाने के लिये प्रथम प्रश्नों को लिखते हैं ॥ अब्रह्म विद् ॥ अज्ञानी मरके प्रकाश स्वरूप ब्रह्मको प्राप्त होताहै वा नहीं होताहै, और विद्वान् पूर्वोक्त ब्रह्म को प्राप्त होताहै या अविद्वान् की तरह नहीं प्राप्त होता है, और ब्रह्म सम होने से किसी का भी पक्षपाती नहीं है, तब अविद्वान् तिस ब्रह्मको प्राप्त होता है वा नहीं होता है, और विद्वान् तिसको प्राप्त होता है वा नहीं होता है, इन प्रश्नों के उत्तर में आगे ग्रन्थ का आरम्भ करते हैं ॥ सोऽकामयतेति ॥ परमात्मा सर्ग के आदिकाल में ऐसा इच्छा करता भया ॥ बहुस्यांप्रजायेयेति ॥ मैं एकसे अनेक होजाऊं, और प्रजारूप करके मैं उत्पन्न होऊं ॥ प्र० ॥ पूर्व सिद्ध जो ब्रह्म है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिसकी स्वरूप से उत्पत्ति नहीं बनती है ॥ उ० ॥ जैसे जल में सूर्य्यादिकों के प्रतिबिम्ब का प्रवेश होता है, तैसे अन्तःकरणादिकों में ब्रह्म के प्रतिबिम्ब का प्रादुर्भाव होता है, यही उत्पत्ति अङ्गीकार की है, स्वरूप से उसकी उत्पत्ति नहीं मानी है, जब इस प्रकार वह ईश्वर जगत्के रचनेका विचार करता भया और पश्चात् फिर वह सम्पूर्ण जगत् को रचता भया, तब रचेहुये जगत् की चेष्टा के लिये आपही उसमें प्रवेश करता भया, अर्थात् सम्पूर्ण जीवों के अन्तःकरण में अपना प्रतिबिम्ब डालता भया, यही उसका प्रवेश है, क्योंकि जड़में वास्तव से व्यापक का प्रवेश बनता नहीं है॥ तदनुप्रविश्येति ॥ तिस कार्य्यरूप जगत् में वह परमात्मा प्रवेश करके आपही स्थूल सूक्ष्मरूप भी होता भया, पृथिवी, जल और तेज यह तीन स्थूलभूत चक्षुरादि इन्द्रियों का विषय मूर्त्तिमान् हैं, और वायु आकाश यह दो भूत अमूर्त्तिमान् हैं, सो वह परमात्माही मूर्त्त और अमूर्त्तरूप होता भया, और जो कुछ नामरूप करके निरूपण करने को शक्य है अर्थात् जितना कुछ भूत भौतिक कार्य है उसका नाम निरुक्त है, और जो कुछ नामरूप करके निरूपण करने को अशक्य है उसका नाम अनिरुक्त है, सो निरुक्त अनिरुक्तरूप भी वह आपही होता भया, जो किसी आधार के आश्रित होकर स्थित होवै उसका नाम निलयनं है जैसे कि मन्दिर आदिक हैं, और जो किसी आधारके आश्रित होकरके स्थित न होवै उसका नाम ॥ अनिलयनं ॥ है, जैसे आकाशादिक और चेतनादिक मनुष्यों का नाम विज्ञान है, और जड़ पाषाणादिकों का नाम अविज्ञान है, और व्यवहारका विषय जो नदियों के जलादिक हैं वह सत्य कहे जाते हैं, और प्रातिभासिक जो कि शुक्ति रजतादिक हैं वह असत्य कहेजाते हैं, यह सब उसी परमात्मा से ही उत्पन्न होते भये, इसलिये जो कुछ वस्तुमात्र है उसको ब्रह्मवेत्ता लोक ब्रह्मरूप करकेही कथन करते हैं, इसी अर्थ को मन्त्र भी कहता है ॥ इति षष्ठोऽनुवाकः ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

असद्वाइदमग्रआसीत्ततोवैसदजायततदात्मान ꣳ स्वयमकुरुततस्मात्तत्सुकृतमुच्यत इतियद्वैतत्सु कृतंरसोवैसः रसꣳह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दीभवति कोह्येवान्यात्कःप्राण्यात्तस्मात् यदेषआकाशआ नन्दोनस्यात् एषह्येवानन्दयतियदाह्येवैषएतस्मि न्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयंप्रतिष्ठां वि न्दते अथसोऽभयंगतोभवतियदाह्येवैषएतस्मिन्नुदर मन्तरंकुरुते अथतस्यभयंभवति तत्त्वमेवभयंविदु षोमन्वानस्य तदप्येषश्लोकोभवति ॥

इति सप्तमोऽनुवाकः ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

असत् वै इदम् अग्रे आसीत् ततः वै सत् अजायत तत् आत्मानम् स्वयम् अकुरुत तस्मात् तत् सुकृतम् उच्यते इति यत् वा एतत् सु कृतम् रसः वै सः रसम् हि एव अयम् लब्ध्वा आनन्दीभवति कः हि एव अन्यात् कः प्राण्यात् तस्मात् यत् एषः आकाशः आनन्दः न स्यात् एषः हि एव आनन्दयति यदा हि एव एषः एतस्मिन् अदृश्ये अनात्म्ये अनिरुक्ते अनिलयने अभयम् प्रतिष्ठाम् विन्दते अथ सः अभयम् गतः भवति यदा हि एव एषः एतस्मिन् उत अरम् अन्तरम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुरुते अथ तस्य भयम् भवति तत् त्वम् एव
यम् विदुषः अमन्वानस्य तत् अपि एषः श्लो
भवति ॥

अन्वयः	पदार्थ
अग्रे	=उत्पत्तिसे पूर्व
इदम्	=यह जगत्
असत्	=अव्यक्त याने ब्रह्मस्वरूप
वै	=ही
आसीत्	=था
ततः	=उस अव्यक्त ब्रह्मसे
सत्	=नाम रूपात्मक यह जगत्
वै	=निश्चयकरके
अजायत	=उत्पन्न होता भया
सत्	=वह एकाकार ब्रह्म
स्वयम्	=आपही याने अपनी कामनासे
आत्मानम्	=अपने को
एव	=ही
अकुरुत	=जगत्रूप क रताभया
तस्मात्	=इसलिये
तत्	=वह ब्रह्म
सुकृतम्	=सुकृत
उच्यते	=कहाजाताहै क्योंकि कार रणसे कार्य को प्राप्त हो कर भी वि कार को नहीं प्राप्त हुआहै
यत्	=चूंकि
वा	=निश्चयकरके
एतत्	=यह ब्रह्म
सुकृतम्	=कारणात्मक सत्यरूपहै
वै	=इसलिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सः=वह
रसः=साररूप है
हि=क्योंकि
अयम्=यहजीवात्मा
रसम्=रसरूप ब्रह्म को
लब्ध्वा=पा करके
एव=निःसंदेह
आनन्दी भवति=पूर्णानन्द होता है

यत्=यदि=अगर
आकाशे=हृदयाकाश बुद्धिरूपी गुहा बिषे स्थित
एषः=यह
आनन्दः=परमानन्द स्वरूप परमात्मा
नस्यात्=नहो
+तदा=तौ
+लोके=लोक बिषे
हि=निश्चय करके

कःएव=कौन
अन्यात्=अपानादि क्रियाके करने में समर्थ होवै
+च=और
कः=कौन
प्राण्यात्=प्राणादि क्रिया के करने में समर्थहोवै याने विना आत्मशक्तिके अपान और प्राणादि किसी अपने कार्य के करने में समर्थ नहीं होसक्ते हैं
तस्मात्=इसलिये
हि=निश्चय करके
एषः=यह परमात्मा
एव=ही
+लोकम्=लोक को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनन्दयति=आनन्दित करता है याने विषय सुखको प्राप्त करता है

हि=क्योंकि
अदृश्ये=इन्द्रियों का अगोचर
अनात्म्ये=शरीरशून्य
अनिरुक्ते=विशेषशून्य
+च=और
अनिलयने=आधार शून्य ऐसा जो ब्रह्महै
एतस्मिन्=उस बिषे
यदाएषः=जब यह उपासक
अभयम्=भय रहित याने द्वैत भाव शून्य
प्रतिष्ठाम्=स्थिति को
विन्दते=प्राप्त होताहै
अथ=तब
सः=वह उपासक
अभयम्=अभयपदको
गतः=प्राप्त
भवति=होता है

हि=ज्ञात रहै कि
यदा=जब
एषः=यह विद्वान्
एतस्मिन्=उसब्रह्मबिषे
अरम्=कुछ
अपि=भी
अन्तरम्=भेद
कुरुते=रखताहै
अथ=तब
तस्य=उसको
भयम्=भय
एव=अवश्य
भवति=होताहै

अमन्वानस्य=अद्वैत न मानने वाले
विदुषः=विद्वान्को
एव=भी
तत्=वह ब्रह्म
भयम्=भयका हेतु
त्वम्=तू होताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्=तत्र=ब्रह्मके उसभय के हेतुबिषे	एषः=यह
अपि=भी	श्लोकः=मंत्रप्रमाण
	भवति=है

भावार्थः ॥

असद्वेति ॥ यह जो प्रत्यक्ष का विषय जगत् है सो उत्पत्तिसे पूर्व असत् याने नामरूप करके प्रकट नहीं होता भया, क्योंकि ॥ कथमसतः सज्जायेत ॥ असत् से याने शून्य से कैसे व्यवहारिक सत्रूप जगत् की उत्पत्ति होसक्ती है, इस श्रुतिवाक्य ने शून्य से जगत् की उत्पत्ति का निषेध किया है, इसलिये अव्यक्त ब्रह्म से नामरूप संयुक्त जगत् उत्पन्न होता भया, अर्थात् अव्यक्त शब्द का वाच्य जो कि ब्रह्म है सो अपने कोही जगत्रूप करके दिखाता भया और जिस कारण ब्रह्म आपही जगदाकार होता भया, तिसी कारण ब्रह्म को श्रुति जगत् का कर्ता कथन करती है, और इसीलिये ब्रह्मही रस है, याने सम्पूर्ण जगत् का सारभूत है, और जीवभूत सत्त्व प्रधान अन्तःकरण में अभिव्यक्त जो ब्रह्मानन्द है तिसको प्राप्त हो सुखी होते हैं, निरुपाधिक ब्रह्मानन्द करके विद्वान् लोक सुखी होते हैं, और सोपाधिक ब्रह्मानन्द करके इतर मूर्ख लोक सुखी होते हैं, सम्पूर्ण जीवों को आनन्द का कारक होने से आनन्दरूप ब्रह्मही है, यदि सर्व का साक्षीभूत हार्दाकाश में अर्थात् बुद्धिरूपी गुहा बिषे स्थित आनन्दरूप आत्मा न होवै तो जीवन का हेतु प्राणादिकों के व्यापार को कौन करै, इसी से सिद्ध होता है कि प्राणादिकों का व्यापार भी चेतन के आधीनहै, और वही चेतन आनन्दरूप आत्मा सम्पूर्ण लोकों को सुख प्राप्त करता है, और साधक जिस विद्याऽवस्था में इस ब्रह्ममें अभयपद को प्राप्त होता है, तिसी अवस्था में ब्रह्मानन्द को भी प्राप्त होजाता है, क्योंकि उसकी इच्छा अविद्याकृत नानात्व दर्शन की अभाव होजातीहै ॥ प्र० ॥ कैसे ब्रह्म में वह साधक अभय प्रतिष्ठाको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लभताहै ॥ उ० ॥ जो दृश्य प्रपञ्चसे वर्जित है, शरीर से रहित है इदंता करके जो नहीं कहाजाता है, और जो किसी के आश्रित भ नहीं है वही ब्रह्म है, हे प्रियदर्शन ! विद्वान् के लिये एकत्व दर्श ही अभय का कारण है, और अविद्वान् के लिये नानात्व दर्शन भ का कारण है, विद्वान् के अभय के कारण को कहकर अब अविद्व के भय के कारण को कहते हैं ॥ जिस अविद्या दशा में यह अनात्म दर्शी उस ब्रह्म में थोड़ासा भी भेद करता है, याने वह ईश्वर में से पृथक् है, और मैं उससे पृथक् हूं इस प्रकार की भेदभावना क करता है, तिस भेददर्शी को भय होताहै, भेद बुद्धि करने से केव अविद्वान् कोही भय नहीं होताहै, परन्तु विद्वान् को भी भय होताहै और उपास्य उपासक भाव में भी भय ही होता है, क्योंकि एक उपास्य उपासक भाव बनताही नहीं है, द्वैत में ही उपास्य उपास भाव बनता है, इसी अर्थ को आगेवाला मन्त्र भी कहता है ॥

इति सप्तमोऽनुवाकः ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

भीषाऽस्माद्वातःपवते भीषोदेतिसूर्य्यः भीष स्मादग्निश्चेन्द्रश्च मृत्युर्धावतिपञ्चमइति सैषाऽ नन्दस्यमीमाष्टं सामवाते युवा स्यात्साधुयुवाऽध्य यिकः आशिष्ठोदृढिष्ठोबलिष्ठः तस्येयंपृथिवीस वित्तस्यपूर्णास्यात् सएको मानुषआनन्दः सए मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकाम तस्य तेये शतं मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः सए देवगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस तेयेशतंदेवगन्धर्वाणामानन्दाः सएको देवगन्ध र्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्यतेयेशतं गन्धर्वाणामानन्दाः सएकः पितृणांचिरलोकलो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नामानन्दःश्रोत्रियस्यचाकामहतस्यतेयेशतं पितॄ
णांचिरलोकलोकानामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकाम
हतस्य तेयेशतंपितॄणां चिरलोकलोकानामानन्दाः
सएकअजानजानांदेवानामानन्दः श्रोत्रियस्यचा
कामहतस्यते ये शतमजानजानांदेवानामानन्दाः
स एकः कर्म्मदेवानामानन्दः ये कर्मणादेवानपि
यन्ति श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेये शतंकर्म्मदेवा
नामानन्दाः सएकोदेवानामानन्दः श्रोत्रियस्य
चाकामहतस्यतेयेशतंदेवानामानन्दाः सएकइन्द्र
स्यानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्यतेयेशतमिन्द्र
स्यानन्दाः सएकोबृहस्पतेरानन्दः श्रोत्रियस्यचा
कामहतस्यतेयेशतंबृहस्पतेरानन्दाः सएकः प्रजा
पतेरानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्यतेयेशतंप्रजा
पतेरानन्दः सएकोब्राह्मणआनन्दः श्रोत्रियस्यचा
कामहतस्यसयश्चायंपुरुषेयश्चासावादित्ये सएकः
सयएवंवित् अस्माल्लोकात्प्रेत्यएतमन्नमयमात्मा
नमुपसंक्रामति एतंप्राणमयमात्मानमुपसंक्रामति
एतंमनोमयमात्मानमुपसंक्रामति एतंविज्ञानमय
मात्मानमुपसंक्रामति एतमानन्दमयमात्मानमु
पसंक्रामतितदप्येषश्लोकोभवति ॥

इत्यष्टमोऽनुवाकः ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

भीषा अस्मात् वातः पवते भीषा उदेति सूर्यः भीषा अस्मात् अग्निः च इन्द्रः च मृत्युः धावति पञ्चमः इति सा एषा आनन्दस्य मीमांसा भवति युवा स्यात् साधुयुवाध्यापकः आशिष्टः दृढिष्ठः बलिष्ठः तस्य इयम् पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात् सः एकः मानुषः आनन्दः ते ये शतम् मानुषाः आनन्दाः सः एकः मनुष्यगन्धर्वाणाम् आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् मनुष्यगन्धर्वाणाम् आनन्दाः सः एकः देवगन्धर्वाणाम् आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् देवगन्धर्वाणाम् आनन्दाः सः एकः पितृणाम् चिरलोकलोकानाम् आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् पितृणाम् चिरलोकलोकानाम् आनन्दाः सः एकः अजानजानाम् देवानाम् आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् अजानजानाम् देवानाम् आनन्दाः सः एकः कर्म्मदेवानाम् आनन्दः ये कर्म्मणा देवान् अपि यन्ति श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् कर्म्मदेवानाम् आनन्दाः सः एकः इन्द्रस्य आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् इन्द्रस्य आनन्दाः सः एकः बृहस्पतेः आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् बृहस्पतेः आनन्दाः सः एकः प्रजापतेः आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हतस्य ये ते शतम् प्रजापतेः आनन्दाः सः एकः ब्रह्मणः आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य सः यः च अयम् पुरुषे यः च असौ आदित्ये सः एकः सः यः एवंवित् अस्मात् लोकात् प्रेत्य एतम् अन्नमयम् आत्मानम् उपसंक्रामति एतम् प्राणमयम् आत्मानम् उपसंक्रामति एतम् मनोमयम् आत्मानम् उपसंक्रामति एतम् विज्ञानमयम् आत्मानम् उपसंक्रामति एतम् आनन्दमयम् आत्मानम् उपसंक्रामति तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥

अन्वयः	पदार्थ
अस्मात्=अस्य=उस	ब्रह्मके
भीषा=भिया=भयसे	
वायुः=वायु	
पवते=चलता है	
अस्मात्=उसके	
भीषा=भयसे	
सूर्य्यः=सूर्य	
उदेति=उदय होता है	
च=और	
अस्मात्=उसके	
भीषा=भयसे	
अग्निः=अग्निदेव	
धावति=दहनकर्म बिषे प्रवृत्त होता है	
च=और	
अस्मात्=उसके	
भीषा=भयसे	
इन्द्रः=इन्द्र	
धावति=पालनकर्मबिषे प्रवृत्त होता है	
इति=इसीप्रकार	
अस्मात्=उसके	
भीषा=भयसे	
पञ्चमः=पांचवां	
मृत्युः=मृत्यु	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धावति=मारणकर्मबिषे प्रवृत्त होताहै

सा=वह
एषा=यह
मीमांसा=विचार
आनंदस्य=आनन्दका
+अग्रे=आगे
भवति=है

+यः=जो
+अस्मिन् लोके = इस मनुष्य लोकबिषे
साधुयुवा=अच्छाजवान
स्यात्=होवै
+च=और
युवाध्यायिकः = यौवन अवस्थाबिषेहीविद्यासम्पन्न होवै
+च=और
आशिष्टः = आज्ञाकरके युक्तहो याने साहब अख्त्यारहो
+च=और
द्रढिष्ठः=अत्यन्तदृढ़याने शूरवीर हो
+च=और
बलिष्ठः=अतिबलवान् हो
वित्तस्य=वित्तकरके
पूर्णा=पूर्ण याने भरपूरहो
+च=और
इयम्=यह
सर्वा=संपूर्ण
पृथिवी=पृथिवी
तस्य=उसके आधीन
स्यात्=हो
+तस्यचक्रवर्त्तेराज्ञः = ऐसे चक्रवर्त्तीराजाका
यः=जो
आनन्दः=आनन्दहै
सः=सो
मानुषः=मनुष्यसम्बन्धी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकः=एकअंश
आनन्दः=आनन्दहै

च=और ऐसे
ते=वे
ये=जो
शतम्=सौगुना
मानुषाः=मनुष्यसंबंधी
आनन्दाः=आनन्द हैं
सः=सो
मनुष्यगन्धर्वाणाम्=मानुषभाव से कर्मानुसार जो गन्धर्व भयेहैं उनका
एकः=एक अंश
आनन्दः=आनन्दहै

च=और
अकामहतस्य=निष्काम
श्रोत्रियस्य=विद्वान्का
च=भी
सआनन्दः=वही आनन्दहै

च=और ऐसे
ते=वे
ये=जो
शतम्=सौगुना
मनुष्यगन्धर्वाणाम्=मनुष्य गन्धर्वों के
आनन्दाः=आनन्द हैं
सः=सो
देवगन्धर्वाणाम्=देवयोनिगन्धर्वोंका
एकः=एक अंश
आनन्दः=आनन्दहै

+च=और
सएवानन्दः=वही आनन्द
अकामहतस्य=निष्काम
श्रोत्रियस्य=विद्वान्का
च=भी
+अस्ति=है

च=और ऐसे
ते=वे
ये=जो
शतम्=सौगुना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवगन्धर्वाणाम् = देवयोनि गन्धर्वों के
आनन्दाः = आनन्द हैं
सः = सो
चिरलोकलोकानाम् = चिरकाल स्थायि हैं लोक जिन के ऐसे
पितॄणाम् = पितरोंका
एकः = एक अंश
आनन्दः = आनन्द है

अकामहतस्य = निष्काम
श्रोत्रियस्य = विद्वान् का
च = भी
तद्वदानन्दः = उसीके समान आनन्दहै
चिरलोकलोकानाम् = चिरकाल स्थायि हैं लोक जिनके ऐसे
पितॄणाम् = पितरों के
ते = वे

ये = जो
शतम् = सौगुना
आनन्दाः = आनन्द हैं
सः = सो
अजानजानाम् = स्मार्त कर्म द्वारा जो देव योनिको प्राप्त हुये हैं ऐसे
देवानाम् = देवताओं का
एकः = एक अंश
आनन्दः = आनन्द है
+ सः एव = सोई आनन्द
अकामहतस्य = निष्काम
श्रोत्रियस्य = विद्वान् का
च = भी
+ अस्ति = है
अजानजानाम् = स्मार्त कर्म द्वारा जो देव योनिको प्राप्त हुये हैं ऐसे
देवानाम् = देवताओं के
ते = वे
ये = जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शतम्=सौगुना
आनन्दाः=आनन्द हैं
सः=सो
एकः=एक अंश
आनन्दः=आनन्द है
तेषाम् =उन
कर्मदेवानाम्=कर्म देवोंका
ये=जो
कर्मणा=अग्निहोत्रादि श्रौतकर्म करके
देवान्=देवभावको
अपियंति=प्राप्त होते हैं
+ च=और
+तेषाम्ये आनन्दाः=उनको जो आनन्दहै
+ सः एव=वही आनन्द
अकाम हतस्य=निष्काम
श्रोत्रियस्य=विद्वान् का
च=भी
अस्ति=है

कर्मदेवानाम्=कर्म देवोंके
ते=वे ऐसे
ये=जो
शतम्=सौगुना
आनन्दाः=आनन्द हैं
सः=सो
देवानाम्=वसुआदि देवताओंका
एकः=एकअंश
आनन्द=आनन्द है
+ सःएव=वही आनन्द
अकामहतस्य=निष्काम
श्रोत्रियस्य=विद्वान् का
च=भी
+ अस्ति=है
देवानाम्=वसुआदि देवताओं के
ते=वे
ये=जो
शतम्= सौगुना
आनन्दाः=आनन्द हैं
सः= सो
इन्द्रस्य=इन्द्र का
एकः=एक अंश
आनन्दः=आनन्द है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ सः एव=सोई आनन्द
अकाम हतस्य }=निष्काम
श्रोत्रियस्य=विद्वान् का
च=भी
+ अस्ति=है

इन्द्रस्य=इन्द्रके
ते=वे
ये=जो
शतम्=सौगुना
आनन्दाः=आनन्द हैं
सः=सो
बृहस्पतेः=बृहस्पति
देवगुरु का
एकः=एक अंश
आनन्दः=आनन्द है
+ सः एव=सोई आनन्द
अकाम हतस्य }=निष्काम
श्रोत्रियस्य=विद्वान् का
च=भी
+ अस्ति=है

बृहस्पतेः=बृहस्पति
देवगुरुके
ते=वे
ये=जो
शतम्=सौगुना
आनन्दाः=आनन्द हैं
सः=वही
प्रजापतेः=ब्रह्माका
एकः=एकअंश
आनन्दः=आनन्द है
+ सः एव=सोई आनन्द
अकाम हतस्य }=निष्काम
श्रोत्रियस्य=विद्वान्का
च=भी
+ अस्ति=है

प्रजापतेः=ब्रह्माके
ते=वे
ये=जो
शतम्=सौगुना
आनन्दाः=आनन्द हैं
सः=वही
ब्रह्मणः=ब्रह्म का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकः=एक अंश
आनन्दः=आनन्द है
+सः एव=सोई आनंद

अकाम हतस्य } =निष्काम
श्रोत्रियस्य=विद्वान् का
चं=भी
अस्ति=है

च=और
यः=जो
सः=वह
अयम्=यह आनन्द
पुरुषे=पुरुषबिषेहै
च=और
यः=जो
आदित्ये=सूर्य्य बिषे
असौ=यहआनंदहै

सः=सो
एकः=एक अंश
आनन्दः=आनन्द है

यः=जो

एवंवित्= { इसप्रकार जानने वाला है

सः=वह
अस्मात्=इस
लोकात्=लोकसे
प्रेत्य=मरकर
एतम्=पूर्वोक्त
अन्नमयम्=अन्नमय
आत्मानम्=शरीरको
उपसंक्रा मति } =उल्लंघन करता है
एतम्=पूर्वोक्त
प्राणमयम्=प्राणमय
आत्मानम्=शरीर को
उपसंक्रा मति } =उल्लंघन करताहै
एतम्=पूर्वोक्त
मनोमयम्=मनोमय
आत्मानम्=शरीरको
उपसंक्रा मति } =उल्लंघन करताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एतम्=पूर्वोक्त
विज्ञानमयम्=विज्ञानमय
आत्मानम् =शरीर को
उपसंक्रामति =उल्लंघन करता हैं
एतम्=पूर्वोक्त
आनन्दमयम्=आनन्दमय
आत्मानम्=शरीरको
उपसंक्रामति =उल्लंघन करताहै याने पञ्चकोशातीतस्वयं ब्रह्म हो जाता है
तत्=तत्र=इसबिषे
अपि=भी
एषः=यह
श्लोकः=मन्त्रप्रमाण
भवति=है

भावार्थः ॥

भीषेति ॥ उसी ब्रह्म के भय करके वायु रात दिन निरन्तर गमन करता रहता है, उसी ब्रह्मके भय से सूर्य्य नित्यही उदय अस्त भाव को प्राप्त होता रहता है, उसी ब्रह्म के भयसे अग्नि प्रज्वलित होती रहती है, उसी ब्रह्म के भयसे इन्द्र वर्षादि कार्य्यों को करता रहता है, और उसी ब्रह्म के भय से पञ्चम मृत्यु प्रति दिन प्राणियों के कर्मों के अनुसार उनके नाश करने को दौड़ता ही रहता है, तात्पर्य यह है कि वायु सूर्य्य अग्नि इन्द्र और यम यह पांचो जिसके भयसे रात दिन अपने २ कार्य्य करने के लिये दौड़ते फिरते हैं उसी को तुम हे पुरुषोत्तम ! ब्रह्म जानो, जब कि वायु आदिकों के भय का हेतु ब्रह्म है, तब इतर तुच्छ जीवों का कहनाही क्या है ॥ वक्ष्यमाण के विचार से और ब्रह्म के प्राप्ति से जो आनन्द है वह सब आनन्दों का अवधि है, याने उसके आगे और आनन्द है नहीं और उसके साबित करने के लिये मानुषानन्द से आरम्भ करते हैं ॥ जो पुरुष यौवन अवस्थावाला हो, सुन्दररूप और सुन्दर स्वभाववाला भी हो, और सब प्रकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की विद्या से सम्पन्न हो, ऐश्वर्यवाला हो, माता पिता और आचार्य्य करके सुशिक्षित भी हो, शूरवीरहो, वित्त करके पूर्ण हो, और सम्पूर्ण पृथिवी उसके आधीन हो, ऐसे चक्रवर्ती राजा को जितना आनन्द प्राप्त होता है वह मनुष्यसम्बन्धी एक अंश आनन्द है, और मनुष्यानन्द का सौगुना एक गन्धर्वानन्द है, याने जो कर्म और उपासना को करके गन्धर्व योनि को प्राप्त हुआ है उसको मानुषानन्दसे सौगुणा अधिक आनन्द प्राप्त होताहै, और जितना आनन्द उसको है उतनाही शुद्धचित्त निष्काम विद्वान् को मिलता है, और गन्धर्वानन्द से सौगुणा अधिक आनन्द देवयोनि जन गन्धर्वों को होता है, याने उन गन्धर्वों को जो कल्प के आदि में ही देवयोनि में उत्पन्न हुये हैं, और उतनाही आनन्द शुद्धचित्त निष्काम विद्वान् को होता है, जितना देव गन्धर्वों को अपनी पदवी में आनन्द होता है उससे सौगुणा अधिक आनन्द अग्निष्वात्तादि पितरों को होताहै, याने उन को जो पितर चिरकाल पर्य्यन्त पितृलोक में सुख को अनुभव करते हैं उतनाही आनन्द शुद्धचित्त निष्काम विद्वान् को भी होता है, और जो आनन्द चिरकालस्थायि पितरों को होता है उससे भी सौगुणा अधिक आनन्द अजानज देवतों को अर्थात् उन देवतों को जो स्मार्त कर्मोंके अनुष्ठान करके देवयोनि को प्राप्त हुये हैं, और जितना आनन्द उनको है उतनाही आनन्द शुद्ध चित्त निष्काम विद्वान् को होता है, और जितना आनन्द देवतों को होता है उससे भी सौगुणा अधिक आनन्द कर्म देवतों को होता है, अर्थात् उन देवतों को जो श्रौत कर्मों को करके देवता हुये हैं, और जितना आनन्द उनको है उतनाही आनन्द निष्काम शुद्धचित्त विद्वान् को होता है, और जो आनन्द कर्मजन देवतों को होता है उससे भी सौगुणा अधिक आनन्द देवतों को होताहै, अर्थात् उनको जो देवयोनि में ही प्रथम से उत्पन्न हुये हैं, और उतनाही आनन्द निष्काम विद्वान् को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता है, और जितना आनन्द देवतों को होता है उससे सौगुणा अधिक आनन्द इन्द्र को जो देवतों का अधिपति है होता है, और उतनाही आनन्द निष्काम शुद्धचित्त विद्वान् को भी होताहै, और जितना आनन्द इन्द्र को होता है उससे भी सौगुणा अधिक आनन्द बृहस्पति को होता है जो सम्पूर्ण देवतों के गुरु हैं, और उतनाही आनन्द निष्काम शुद्धचित्त विद्वान् को होता है, और जितना आनन्द बृहस्पति को होता है उसका सौगुणा अधिक आनन्द प्रजापति को होता है (प्रजापति नाम विराट् का है जो सबसे प्रथम उत्पन्न हुआ है) और उतनाही आनन्द निष्काम विद्वान् को होता है, और जितना आनन्द एक प्रजापति को होताहै उससे भी सौगुणा अधिक आनन्द ब्रह्मा को होता है और जितना आनन्द ब्रह्मा को होताहै, उतनाही निष्काम विद्वान् को होताहै, और ब्रह्मा का आनन्द भी उस ब्रह्मानन्द या आत्मानन्द का एक लेशमात्र है, और उसी आनन्द की एक मात्रा को लेकर सम्पूर्ण जगत् आनन्दित होरहाहै, वह ब्रह्मानन्द एक समुद्र है, उसकी एक बूंदमात्र से सम्पूर्ण संसार आनन्द को प्राप्त होरहा है, इसी कारण वह ब्रह्मानन्द निरतिशयानन्द है, निरवधिक आनन्द है ॥प्र०॥जब ब्रह्मानन्द की एक मात्रा को लेकर सम्पूर्ण जगत् के लोक आनन्दित होते हैं, तब तो सम्पूर्ण विषयानन्द भी ब्रह्मानन्द का एक अंशमात्रही हुआ, और अंशांशी का भेद नहीं होताहै, जैसे हाथ पांव सब शरीर के अंश हैं, और शरीर अंशी है, तैसे ब्रह्मानन्द भी अंशी है, और विषयानन्द उसका अंश है, विषयानन्द व ब्रह्मानन्द दोनों एकही हुये तब शास्त्रकारों ने विषयानन्द की निन्दा क्योंकी और महात्मा लोग भी विषयानन्द की निन्दा को क्यों करते हैं, विषयानन्द की निन्दा करने से तो ब्रह्मानन्द की भी निन्दा होती है, क्योंकि दोनों का अभेद है ॥उ०॥ ब्रह्मानन्द निरुपाधिक आनन्द है, और विषयानन्द सोपाधिक आनन्द है, उपाधि के सम्बन्धसे विषयानन्द दुःख का हेतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होजाता है जैसे शुद्ध गंगा का जल बरसात में मल मूत्रादिकों के सम्बन्ध से रोग का जनक होजाता है, क्योंकि मलिन उपाधि के साथ उसका सम्बन्ध होताहै, इसी तरह ब्रह्मानन्द का जो लेश-मात्र आनन्द है सो भी विषयों के साथ सम्बन्ध होने से दुःख का जनक होजाताहै, वास्तव में वह ब्रह्मानन्द से भिन्न नहीं भी है, तथापि विषयरूपी उपाधि के भेद से उसका भेद ब्रह्मानन्द से हो-जाताहै, और उपाधि को दुःखरूप होनेसे वह भी दुःखरूप होजाता है, दूसरे विषयानन्द स्वल्प है और क्षणिक है, क्योंकि उसकी उ-पाधि स्वल्प व क्षणिक है, और इसी कारण जन्म मरण का हेतु भी है, यदि विषयानन्द करकेही यह जीव तोष को प्राप्त होजाय तो फिर महान्नित्यानन्द की प्राप्ति इसको कदापि न हो, और जन्ममरणरूपी दुःखकी निवृत्ति भी इसको कदापि नहीं हो, नित्यानन्द की प्राप्ति के लिये और जन्म मरण की निवृत्ति के लिये शास्त्रकारों और महात्माओंने विषयानन्द की निन्दा की है ॥ सयश्चेति ॥ आकाश से लेकर अन्नादिक कार्यों को उत्पन्न करके आनन्दस्वरूप परमात्मा अपने आप को उनमें प्रवेश करताभया, और इसी लिये प्रत्येक रूप करके हर प्राणीमात्र के शरीर में रहता है, और उसीको निष्काम विद्वान् अनुभव करता है, वही लौकिक आनन्द की अवधि है, वही आनन्दरूप आत्मा एक है, और भेद से रहित भी है, परंतु उपाधियों के भेद करके भेदवाला कहाजाता है, जो आनन्दरूप परमात्मा निष्काम विद्वान् के शरीरमें रहताहै, वही आदित्यमंडलस्थ पुरुष में भी रहताहै, वह दोनों एकही हैं, जो कोई अधिकारी इस प्रकार आत्माके अभेद को जानता है, अर्थात् उस ब्रह्मात्मा को अपना आत्मा करके जानताहै, वही इस लोकसे मरकरके फिर इस अन्नमयकोश को याने स्थूलदेहको नहीं प्राप्त होता है, और प्राणमयकोश मनोमयकोश विज्ञानमयकोश और आनन्दमयकोश से भी उत्क्रमण करजाता है, अर्थात् आत्मज्ञान के उदय होतेही अज्ञान की निवृत्ति होजाती है, और अज्ञान की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निवृत्ति होतेही अज्ञान का कार्य जो कि पांच कोश हैं उनकी भी निवृत्ति होजाती है, इसी अर्थ को आगेवाला मंत्रभी कहता है॥

इति अष्टमोऽनुवाकः ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

यतोवाचोनिवर्तन्ते अप्राप्यमनसासह आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चनेति एतꣳहवाव नतपति किमहꣳसाधुनाकरवम् किमहंपापमकरवमिति सयएवं विद्वानेते आत्मानꣳस्पृणुतेउभेह्येवैषएते आत्मानꣳस्पृणुते यएवंवेद इत्युपनिषत्॥

इति नवमोऽनुवाकः ॥ ९ ॥

इति ब्रह्मानन्दवल्ली समाप्ता ॥

पदच्छेदः ॥

यतः वाचः निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह आनन्दम् ब्रह्मणः विद्वान् न बिभेति कुतश्चन इति एतम् ह वाव न तपति किम् अहम् साधु न अकरवम् किम् अहम् पापम् अकरवम् इति सः यः एवम् विद्वान् एते आत्मानम् स्पृणुते उभे हि एव एषः एते आत्मानम् स्पृणुते यः एवम् वेद इति उपनिषत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
वाचः	=वाणीरूपवेद	+यम्	=जिसको
मनसासह	=मनद्वारा	अप्राप्य	=प्राप्त न होकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यतः=जिससे

निवर्त्तन्ते=लौटआते हैं याने प्रत्यक्ष निरूपण नहीं करसक्के हैं

तम्=उस

ब्रह्मणः=ब्रह्मके

आनन्दम्=आनन्द का

विद्वान्=जाननेवाला

कुतश्चन=जन्ममरण भय आदि से कभी

न=नहीं

बिभेति=डरताहै

इति=पूर्वोक्त यह वार्ता सत्य है

किम्=हा अफसोस है कि

अहम्=मैं

साधु=सत्कर्म को

न=नहीं

अकरवम्=करता भया

च=और

किम्=हा अफसोस है कि

अहम्=मैं

पापम्=पापकर्म को

अकरवम्=करताभया

इति=इसप्रकार के

एवम्=ऐसे

तापः=पश्चात्ताप को

यः=जो

विद्वान्=जाननेवाला है

सः=वह

एते=पुण्य पाप दोनोंकर्मों को

आत्मानम्=परमात्मरूप

स्पृणुते=देखता है

हि=क्योंकि

एषः=यह विद्वान्

इमे=इन

उभे=दोनोंको याने पुण्य पाप कर्मों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मानम्=आत्मरूप
एव=ही
स्पृणुते=देखताहै
यः=जो
एवम्=उक्तप्रकार अखण्डअद्वैतब्रह्म को
वेद=जानता है
सस्वयम् जराम्रत्यु रहितो ब्रह्मैव भवति = वहस्वयंपाप पुण्यजरा मृत्युरहित अखंडानंद पूर्णब्रह्म होता है
+एवंप्रकारं व्याख्यानम् = इसप्रकारका व्याख्यान
उपनिषत्=ब्रह्मविद्या
इति=करके
उक्ता=कहागया है

भावार्थः ॥

यतोवाचइति ॥ जो वस्तु शब्दशक्ति का विषय होता है वही शब्दशक्ति के ज्ञान का भी विषय होता है, सो ब्रह्म ऐसा नहीं है, इसलिये अद्वयानन्द स्वप्रकाश स्वरूप ब्रह्मसे मनके सहित वाणी लौटआती है, अर्थात् कथन नहीं करसक्ती है, तिस ब्रह्मानन्द को जो विद्वान् प्राप्त होता है, याने साक्षात्कार करलेता है, वह जन्म मरण रूपी भय से छूट जाताहै, क्योंकि भय का कारण जो कि अज्ञान था वह उसका नष्ट होगया है ॥ और अज्ञान के नष्ट होतेही यावत् उसके पुण्य पापकर्म पूर्व किये थे सब निवृत्त हो जाते हैं, और वह पश्चात्ताप नहीं करता है कि हा मैंने शुभकर्म नहीं किया, हा मैंने पापकर्म क्यों किया, क्योंकि वह पुण्य और पापको आत्मरूप करकेही देखताहै, और इस लिये पुण्य पाप विद्वान् के जन्मके हेतु नहीं होते हैं ॥

इति नवमोऽनुवाकः ॥ ९ ॥

इति ब्रह्मानन्दवल्ली समाप्ता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ भृगुवल्लीप्रारभ्यते ॥

मूलम् ॥

हरिः ॐ ॥ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्य्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु माविद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

पदच्छेदः ॥

सह नौ अवतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यम् करवावहै तेजस्विनौ अधीतम् अस्तु मा विद्विषा वहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	वह ईश्वर	+ एव	ही
नौ	हम दोनोंको यानी गुरु और शिष्यको	भुनक्तु	भोग प्राप्त करै
सह	साथ	+ आवाम्	हमदोनों
+ एव	ही	सह	साथ
अवतु	रक्षाकरै	एव	ही
नौ	हम दोनोंको	वीर्यम्	विद्यादान और विद्या ग्रहण सामर्थ्य को
सह	साथ	करवावहै	प्राप्तहोवैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नौ=हम दोनोंका
अधीतम्=पढ़ाहुआ
तेजस्वि=अर्थ ज्ञान योग्य हो यानी सफल
अस्तु=होवै
+आवाम्=हमदोनों

माविद्विषावहै=पठनपाठन मेंप्रमादरूप द्वेष को न प्राप्तहोवै

ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः=हमारेताप त्रयों की शान्तिहोवै

मूलम् ॥

भृगुर्वै वारुणिः वरुणंपितरमुपससार अधीहि भगवोब्रह्मेति तस्मा एतत्प्रोवाच अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनोवाचमिति तꣳहोवाच यतोवा इमानि भूतानि जायन्ते येनजातानिजीवन्ति यत्प्रयन्त्य भिसंविशन्तीति तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्मेति सतपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वा ॥

इति प्रथमोऽनुवाकः ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

भृगुः वै वारुणिः वरुणं पितरम् उपससार अधीहि भगवः ब्रह्म इति तस्मै एतत् प्रोवाच अन्नम् प्राणम् चक्षुः श्रोत्रम् मनः वाचम् इति तम् ह उवाच यतः वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति तत् विजिज्ञासस्व तत् ब्रह्म इति तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः पदार्थ

वै=प्रसिद्ध है कि

वारुणिः=वरुणाकापुत्र

भृगुः=भृगु

ब्रह्मजिज्ञासुर्भूत्वा = ब्रह्मजिज्ञासुहोके

+स्वम्=अपने

पितरम्=पिता

वरुणम्=वरुण के

उपससार=समीप जाता भया

+ च=और

इति=ऐसा

+उवाच=कहताभया कि

भगवः=भगवन्=हे भगवन्

ब्रह्म=ब्रह्मको

अधीहि=अध्यापय=बतावो

+सः=वह वरुण

तस्मै=उस भृगुनामक पुत्र से

एतत्=यह

प्रोवाच=कहताभया कि

अन्वयः पदार्थ

अन्नम्= अन्न को याने अन्नमय शरीरको

प्राणम्=प्राणको

चक्षुः=नेत्रको

श्रोत्रम्=कर्णको

मनः=मनको

वाचम्=वाणीको

इति=ब्रह्मकी प्राप्ति का द्वार जान तू

+पुनः=फिर

तमह=उससे

उवाच=कहताभया कि

वै=निश्चयकरके

यतः=जिससे

इमानि=ब्रह्मादि तृण पर्यन्त

भूतानि=सर्वभूत

जायन्ते=उत्पन्न होते हैं

+ च=और

जातानि=उत्पन्न भये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+त्वम्=तू हे सौम्य

जीवन्ति=प्राणको धारण करते हैं और बढ़ते हैं

च=और

+विना शकाले=विनाशकाल बिषे

यत्=जिसप्रति

प्रयन्ति=प्रवेश करते हैं

+च=और

अभिसंविशन्ति=तदात्मभाव को प्राप्त होतेहैं याने एकरूप होजाते हैं

इतियत्=ऐसा जो ब्रह्महै

तत्=उस

ब्रह्म=ब्रह्मको

विजिज्ञासस्व=विशेष करके जानने की इच्छाकर

+इतिश्रुत्वा=ऐसा सुनकर

सः=वह भृगु

तपः=मन और इन्द्रियों की समाधानता को

अतप्यत=एकाग्र करके विचारताभया

सः=वह भृगु

तपः=विचारको

तप्त्वा=भलीभांति विचार करके

नोट-इसका सम्बन्ध आगेवाले अनुवाकके साथ है ॥

भावार्थः ॥

आत्मवित् ज्ञानी को शुभ अशुभ किये हुये कर्म जन्मान्तर के हेतु नहीं होतेहैं यह वार्ता पिछली आनन्दवल्ली में कह आये हैं, और ब्रह्मविद्या की समाप्ति भी तिसी पूर्ववाली वल्ली में कहीगई है, ब्रह्मविद्या के साधन जो कि तप और उपासना आदिक हैं उनके निरूपण करने के लिये अब [illegible] वल्ली का आरम्भ करते

हैं, सो प्रथम प्रिय पुत्र के प्रति ब्रह्मविद्या का उपदेश करै दूसरे के प्रति न करै, क्योंकि ब्रह्मविद्या अकसर करके जो प्रियतम हैं उन्हींके प्रति उपदेश कीगई है, और इस ग्रन्थ में ब्रह्मविद्या की स्तुति के लिये पिता पुत्र के संवाद को लिखते हैं ॥ भृगुरिति ॥ भृगुनाम करके प्रसिद्ध जो कि वरुण का पुत्र वारुणि है वह ब्रह्म-जिज्ञासु होकर वरुण अपने पिता के समीप जाकर कहता भया कि हे भगवन् ! सत्यादिरूप ब्रह्मको मेरे प्रति उपदेश करो, पुत्र की वार्ता को सुनकर पिताने कहा कि हे पुत्र ! अन्न, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, मन और वाग् को ब्रह्म जान अन्न करके स्थूल शरीर का, प्राणकरके पांचों प्राणोंका, चक्षु व श्रोत्र करके पांचों ज्ञानेन्द्रियों का, मन करके अन्तःकरण का, और वागिन्द्रिय करके पांचों कर्मेन्द्रियों का ग्रहण है ये सब ब्रह्म की उपलब्धि के द्वार हैं, इस प्रकार वरुण ने त्वंपद का अर्थ कहा, अब तत्पद का अर्थ कहते हैं ॥ जिसकरके ब्रह्मा से लेकर स्तम्बपर्यन्त संपूर्ण प्राणी उत्पन्न होते हैं, जिस करके जीते हैं, अर्थात् प्राणों को धारण करते हैं, और बढ़ते हैं, और फिर मर करके जिस कारण में प्रवेश करते हैं, और जो जगत् के जन्मादिकों का कारण है, उसीको तू ब्रह्म करके जान, इस प्रकार वरुणने अपने पुत्र भृगु के प्रति ब्रह्मका उपदेश किया, उस उपदेश के समझने में भृगु समर्थ न होकर विचारता भया, और जानता भया ॥

इति प्रथमोऽनुवाकः ॥ १ ॥

मूलम् ॥

अन्नंब्रह्मेति व्यजानात् अन्नाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते अन्नेन जातानि जीवन्ति अन्नं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति तꣳ होवाच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपो ब्रह्मेति स तपोऽतप्य त सतपस्तप्त्वा ॥

इति द्वितीयोऽनुवाकः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

अन्नम् ब्रह्म इति व्यजानात् अन्नात् हि ए खलु इमानि भूतानि जायन्ते अन्नेन जातानि जीवन्ति अन्नम् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति त विज्ञाय पुनः एव वरुणम् पितरम् उपससार अ धीहि भगवः ब्रह्म इति तम् ह उवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपः ब्रह्म इति सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा ॥

अन्वयः	पदार्थ
इति	ऐसा
व्यजानात्	जानताभया कि
अन्नम्	अन्नही
ब्रह्म	ब्रह्महै
हि	क्योंकि
खलु	निश्चयकरके
इमानि	ब्रह्मासे तृण पर्यन्त
भूतानि	सर्वभूत
अन्नात्	अन्न से
एव	ही
जायन्ते	उत्पन्न होतेहैं
च	और
जातानि	उत्पन्नहुये
अन्नेन	अन्नकरके
एव	ही
जीवन्ति	जीते हैं और बढ़ते हैं
च	और
+विना शकाले	विनाशकाल बिषे
अन्नम्	अन्नप्रति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयन्ति=प्रवेश करते हैं
+च=और
अभिसंविशन्ति=तादात्म्यभाव को प्राप्त होते हैं यानेलीन होते हैं
इति=इसलिये पिता के बताये हुये यह तीनलक्षण युक्त ऐसे
तत्=उस अन्नको
ब्रह्म=ब्रह्म
विज्ञाय=जानके
सः=वह भृगु
पुनः=फिर
एव=भी संशययुक्त हो
पितरम्=पिता
वरुणम्=वरुणके
उपससार=समीप जाताभया
च=और
इति=इसप्रकार
+उवाच=कहता भया कि
भगवः=भगवन्=हे भगवन्
ब्रह्म=ब्रह्मको
+मह्यम्=मेरे प्रति
अधीहि=अध्यापय=कहिये
+तदा=तब
सः=वह वरुण
तमह=उस भृगुप्रति
प्रोवाच=कहताभया कि
सौम्य=हे सौम्य
तपः=इन्द्रियों की बाह्यवृत्तिको अन्तर्मुख करना और मन को एकाग्रकरना
एव=ही
ब्रह्म=ब्रह्मप्राप्तिका द्वार है
+तस्मात्=इसलिये
+त्वम्=तू
तपसा=इन्द्रिय और मन के समाधानरूप तप करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्म=ब्रह्मको	तपः=तपको
विजिज्ञासस्व=भलीभांति जानने की इच्छाकर	अतप्यत=विचार करता भया
+इतिश्रुत्वा=ऐसा सुनकर	सः=वह भृगु
सः=वह भृगु	तपः=तपको
	तप्त्वा=विचार करके

नोट-इसका सम्बन्ध अगले अनुवाक से है ॥

भावार्थः ॥

अन्नंब्रह्मेति ॥ कि अन्नही ब्रह्म है, क्योंकि ब्रह्मा से तृणपर्यन्त सब अन्न से ही उत्पन्न होते हैं, और अन्न से ही जीवते हैं, और फिर अन्न में ही लयको प्राप्त होते हैं, अन्न से यहां मतलब समष्टि शरीर अभिमानी विराट् से है, क्योंकि विराट् आत्मा से ही यह सब चर अचर प्राणी उत्पन्न होते हैं, फिर उसी करकेही प्राणों को धारण करते हैं फिर मर करके उसमें ही लयको प्राप्त होते हैं, पर थोड़े काल में भृगुको विचाररूपी तप करके अन्न में उत्पत्ति-मत्ता और विनाशित्वादिक दोष देखपड़े, और ख्याल किया कि जो उत्पत्तिवाला और नाशवाला होता है, वह अनित्य होता है, सो अन्न उत्पत्तिवाला और नाशवालाहै, यह कैसे ब्रह्म होसक्ताहै, इन्हीं दोषों के निवारणार्थ भृगु अपने पिता वरुण के पास फिर जाता-भया ॥ वरुणने अपने पिता से कहा कि हे भगवन् ! आप ब्रह्म को मेरे प्रति फिर कथन करो, वरुणने अपने पुत्र भृगु से कहा तपकरके अर्थात् विचार करके ब्रह्म को तू जान, विचारही ब्रह्मज्ञान का हेतु है, वह भृगु फिर तप को करता भया ॥

इति द्वितीयोऽनुवाकः ॥ २ ॥

मूलम् ॥

प्राणोब्रह्मेति व्यजानात् प्राणाद्ध्येवखल्विमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नि भूतानि जायन्ते प्राणेनजातानि जीवन्ति प्राणं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार अधीहिभगवोब्रह्मेतितꣳहोवाच तपसाब्रह्मविजिज्ञासस्व तपो ब्रह्मेतिसतपोऽतप्यतसतपस्तप्त्वा ॥

इति तृतीयोऽनुवाकः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

प्राणः ब्रह्म इति व्यजानात् प्राणात् हि एव खलु इमानि भूतानि जायन्ते प्राणेन जातानि जीवन्ति प्राणम् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति तत् विज्ञाय पुनः एव वरुणम् पितरम् उपससार अधीहि भगवः ब्रह्म इति तम् ह उवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपः ब्रह्म इति सः सपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इति	ऐसा	एव	ही
व्यजानात्	जानताभया कि	इमानि	ये
प्राणः	प्राणही	भूतानि	सर्वभूत
ब्रह्म	ब्रह्म है	जायन्ते	उत्पन्न होते हैं
हि	क्योंकि	+ च	और
खलु	निश्चय करके	जातानि	उत्पन्नभये
प्राणात्	प्राणसे	प्राणेन	प्राणकरके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ एव=ही
जीवन्ति=जीते हैं और बढ़ते हैं
+च=और
+अन्ते=विनाशकाल बिषे
प्राणम्=प्राणप्रति
प्रयन्ति=प्रवेश करते हैं
+च=और
अभिसं विशन्ति = तद्रूप होजाते हैं
इति= ऐसा तीन लक्षणयुक्त पिताकरके बतायेहुये
तत्=उस प्राणरूप ब्रह्मको
+सः=वह भृगु
विज्ञाय=जानकरके
पुनरेव=फिर संशय युक्तहो
+स्वं=अपने
पितरम्=पिता
वरुणम्=वरुणके
उपससार=समीपजाता भया
+ च=और
+उवाच=कहता भया कि
भगवः=भगवन्=हे भगवन्
ब्रह्म=ब्रह्मको
+ मह्यम्=मेरेअर्थ
अधीहि=अध्यापय=कहिये
+ तदा=तब
+ सः=वह वरुण
तमह=उस भृगुप्रति
उवाच=कहताभया कि
तपः=विचार
इति=ही
ब्रह्म=ब्रह्मप्राप्तिका द्वारहै
त्वम्=तू
तपसा=सूक्ष्मविचार करके
एव=अवश्य
ब्रह्म=ब्रह्मको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विजिज्ञासस्व=भलीप्रकार जानने की इच्छाकर	तपः=विचारको
+एवंश्रुत्वा=ऐसा सुन करके	अतप्यत=विचारकरता भया
सः=वह भृगु	सः=वह
	तपः=विचारको
	तप्त्वा=विचार करके

नोट-इसका सम्बन्ध अगले अनुवाक से है ॥

भावार्थः ॥

प्राणइति ॥ प्राणही ब्रह्म है, यहां प्राण से मतलब हिरण्यगर्भ से है, क्योंकि प्राण जो हिरण्यगर्भ है उसीसे निश्चय करके यह संपूर्ण भूत उत्पन्न होते हैं, और उत्पन्न होकर उसी प्राण करके जीते हैं, और फिर मरकरके प्राण में ही लयभाव को प्राप्त होते हैं, पर जब विचार किया तब मालूम हुआ कि प्राणनामक हिरण्यगर्भ भी उत्पत्तिनाशवाला है, वह कैसे ब्रह्म होसक्ता है, ऐसा विचार करके फिर अपने पिता वरुण के पास गया, और कहा हे भगवन् ! मेरे प्रति ब्रह्म का उपदेश करो ॥ तिस भृगु ने अपने पुत्र को फिर कहा हे पुत्र ! तप करके याने विचार करके ब्रह्मको जान क्योंकि विचार से विना ब्रह्म नहीं जाना जाता है ॥ भृगु फिर विचार करके जानता भया ॥

इति तृतीयोऽनुवाकः ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

मनोब्रह्मेति व्यजानात् मनसोह्येवखल्विमानि भूतानि जायन्ते मनसा जातानि जीवन्ति मनः प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पितरमुपससार अधीहि भगवोब्रह्मेति तꣳ होवाच तपसाब्रह्मविजिज्ञासस्व तपो ब्रह्मेति सतपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वा ॥

इति चतुर्थोऽनुवाकः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

मनः ब्रह्म इति व्यजानात् मनसः हि एव खलु इमानि भूतानि जायन्ते मनसा जातानि जीवन्ति मनः प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति तत् विज्ञाय पुनः एव वरुणं पितरम् उपससार अधीहि भगवः ब्रह्म इति तम् ह उवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपः ब्रह्म इति सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा ॥

अन्वयः	पदार्थ
इति	ऐसा
व्यजानात्	जानता भया कि
मनः	मनही
ब्रह्म	ब्रह्म है
हि	क्योंकि
खलु	निश्चयकरके
मनसः	मनसे
एव	ही
इमानि	सर्वभूत
जायन्ते	उत्पन्न होते हैं
च	और
जातानि	उत्पन्न भये
मनसा	मनकरके
एव	ही
जीवन्ति	जीते हैं और बढ़ते हैं
+ च	और
+ अन्ते	विनाशकाल बिषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनः=मनप्रति
प्रयन्ति=प्रवेश करतेहैं
+ च=और
अभिसं } तन्मय होजाते
विशन्ति } = हैं
इति= { ऐसा तीन लक्षण युक्त पिताकरके उपदेश किये हुये
तत्=उस मनोमय ब्रह्मको
+सः=वह भृगु
विज्ञाय=जान करके
पुनरेव=फिरभी संशय युक्तहो
+स्वम्=अपने
पितरम्=पिता
वरुणम्=वरुण के
उपससार=समीप जाता भया
+च=और
उवाच=कहताभयाकि
भगवः=भगवन्=हे भगवन्
ब्रह्म=ब्रह्मको
+मह्यम्=मेरे अर्थ
अधीहि=अध्यापय=कहिये
+तदा=तब
+सः=वह वरुण
तम्ह=उसभृगुकेप्रति
इति=ऐसा
उवाच=कहताभयाकि
+हेसौम्य=हे सौम्य
तपः=विचार
इति=ही
ब्रह्म=ब्रह्मकी प्राप्ति का द्वारहै
+त्वम्=तू
तपसा=विचार करके
एव=अवश्य
ब्रह्म=ब्रह्मको
विजिज्ञा } भलेप्रकार
सस्व } =जानने की इच्छाकर
+इतिश्रुत्वा=ऐसा सुनकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सः=वह भृगु	सः=वह भृगु
तपः=विचारको	तपः=विचारको
अतप्यत=विचारकरता भया	तप्त्वा=विचारकरके

नोट-इसका सम्बन्ध अगले अनुवाक से है ॥

भावार्थः ॥

मनइति ॥ मनही ब्रह्म है मनसे यहां मतलब समष्टि अन्तःकरणरूपी हिरण्यगर्भ है, उसीको ब्रह्मरूप करके भृगु जानता भया, क्योंकि समष्टिरूपी मन के संकल्प सेही संपूर्ण मनुष्यादि प्राणी उत्पन्न होते हैं, फिर तिसी करके ही जीते हैं, ॥ और फिर मर करके उसमें ही लयभाव को प्राप्त होते हैं, थोड़े काल पीछे विचार से मालूम भया कि मन भी उत्पत्तिनाशवाला और परिच्छिन्नहै तब ऐसा मन ब्रह्म कैसे होसक्ताहै, ब्रह्म तो नित्यहै, ऐसा विचार करके अपने पिता वरुण के पास फिर भृगु जाता भया और अपने पिता वरुण से कहा हे भगवन्! मेरे प्रति ब्रह्म का उपदेश करो, तिस भृगुके प्रति पिता कहता भया हे पुत्र! तप करके याने विचार करके ब्रह्म को जान, विचार करकेही ब्रह्म जानाजाता है, विचारही ब्रह्म के जानने में कारण है, वह भृगु फिर विचार करता भया, और विचार करके भृगु ने ब्रह्मको जाना ॥

इति चतुर्थोऽनुवाकः ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात् विज्ञानाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते विज्ञानेन जातानि जीवन्ति विज्ञानं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मेति तꣳहोवाच तपसा ब्रह्मविजिज्ञासस्व तपो ब्रह्मेति सतपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वा ॥

इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

विज्ञानम् ब्रह्म इति व्यजानात् विज्ञानात् हि एव खलु इमानि भूतानि जायन्ते विज्ञानेन जातानि जीवन्ति विज्ञानम् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति तत् विज्ञाय पुनः एव वरुणम् पितरम् उपससार अधीहि भगवः ब्रह्म इति तम् ह उवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपः ब्रह्म इति सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इति	ऐसा	+ च	और
व्यजानात्	जानताभया कि	जातानि	उत्पन्नहुये
विज्ञानम्	विज्ञानही	विज्ञानेन	विज्ञानकरके
ब्रह्म	ब्रह्म है	+ एव	ही
हि	क्योंकि	जीवन्ति	जीते हैं और बढ़ते हैं
खलु	निश्चयकरके	+ च	और
विज्ञानात्	विज्ञानसे	+ अन्ते	विनाशकालबिषे
+ एव	ही	विज्ञानम्	विज्ञानप्रति
इमानि	ये	प्रयन्ति	प्रवेश करते हैं
भूतानि	सर्वभूत	+ च	और
जायन्ते	उत्पन्न होते हैं		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिसं विशन्ति = तन्मय होजाते हैं

इति = ऐसे तीन लक्षण करके युक्त पिताके उपदेश किये हुये

तत् = उस विज्ञानरूप ब्रह्मको

+ सः = वह भृगु

विज्ञाय = जान करके

पुनरेव = फिर भी संशय युक्त हो

+ स्वम् = अपने

पितरम् = पिता

वरुणम् = वरुण के

उपससार = समीपजाताभया

+ च = और

+ उवाच = कहताभया कि

भगवः = भगवन् = हे भगवन्

ब्रह्म = ब्रह्मको

+ मह्यम् = मेरे अर्थ

अधीहि = अध्यापय = कहिये

+ तदा = तब

+ सः = वह वरुण

तम्ह = उसभृगुप्रति

इति = ऐसा

उवाच = कहताभया कि

+ हे सौम्य = हे सौम्य

तपः = विचार

इति = ही

ब्रह्म = ब्रह्मकी प्राप्ति का द्वारहै

+ त्वम् = तू

तपसा = विचार करके

एव = ही

ब्रह्म = ब्रह्मको

विजिज्ञासस्व = भलीप्रकार जानने की इच्छाकर

+ एवंश्रुत्वा = ऐसासुनकर

सः = वह भृगु

तपः = विचारको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतप्यत=विचारकरता भया	तपः=विचार को
सः=वह भृगु	तप्त्वा=विचार करके

नोट-इसका सम्बन्ध अगले अनुवाक से है ॥

भावार्थः ॥

विज्ञानमिति ॥ विज्ञानही ब्रह्महै, यहां विज्ञानसे मतलब हिरण्यगर्भ की समष्टि अधिदैविक बुद्धि है, जिसको महत्तत्त्व भी कहते हैं, क्योंकि विज्ञान से ही संपूर्ण भूत उत्पन्नहोते हैं, विज्ञान करके जीते हैं, फिर मर करके विज्ञान में ही लय भावको भी प्राप्त होते हैं, फिर भृगु को विचार से फुरा कि विज्ञान भी तो उत्पत्ति नाशवालाहै, और परिच्छिन्नहै, ब्रह्म तो नित्यहै, विज्ञान ब्रह्म कैसे होसक्ताहै, इस संशय को प्राप्त होकर भृगु फिर अपने पिता के पास गया, और पिता से कहनेलगा, हे भगवन्! हमको ब्रह्मका उपदेश करो, तिस भृगु के प्रति पिता ने कहा तप ही ब्रह्महै, तप करके अर्थात् विचार करके तू ब्रह्मको जान, वह फिर विचार करता भया और विचार करके ही ब्रह्मको जानता भया ॥

इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

आनन्दोब्रह्मेति व्यजानात् आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते आनन्देन जातानि जीवन्तिआनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति सैषाभार्गवीवारुणीविद्या परमेव्योमन् प्रतिष्ठिता स य एवं वेदप्रतितिष्ठति अन्नवानन्नादोभवति महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥

इति षष्ठोऽनुवाकः ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

आनन्दः ब्रह्म इति व्यजानात् आनन्दात् हि एव खलु इमानि भूतानि जायन्ते आनन्देन जा तानि जीवन्ति आनन्दम् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति सा एषा भार्गवी वारुणी विद्या परमे व्योमन् प्रतिष्ठिता सः यः एवम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवान् अन्नादः भवति महान् भवति प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥

अन्वयः	पदार्थ
इति	ऐसा
व्यजानात्	जानताभया कि
आनन्दः	आनन्दही
ब्रह्म	ब्रह्महै
हि	क्योंकि
खलु	निश्चयकरके
आनन्दात्	आनन्दसे
एव	ही
इमानि	ये
भूतानि	सर्वभूत
जायन्ते	उत्पन्न होते हैं
+ च	और
जातानि	उत्पन्नहुये

अन्वयः	पदार्थ
आनन्देन	आनन्दकरके
+ एव	ही
जीवन्ति	जीते हैं और बढ़ते हैं
+ च	और
+ अन्ते	विनाशकाल बिषे
आनन्दम्	आनन्दप्रति
प्रयन्ति	प्रवेश करते हैं
च	और
अभिसंविशन्ति	तन्मयहोजाते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति=इस प्रकार वारंवार विचार करके सर्वान्तर आनन्दको वह भृगु ब्रह्म ही जानता भया

सा=वही

एषा=यह

विद्या=ब्रह्मविद्या

भार्गवी=भृगु करके विदित

+ च=और

वारुणी=वरुण करके कथित

परमे=उत्कृष्ट

व्योमन्=व्योम्नि=हृदयाकाश बुद्धिरूपी गुहाबिषे

प्रतिष्ठिता=स्थितहै

यः=जो

एवम्=इसप्रकार ब्रह्मविद्याको

वेद=जानता है

सः=वह

प्रतितिष्ठति=आनन्द रूप परब्रह्म बिषे स्थित होता है याने स्वयं ब्रह्म होजाता है

+ च=और

+दृष्टंचफलं तस्य एवं प्रकारेण अस्मिन्शरीरे एव भवति=दृश्यमान फल भी उसको इसी शरीरबिषे इस प्रकार प्राप्त होताहै कि

सः=वह

+अन्नवान्=बिशेष अन्नवाला

+ च=और

अन्नादः=अन्नके भक्षण करने को समर्थ्य वाला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भवति=होताहै	महान्=ऐश्वर्यवान्
+ च=और	भवति=होताहै
प्रजया=सन्तान करके	+ च =और
पशुभिः=गवाश्वादि पशुवों करके	कीर्त्या=कीर्तिकरके
	अपि=भी
ब्रह्मवर्च सेन } =ब्रह्मतेज करके	महान्=श्रीमान्
	भवति=होताहै

भावार्थः ॥

आनन्दो ब्रह्मेति॥ आनन्दरूप ही ब्रह्महै, ऐसा भृगु जानताभया, यहां आनन्द से मतलब ब्रह्मानन्द से है, क्योंकि उसी आनन्दरूप ब्रह्मसे ही संपूर्ण भूत उत्पन्नहोते हैं, उसी करके जीते हैं, फिर मर करके उसी आनन्दरूप ब्रह्म में लयभाव को प्राप्त होते हैं, इस लिये आनन्दरूप ही ब्रह्म है, इसलिये विचार करके ही भृगु ने ब्रह्म को जाना है, ब्रह्मके जानने का मुख्य साधन विचारही है, सो यह वरुण करके कही हुई और भृगु करके पूछी हुई ब्रह्मविद्या है, सोई हार्दाकाश में स्थित है, अब पूर्वोक्त ब्रह्मविद्या के फलको कहते हैं ॥ जो अधिकारी पूर्वोक्त रीति से इस ब्रह्मविद्याको जानता है, वह परब्रह्म में ही स्थित होताहै, अर्थात् ब्रह्मरूप ही होजाता है, जीवन्मुक्त विद्वान् में देहपात के पूर्व अविद्या लेशमात्र रहि जाती है, इसलिये वह ब्रह्मरूप ही है, ऐसा जो विद्वान् है, उसके पास बहुत अन्न होता है, और उसकी जठराग्नि बड़ी तेज होती है, याने वह नीरोग्य होता है, और पुत्रादिकों करके और पशुवों करके वृद्धि को प्राप्त होता है, और ब्रह्म तेज करके महान् कीर्ति को लभ्यता है ॥

इति षष्ठोऽनुवाकः ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

अन्नंननिन्द्यात्तद्व्रतम् प्राणोवाऽन्नम्शरीरम न्नादम्प्राणे शरीरंप्रतिष्ठितम् शरीरेप्राणः प्रतिष्ठितःतदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् सय एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेदप्रतितिष्ठति अन्नवानन्नादोभवति महान् भवतिप्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥

इति सप्तमोऽनुवाकः ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

अन्नम् न निन्द्यात् तत् व्रतम् प्राणः वै अन्नम् शरीरम् अन्नादम् प्राणे शरीरम् प्रतिष्ठितम् शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः तत् एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् सः यः एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवान् अन्नादः भवति महान् भवति प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+एवंपञ्चको शविचारेण =	इस प्रकार पञ्चकोश के विचारद्वारा	+कदापि=कभी	
+ब्रह्मविदः=ब्रह्मवेत्ता का		न=नहीं	
तत्=यह		निन्द्यात्=निन्दाकरै	
व्रतम्=नियमहै कि			
अन्नम्=अन्न की		अन्नम्=अन्न	
		वा=ही	
		प्राणः=प्राणहै	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च=और
+ शरीरम्=प्राणयुक्तशरीर
अन्नादम्=अन्नका भक्षण करनेवाला है
+ च=और
यत्=चूंकि
शरीरम्=शरीर
प्राणे=प्राण बिषे
प्रतिष्ठितम्=स्थित है
च=और
प्राणः=प्राण
शरीरे=शरीर बिषे
प्रतिष्ठितः=स्थितहै
तत्=इसलिये
एतत्=यह
अन्नम्=अन्न
अन्ने=अन्न बिषे
प्रतिष्ठितम्=स्थित है

यः=जो उपासक
एतत्=इस
अन्नम्=अन्नको
अन्ने=अन्न बिषे
प्रतिष्ठितम्=स्थित
वेद=जानता है
सः=वह
प्रतिष्ठति=ब्रह्मबिषेस्थित होताहै वा ने स्वयं ब्रह्म होजाताहै
+ दृष्टंचफलं तस्यास्मिन्शरीरे एवं प्रकारेणभवति=दृश्यमान फलभी उसको इस प्रकारहसीशरीर बिषे होता है कि
+ सः=वह
अन्नवान्=विशेषअन्नवाला
+ भवति=होताहै
+ च=और
अन्नादः=अन्नके भक्षण करने में सामर्थ्यवाला
भवति=होताहै
+ च=और
+ सः=वह
प्रजया=सन्तति करके
पशुभिः=गवाश्वादि पशुवों करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मवर्चसेन=ब्रह्मतेजकरके	कीर्त्या=कीर्तिकरके
महान्=ऐश्वर्यवान्	+ अपि=भी
भवति=होताहै	महान्=श्रीमान्
+ च=और	+ भवति=होताहै

भावार्थः ॥

अब अन्न की स्तुति के लिये कर्तव्य को कहते हैं ॥

अन्नमिति ॥ विद्वान् अन्न की निन्दा कदापि न करै, यदृच्छा करके अर्थात् प्रारब्धयोग से जैसा कैसा अन्न मिल जाये उसको आदरपूर्वक भक्षण करै, अब अन्नकी उपासनाको कहते हैं, पांच वृत्तिवाला प्राणरूप जो वायु है सो अन्न है, क्योंकि अन्न से ही प्राण की स्थितिहै, और शरीर जो है सो अन्नाद है, अर्थात् अन्न का भक्षण करनेवाला है, क्योंकि शरीर विना प्राणके स्थित नहीं रहसक्ता है, इसलिये प्राणों में अन्न बुद्धिको करै, और शरीर में अन्नाद बुद्धि को करै, और चूंकि शरीरमें प्राण प्रतिष्ठित हैं इस लिये दोनों परस्पर अन्न अन्नादरूप हैं, जो पुरुष इसप्रकार दोनों को अर्थात् प्राण और शरीरको अन्न अन्नाद रूपकरके जानताहै, वह उपासक शरीर और प्राणरूप करके स्थित होताहै, अर्थात् वह चिरकाल तक जीनेवाला होताहै, उसके पास बहुतसा अन्न होता है, और वह बहुतसे अन्न का भक्षण करनेवाला होता है और बहुत से तिसके पुत्र पौत्र भी होते हैं, फिर तिसके घर में बहुत गाय घोड़े आदि पशु भी होते हैं, ब्रह्म तेजवाला और महान्कीर्तिवाला भी होताहै ॥

इति सप्तमोऽनुवाकः ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

अन्नं न परिचक्षीत तद्व्रतम् आपोवाऽन्नम् ज्यो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिरन्नादम् अप्सुज्योतिः प्रतिष्ठितम् ज्योतिष्यापः प्रतिष्ठिताः तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् सयएतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवानन्नादो भवति महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥

इत्यष्टमोऽनुवाकः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

अन्नम् न परिचक्षीत तत् व्रतम् आपः वा अन्नम् ज्योतिः अन्नादम् अप्सु ज्योतिः प्रतिष्ठितम् ज्योतिषि आपः प्रतिष्ठिताः तत् एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् सः यः एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवान् अन्नादः भवति महान् भवति प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+ एवं पञ्च कोशविचारेण	इस प्रकार पञ्चकोशोंके विचारद्वारा	परिचक्षीत	त्यागकरै
+ ब्रह्मविदः	ब्रह्मवेत्ताका	च	क्योंकि
तत्	यह	आपः	जल
व्रतम्	नियमहै कि	वा	ही
अन्नम्	अन्नको	अन्नम्	अन्नहै
+ कदापि	कभी	+ च	और
न	नहीं	ज्योतिः	ज्योति
		अन्नादम्	अन्नकाभक्षण करनेवालाहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+यत्=चूंकि
ज्योतिः=ज्योति
अप्सु=जलों बिषे
प्रतिष्ठितम्=स्थितहै
च=और
आपः=जल
ज्योतिषि=ज्योतिबिषे
प्रतिष्ठिताः=स्थित हैं
तत्=इसलिये
एतत्=यह
अन्नम्=अन्न
अन्ने=अन्नबिषे
प्रतिष्ठितम्=स्थितहै
यः=जो
एतत्=इस
अन्नम्=अन्नको
अन्ने=अन्न बिषे
प्रतिष्ठितम्=स्थित
वेद=जानता है
सः=वह
प्रतितिष्ठति=ब्रह्मबिषेस्थितहोताहै यानी स्वयंब्रह्महोजाताहै
च=और
दृष्टंचफलं तस्य एवं अस्मिन् शरीरे एव भवति=दृश्यमान फल भीउसकोइसी शरीरबिषे इस प्रकार होताहै कि
+सः=वह
अन्नवान्=विशेष अन्नवाला
भवति=होताहै
च=और
अन्नादः=अन्न के भक्षण करने में सामर्थ्यवाला
भवति=होताहै
+च=और
प्रजया=संतति करके
पशुभिः=गवाश्वादिपशुवों करके
ब्रह्मवर्चसेन=ब्रह्मतेज करके
महान्=ऐश्वर्यवान्
भवति=होताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+च=और		महान् भवति	=श्रीमान् होताहै
कीर्त्या=कीर्तिकरके			

भावार्थः ॥

अन्नमिति ॥ अन्न के उपासकको चाहिये कि स्वल्प और मोटे अन्नको भी त्याग न करै, जो अन्न भोजनके पात्रमें प्राप्त होजाये उसको स्वीकारकरै और प्रसन्नतापूर्वक उसको भक्षणकरै ऐसाउपासक इसप्रकार विचारकरै, कि जलअन्नहै, और जो जठराग्निहै सो अन्नादहै, अर्थात् अन्नका भक्षण करनेवालाहै, जलमें अग्नि स्थितहै, और अग्निमें जल स्थितहै, इसलिये तेज और जल परस्पर अन्न अन्नादरूपहैं, जो पुरुष जल और तेजको अन्न अन्नाद रूप करके जानताहै वह चिरकाल पर्यन्त स्थित होताहै, उसके पास बहुत अन्न होता है, और वह बहुत अन्नको भक्षण करनेवाला भी होताहै, और उसके पास बहुत से पशुहोते हैं, और ब्रह्म तेजवाला और महान् कीर्तिवाला भी होता है ॥

इत्यष्टमोऽनुवाकः ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

अन्नंबहुकुर्वीत तद्व्रतम्पृथिवीवाऽन्नम् आकाशोऽन्नादः पृथिव्यामाकाशः प्रतिष्ठितः आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् सय एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवान्नादो भवति महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥

इति नवमोऽनुवाकः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

अन्नम् बहु कुर्वीत तत् व्रतम् पृथिवी वा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्नम् आकाशः अन्नादः पृथिव्याम् आकाशः प्रतिष्ठितः आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता तत् एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् सः यः एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवान् अन्नादः भवति महान् भवति प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥

अन्वयः	पदार्थ
+एवं पञ्चकोशविचारेण	इसप्रकार पञ्चकोशों के विचार द्वारा
+ब्रह्मविदः	ब्रह्मवेत्ताका
तत्	यह
व्रतम्	नियमहै
कि	
अन्नम्	अन्नकोही
बहु	श्रेष्ठ
कुर्वीत	समझै
पृथिवी	पृथिवी
वा	ही
अन्नम्	अन्नहै
आकाशः	आकाश
अन्नादः	अन्न का भक्षक है
+यत्	चूंकि
पृथिव्याम्	पृथिवी बिषे
आकाशः	आकाश
प्रतिष्ठितः	स्थितहै
+च	और
आकाशे	आकाश बिषे
पृथिवी	पृथिवी
प्रतिष्ठिता	स्थितहै
तत्	इसलिये
एतत्	यह
अन्नम्	अन्न
अन्ने	अन्न बिषे
प्रतिष्ठितम्	स्थितहै
यः	जो
एतत्	इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्नम्=अन्नको	+भवति=होताहै
अन्ने=अन्न बिषे	च=और
प्रतिष्ठितम्=स्थित	अन्नादः=अन्न के भक्षण करने बिषेसामर्थ्य वाला
वेद=जानताहै	भवति=होताहै
सः=वह	+च=और
प्रतितिष्ठति=ब्रह्म बिषे स्थितहोता है याने स्वयंब्रह्म होजाताहै	प्रजया=संतति करके
	पशुभिः=पशुवों करके
दृष्टंचफलंतस्यएवं अस्मिन्शरीर=एवभवति दृश्यमान फल भी उसको इस प्रकार इसी शरीर बिषे होता है कि	ब्रह्मवर्चसेन=ब्रह्मतेज करके
	महान्=श्रीमान्
	भवति=होताहै
	+च=और
	कीर्त्या=कीर्ति करके
	+अपि=भी
सः=वह	महान्=ऐश्वर्यवान्
अन्नवान्=विशेष अन्नवाला	+भवति=होता है

भावार्थः॥

अन्नमिति ॥ बहुत से अन्नको संपादनकरै यह उस उपासक के लिये नियम विधान किया गया है, पृथिवी अन्न है, आकाश अन्नाद है, आकाश अन्नहै, पृथिवी अन्नाद है, याने परस्पर दोनों अन्न अन्नाद हैं, जैसे घट के अन्दर आकाश स्थितहै, तैसे पृथिवी में भी आकाश स्थित है, और आकाश में पृथिवी स्थित है, इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रीति से पृथिवी और आकाश दोनों एक दूसरे में स्थित हैं, अब इस उपासना के फलको कहते हैं ॥ जो पुरुष पृथिवी और आकाशको अन्न अन्नादरूप करके जानता है वह एकको दूसरे में स्थित जानता है, याने इस प्रकार दोनों में अन्न अन्नाद दृष्टिको करता है, ऐसा विचार करनेवाला पुरुष चिरकाल तक जीता है, उसके बहुत से पुत्र पौत्र और पशु आदिक होते हैं, और ब्रह्मतेज करके और कीर्ति करके भी युक्त होताहै ॥

इति नवमोऽनुवाकः ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

नकञ्चनवसतौप्रत्याचक्षीत तद्व्रतम्तस्माद्यया कयाचविधया बह्वन्नंप्राप्नुयात् आराध्यस्माअन्नमित्याचक्षते एतद्वैमुखतोऽन्नंराद्धम् मुखतोऽस्माअन्नंराध्यते एतद्वैमध्यतोअन्नंराद्धम्मध्यतोऽस्माअन्नंराध्यते एतद्वाअन्नतोऽन्नंराद्धम् अन्ततोऽस्माअन्नंराध्यते ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

न कञ्चन वसतौ प्रत्याचक्षीत तत् व्रतम् तस्मात् यया कया च विधया बह्वन्नम् प्राप्नुयात् आराधि अस्मै अन्नम् इति आचक्षते एतत् वै मुखतः अन्नम् राद्धम् मुखतः अस्मै अन्नम् राध्यते एतत् वै मध्यतः अन्नम् राद्धम् मध्यतः अस्मै अन्नम् राध्यते एतत् वै अन्नतः अन्नम् राद्धम् अन्ततः अस्मै अन्नम् राध्यते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
पञ्चकोशोपासकस्य	= पञ्चकोशों के उपासकका
तत्	= यह
व्रतम्	= नियमहै कि
वसतौ स्वगृहे आगतम्	= अपने घरबिषे आयेहुये
कञ्चन	= किसीको
न	= न
प्रत्याचक्षीत	= इन्कार करै
+ च	= और
तस्मात्	= इसीलिये
यया कया विधया	= जिस किस विधिसे याने किसी न किसीतरहसे
बह्वन्नम्	= विशेष अन्न
प्राप्नुयात्	= प्राप्त करै
च	= और
अस्मै	= उस अतिथि के लिये
अन्नम्	= अन्नको

अन्वयः	पदार्थ
आराधि	= सिद्ध करै याने तैयार करके अर्पण करै
इति	= ऐसा
आचक्षते	= वृद्ध लोग कहगये हैं याने कहते आये हैं
+ यदि	= अगर
एतत्	= यह
अन्नम्	= अन्न
मुखतः	= प्रथमवयमें सत्कारपूर्वक
राद्धम्	= दियागया है
+ ततः	= तौ
अस्मै	= उस दाता के लिये
मुखतः	= प्रथम वयबिषेही सत्कारपूर्वक
एव	= निश्चयकरके
अन्नम्	= अन्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राध्यते=मिलता है
वै=अगर
एतत्=यह
अन्नम्=अन्न
मध्यतः=मध्य वय बिषे सत्कार-पूर्वक अ-तिथिको
राद्धम्=दियागया है
ततः=तो
अस्मै=उस अन्नदाता के लिये
मध्यतः=मध्यवय बिषे सत्कारपूर्वक
अन्नम्=अन्न

राध्यते=मिलता है
वै=अगर
एतत्=यह
अन्नम्=अन्न
अन्ततः=अंतवय बिषे सत्कारपूर्वक अतिथिको
राद्धम्=दियागया है
+तदा=तो
अस्मै=उसअन्नदाता के लिये
अन्ततः=अंतवय बिषे सत्कारपूर्वक
अन्नम्=अन्न
राध्यते=मिलता है

भावार्थः ॥

नकंचनेति ॥ पृथिवी और आकाश की, जो पुरुष अन्न अन्नाद गुण करके उपासना करता है, उसके नियम के विधान कहते हैं, यदि कोई मनुष्य उसके घर में निवास करने के लिये प्राप्त होजाये, तब उसका त्याग कदापि न करै अर्थात् तिसको हटावै नहीं, उसके प्रति अन्न अवश्य देवै, इस लिये येनकेन प्रकार करके वह अन्न का संग्रह करै और अतिथियों को खिलावै ॥ जो अतिथि की पूजा करके अतिथि के प्रति अन्न को खिलाता है उस अन्नदाता को जितना वह अन्न देता है उससे हजारगुणा वल्कि लाखोंगुणा अधिक अन्न जन्मान्तर में प्राप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता है, और जिस अवस्था में देता है उसी २ अवस्था में उसको मिलता है, याने जो प्रथम अवस्था में अन्न का दान करता है उसको जन्मान्तर के प्रथम अवस्था में ही अन्न मिलता है, जो मध्यम अवस्था में दान करता है उसको मध्यम अवस्था में अन्न मिलता है, जो वृद्धा अवस्था में दान करता है उसको वृद्धा अवस्थामें ही अन्न मिलताहै ॥ १ ॥

मूलम् ॥

य एवं वेदक्षेमइतिवाचियोगक्षेमइतिप्राणापानयोः कर्मेतिहस्तयोः गतिरितिपादयोः विमुक्तिरितिपायौ इतिमानुषीःसमाज्ञाः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

यः एवम् वेद क्षेम इति वाचि योगक्षेम इति प्राणापानयोः कर्म इति हस्तयोः गतिः इति पादयोः विमुक्तिः इति पायौ इति मानुषीः समाज्ञाः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	जो	+यथोक्तं फलमाप्नोति	यथोक्तफल को प्राप्त होता है
एवम्	इस प्रकार अन्न दान और तिसके फलको	इदानींब्रह्मोपासनप्रकार उच्यते	अब ब्रह्म की उपासना का विधान कहाजाता है
वेद	जानता है		
सः	वह		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षेम=कल्याणरूप ब्रह्म
वाचि=वाणी बिषे स्थितहै
इति=ऐसी उपासना करनी योग्यहै
योगक्षेम={अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति (योग) और प्राप्त वस्तुकी रक्षा (क्षेम) ये दोनों ब्रह्मरूप
प्राणापानयोः={प्राण और अपान बिषे स्थितहैं
इति=ऐसी उपासना करनीयोग्य है
कर्म=कर्मरूप ब्रह्म
हस्तयोः=दोनों हाथों बिषे स्थित है
इति={ऐसी उपासना करनी योग्य है
गतिः=गमनरूप ब्रह्म
पादयोः=चरणों बिषे स्थित है
इति={ऐसी उपासना करनी योग्य है
विमुक्तिः=मल मूत्र विसर्जनरूप ब्रह्म
पायौ=गुदा बिषे स्थित है
इति={ऐसी उपासना करनी योग्य है
इति=इसप्रकार
एताः=ये उक्त पांच उपासना
मानुषीः मानुष्यः=मनुष्यलोक सम्बन्धी
समाज्ञाः=उपासना हैं

भावार्थः ॥

यइति ॥ जो पुरुष पूर्वोक्त प्रकार करके अन्न के माहात्म्य को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उसके दान के फल को जानता है उसी को पूर्वोक्त फल की प्राप्ति भी होती है ॥ अब ब्रह्म की उपासना के प्रकरण को कहते हैं ॥ ब्रह्म शरीरों में योग क्षेम करके स्थित है, याने जो वस्तु प्राप्त कीजाती है वह ब्रह्मही करके कीजाती है, और प्राप्त वस्तु की जो रक्षा कीजाती है वह ब्रह्मही करके कीजाती है, प्राप्त वस्तु की रक्षा करने का नाम क्षेम है, और अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति का नाम योग है, योगरूप करके वह ब्रह्म प्राण में स्थित है, और क्षेम रूप करके अपान में स्थित है, इस प्रकार योग क्षेमरूप करके ब्रह्म की उपासना करनी चाहिये ॥ ब्रह्म कर्मरूप करके हाथों में स्थित है, गतिरूप करके पावों में स्थित है, गुदा में विसर्गरूप करके स्थित है, इस प्रकार ब्रह्म की उपासना करनी चाहिये यह आध्यात्मिक उपासना है ॥ २ ॥

मूलम् ॥

अथ दैवीःतृप्तिरितिवृष्टौ बलमिति विद्युति यशः इति पशुषु ज्योतिरिति नक्षत्रेषुप्रजातिरमृतमानन्द इत्युपस्थे ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ दैवीः तृप्तिः इति वृष्टौ बलम् इति विद्युति यशः इति पशुषु ज्योतिः इति नक्षत्रेषु प्रजातिः अमृतम् आनन्दः इति उपस्थे ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथ	अब	उच्यते	कहीजाती है
दैवीः	देवलोकसम्बन्धिनी समाज्ञाः=उपासना	तृप्तिः	अन्नोत्पत्ति द्वारा तृप्ति रूप ब्रह्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टौ=दृष्टि बिषे स्थित है

इति=ऐसी उपासना करनी योग्य है

बलम्=बलरूप ब्रह्म

विद्युति=विद्युत् बिषे स्थितहै

इति=ऐसी उपासना करनी योग्य है

यशः=दुग्ध और आरोहणादि यशरूप ब्रह्म

पशुषु=गवाश्वादिपशुवों बिषे स्थितहै

इति=ऐसी उपासना करनी योग्यहै

ज्योतिः=तेजोरूप ब्रह्म

नक्षत्रेषु=सूर्य चन्द्र आदिकों बिषे स्थित है

इति=ऐसी उपासना करनी योग्य है

प्रजातिः=पुत्रोत्पत्तिरूप ब्रह्म और

अमृतम्=पुत्र पौत्रोत्पत्ति द्वारा ऋणत्रय की निर्मुक्तिरूप अमृत तुल्य ब्रह्म और

आनन्दः=आनन्दरूप ब्रह्म जो स्त्रीगमनबिषे प्राप्त होताहै वह

उपस्थे=उपस्थ इन्द्रिय बिषे स्थित है

इति=ऐसी उपासनाकरनी योग्य है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थः ॥

अथ दैवीरिति ॥ अब देवतासम्बन्धी याने आधिदैविक उपासना को कथन करते हैं ॥ तृसिरिति ॥ तृप्ति नाम वृष्टि का है, क्योंकि वृष्टिही अन्नादिद्वारा तृप्ति का हेतु है, सो ब्रह्मही तृप्तिरूप करके वृष्टि में स्थित है, ऐसी उपासना करनी चाहिये ॥ तडित् जो बिजली सब शरीरों बिषे स्थित है, और जीवों को चेष्टा करने में सामर्थ्य करती है, उसमें बलरूप करके ब्रह्म स्थित है, ऐसी उपासना करनी चाहिये, और यशरूप करके पशुवों में भी वह ब्रह्म स्थित है, याने दुग्ध दही घृत सवारी आदि जो फल मिलता है वह सब ब्रह्म से ही मिलता है, और प्रकाशरूप करके नक्षत्रों में ब्रह्म स्थित है ॥ और पुत्र का जन्म पितरों को उनके ऋणत्रय से छुड़ाता है, यही ऋणत्रय से छूटनाही अमृतरूप ब्रह्म है, और स्त्रीसंसर्गजन्य जो सुख है सो पुत्ररूप करके आनन्दरूप करके और ऋणत्रयमोचनरूप करके ब्रह्मही उपस्थेन्द्रिय में याने लिङ्ग इन्द्रिय में स्थित है, ऐसी उपासना करनी चाहिये ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

सर्वमित्याकाशेतत्प्रतिष्ठेत्युपासीत प्रतिष्ठावान् भवति तन्महइत्युपासीतमहान् भवतितन्मनइत्युपासीतमानवान्भवति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

सर्वम् इति आकाशे तत् प्रतिष्ठा इति उपासीत प्रतिष्ठावान् भवति तत् महः इति उपासीत महान् भवति तत् मनः इति उपासीत मानवान् भवति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सर्वम्	सर्वात्मकरूप ब्रह्म
आकाशे	आकाश बिषे स्थितहै
इति	ऐसी उपासना करनी योग्य है
तत्	वह ब्रह्म
प्रतिष्ठा	सबका अधिष्ठान हैं
+यदि	अगर
इति	ऐसी
उपासीत	उपासना करै
+ततः	तो
प्रतिष्ठावान्	स्वयं सर्वाधिष्ठानरूप ब्रह्म
भवति	होताहै
तत्	वह ब्रह्म

अन्वयः	पदार्थ
महः	महत्=सब से श्रेष्ठहै
यदि	अगर
इति	ऐसी
उपासीत	उपासनाकरै
+ततः	तो
महान्	स्वयं श्रेष्ठ
भवति	होताहै
तत्	वह ब्रह्म
मनः	मनरूप हैं
+यदि	अगर
इति	ऐसी
उपासीत	उपासनाकरै
+ततः	तो
मानवान्	मनन याने ईश्वर के आराधन मैं समर्थ
भवति	होताहै

भावार्थः ॥

सर्वमिति ॥ आकाश में सर्वरूप करके ब्रह्म स्थित है अर्थात् ब्रह्म से अभिन्न आकाशही संपूर्ण जगत् का आश्रय है ऐसी उपासना करनी चाहिये, जो पुरुष इस प्रकार की उपासना करता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है वह स्वयं सर्वाधिष्ठानरूप ब्रह्म होता है, वह ब्रह्म अतिश्रेष्ठ है अगर ऐसी इसकी उपासना करै तो वह स्वयम् अतिश्रेष्ठ होता है, वह ब्रह्म मनन गुणवाला है इस प्रकार की जो उपासना करै तो ईश्वर के मनन करने में भी सामर्थ्यवाला होता है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

तन्नमइत्युपासीत नम्यन्तेऽस्मैकामाः तद्ब्रह्मेत्युपासीत ब्रह्मवान्भवति तद्ब्रह्मणःपरिमर इत्युपासीत पर्य्येणंम्रियन्ते द्विषन्तः सपत्नःपरियेऽप्रियाभ्रातृव्याः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

तत् नमः इति उपासीत नम्यन्ते अस्मै कामाः तत् ब्रह्म इति उपासीत ब्रह्मवान् भवति तत् ब्रह्मणः परिमरः इति उपासीत परि एनम् म्रियन्ते द्विषन्तः सपत्नाः परि ये अप्रियाः भ्रातृव्याः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तत्	=वह सर्वभूत स्थित ब्रह्म	अस्मै	=उस उपासक के लिये
नमः	=नमस्कार करने योग्य है	कामाः	=विषयभोग
यदि	=अगर	नम्यन्ते	=स्वतःउपस्थित होते हैं
इति	=ऐसा	तत्	=वह ब्रह्म
उपासीत	=उपासनाकरै	ब्रह्म	=व्यापकरूपहै
ततः	=तो	+ यदि	=अगर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति=ऐसी
उपासीत=उपासना करै
+ततः=तो
ब्रह्मवान्=स्वयंव्यापक रूप
भवति=होताहै
तत्=वह वायुरूप
ब्रह्मणः=ब्रह्म का
परिमरः=परिमर है याने जिस बिषे पांच देवता विद्युत्, पृथिवी, चन्द्रमा, आदित्य, अग्नि लीन होतेहैं सो वायु ब्रह्म का परिमर है
+यदि=अगर

इति=ऐसी
उपासीत=उपासना करै
ततः=तो
एनम्=उससे
विद्विषन्तः=द्वेष करतेहुये
सपत्नाः=शत्रु
इति=आपही आप
परि म्रियन्ते=मरण को प्राप्त होते हैं
+च=और
अद्विषन्तोपि=द्वेष न करने वाले भी
ये=जो
अप्रियाः=अप्रिय
भ्रातृव्याः=भ्रात पुत्रादि हैं
तेचपरि म्रियन्ते=वे भी आप ही मरण को प्राप्त होते हैं

भावार्थः॥

तन्नमइति॥ वह ब्रह्म नमस्कार करने योग्य है, अगर ऐसी उपासना को करै तो उस उपासक के आगे सब विषय स्वतः उपस्थित होजाते हैं, वह ब्रह्म विराट्रूप व्यापक है इस प्रकार की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपासना करै तो वह स्वयम् व्यापक होजाता है, वह ब्रह्म वायु गणवाला है, जो इस प्रकार की उपासना करै उसके द्वेष करनेवाले और अद्वेष करनेवाले सब शत्रु मरजाते हैं ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

सयश्चायंपुरुषेयश्चासावादित्येसएकः स य एवं वित् अस्माल्लोकात्प्रेत्य एतमन्नमयमात्मानमुपसं क्रम्य एतंप्राणमयमात्मानमुपसंक्रम्यएतं मनोम यमात्मानमुपसंक्रम्य एतं विज्ञानमयमात्मानमु पसंक्रम्य एतमानन्दमयमात्मानमुपसंक्रम्य इमा ँल्लोकान् कामान्नीकामरूप्यनुसञ्चरन् एतत्साम गायन्नास्ते ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

सः यः च अयम् पुरुषे यः च असौ आदित्ये सः एकः सः यः एवंवित् अस्मात् लोकात् प्रेत्य एतम् अन्नमयम् आत्मानम् उपसंक्रम्य एतम् प्राणमयम् आत्मानम् उपसंक्रम्य एतम् मनोमयम् आत्मानम् उपसंक्रम्य एतम् विज्ञानमयम् आत्मानम् उपसंक्रम्य एतम् आनन्दमयम् आत्मानम् उप संक्रम्य इमान् लोकान् कामान्नीकामरूपी अनुस ञ्चरन् एतत् साम गायन् आस्ते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
च	और
यः	जो
पुरुषे	पुरुष बिषे आनन्द है
च	और
यः	जो
असौ	यह
आदित्ये	सूर्य बिषे
आनन्दः	आनन्द है
सः	सोई
+एकः	निरतिशयानन्द
+ब्रह्मविदोऽवश्यं भवति	ब्रह्मवेत्ता को अवश्यहोता है
+च	और
कामान्नी	इच्छामात्र से प्राप्त हैं अन्नभोग जिसको
कामरूपी	इच्छामात्र से प्राप्त है स्थूलसूक्ष्म रूपजिसको याने जो स्व-इच्छा करके अनेक रूप धारण कर सक्ताहै ऐसा
+ब्रह्मविदः	ब्रह्मवेत्ता
इमान्	इन भूरादि
लोकान्	लोकों बिषे
अनुसञ्चरन्	अपनीइच्छा से बिचरता हुआ
च	और
एतत्	इस
साम	सामवेदकेगीत को
एवम्	इसप्रकार
गायन्	गाताहुआ
आस्ते	रहताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थः ॥

सयश्चायमिति ॥ जो यह आत्मा प्रत्येक शरीरों में वर्तमान है और जो आत्मा आदित्यमण्डल में वर्तमान है वे दोनों एकही हैं, जो पुरुष इस प्रकार जीवात्मा और परमात्माके अभेद को जानता है, सो विद्वान् इस लोक और परलोक के विषय भोगों से उपराम होकर इस अन्नमय शरीर को, और इस अन्नमय के अन्तर प्राणमय शरीर को, और प्राणमय के अन्तर मनोमय शरीर को, और मनोमय शरीर के अन्तर विज्ञानमय शरीर को, और विज्ञानमय शरीर के अन्तर आनन्दमय शरीर को बाध करके अपनी इच्छा से बिचरता हुआ इन भूरादि लोकों में साम-वेद के गीत को इस प्रकार गाता हुआ फिरा करता है ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

हा ३ वु हा ३ वु हा ३ वु अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् अहमन्नादो ३ अहमन्नादो ३ अहमन्नादः अहश्लोककृदहश्लोककृदहश्लोककृदहमस्मि प्रथमजोऋता ३ स्य पूर्वदेवेभ्योऽमृतस्यना ३ भायियो माददाति स इहदेवमा ३ वाः अहमन्नमन्नमदन्तमा ३ द्मिअहं विश्वं भुवनमभ्यवां ३ सुवर्णज्योतिः यः एवंवेदइत्युपनिषद् राध्यते विद्युति मानवान् भवत्येकोहा ३ वुयएवंवेदैकञ्च भृगुस्तस्मैयतो विशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तत्त्रयोदशान्नंप्राणंमनोविज्ञानमिति विज्ञायतंतपसाद्वादशानन्द इति सैषा दशान्नं न निन्द्यात् प्राणः शरीरमन्नं न परिचक्षीतापोज्योतिरन्नं बहुकुर्वीत पृथिव्यामाकाश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकदशैकादनकञ्चनैकषष्टिरेकान्नविंशं शान्तिरेकान्नविंशतिः ॥ ७ ॥

इति दशमोऽनुवाकः ॥ १० ॥

इति तृतीया भृगुवल्ली समाप्ता ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

हा ३ वु हा ३ वु हा ३ वु अहम् अन्नम् अहम् अन्नम् अहम् अन्नम् अहम् अन्नादः अहम् अन्नादः अहम् अन्नादः अहम् श्लोककृत् अहम् श्लोककृत् अहम् श्लोककृत् अहम् अस्मि प्रथमजः ऋता ३ स्य पूर्वम् देवेभ्यः अमृतस्य ना ३ भायि यः मा ददाति सः इत् एव मा ३ वाः अहम् अन्नम् अहम् अन्नम् अदन्तम् आ ३ मि अहम् विश्वम् भुवनम् अभ्यवभवाँ ३ सुवर्णज्योतिः यः एवम् वेद इति उपनिषद् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
हाइवु=अहोउ=बड़ा आश्चर्य है		अहमन्नम्=मैं अन्न हूं	
हाइउ=अहोउ=बड़ा आश्चर्य है		अहमन्नम्=मैं अन्न हूं	
हाइउ=अहोउ=बड़ा आश्चर्य है		अहमन्नादः=मैं अन्न का भोक्ता हूं	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहमन्नादः=मैं अन्न का भोक्ताहूं
अहमन्नादः=मैं अन्न का भोक्ताहूं
अहंश्लोककृत्=मैं कार्यकारण रूपहूं
अहंश्लोककृत्=मैं कार्यकारण रूपहूं
अहंश्लोककृत्=मैं कार्यकारण रूपहूं
अहम्=मैं
ऋताइस्य=मूर्तअमूर्त याने कार्य कारण के
प्रथमजः=पूर्वउत्पन्नहुआ
अस्मि=हूं
च=और
देवेभ्यः=इन्द्रियाभिमानी देवताओं से
+अपि=भी
पूर्वम्=पहिले
+जातोस्मि=उत्पन्नहुआहूं
च=और
अमृतस्य=मोक्षका
नाइभायि=नाभिः मध्य स्थान याने निधान
अस्मि=हूं
च=और
यः=जो
मा=माम्=मुझअन्नरूपको
अन्नार्थिने=अन्नार्थी के लिये
ददाति=देताहै
सः=वह
इत्=इति=ऐसेदानधर्मसे
एव=अवश्य
मा=माम्=मुझको
अवाः=अवति=रक्षा करताहै
च=और
अन्नम्=अन्नको
+अन्नार्थिनेऽदत्त्वा=अन्नार्थी के लिये न देके
अन्नमदन्तम्=अन्न भक्षण करते हुये को
अहम्=मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आइद्मि=अद्मि=भक्षण करजाताहूं
च=और
अहम्=मैं
सुवर्णज्योतिःनः=सूर्य इव = सूर्य की तरह प्रकाशमान होकर
विश्वम्=ब्रह्मा से तृण पर्यन्त
भवनम्=लोकको
अभिभवाँइ अभिभवामि = तिरस्कार करताहूं
उपनिषद्= "सत्यंज्ञान मनन्तंब्रह्म" इस महा-वाक्य का तात्पर्य
यः=जो
एवम्=इसप्रकार
वेद=जानताहै
च=और
यः=जो
एवंवित्=ऐसा जानने वालाहै
सः=वह
अस्मात्=इस
लोकात्=लोकसे
प्रेत्य=मरके
च=और
एतम्=पूर्वोक्त
अन्नमयमात्मानम् = अन्नमय शरीरको
उपसंक्रम्य=उल्लंघनकरके
च=और
एतम्=पूर्वोक्त
मनोमयमात्मानम् = मनोमय शरीरको
उपसंक्रम्य=उल्लंघनकरके
च=और
एतम्=पूर्वोक्त
विज्ञानमयमात्मानम् = विज्ञानमय शरीरको
उपसंक्रम्य=उल्लंघनकरके
च=और पूर्वोक्त
आनन्दमयमात्मानम् = आनन्दमय शरीरको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपसंक्रम्य=उल्लंघन करके	+ब्रह्मरूपो भवति	=ब्रह्मरूप हो जाताहै

भावार्थः ॥

हाइति ॥ अब सामवेद के गायन के प्रकार को कहते हैं ॥ "हाईवु" और "हाइउ" ये दोनों शब्द विस्मयार्थ के वाचकहैं, ब्रह्म का उपासक मस्त होकर कहता फिरताहै, अद्वैतात्मा मायामल से रहित मैं हूं, मैंही अन्न भोग्यरूप भी हूं, और मैंही अन्नाद भोक्तारूप भी हूं, यही बड़ा आश्चर्य है, मैंही देहादि अनेक इन्द्रियों के संघात का कर्ता हूं, और मैंही अचेतनरूप शरीर इन्द्रियादिकों का संघात हूं, यह ही महान् आश्चर्य है, मूर्त अमूर्तरूपी संपूर्ण जगत् का प्रथम उत्पन्न हिरण्यगर्भरूपी कर्ता भी मैंही हूं, और मैंही हिरण्यगर्भ की उत्पत्ति से अनंतर इन्द्रादिक देवताओं से पूर्व उत्पन्न जो विराट् पुरुष है सो भी मैंही हूं, अर्थात् कार्य कारण रूप मैंही हूं, और मुमुक्षुओं को प्राप्तव्य जो कि अमृतत्व है वह भी मेराही स्वरूप है, जो पुरुष मुझ अन्नरूप को अन्नार्थियों के प्रति देताहै सो अन्नदाता मेरी रक्षा अन्न करके करताहै, और वृद्धि को प्राप्त होता है, और जो पुरुष अन्नार्थियों के प्रति अन्न को न देकर आप अन्न को भक्षण करता है, उसको मैं भक्षण करजाता हूं, तात्पर्य यह है कि उपासक कहता है मैंही अन्न हूं, मैंही अन्न का भक्षण करनेवाला भी हूं, मैंही संपूर्ण विश्व का प्रकट करनेवाला हूं, मैंही संपूर्ण विश्व को प्रलयकाल में उपसंहार करके अपने में लय करलेता हूं, फिर सृष्टिसमय मैंही संपूर्ण जगत् को उत्पन्न करके उसको प्रकाशता हूं, यह सब आश्चर्यरूपी कौतुक मेराही है, इन दो वल्लियों करके निरूपण किया परमात्मा का ज्ञान जो कोई और पुरुष भी पूर्वोक्त प्रकार से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानता है उसको भी यही फल मिल जाता है, याने पांचों कोश-संबन्धी शरीरों को उल्लंघन करके ब्रह्मरूप होजाता है ॥ ७ ॥

इति दशमोऽनुवाकः ॥ १० ॥

इति तृतीया भृगुवल्ली समाप्ता ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु माविद्विषावहै ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

पदच्छेदः ॥

सह नौ अवतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यम् करवावहै तेजस्वि नौ अधीतम् अस्तु माविद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अन्वयः	पदार्थ
+सः	=वह ईश्वर
नौ	=हम दोनोंको याने गुरु और शिष्य को
सह	=साथ
एव	=ही
अवतु	=रक्षाकरै
नौ	=हम दोनोंको
सहएव	=साथही
भुनक्तु	=भोग प्राप्तकरै
+आवाम्	=हम दोनों
सह	=साथ
+एव	=ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वीर्यम्=विद्यादान और विद्या ग्रहण सामर्थ्य को

तेजस्वि=अर्थज्ञान योग्य थाने सफल

अस्तु=होवै

+आवाम्=हम दोनों

करवावहै=प्राप्त होवैं

नौ=हम दोनोंका

अधीतम्=पढ़ाहुआ

माविद्विषावहै=पठन पाठन में प्रमाद रूप द्वेषको न प्राप्तहोवैं

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति तैत्तरीयोपनिषत्सटीका सम्पूर्णा ॥

शुभमस्तु ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निम्नलिखित पुस्तकों के सिवा और भी हर प्रकार की पुस्तकें मौजूद हैं जिनको आप हमारे सूचीपत्र में देख सकते हैं ॥

नीचे लिखे उपनिषद् पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर कृतहैं.

ईशावास्य उपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	-)॥
केनोपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... =)
कठवल्ली उपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... =)॥
प्रश्नोपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... =)
मुण्डक उपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... =)॥
माण्डूक्योपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... ॥=)
तैत्तिरीयोपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... ।=)॥
ऐतरेयोपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... =)॥
छान्दोग्योपनिषद् भाषाटीका सहित कामिल	....	....	१=)

नीचे लिखे उपनिषद् रायबहादुर बाबू ज्वालिमसिंह कृतहैं.

ईशावास्य उपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	=)
केनोपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... =)
कठवल्ली उपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... ॥)
प्रश्नोपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... ।=)
मुण्डकउपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... ।=)
माण्डूक्योपनिषद् भाषाटीका सहित	....	....	.... =)

मिलने का पताः—

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गत् तेन त्य

अथ ईशावास्योपनिषद् ॥

हरिः ॐ यजुर्वेदीयवाजसनेयसंहितायाम्
ईशावास्योपनिषत् तत्र आरम्भशान्तिः

मूल ॥

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः ॥ १ ॥

पदच्छेद

भद्रम् कर्णेभिः शृणुयामदेवाः भद्रम् पश्येम अक्षभिः यजत्राः स्थिरैः अङ्गैः तुष्टुवांसः तनूभिः व्यशेमहि देवहितम् यत् आयुः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यजत्राः =	हे पूजनकरने वालों की रक्षाकरनेवाले	+ भवत् प्रसादात् =	तुम्हारी कृपासे
देवाः =	देवताओ	कर्णेभिः =	कानोंद्वारा
		भद्रम् =	कल्याणको
		शृणुयाम =	सुनें हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection

+ च = और
अक्षभिः = नेत्रोंद्वारा
भद्रम् = कल्याणको
पश्येम = देखैं हम
च = और
स्थिरैः = स्थिर याने दृढ़
अङ्गैः = अंगोंकरके
च = और
+स्थिराभिः=स्थिर याने दृढ़
तनूभिः = शरीरोंकरके
+युष्माकम् = आपकी
तुष्टुवांसः = सदा स्तुति करतेहुये
वयं = हम
आयुः = आयुको
यत् = जोकि
देवहितम्= देवहितम् = यज्ञ दान आदिसेदेवतों का हित करनेवालाहै
व्यशेमहि = प्राप्तहोवैं
ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः = हमारे तापत्रय की शान्तिहोवै अर्थात् आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविकरूप जो दुःखत्रय हैं उनका नाशहोवै

ॐहरिःॐ

मूल ॥

ईशावास्यमिदꣳसर्वं यत्किंचजगत्यांजगत् तेन त्यक्तेनभुञ्जीथा मागृधःकस्यस्विद्धनम् ॥ १ ॥

पदच्छेद

ईशा वास्यम् इदम् सर्वम् यत् किञ्च जगत्याम् ज-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गत् तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मागृधः कस्यस्वित् धनम् ॥

अन्वय पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्किञ्च = जोकुछ	पृथक् होकर
जगत्याम् = जगत् बिषे	+ स्वात्मानम् = अपने आत्माको
जगत् = नामरूपात्मक जगत् है	भुञ्जीथाः = रक्षाकरै
+ तत् = सो	+ च = और
इदम् = यह	कस्यस्वित् = किसीके भी
सर्वम् = सब	धनम् = विषय भोगरूपधनकी
ईशा = ईश्वर करके	मागृधः = आकांक्षा न करै
वास्यम् = आच्छादितहै	
तेन = तिससे	
त्यक्तेन = त्यागकरके याने	

यह प्रथम मंत्रका उपदेश उत्तम अधिकारी मुमुक्षु के लिये है॥

मूल॥

कुर्व्वन्नेवेहकर्म्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः
एवन्त्वयिनान्यथेतोऽस्ति नकर्म्मलिप्यतेनरे॥ २॥

पदच्छेद

कुर्व्वन् एव इह कर्माणि जिजीविषेत् शतम् समाः एवम् त्वयि न अन्यथा इतः अस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इह	= इससंसारमें	अन्यथा	= और कोई उपाय
कर्माणि	= निष्काम कर्मों को	न	= नहीं
एव	= अवश्यही	अस्ति	= है
कुर्वन्	= करते हुये	एवम्	= इस प्रकार करते हुवे
शतम्	= सौ	त्वयि	= तुझ
समाः	= वर्ष	नरे	= मनुष्य बिषे
जिजीविषेत्	= जीनेकी इच्छाकरै	कर्म	= कर्म्म
इतः	= इसके सिवाय	न	= नहीं
		लिप्यते	= लिपायमान होगा

नोट–लिप्यते यह वर्तमान काल है परंतु अर्थ भविष्यत्काल काही देताहै और इस मन्त्र का उपदेश मध्यमाधिकारी मुमुक्षु के प्रति है ॥ २ ॥

मूल ॥

असुर्य्यानामतेलोका अन्धेनतमसावृताः
तांस्तेप्रेत्याभिगच्छन्ति येकेचात्महनोजनाः ॥३॥

पदच्छेद

असुर्य्याः नाम ते लोकाः अन्धेन तमसा आवृताः
तान् ते प्रेत्य अभिगच्छन्ति ये के च आत्महनः जनाः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ ये	= जो	आत्महनः	= आत्महत्यारे याने अपने आत्माकोनहीं उद्धार करनेवाले
लोकाः	= लोक	जनाः	जनहैं
अन्धेन	= अदर्शनात्मक	ते	= वे
तमसा	= अज्ञान से	तान्	= उन लोकों को
आवृताः	= आवृत हैं	प्रेत्य	= मरकरके
ते	= वे	अभिगच्छन्ति	= प्राप्त होते हैं
असुर्य्याः	= असुरों के योग्य		
नाम	= प्रसिद्ध हैं		
च	= और		
ये	= जो		
के	= कोई		

नोट–इस मंत्रका उपदेश सकामकर्मियों के निंदाके प्रति है॥

मूल॥

अनेजदेकम्मनसो जवीयोनैतद्देवा आप्नुवन्पूर्वमर्शत् तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपोमातरिश्वादधाति॥ ४॥

पदच्छेद

अनेजत् एकम् मनसः जवीयः न एतत् देवाः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आमुवन् पूर्वम् अर्शत् तत् धावतः अन्यान् अ-
त्येति तिष्ठत् तस्मिन् अपः मातरिश्वा दधाति॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतत् =	यह आत्मा
अनेजत् =	अचलहै
तिष्ठत् =	विकाररहितहै
एकम् =	अद्वैतहै
मनसः =	मनसे
जवीयः =	आगे जानेवा-लाहै
पूर्वम् =	पहलेसेही
अर्शत् =	गयाहुवाहै
+ यत् =	जिसको
देवाः =	चक्षुरादि इन्द्रिय अभिमानीदेवताभी
न =	नहीं
आमुवन् =	प्राप्तहोते हैं
तत् =	वही आत्मा
धावतः =	शीघ्र चलते हुये
अन्यान् =	औरोंको यानी मनआदिकों को
अत्येति =	उल्लंघन करता है यानी पीछे छोड़ देता है
+ च =	और
तस्मिन् =	उसी चेतन आत्मा बिषे
मातरिश्वा =	सूत्रात्मा प्राण वायु
अपः =	अग्नि आदित्य आदि और सबप्राणियों के ज्वलन दहन आदि सब कर्मों को
दधाति =	धारण करता है याने सबको अपने अपने कर्मों बिषे प्रेरणा करता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट–आभुवन्भूतकालहै परंतु अर्थ वर्त्तमानकाल देताहै॥

मूल॥

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वदन्तिके तदन्तरस्यसर्वस्य तदु सर्वस्यास्यबाह्यतः॥ ५॥

पदच्छेद

तत् एजति तत् न एजति तत् दूरे तद्वत् अन्तिके तत् अन्तः अस्य सर्वस्य तत् उ सर्वस्य अस्य बाह्यतः॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत् =	सोई आत्मा		समीप है
एजति =	चलता है उपाधी करके	च =	और
तत् =	सोई आत्मा उपाधी विना	तत् =	सोई आत्मा
न =	नहीं	अस्य =	इस
एजति =	चलता है	सर्वस्य =	संपूर्ण जगत्के
तत् =	सोई आत्मा	अन्तः =	अभ्यन्तर बिषे स्थित है
दूरे =	अविद्वानों से दूर है	उ =	और
तद्वत् =	वैसेही	तत् =	सोई आत्मा
अन्तिके =	विद्वानों के	अस्य =	इस
		सर्वस्य =	सब जगत् के
		बाह्यतः =	बाहर है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूल ॥

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति सर्व भूतेषुचात्मानं ततोनविचिकित्सति ॥ ६ ॥

पदच्छेद

यः तु सर्वाणि भूतानि आत्मनि एव अनुपश्यति सर्वभूतेषु च आत्मानम् ततः न विचिकित्सति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु =	और	अनुपश्यति =	देखताहै
यः =	जोज्ञानी पुरुष	+ सः =	वह
सर्वाणि =	सब	ततः =	इसप्रकारके दर्शन से
भूतानि =	भूतोंको	न =	नहीं
आत्मनि =	आत्मामें	विचिकित्सति =	सन्देह को प्राप्त होताहै याने संशय विपर्यय से रहित हुआ जीवन्मुक्त होताहै
एव =	निश्चयकरके		
अनुपश्यति =	देखताहै		
च =	और		
सर्वभूतेषु =	सम्पूर्णभूतों में		
आत्मानम् =	आत्माको		

मूल ॥

यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः तत्रकोमोहः कःशोकएकत्वमनुपश्यतः ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद ॥

यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मा एव अभूत् विजानतः तत्र कः मोहः कः शोकः एकत्वम् अनुपश्यतः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्मिन्	= जिसकाल में
विजानतः	= ज्ञानवान् को
सर्वाणि	= संपूर्ण
भूतानि	= भूत
आत्मा	= आत्मा
एव	= ही
अभूत्	= सिद्ध होताहै याने प्रतीत होताहै
तत्र	= तिस काल में
एकत्वम्	= एकत्व को याने अभेद
अनुपश्यतः	= देखनेवाले पुरुष को
कः	= कहां
मोहः	= मोह है
च	= और
कः	= कहां
शोकः	= शोकहै किन्तु मोह शोकरहित होता है ॥

नोट—अभूत् भूतकालहै परंतु अर्थ वर्त्तमान का देताहै ॥

मूल ॥

सपर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम् कविर्म्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद ॥

सः पर्य्यगात् शुक्रम् अकायम् अव्रणम् अस्नाविरम् शुद्धम् अपापविद्धम् कविः मनीषी परिभूः स्वयम्भूः याथातथ्यतः अर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	= वह पूर्वोक्त आत्मा	स्वयम्भूः	= स्वयं विद्यमान है
पर्य्यगात्	= व्यापक है	च	= और
शुक्रम्	= प्रकाशकहै	शाश्वतीभ्यः	= अनंतकालस्थायी है
अकायम्	= लिंगशरीर रहित है	+ सः एव	= वही
अव्रणम्	= छिद्ररहितहै	समाभ्यः	= ब्रह्माआदि प्रजापतियों के लिये
अस्नाविरम्	= नाड़ी रहितहै	याथातथ्यतः	= यथा उचित
शुद्धम्	= निर्मलहै	अर्थान्	= अग्निहोत्रादिकर्मों को
अपापविद्धम्	= पापरहितहै	व्यदधात्	= विधानकरता भया॥
कविः	= त्रिकाल दर्शी है		
मनीषी	= सर्वज्ञहै		
परिभूः	= सबके ऊपर है		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूल ॥

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ॥
ततोभूयइवते तमोय ऽउसम्भूत्याꣳ रताः ॥ ९ ॥

पदच्छेद ॥

अन्धम् तमः प्रविशन्ति ये असम्भूतिम् उपासते
ततः भूयः इव ते तमः ये उ सम्भूत्याम् रताः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ये	= जोकोई
असम्भूतिम्	= प्रकृतिको
उपासते	= उपासना करते हैं
+ ते	= वे
अन्धम्	= अदर्शनात्मक
तमः	= अज्ञान बिषे
प्रविशन्ति	= प्रवेशकरते हैं याने गिरते हैं
उ	= और

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ये	= जो कोई
सम्भूत्याम्	= कार्यब्रह्म हिरण्यगर्भबिषे
रताः	= रतहैं
ते	= वे
ततः	= उससे भी
भूयःइव	= अधिकतर
तमः	= अन्धकार याने अज्ञान बिषे
+ प्रविशन्ति	= प्रेवश कर तेहैं ॥

मूल ॥

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् इति
शुश्रुमधीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे ॥ १० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद ॥

अन्यत् एव आहुः सम्भवात् अन्यत् आहुः असम्भवात् इति शुश्रुम धीराणाम् ये नः तत् विचचक्षिरे ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सम्भवात्	= सम्भूति करके	तत्	= उस सम्भूति और उ सम्भूति के फलको
अन्यत् एव	= औरही	विचच क्षिरे	= कहतेभये
+ फलम्	= फल	+ तेषाम्	= तिन
आहुः	= कहते हैं	धीराणाम्	= धीरपुरुषों के
च	= और	+ वचनम्	= वचनको
असम्भवात्	= असम्भूति करके	इति	= इसप्रकार
अन्यत्	= औरही	शुश्रुम	= हमलोगों ने श्रवण किया है ॥
+ फलम्	= फल		
आहुः	= कहते हैं		
ये	= जो कोई		
नः	= हमारेलिये		

मूल ॥

सम्भूतिञ्चविनाशञ्चयस्तद्वेदोभयꣳ सहविनाशेन मृत्युन्तीर्त्वासम्भूत्यामृतमश्नुते ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद ॥

संभूतिम् च विनाशम् च यः तत् वेद उभयम् सह विनाशेन मृत्युम् तीर्त्वा सम्भूत्या अमृतम् अश्नुते ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	= जो कोई	सः	= वह
तत्	= उस	विनाशेन	= असंभूति-द्वारा
उभयम्	= दोनों	मृत्युम्	= मृत्यु को
सम्भूतिम्	= सम्भूति	तीर्त्वा	= तर करके
च	= और	असंभूत्या	= सम्भूतिद्वारा
विनाशम्	= असम्भूतिको	अमृतम्	= अमरभावको
सह	= एकही	अश्नुते	= प्राप्त होताहै ॥
वेद	= जानता है		

नोट—असंभूति प्रकृति को कहतेहैं उसका उपासक प्रकृतिविषे लय होता है इसलिये वह जन्म मरण भावसे अमर समझा गया है = सम्भूति हिरण्यगर्भ को कहते हैं उसका उपासक अणिमा आदि सिद्धियोंको प्राप्त होताहै इसलिये वह भी मरणभावसे रहित समझागयाहै ॥ ११ ॥

मूल ॥

अन्धन्तमः प्रविशन्तियेऽविद्यामुपासते ततो भूयइवतेतमोयऽउविद्यायाꣳरताः ॥ १२ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद॥

अन्धम् तमः प्रविशन्ति ये अविद्याम् उपासते
ततः भूयः इव ते तमः ये उ विद्यायाम् रताः॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ये	= जो कोई विवेकी पुरुष
अविद्याम्	= अविद्या के आश्रय अग्नि होत्रादि सकाम कर्मों को
उपासते	= स्वर्ग्गादि फल के निमित्त उपासना करते हैं
+ ते	= वे
अन्धम्	= अदर्शनात्मक
तमः	= अज्ञानावृत शरीर में
प्रविशन्ति	= प्रवेशकरतेहैं
उ	= और
ये	= जो कोई
विद्यायाम्	= सकामकर्म त्यागकरके केवल देवतों के भेद भाव उपासना बिषे
रताः	= तत्परहैं
ते	= वे
ततः	= उस अंधतम से भी
भूयः इव	= अत्यंत
तमः	= अन्धकारको
प्रविशन्ति	= प्राप्तहोतेहैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूल ॥

अन्यदेवाहुर्विद्याया अन्यदाहुरविद्याया इति शुश्रुमधीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे ॥ १३ ॥

पदच्छेद ॥

अन्यत् एव आहुः विद्यायाः अन्यत् आहुः अविद्यायाः इति शुश्रुम धीराणाम् ये नः तत् विचचक्षिरे ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
विद्यायाः	= विद्याका	धीराणाम्	= बुद्धिमान् पुरुषों के
अन्यत्एव	= औरही	+ वचनम्	= वचनको
+ फलम्	= फल	शुश्रुम	= हमने सुनाहै
आहुः	= कहते हैं	ये	= जिन्होंने
अविद्यायाः	= अविद्याका	नः	= हमारेलिये
अन्यत्एव	= औरही	तत्	= उसको याने कर्म्म और ज्ञानको
+ फलम्	= फल	विचचक्षिरे	= उपदेश कियाहै
आहुः	= कहते हैं		
इति	= ऐसा		
तेषाम्	= उन		

मूल ॥

विद्याञ्चाविद्याञ्चयस्तद्वेदोभयंसह अविद्यया मृत्युं तीर्त्वाविद्ययामृतमश्नुते ॥ १४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद ॥

विद्याम् च अविद्याम् च यः तत् वेद उभयम् सह अविद्यया मृत्युम् तीर्त्वा विद्यया अमृतम् अश्नुते ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	= और	वेद	= जानताहै
यः	= जोकोई	+ सः	= वह पुरुष
विद्याम्	= विद्या याने देवताओंकी अभेद उपासना	अविद्यया	= अविद्याद्वारा याने कर्म्मद्वारा
च	= और	मृत्युम्	= मृत्यु को
अविद्याम्	= अविद्या याने अग्निहोत्रादि निष्कामकर्म	तीर्त्वा	= तरकरके
तत्	= उन	विद्यया	= विद्याद्वारा याने अहंग्रह उपासनाद्वारा
उभयम्	= दोनोंको	अमृतम्	= अमरभावको
सह	= एकहीपुरुष करके अनुष्ठानकरने योग्य	अश्नुते	= प्राप्त होताहै

मूल ॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् तत् त्वम्पूषन्नपावृणु सत्यधर्म्माय दृष्टये ॥ १५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य अपिहितम् मुखम्
तत् त्वम् पूषन् अपावृणु सत्यधर्म्माय दृष्टये ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पूषन = हेपोषणकर्त्ता सूर्य		पात्रेण = पात्रकरके	
सत्यस्य = सत्य परमात्माके		अपिहितम् = आच्छादित है	
तत् = उस		त्वम् = तू	
मुखम् = द्वारको		सत्यधर्माय = मुझसत्य धर्म्मा के	
× यत् = जो		दृष्टये = दर्शनकेअर्थ	
हिरण्मयेन = तेजोमय		अपावृणु = खोलदे	

मूलम् ॥

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्
समूह । तेजो यत्ते रूपङ्कल्याण तमन्तत्ते पश्यामि
योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि १६ ॥

पदच्छेदः

पूषन् एकर्षे यम सूर्य्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्
समूह तेजः यत् ते रूपम् कल्याणतमम् तत् ते
पश्यामि यः असौ पुरुषः सः अहम् अस्मि ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पूषन् = हेपोषण कर्त्ता		एकर्षे = हेएकचलनेवाला	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यम = हे सर्वकेसंयम न कर्त्ता
सूर्य = हे सर्व्वरसके स्वीकार कर्त्ता सूर्य
प्राजापत्य = हे प्रजापति के पुत्र
+ स्वान् = अपने
रश्मीन् = किरणों को
व्यूह = अलगकर
च = और
तेजः = तेजको
समूह = एकत्रकर
तु = ताकि
यत् = जो
ते = तुम्हारा

कल्याण = { कल्याण
तमम् { तम
रूपम् = रूपहै
तत् = तिसको
ते = तुम्हारे
× प्रसादेन = प्रसाद से
पश्यामि = देखूं मैं
यःअसौ = जो यह
× त्वयि = तेरेबिषे
परिपूर्णः = परिपूर्ण
पुरुषः = पुरुष है
सः = सोई
असौ = यह
अहम् = मैं
अस्मि = हूं

नोट—सूर्य्य भगवान् का उपासक सूर्य्य भगवान् की प्रार्थना मरते समय ऊपर कहेहुये प्रकार करताहै ॥

मूलम् ॥

वायुर निल ममृत मथेदं भस्मात छं शरीरम् ॐ क्रतो स्मर कृत छं स्मर क्रतो स्मर कृत स्मर ॥ १७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

वायुः अनिलम् अमृतम् अथ इदम् भस्मान्तम् शरीरम् ओम् क्रतो स्मर कृतम् स्मर क्रतो स्मर कृतम् स्मर ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	= इसकालमें	+भूयात्	= प्राप्तहो
वायुः	= प्राण वायु	+ च	= और
अनिलम्	= सूत्रआत्माको	क्रतो	= हेमन
+ च	= और	ओम्	= ओंकारको
अमृतम्	= लिंगशरीर	स्मर	= स्मरण कर
+स्वकारणम्	= अपनेकारणतत्वको	× च	= और
+प्राप्येत	= प्राप्तहो	कृतम्	= कियेहुये कर्म्मोंको
च	= और	स्मर	= स्मरण कर
इदम्	= यह	क्रतो	= हेमन
शरीरम्	= स्थूलशरीर	कृतम्	= कियेहुये कर्म्मोंको
भस्मान्तम्	= अन्त भस्मभावको	स्मर	= स्मरण कर
		स्मर	= स्मरण कर

नोट—सूत्रात्मा प्राणका उपासक मरते समय ऊपर कहेहुये प्रकार ओंकार को स्मरण करताहै ॥

मूलम् ॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वयुनानि विद्वान् युयोध्यस्मज्जहुराणमेनो भूयिष्टान्ते नम उक्तिं विधेम ॥ १८ ॥

पदच्छेदः

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् युयोधि अस्मत् जुहुराणम् एनः भूयिष्ठाम् ते नमउक्तिम् विधेम ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
देव =	हे प्रकाशात्मक देव	अस्मत् =	हमारे
अग्ने =	हे अग्नि	जुहुराणम् =	कुटिल वचनात्मक
विश्वानि =	सर्व	एनः =	पापको
वयुनानि =	कर्म्मोंको	युयोधि =	नाशकर
विद्वान् =	जानने वाला तू	ते =	तेरे अर्थ
अस्मान् =	हम कर्म कर्त्ताओं को	भूयिष्ठाम् =	बहुत से
राये =	कर्मफलके अर्थ	नमउक्तिम् =	नमस्कार के वचन
सुपथा =	शुभमार्ग से	विधेम =	कहते हैं हम
नय =	लेचल		
+ च =	और		

नोट-अग्नि देवताका उपासक मरण कालमें अपने मनमें अग्नि देवताकी प्रार्थना करताहै ॥ १८ ॥

इति वाजसनेय संहितायाम् ईशावास्योपनिषत् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ईशावास्योपनिषद्

शुद्धिपत्रिका

अशुद्धिः	शुद्धिः	मन्त्र	पृष्ठ	
यत्किंच	यत्किञ्च	१	२	
एवन्त्व	एवंत्वयि	२	३	
विचिकित्सति	विजुगुप्सते	६	८	पाठान्तर
भस्मात ॐ]	भस्मान्त ॐ	१७	१८	
ण्ये	राये	१८	१९	
हुण्ण	हुराण	१८	२०	

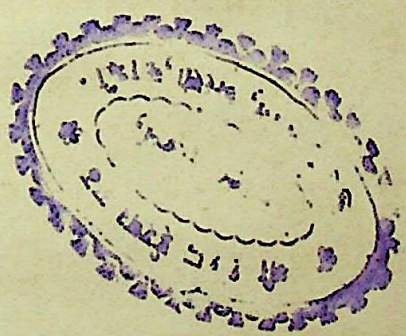

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी ऊपर लिखे हुये के अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया और समझने की सुगमताके लिये गुरु शिष्य सम्वाद पूर्वक पूर्ण ज्ञान लखाया है ॥

मुंडकउपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत =)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित-जिसमें वादी प्रतिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदुत्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का संभव व अग्निहोत्रादि क्रियाओंका विधान मन्त्रों द्वारा बर्णित है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद्भाषाटीका सहित,क़ीमत ।-)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीकासहित-जिस में तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होनेका उदाहरण और स्वरमात्रा व वर्णों के उच्चारणकी शिक्षाका नियम व बर्णों के संबन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मीकी कामनावाले पुरुषोंके अर्थ साधन जप और हवनादि की क्रियायें बर्णित हैं ॥

ऐतरेयोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत =)॥।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित-जिसमें आत्मा व ब्रह्मका निरूपण और प्राण व प्रणवकी उपासना की व्याख्या व संन्यासादि आश्रमों के लक्षण व धर्म अच्छे प्रकार बर्णित हैं ॥

उपनिषद्सार, क़ीमत -)॥ पु०

मुंडक, मांडूक्य, तैत्तरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वर, ईशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, छांदोग्य,बृहदारण्यक, कौषीतकि, ब्राह्मण और मैत्री की भाषा टीका राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्दने रचनाकर अपने पुत्र पौत्र मित्र बान्धव योग्य अधिकारियों के निमित्त छपवायाहै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छान्दोग्य उपनिषद् भाषा टीका. कीमत॥=)

पंडित यमुनाशङ्करजी कृत टीका भाषा ॥

ब्राह्मधर्मदोखंड मैं, ग़ैरमतबा क़ीमत १) पु०

तथा प्रथमखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ॥=) पु०

तथा द्वितीयखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ।=) पु०

यह अत्युत्तम उपनिषद् है इसको पंडित लक्ष्मणप्रसादजी बंगाली भाषा से हिन्दी भाषा में उल्थाकिया है मूलश्लोक और भाषा टीका समेत है ॥

(वेदान्त)

योगवाशिष्ठ दोभागों में, क़ीमत ५॥) पु०

श्रीमद्भागवत भाषाटीकासंयुक्त ७) रु० पु० ॥

इस ग्रन्थ के उत्तम होनेमें कदापि सन्देह नहींहै-इसका भाषा तिलक ब्रजबोली में बहुतही प्याराहै आशय प्रत्येक श्लोकों का है क्यों न हो इस के तिलककार महात्मा ब्रजवासी अङ्गदजी शास्त्रीहैं-यह तिलक ऐसा सरलहै कि इसके द्वारा अल्प संस्कृत पुरुषों का पूराकार्य निकल सक्ताहै-संस्कृत पाठकभी इससे श्लोकोंका पूराआशय समझ सक्तेहैं इसबार यह ग्रन्थ टैपके अक्षर में उम्दा काग़ज़ सफ़ेद चिकना में छापागयाहै और विशेष विद्वान् शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध कराया गया है जिससे बम्बई की छपीहुई पुस्तकसे किसी काम में न्यून नहीं है उम्दा तसावीर भीप्रत्येक स्कन्धमें युक्तहैं-आशाहै कि इस अमूल्य रत्न के लेने में महाशय लोग विलम्ब न करैंगे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

3
१५८८

केन उपनिषद्

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषामें बाबू लालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद ने पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशी की सहायता से अनुवाद किया-

तिसको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुन्शी प्रयाग नारायणजी ने सर्वलोकहितार्थ

पहिली वार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के यन्त्रालय में मुद्रित किया

सन् १९०० ई० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केनोपनिषद् भाषा टीका सहित, क़ीमत =)

सामवेदीय तलवकार शाखीय भाषा टीका सरल मध्य देश हिन्दी भाषामें है—जिसको पण्डित यमुनाशङ्कर ने राजशाही हरिश्चन्द्र की सहायता से अनुवाद किया इसमेंभी पदों के अन्व पूर्वक भावार्थ स्पष्ट कियाहै और ऐसा टीका कियाहै कि अल्प मनुष्यों के भी समझ में आजावे ॥

ईशावास्य उपनिषद् भाषा टीकासहित, क़ी०-)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—[illegible] में मन्त्रों के अर्थ समझने के लिये पदों के अन्वय किये गये फिर पदार्थकी रीति पर समझाकर भावार्थ स्पष्ट किया गया ॥

प्रश्नोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत =)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित—[illegible] में भी सब ऊपर के लिखे हुये अलङ्कारहैं शिष्य के पूछे हुये अ प्रश्नों का उत्तर गुरूने बताकर ब्रह्मरूप लखायाहै ॥

मांडूक्योपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत ॥=)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषा टीका सहित जिसमें ॐकार स्वरूप का प्रतिपादन व ब्रह्म और आत्माकी अ भेदताका निरूपण चार प्रकरणों में अच्छी तरह से किया है ॥

कठवल्लीउपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत =

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

3
१५६

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम्। यद्दो धोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः। षट्चक्रादिविचार-सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वे श्वरं ज्ञानदम् २ ॥

दो० करौं वन्दना ब्रह्मको। जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल। मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं। नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं। रहितत्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद। ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको। लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो। सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते। जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट। अकबर पुरहै गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू। जाखिम सिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौकाहै जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्कालमें होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफका लिखा हुआ ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशीय भाषा में मिलेगा और यदि बायेंतरफ से दहिने तरफको पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलैगा जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पायाहै और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसी के शब्दोंहीं से सिद्ध कियागयाहै अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करने के लिये रखागया है और उसपदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनोंको विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है I इस टीकाको बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फैजाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरैं ताकि अशुद्धता दूर होजावै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामवेदब्राह्मणभागे ॥

अथ केनोपनिषद् ॥

मूलम् ॥

ॐ केनेषितंपततिप्रेषितंमनःकेनप्राणःप्रथमः प्रैतियुक्तःकेनेषितांवाचमिमांवदन्तिचक्षुःश्रोत्रंकउ देवोयुनक्ति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

केन इषितम् पतति प्रेषितम् मनः केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः केन इषिताम् वाचम् इमाम् वदन्ति चक्षुः श्रोत्रम् कः उ देवः युनक्ति

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
केन = किस करके	+च = और
इषितम् = इच्छाकियागया	केन = किस करके
+च = और	युक्तः = प्रेरा हुआ
केन = किस करके	प्राणः = प्राण
प्रेषितम् = प्रेरा हुआ	यः = जो
मनः = मन	+सृष्टिकार्ये = सृष्टि कार्यविषे
पतति = गिरताहैयानेविषयों के सन्मुख दौड़ता है	प्रथमः = प्रथम है
	कर्मसु = कर्मों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रैति = प्रवृत्त होताहै	उ = और
च = और	चक्षुः = नेत्र को
केन = किसकरके	+ च = और
इमाम् = इस	श्रोत्रम् = श्रोत्र को
इषिताम् = प्रेरित	कः = कौन
वाचम् = बाणी को	देवः = देवता
+ जनाः = मनुष्य	युनक्ति = विषयोंके भिमुख प्रे णा करत
वदन्ति = उच्चारण करते हैं	

नोट–ब्रह्मजिज्ञासुवों के उद्धार्थ श्रीमान् परमात्मा इस के पनिषद् विषे गुरु शिष्य के संवाददारा ब्रह्मविद्याका उपदेश रता है ॥

और इसी उपनिषद् के प्रथममन्त्र विषे शिष्य जिज्ञासुका के प्रति प्रश्नहै और द्वितीय मन्त्र से लेकर प्रथम खण्डकी सम पर्यंत उत्तर है ॥

मूलम् ॥

श्रोत्रस्यश्रोत्रं मनसोमनोयद्वाचोहवाचं स प्राणस्यप्राणश्चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्यधीराः प्रेत स्माल्लोकादमृताभवन्ति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

श्रोत्रस्य श्रोत्रम् मनसः मनः यत् वाचः वाचम् सः उ प्राणस्य प्राणः चक्षुषः चक्षुः अति च्य धीराः प्रेत्य अस्मात् लोकात् अमृताः भव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	= जो
श्रोत्रस्य	= श्रोत्रका
श्रोत्रम्	= श्रोत्रहै
+ यत्	= जो
मनसः	= मनका
मनः	= मन है
उ	= और
+ यत्	= जो
वाचः	= वाकका
ह	= भी
वाचम्	= वाक है
सः	= सोई
प्राणस्य	= प्राणका
प्राणः	= प्राण है
सः	= सोई
चक्षुषः	= चक्षुका
चक्षुः	= चक्षु है
+तमात्मा नंज्ञात्वा	= उस अपने आत्मा को जानकर
+ अनात्मभावम्	= देह इन्द्रियआदिविषे आत्मभावको
अतिमुच्य	= भली प्रकार त्याग के
धीराः	= विवेकी पुरुष
अस्मात्	= इस
लोकात्	= लोकसे
प्रेत्य	= छूटकरजाने देहत्यागकर
अमृताः	= अमरभाव को
भवन्ति	= प्राप्तहोते हैं

मूलम् ॥

नतत्रचक्षुर्गच्छतिनवाग्गच्छति नोमनोनविद्मोनविजानीमो यथैतदनुशिष्यादन्यदेवतद्विदितादथोऽविदितादधि इतिशुश्रुमपूर्वेषांयेनस्तद्व्याचचक्षिरे ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

न तत्र चक्षुः गच्छति न वाक् गच्छति नो मनः न विद्मः न विजानीमः यथा एतत् अनुशिष्यात् अन्यत् एव तत् विदितात् अथो अविदितात् अधि इति शुश्रुम पूर्वेषाम् ये नः तत् व्याचचक्षिरे ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्र	= तिसब्रह्मविषे
चक्षुः	= चक्षु
न	= नहीं
गच्छति	= प्रवेशकरसक्ता है
+ तत्र	= तिसविषे
वाक्	= बाणी
न	= नहीं
गच्छति	= प्रवेशकरसक्तीहै
मनः	= मन
न	= नहीं
गच्छति	= प्रवेशकरसक्ताहै
यथा	= जिसप्रकार
एतत्	= इसब्रह्मको
अनुशिष्यात्	= उपदेशकरैं
+ तत्	= उसको
न	= नहीं
विद्मः	= जानतेहैंहम
+ च	= और
न	= नहीं
विजानीमः	= जानतेहैंहम सम्यक्प्रका
इति	= ऐसा
पूर्वेषां	= पूर्व
+ आचार्याणां	= आचार्योंके
वचनम्	= वचनको
शुश्रुम	= हमनेसुनाहै
ये	= जिनोंने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् = उसब्रह्मको	अन्यत् = पृथक्है
नः = हमारेलिये	अथो = और
व्याचच क्षिरे = कहाहै कि	अविदि तात् = अविदितसे
तत् = वहब्रह्म	एव = भी
विदितात् = विदितसे	अधि = पृथक्है

मूलम् ॥

यद्वाचानभ्युदितं येनवागभ्युद्यते तदेवब्रह्मत्वं विद्धि नेदंयदिदमुपासते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

यत् वाचा अनभ्युदितम् येन वाक् अभ्युद्यते तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत् = जो	
वाचा = बाणी कर के	
अनभ्युदितम् = प्रकाशित नहीं है	
च = और	
येन = जिस करके	
वाक् = बाणी	
अभ्युद्यते = प्रकाशित होती है	
तत् = तिसको	

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एव = ही	
त्वम् = तू	
ब्रह्म = ब्रह्म	
विद्धि = जान	
इदम् = यह	
ब्रह्म = ब्रह्म	
न = नहीं है	
यत् = जिसको	
इदम् = ये लोक	
उपासते = उपासनाकरतेहैं	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनोमतं तदेवब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

यत् मनसा न मनुते येन आहुः मनः मतम् तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत् =	जो
मनसा =	मनकरके
न =	नहीं
मनुते =	मननहोता है
च =	और
येन =	जिस करके
मनः =	मन
मतम् =	विषयकिया हुआअर्थात् अपने कार्य करने में सामर्थ होता है उसीको

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
आहुः =	ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म कहते हैं
तत् =	तिसको
एव =	ही
त्वम् =	तू
ब्रह्म =	ब्रह्म
विद्धि =	जान
इदम् =	यहब्रह्म
न =	नहीं है
यत् =	जिसको
इदम् =	ये लोक
उपासते =	उपासनाकरते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

यच्चक्षुषानपश्यति येनचक्षूंषि पश्यति तदेवब्रह्म त्वं विद्धि नेदंयदिदमुपासते ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

यत् चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	= जिसको	त्वम्	= तू
चक्षुषा	= चक्षुकरके	ब्रह्म	= ब्रह्म
न	= नहीं	विद्धि	= जान
पश्यति	= देखता है	इदम्	= यहब्रह्म
+ च	= और	न	= नहीं है
येन	= जिसकरके	यत्	= जिसको
चक्षूंषि	= चक्षुवों को	इदम्	= ये लोक
पश्यति	= देखता है	उपासते	= उपासना करते हैं
तत्	= उसी को		
एव	= निश्चयकरके		

मूलम् ॥

यच्छ्रोत्रेणनशृणोति येनश्रोत्रमिदंश्रुतमुतदेव ब्रह्मत्वंविद्धिनेदंयदिदमुपासते ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यत् श्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रम् इदम् श्रुतम् तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यद् इदम् उपासते

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
यत्	= जिसको	तत्	= उसी को
श्रोत्रेण	= श्रोत्र करके	एव	= ही
न	= नहीं	त्वम्	= तू
शृणोति	= श्रवण करताहै	ब्रह्म	= ब्रह्म
+ च	= और	विद्धि	= जान
येन	= जिस करके	इदम्	= यह
इदम्	= यह	+ ब्रह्म	= ब्रह्म
श्रोत्रम्	= श्रोत्रइन्द्रिय	न	= नहीं है
श्रुतम्	= सुनागया है यानेसुननेको समर्थ होताहै	यत्	= जिस्को
		इदम्	= ये लोक
		उपासते	= उपासना करते हैं

मूलम् ॥

यत्प्राणेननप्राणिति येनप्राणःप्रणीयतेतं ब्रह्मत्वंविद्धिनेदंयदिदमुपासते ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

यत् प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत् =	जो		जाता है
प्राणेन =	प्राणापानादि पंचवृत्ति रूप प्राण करके	तत् =	उसी को
		एव =	निश्चयकरके
		त्वम् =	तू
न =	नहीं	ब्रह्म =	ब्रह्मव्यापक चेतन
प्रणिति =	ग्रहण किया जाता है	विद्धि =	जान
+च =	और	इदम् =	यह दृष्टिगोचर
येन =	जिस करके	न =	ब्रह्म नहीं है
प्राणः =	पंचवृत्तिरूप प्राण	यत् =	जिसको
		इदम् =	ये लोक
प्रणीयते =	ग्रहण किया	उपासते =	उपासना करते हैं

इति प्रथमः खण्डः ॥

मूलम् ॥

यदिमन्यसेसुवेदेतिदभ्रमेवापिनूनं त्वंवेत्थब्र ह्मणोरूपंयदस्यत्वं यदस्यदेवेष्वथनुमीमांस्यमेव तेमन्येविदितम् ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यदि मन्यसे सुवेद इति दभ्रम् एव अपि नूनम् त्वम् वेत्थ ब्रह्मणः रूपम् यत् अस्य त्वम् यत् अस्य देवेषु अथ नु मीमांस्यम् एव ते मन्ये विदितम्

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+गुरुःशिष्यंप्रतिवदति	= गुरुशिष्यके प्रति कहताहै कि
यदि	= अगर
इति	= ऐसा
मन्यसे	= मानता है तू कि
ब्रह्म	= ब्रह्मको
सुवेद	= भली प्रकार जानताहूं मैं
तू	= तो
दभ्रम एव	= अल्प
अपि	= ही
नूनम्	= निश्चयकरके
त्वम्	= तू
ब्रह्मणः	= ब्रह्मके
रूपम्	= रूपको

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वेत्थ	= जानताहै
+च	= और
+यदि	= अगर
यत्	= जो
अस्य	= इसब्रह्मके
रूपम्	= रूपको
त्वम्	= तू
+अध्यात्मोपाधिषु	= अध्यात्म उपाधियों बिषे याने देहइन्द्रिय अंतःकरण विशिष्ट जो वक्षेत्रज्ञ आत्मा बिषे
वेत्थ	= जानता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = और
यत् = जो
अस्य = इस ब्रह्मके
रूपम् = रूपको
देवेषु = ब्रह्माविष्णु शिवआदि देवता उपाधिपरिच्छिन्न शरीरों बिषे
+वेत्थ = जानता है
अथनु = तौभी
ते = तुझको
मीमांस्य मएव = विचारकरने के योग्य है क्योंकि अल्पही तू जानता है फिर भी

बिचारकरना चाहिये इसकेश्रवण पश्चात् शिष्य विचार करके फिर गुरु समीपआकर अपने अनुभवको कहता है कि

अहम् = मैं
+अद्य = अब
ब्रह्म = ब्रह्मको
विदितम् = जानाहुआ
इति = ऐसा
मन्ये = मानताहूं

मूलम् ॥

नाहंमन्येसुवेदेति नोनवेदेतिवेदच यो नस्तद्वेदतद्वेद नोनवेदेतिवेदच ॥ २॥

पदच्छेदः

न अहम् मन्ये सुवेद इति नो न वेद इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेद च यः नः तत् वेद तत् वेद नो न वेद इति वेद च

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
परन्तु	= परंतु	यः	= जो
अहम्	= मैं	नः	= हममेंसे
सुवेद	= भलीप्रकार ब्रह्मकोजा- नताहूं	तत्	= उसब्रह्मको
		वेद	= विचार कर केजानतहूं
इति	= ऐसा	तत्	= वही
न	= नहीं	वेद	= जानताहै
मन्ये	= मानताहूं	न	= नहीं
+ च	= और	वेद	= जानताहै
ब्रह्म	= ब्रह्मको	इति	= ऐसा
न	= नहीं	नो	= नहीं
वेद	= जानताहूं	च	= और
इति	= ऐसाभी	वेद	= जानताहै
न	= नहीं	इति	= ऐसाभी
वेद	= समुझताहूं	नो	= नहीं

नोट—तत्सार यहहै कि अगर शिष्य समझताहो कि मैं ब्रह्मको जानताहूं तो ठीक नहीं क्योंकि ज्ञाता चैतन्य होताहै तो चैतन्य आप बना और ब्रह्मको जड़ बनाया सो श्रुतिस्मृति विरुद्धहै और अगर ऐसा कहै कि मैं ब्रह्मको नहीं जानताहूं तोभी ठीकनहीं क्यों कि जब वह ब्रह्मको जान सकै तब कहसक्ताहै कि मैं ब्रह्मको नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानसक्ताहूं जो अपना रूपहै उसबिषे जानना और न जानना दोनों नहीं होसक्तेहैं– ॥ २ ॥

मूलम् ॥

यस्यामतंतस्यमतंमतंयस्यनवेदसः अविज्ञातं विजानतांविज्ञातमविजानताम् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

यस्य अमतम् तस्य मतम् मतम् यस्य न वेद सः अविज्ञातम् विजानताम् विज्ञातम् अविजानताम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्य	= जिसको
+ ब्रह्म	= ब्रह्म
अमतम्	= अज्ञात है
तस्य	= उसीको
+ तत्	= वह
मतम्	= ज्ञात है
च	= और
यस्य	= जिसको
मतम्	= ज्ञात है
सः	= वह पुरुष
+ कथयति	= कहताहै कि
+ अहम्	= मैं
न	= नहीं
वेद	= जानताहूं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
	क्योंकिब्रह्म-ज्ञानका विषय नहीं है
+ अतःएव	= इसी लिये
विजानताम्	= जाननेवाले को
+ ब्रह्म	= ब्रह्म
अविज्ञातम्	= अविज्ञातहै
+ च	= और
अविजानताम्	= नहींजानने वालेको
+ ब्रह्म	= ब्रह्म
विज्ञातम्	= विज्ञात है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

प्रतिबोधविदितंमतममृतत्वंहिविन्दते आत्म
नोविन्दतेवीर्यंविद्ययाविन्दतेऽमृतम् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

प्रतिबोधविदितम् मतम् अमृतत्वम् हि विन्दते
आत्मना विन्दते वीर्यम् विद्यया विन्दते अ
मृतम्

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ तत्	= वह ब्रह्म
प्रतिबोध विदितम्	= अंतःकरण की अहंवृत्ति से प्रकाशित है
इति	= ऐसी
मतम्	= ज्ञानी पुरुष की संमति है
+ अतः एव	= इस लिये
+ आत्मदर्शी	= ज्ञानीपुरुष
अमृतत्वम्	= मोक्षको

अन्वयः	पदार्थस सूक्ष्म भा
हि	= निश्चय रके
विन्दते	= प्राप्तहोत
+ च	= और
आत्मना	= ब्रह्म
विद्यया	= विद्याकरके
वीर्यम्	= सामर्थ्यको
विन्दते	= प्राप्तहोता
+ च	= और
अमृतम्	= अमरभाव को
विन्दते	= प्राप्तहोता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

इहचेदवेदीदथसत्यमस्तिनचेदिहावेदीन्महती विनष्टिःभूतेषुभूतेषुविचिन्त्यधीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृताभवन्ति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

इह चेत् अवेदीत् अथ सत्यम् अस्ति न चेत् इह अवेदीत् महती विनष्टिः भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्य अस्मात् लोकात् अमृताः भवन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
चेत्	= अगर
इह	= इसी जन्ममें
+ब्रह्म	= ब्रह्मको
अवेदीत्	= जानताभया
अथ	= तो
सत्यमस्ति	= सफल है
+च	= और
चेत्	= यदि
इह	= इसीजन्म में
न	= नहीं
अवेदीत्	= जानताभया
तू	= तो
महती	= महान्
विनष्टिः	= विनाश को प्राप्त होताहै यानेवारंवार जन्मता मरता रहता है
भूतेषुभूतेषु	= सबभूतों में
आत्मानम्	= अपनेप्रत्यक् आत्मा को
विचिन्त्य	= स्थितजान कर
धीराः	= धीरपुरुष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्मात् = इस लोकात् = लोकसे प्रेत्य = देह त्यागकर अमृताः = अमर	भवन्ति =	होते हैं यो जन्म मरण भावसेरहि होजाते हैं

इतिद्वितीयःखण्डः ॥

एक समय अग्नि वायु और इन्द्र देवता असुरों को पराज करके किसी एक पहाड़ पर बैठकर परस्पर साहित अभिमान मारतेथे और कहतेथे कि हम लोग कैसे लड़े और शत्रुओं मारा और भगादिया इस अहंकार को परमात्मा सह न सका देवताओं का अभिमान दूरकरने के अर्थ और उनके कल्याण लिये यक्षका रूप धारण कर जहां वे सब बैठेथे समीप आकर खलाई दिया जब उन देवताओंने यक्षके अद्भुत रूपको देख आश्चर्य्य को प्राप्तहो परस्पर विचारनेलगे कि कौन यह अलौकि पूजनीयहै उसके पासजाकर देखना चाहिये तब उन तीनों देवताओं में से प्रथम अग्निदेवता गया फिर वायु देवता गया औ हार मानकर दोनों लौट आये सबके पीछे इन्द्र देवता गया औ जब उसका अभिमान दूर हुआ तब परमात्मा यक्ष के रूपको छो रोभाव करके उमानामक ब्रह्मविद्या के रूपको धारण कर उस इन्द्र को दर्शन दिया और फिर सबको उपदेश किया कि तुम सबों स्वशक्ति कुछ भी नहींहै मेरीशक्ति लेकर सब शक्तिमान् हो रहेहो तुम लोग वृथा अहंकार करतेथे और असुरों को तुमने अपनी शक्ति करके नहीं जीता जब मैंने अपनी शक्ति तुमलोगों में प्रवे श किया तब तुम जीतको प्राप्त हुये उसी तरह जब मैं तुमलोगों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में से अपनी शक्ति को खींच लेता हूं और असुरों को देताहूं तब तुमलोग हारमानकर भागतेहो और असुर जीत जातेहैं यह आख्यायि अगले मंत्रों से जाहिर होताहै ॥

मूलम् ॥

ब्रह्महदेवेभ्योविजिग्येतस्यहब्रह्मणो विजयेदेवाअमहीयन्ततऐक्षन्तास्माकमेवायं विजयोऽस्माकमेवायंमहिमेति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

ब्रह्म ह देवेभ्यः विजिग्ये तस्य ह ब्रह्मणः विजये देवाः अमहीयन्त ते ऐक्षन्त अस्माकम् एव अयम् विजयः अस्माकम् एव अयम् महिमा इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ब्रह्म	= ब्रह्म
ह	= ही
देवेभ्यः	= देवतोंके लिये
विजिग्ये	= विजयको प्राप्तकरताभया
तस्य	= तिस
ह	= ही
ब्रह्मणः	= ब्रह्मके
विजये	= विजयमें
देवाः	= देवतालोक
अमहीयन्त	= महिमा को प्राप्तहोते भये
च	= और
ते	= सोई देवता
ऐक्षन्त	= जानतेभये कि
अस्माकम्	हमाराही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एव = निश्चय कर के
अयम् = यह
विजयः = विजयहै
च = और
अस्माकम् = हमाराही
एव = निश्चयक रके
अयम् = यह
महिमा = महिमाहै

मूलम् ॥

तद्धैषांविजज्ञौ तेभ्योहप्रादुर्बभूवतन्नव्यजानन किमिदंयक्षमिति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

तत् ह एषाम् विजज्ञौ तेभ्यः ह प्रादुर्बभूव तत् न व्यजानन्त किम् इदम् यक्षम्

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

तत् = वह ब्रह्म
ह = निश्चय करके
एषाम् = इन देवताओंको
विजज्ञौ = अभिमानी जानता भया
च = और
तेभ्यः = तिन देवताओं के अभिमान दूरकरनेकेअर्थ
ह = निःसन्देह

अन्वयः पदार्थ सूक्ष्म भ

प्रादुर्बभूव = प्रगट होता
तत् = तिस ब्रह्मको
+ ते = वह देवता
न = नहीं
व्यजानन्त = जानतेभये कि
किम् = कौन
इति = ऐसा
इदम् = यह
यक्षम् = पूजनीय है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तेऽग्निमब्रुवन् जातवेद एतद्विजानीहिकिमेतद्यक्षमिति तथेति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

ते अग्निम् अब्रुवन् जातवेदः एतत् विजानीहि किम् एतत् यक्षम् इति तथा इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ते	= वे देवता
अग्निम्	= अग्नि से
अब्रुवन्	= कहते भये कि
जातवेदः	= हे अग्नि
एतत्	= इसको
विजानीहि	= जानतूकि
किम्	= कौन
इति	= ऐसा
एतत्	= यह
यक्षम्	= यक्षहैयाने पूज्य है
तथाइति	= बहुतअच्छा ऐसाउत्तरअग्निदेवताने दिया

मूलम् ॥

तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीति अग्निर्वाअहमस्मीत्यब्रवीज्जातवेदावाअहमस्मीति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

तत् अभ्यद्रवत् तम् अभ्यवदत् कः असि इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अग्निः वै अहम् अस्मि इति अब्रवीत् जातवेदा वै अहम् अस्मि इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ यदा	= जब
तत्	= उसयक्षके सन्मुख
अग्निः	= अग्निदेवता
अभ्यद्रवत्	= जाताभया
इति	= तब
तम्	= उससे
यक्षम्	= यक्ष
अभ्यवदत्	= पूछता भया
किं	
कः	= कौन
असि	= तू है
+ सः	= वह

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अभ्यवदत्	= कहता भया
किं	
अग्निः	= अग्निदेवता
वै	= निश्चयकरके
अहम्	= मैं
अस्मि	= हूं
वै	= और
जातवेदाः	= जातवेदा
अहम्	= मैं
अस्मि	= हूं
इति	= ऐसा
अब्रवीत्	= कहताभया

मूलम् ॥

तस्मिँस्त्वयिकिंवीर्यमित्यपीदꣳ सर्वंदहेयं यदिदंपृथिव्यामिति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

तस्मिन् त्वयि किम् वीर्यम् इति अपि इदम् सर्वम् दहेयम् यत् इदम् पृथिव्याम् इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मिन्	= तिस	दहेयम्	= मैंजलादूं
त्वयि	= तेरे विषे	+ च	= और
किम्	= क्या	यत्	= जो कुछ
वीर्य्यम्	= सामर्थ्य है	इदम्	= यह
इति	= ऐसा	पृथिव्याम्	= पृथिवीविषेहै
+ यक्षम्	= यक्ष	तत्अपि	= उसकोभी
+अब्रवीत्	= कहताभया	+दहेयम्	= जलादूं
अपि	= संभवहै कि	इति	= ऐसा
इदम्	= इस	+अग्निः	= अग्निदेवता
सर्वम्	= संपूर्णजगत्को	+आह	= कहताभया

मूलम् ॥

तस्मैतृणंनिदधावेतद्दहेतितदुपप्रेयायसर्वजवेन तन्नशशाक दग्धुं सःततएवनिवव्रतेनैतदशकंविज्ञातुंयदेतद्यक्षमिति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

तस्मै तृणम् निदधौ एतत् दह इति तत् उपप्रेयाय सर्वजवेन तत् न शशाक दग्धुम् सः ततः एव निवव्रते न एतत् अशकम् विज्ञातुम् यत् एतत् यक्षम् इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ तत्	= वह
+ यक्षम्	= यक्ष
तस्मै	= तिस अग्नि के सन्मुख
तृणम्	= एक तृणको
निदधौ	= रखता भया
+ च	= और
इति	= ऐसा
आह	= कहता भया कि
एतत्	= इसको
दह	= दहनकर
सः	= सो अग्नि
तत्	= उस तृणके
उपप्रेयाय	= समीप जाता भया
+ परन्तु	= परंतु
सर्वजवेन	= अपनी सर्वशक्तिकरके भी
तत्दग्धुम्	= उसकेजलाने को

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
नशशाक	= नहींसामर्थ्य होताभया
+ तदा	= तब
सः	= वह अग्नि
ततः	= उस यक्षके समीपसे
निवृतेएव	= लौटताभ
+ च	= और
इति	= ऐसा(अ साथियोंसे
+ आह	= कहता भ कि
एतत्	= इसके
विज्ञातुम्	= जाननेकोकि
तत्	= कौन
एतत्	= यह
यक्षम्	= यक्षहै
नअशकम्	= मैं नहीं सम र्थ होताभया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

अथवायुमब्रुवन् वायवेतद्विजानीहि किमेतद्यक्ष मिति तथेति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

अथ वायुम् अब्रुवन् वायो एतत् विजानीहि किम् एतत् यक्षम् इति तथा इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	= तिसके अनंतर	विजानीहि	= जानतू कि
वायुम्	= वायुसे	किम्	= कौन
अब्रुवन्	= सब कहते भये कि	इति	= ऐसा
वायो	= हे वायु	एतत्	= यह
एतत्	= इसको	यक्षम्	= पूजनीय है
		तथाइति	= वायुने कहा बहुत अच्छा

मूलम् ॥

तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीति वायुर्वाअहम स्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वावाअहमस्मीति ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

तत् अभ्यद्रवत् तम् अभ्यवदत् कः असि इति वायुः वै अहम् अस्मि इति अब्रवीत् मातरिश्वा वै अहम् अस्मि इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वायुः	= वायुदेवता
तत्	= उसयक्ष के समीप
अभ्यद्रवत्	= शीघ्र जाता भया
+तदा	= तब
तम्	= उस से
यक्षम्	= यक्ष
अभ्यवदत्	= पूछता भया
किं	
कः	= कौन
असि	= तू है
वायुः	= वायु
अहम्	= मैं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वै	= निश्चयकरके
अस्मि	= हूं
इति	= ऐसा
सः	= वह
अब्रवीत्	= कहताभया
च	= और
मातरिश्वा	= मातरिश्वा याने अं रिक्ष गा
वै	= भी
अहम्	= मैं
अस्मि	= हूं
इति	= ऐसा
अब्रवीत्	= बोलताभया

मूलम् ॥

तस्मिँस्त्वयिकिंवीर्यमित्यपीदꣳसर्वमाददीय यदिदं पृथिव्यामिति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः

तस्मिन् त्वयि किम् वीर्य्यम् इति अपि इदम् सर्वम् आददीयम् यत् इदम् पृथिव्याम् इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मिन् = तिस	यत् = जो कुछ
त्वयि = तुझबिषे	इदम् = यह
किम् = क्या	पृथिव्याम् = पृथिवी में चराचरहै
वीर्यम् = पराक्रमहै	इदम् = उस
इति = ऐसा	सर्वम् = सब को
अब्रवीत् = पूछताभया	अपि = ही
वायुः = वायुदेवता	आददीयम् = मैं धारण करसक्ताहूं
इति = ऐसा	
अब्रवीत् = उत्तर देता भया कि	

मूलम् ॥

तस्मै तृणं निदधावेतदादत्स्वेति तदुपप्रेयाय सर्वजवेन तन्न शशाकादातुं स तत एव निववृते नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद्यक्षमिति ॥ १० ॥

पदच्छेदः

तस्मै तृणम् निदधौ एतत् आदत्स्व इति तत् उपप्रेयाय सर्वजवेन तत् न शशाक आदातुम् सः ततः एव निववृते न एतत् अशकम् विज्ञातुम् यत् एतत् यक्षम् इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
यक्षम्	= यक्ष
तस्मै	= उस वायुके सम्मुख
तृणम्	= एक तृणको
निदधौ	= रखताभया
च	= और
इति	= ऐसा
आह	= कहताभयाकि
एतत्	= इसको
आदत्स्व	= उठा
+ तदा	= तब
वायुः	= वायुदेवता
तत्	= उस तृणके
उपप्रेयाय	= समीपजाता भया
+ परन्तु	= परन्तु
सर्वजवेन	= सर्वपुरुषार्थ करके
अपि	= भी
तत्	= उस तृणके
आदातुम्	= उठानेको
न	= नहीं.

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
शशाक	= समर्थहोता भया
तदा	= तब
सः	= वह वायु
ततः	= उस यक्षके समीप से
एव	= निश्चयको
निवृते	= लौटताभ
+ च	= और
+ आह	= सब देव से कहत भया कि
एतत्	= इसके
विज्ञातुम्	= जानने को
+ अहम्	= मैं
न	= नहीं
अशकम्	= समर्थ होता भया कि
यत्	= कौन
एतत्	= यह
इति	= ऐसा
यक्षम्	= यक्ष है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

अथेन्द्रमब्रुवन्मघवन्नेतद्विजानीहि किमेतद्यक्ष मितितथेति तदभ्यद्रवत्तस्मात्तिरोदधे ॥ ११ ॥

पदच्छेदः

अथ इन्द्रम् अब्रुवन् मघवन् एतत् विजानीहि किम् एतत् यक्षम् इति तथा इति तम् अभ्यद्रवत् तस्मात् तिरोदधे

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	= तिसकेअनंतर	सः	= वह इन्द्र
इन्द्रम्	= इन्द्रसे	तत्	= उसयक्षके समीप
अब्रुवन्	= सब देवताकहतेभये कि	अभ्यद्रवत्	= जातेभया
मघवन्	= हे इन्द्र	तस्मात्	= उस इन्द्रसे
एतत्	= इसको	+ तत्	= वह
विजानीहि	= जानतू कि	+ यक्षम्	= यक्ष
किम्	= कौन	तिरोदधे	= तिरोधान यानेअदृश्यहोताभया
एतत्	= यह		
यक्षम्	= यक्ष है		
तथाइति	= बहुत अच्छा कहके		

मूलम् ॥

स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नामुमां हैमवतीं ताꣳहोवाचकिमेतद्यक्षमिति१२।

पदच्छेदः

सः तस्मिन् एव आकाशे स्त्रियम् आजगाम बहुशोभमानाम् उमाम् हैमवतीम् ताम् ह उवाच किम् एतत् यक्षम् इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	= वह इन्द्र	आजगाम्	= प्राप्तहोता भया
तस्मिन्एव	= तिसही	च	= और
आकाशे	= आकाश में	ताम्	= तिससे
बहुशोभमानाम्	= अत्यन्त शोभायुक्त	ह	= ही
उमाम्	= उमा नाम वाली	उवाच	= पूछताभया कि
हैमवतीम्	= हिमाचल कन्या	किम्	= कौन
स्त्रियम्	= देवी के समीप	एतत्	= यह
		इति	= ऐसा
		यक्षम्	= यक्षथा

इतितृतीयः खण्डः

नोट—जब यक्ष इन्द्रदेवके आनेपर अन्तर्द्धान होगया तब इन्द्र अत्यन्त पश्चात्तापवान् होताभया तब यह यक्ष उसको अहंकार रहित देखकर उसपर अनुग्रह करके साक्षात् ब्रह्म विद्या उमारूप होकर उसके समीप प्रकट होताभया॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

सा ब्रह्मेतिहोवाचब्रह्मणोवा एतद्विजयेमहीयध्वमितितोहैव विदाञ्चकार ब्रह्मेति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

सा ब्रह्म इति ह उवाच ब्रह्मणः वै एतत् विजये महीय ध्वम् इति ततः ह एव विदाञ्चकार ब्रह्म इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत् = वहयक्ष		सा = वहउमा	
ब्रह्म ह = ब्रह्महीथा		उवाच = कहतीभई	
+ च = और		तत् = वह	
ब्रह्मणःवै = ब्रह्मकेही		ब्रह्म = ब्रह्म	
विजये = विजयमें		एव = हीथा	
इतिएतत् = ऐसेइस		इति = ऐसा	
महीयध्वम् =	महिमाकोतु मसबप्राप्तहु येहो	इन्द्रः = इन्द्र	
		ततः = तत्पश्चात्	
इति = इसप्रकार		विदाञ्चकार = जानताभया	

मूलम् ॥

तस्माद्वाएतेदेवा अतितरामिवान्यान्देवान्यद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्निर्वायुरिन्द्रस्तेह्येनन्नेदिष्टं यस्पृशुस्तेह्येनत्प्रथमो विदाञ्चकारब्रह्मेति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

तस्मात् वै एते देवाः अतितराम् इव अन्यान् देवान् यत् अग्निः वायुः इन्द्रः ते हि एनम् नेदिष्टम् यस्पृशुः ते हि एनत् प्रथमः विदाञ्चकार ब्रह्म इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	= जिसकारण
अग्निः	= अग्नि
वायुः	= वायु
इन्द्रः	= इन्द्र
एते	= येसब
देवाः	= देवता
एनत्	= इस
नेदिष्टम्	= समीपस्थब्रह्मको
हि	= भलीप्रकारसे
यस्पृशुः	= स्पर्शकरतेभ ये याने दर्शन करते भये
च	= और
ते	= वे
इति	= इसप्रकार
एनत्	= इसब्रह्म को
प्रथमः	= प्रथम
हि	= निश्चयपूर्वक
विदाञ्चकार	= जानतेभये
तस्मात्	= तिसीकारण
ते	= वे
वै	= निश्चयकर के
अन्यान्	= और
देवान्	= देवतों से
अतितराम् इव	= अत्यन्तश्रे छहैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तस्माद्वाइन्द्रोऽतितरामिवान्यान्देवान्सह्येनन्नेदिष्टंपस्पर्शसह्येनत्प्रथमोविदाञ्चकारब्रह्मेति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

तस्मात् वै इन्द्रः अतितराम् इव अन्यान् देवान् सः हि एनत् नेदिष्टम् पस्पर्श सः हि एनत् प्रथमः विदाञ्चकार ब्रह्म इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हि	= जिसकारण
सः	= वह इन्द्र
एनत्	= इस
नेदिष्टम्	= समीपस्थ ब्रह्मको
पस्पर्श	= स्पर्श करता भया यानेदर्शन करताभया
+ च	= और
हि	= जिसकारण
सः	= वह
इति	= ऐसे
एनत्	= इस
ब्रह्म	= ब्रह्मको
प्रथमः	= प्रथम
विदाञ्चकार	= उमाके उपदेशसे जानताभया
तस्मात्	= तिसीकारण
सः	= वह
वै	= निश्चयपूर्वक
अन्यान्	= और
देवान्	= देवतों से
अतितराम् इव	= अतिशय श्रेष्ठ है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तस्यैषआदेशोयदेतद्विद्युतोव्यद्युतत्तदाइतीति न्यमीमिषदाइत्यधिदैवतम् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

तस्य एषः आदेशः यत् एतत् विद्युतः व्यद्युतत् तत् आ इति इति न्यमीमिषत् आ इति अधिदैवतम्

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इति	= ऐसा	+ उपदेशः	= उपदेश
यत्	= जो	+ सः	= सो
तस्य	= उसब्रह्मका	एतत्	= यह
एषः	= यह	विद्युतः	= बिजली
आदेशः	= दृष्टान्तक उपदेश है	व्यद्युतत्	= चमकने
च	= और	आ	= तुल्य है
इति	= ऐसा	+ अथवा	= या
+ तस्य	= उसका	न्यमीमिषत्	= पलकमा रने के
+ यत्	= जो	आ	= तुल्य है
अधिदैवतम्	= देवता विषयक		

उपमासे रहित ब्रह्मका जिस उपमानकरके उपदेश है उसीका नाम आदेश है शास्त्रमें स्वयंप्रकाश ब्रह्म कहाहै सो जैसे बिजुली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकबार चमककरके छिप जाती है उसी प्रकार ब्रह्मभी एकबार अपने प्रकाशको दिखाकर इन्द्रसे तिरोभूत होताभया याने छिप गया एक तो इस प्रकारका उपदेशहै दूसरा जैसे बिजुली अपने प्रकाश करके पुरुषोंके नेत्रों को मुंदवा देतीहै तैसे ब्रह्मभी देखतेहुये देवतोंके नेत्रोंको मुंदवाकर तिरोभाव होताभया यह अधिदैवत उपदेश है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

अथाध्यात्मंयदेतद्गच्छतीवचमनोऽनेन चैतदुपस्मरत्यभीक्ष्णं सङ्कल्पः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

अथ अध्यात्मम् यत् एतत् गच्छति इव च मनः अनेन च एतत् उपस्मरति अभीक्ष्णम् सङ्कल्पः

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च =	और
अथ =	देवताविषयक उपदेशके पश्चात्
यत् =	जिसब्रह्मको
एतत् =	यह
मनः =	मन
गच्छति =	विषयकरता है वृत्ति व्याप्तिकरके
अनेन =	इसीमनकरके
एतत् =	उसब्रह्मको
+ मुमुक्षुः =	मुमुक्षु
अभीक्ष्णम् =	अत्यन्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपस्मरति = समीपवर्त्ति होकरस्मरण करताहै
एतत् = यही
सङ्कल्पः = मनसम्बंधी
अध्यात्मम् = अध्यात्मउपदेश है

मूलम्॥

तद्धतद्वनंनामतद्वनमित्युपासितव्यं सयएतदेवं वेदाभिहैनं सर्वाणिभूतानिसंवाञ्छन्ति॥६॥

पदच्छेदः

तत् ह तद्वनम् नाम तद्वनम् इति उपासितव्यम् सः यः एतत् एवम् वेद अभि ह एनम् सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

तत् = वह ब्रह्म
ह = निश्चयकरके
नाम = प्रसिद्ध
तद्वनम् = पूजनीय है
तद्वनम् = सबकापूजनीयहै
इति = ऐसा
उपासितव्यम् = उपासना करने योग्यहै
सः = वह

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भाव

यः = जो
एतत् = इसब्रह्मको
एवम् = इसप्रकार
वेद = जानता है
एनम् = उसको
सर्वाणि = सब
भूतानि = प्राणी
अभि = सब प्रकारसे
ह = निश्चयकरके
संवाञ्छंति = आदर करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

उपनिषदं भो ब्रूहीत्युक्तउपनिषद्ब्राह्मींवावत एवतउपनिषदमब्रूमेति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

उपनिषदम् भोः ब्रूहि इति उक्ता ते उपनिषद् ब्राह्मीम् वाव ते उपनिषदम् अब्रूम इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
भोः	= हे भगवन्
उपनिषदम्	= उपनिषद्को
ब्रूहि	= कहो
इति	= यह वचन
+ शिष्यः गुरुमआह	= शिष्यगुरुसे कहताभया
+तदागुरुः उवाच	= तब गुरु कहते भये कि
ते	= तेरे लिये
उपनिषद्	= उपनिषत्
वाव	= निश्चय-पूर्वक
मया	= मुझकरके
उक्ता	= कहागया है
ते	= तेरे लिये
इति	= ऐसा
ब्राह्मीम्	= ब्रह्मसंबन्धी
उपनिषदम्	= उपनिषद को
अब्रूम	= कहा है हमने

मूलम् ॥

तस्यै तपोदमःकर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम् ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

तस्यै तपः दमः कर्म इति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यम् आयतनम्

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्यै	= उस ब्रह्मविद्या की प्राप्तिकेलिये	वेदाः	= चारों वेद
		सर्वाङ्गानि	= छयों वेदांग
तपः	= तप	प्रतिष्ठा	= चरण हैं उस ब्रह्मविद्याके
दमः	= दम		
+ च	= और	च	= और
कर्म	= निष्कामकर्म	सत्यम्	= सत्य
इति	= इत्यादि		
+उपायाः सन्ति	=उपाय हैं	आयतनम्	= घर है यानी सत्यब्रह्म विद्याके निवास का स्थान है
+ च	= और		

मूलम्॥

योवाएतामेवंवेदापहत्यपाप्मानमनन्ते स्वर्गे लोकेज्येयेप्रतितिष्ठतिप्रतितिष्ठति॥ ९॥

पदच्छेदः

यः वै एताम् एवम् वेद अपहत्य पाप्मानम् अनन्ते स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	= जो
वै	= निश्चयकरके
एताम्	= इस ब्रह्मविद्याको
एवम्	= इसप्रकार
वेद	= जानता है
+ सः	= वह पुरुष
पाप्मानम्	= पापोंको
अपहत्य	= नाशकरके
अनन्ते	= अविनाशी
ज्येये	= सर्वात्म
स्वर्गेलोके	= सुखरूपब्रह्मविषे
प्रतितिष्ठति	= प्राप्तहोताहै
प्रतितिष्ठति	= अवश्यही प्राप्तहोताहै

इतिचतुर्थःखण्डः

इतिकेनोपनिषत्समाप्ता ॐहरिः ॐ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केन उपनिषद्

शुद्धिपत्रिका

अशुद्धिः	शुद्धिः	मू-अन्व.	पृष्ठ	मन्त्र	खण्ड
युक्ति	युनक्ति	मूलम्	१	१	१
आत्मनो	आत्मना	मू.	१४	४	२
४	५	०	१५	५	२
सः	स	मू.	२१	६	३
यसृशु	पस्पर्शु	मू.	३८	२	४

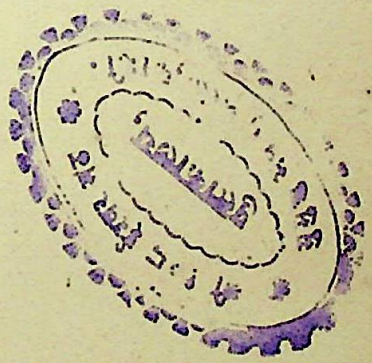

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी ऊपर लिखे हुये के अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया और समझने की सुगमताके लिये गुरु शिष्य सम्वाद पूर्वक पूर्ण ज्ञान लखाया है ॥

मुंडकउपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत =)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—जिसमें वादी प्रतिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदुत्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का संभव व अग्निहोत्रादि क्रियाओंका विधान मन्त्रों द्वारा वर्णित है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद्भाषाटीका सहित,क़ीमत ।—)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीकासहित—जिस में तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होनेका उदाहरण और स्वरमात्रा व वर्णों के उच्चारणकी शिक्षाका नियम व बर्णों के संबन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मीकी कामनावाले पुरुषोंके अर्थ साधन जप और हवनादि की क्रियायें वर्णित हैं ॥

ऐतरेयोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत =)॥।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—जिं आत्मा व ब्रह्मका निरूपण और प्राण व प्रणवकी उपासना व्याख्या व संन्यासादि आश्रमों के लक्षण व धर्म अच्छे प्रकार वर्णित हैं ॥

उपनिषद्सार, क़ीमत —)॥ पु०

मुंडक, मांडूक्य, तैत्तरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वर, ईशावास्य, केन, ठ, प्रश्न, छांदोग्य,बृहदारण्यक, कौषीतकि, ब्राह्मण और मैत्री ी भाषा टीका राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्दने रचनाकर अपने त्र पौत्र मित्र बान्धव योग्य अधिकारियों के निमित्त छपवायाहै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छान्दोग्य उपनिषद् भाषा टीका, क़ीमत॥=)

पंडित यमुनाशङ्करजी कृत टीका भाषा ॥

ब्राह्मधर्मदोखंड में, ग़ैरमतबा क़ीमत १) पु०

तथा प्रथमखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ॥=) पु०

तथा द्वितीयखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ।=) पु०

यह अत्युत्तम उपनिषद् है इसको पंडित लक्ष्मणप्रसादजी बंगाली भाषा से हिन्दी भाषा में उल्थाकिया है मूलश्लोक भाषा टीका समेत है ॥

(वेदान्त)

योगवाशिष्ठ दोभागों में, क़ीमत ५॥) पु०

श्रीमद्भागवत भाषाटीकासंयुक्त ७) रु० पु०।

इस ग्रन्थ के उत्तम होनेमें कदापि सन्देह नहींहै—इसका तिलक ब्रजबोली में बहुतही प्याराहै आशय प्रत्येक श्लोकों है क्यों न हो इस के तिलककार महात्मा ब्रजवासी अन्नद शास्त्रीहैं—यह तिलक ऐसा सरलहै कि इसके द्वारा अल्प संस्कृ पुरुषों का पूराकार्य निकल सक्ताहै—संस्कृत पाठकभी इससे श्ल कोंका पूराआशय समझ सक्तेहैं इसबार यह ग्रन्थ टैपके अ में उम्दा काग़ज़ सफ़ेद चिकना में छापागयाहै और विशेष द्वान् शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध कराया गया है जिससे बम्बई छपीहुई पुस्तकसे किसी काम में न्यून नहीं है उम्दा तसा भीप्रत्येक स्कन्धमें युक्तहैं—आशाहै कि इस अमूल्य रत्न के ले में महाशय लोग विलम्ब न करैंगे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कठवल्ली उपनिषद्

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषा में बाबू जालिमसिंह निवासी ग्राम
अकबरपुर जिला फ़ैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर ने-
नीताल व लखनऊ व पोस्टमास्टर जनरल
रियासत गवालियर ने पण्डित गङ्गादत्त
जोशी और पण्डित रामदत्त जोशी
की सहायता से अनुवाद किया—

तिसको

श्रीमान् परमधार्मिक शुभगुणनिधान मुन्शी प्रयाग
नारायणजी ने सर्वलोकहितार्थ

दूसरी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के यन्त्रालय में मुद्रित कराया

सन् १९०२ ई० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

3
२५१

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं योगिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम्। यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः। षट्चक्रादिविचार सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वरास्तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करों वन्दना ब्रह्मको। जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल। मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं। नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं। रहितत्रिविधपरिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद। ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको। लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो। सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते। जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट। अकबरपुर है गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू। जालिमसिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है, इसके पार होने के लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है, जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं, और होते जाते हैं, और भविष्यत्काल में होंगे, जो मुमुक्षुजन हैं, उनके हितार्थ यह भाषाटीका रचीगई है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है, फिर पदच्छेद है, फिर वामहस्त
की ओर संस्कृत अन्वय दिया है, और दक्षिण हस्तकी ओर
दार्थ लिखा है, यदि वाम तरफ़ का लिखा हुआ ऊपरसे नीचेत
पढ़ाजावे तो संस्कृत अन्वय मिलेगा और यदि दक्षिण हस्त
तरफ़वाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशीय भाषा
मिलेगा, और यदि बायें तरफ़ से दहिने तरफ़ को पढ़ाजावे
हर एक संस्कृत पद का अर्थ भाषा में मिलैगा, भावार्थ भी सवि
स्तार लिखागया है ताकि पाठकजनों को ब्रह्मका साक्षात् ज्ञा
होजावै जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्ति
अनुसार लिखागयाहै, इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्याका
अभ्यास होगा, इस टीकामें मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पा
है, और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसीके शब्दोंहीसे सिद्ध कियाग
है, अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है, हां कहीं कहीं ऊपर
संस्कृत पद मन्त्र के अर्थ स्पष्ट करने के लिये रक्खागया है, और
उस पदके प्रथम यह + चिह्न लगादिया गयाहै ताकि पाठ
जनों को विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है। इस टीक
को बाबू ज्वालिमर्सिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबा
साबिक हेड पोस्टमास्टर नैनीताल व लखनऊ व वर्तमान का
में पोस्ट मास्टर जनरल रियासत गवालियर सहित अत्य
सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादा
धपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ा
नगर के रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चर
कमल में अर्पण करताहै और आशा रखता है कि जहां क
अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरैं ताकि अशुद्ध
दूर होजावै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ कठवल्ली उपनिषद् ॥

मूलम् ॥

(१) उशन्हवैवाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ॥ १ ॥

पदच्छेदः

उशन् ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसम् ददौ तस्य ह नचिकेताः नाम पुत्रः आस ॥

अन्वयः पदार्थ

ह वै = निश्चय करके
उशन् = यज्ञके फल की इच्छा करता हुआ
वाजश्रवसः = वाजश्रवा का पुत्र उद्दालकऋषि
सर्ववेदसम् = सब धन को विश्वजित् यज्ञ में
ददौ = देताभया
तस्य = तिसका
ह = ही
नचिकेताः = नचिकेता
नाम = नाम
पुत्रः = एक पुत्र
आस = था ॥

भावार्थ ।

यजुर्वेदीय काठकोपनिषद् द्वारा ब्रह्मविद्याका निरूपण करते हैं ब्रह्मविद्याकी प्राप्तिका साधन होनेसे इसग्रंथका नामभी उपनिषद्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, उपनिषद्का अर्थ ब्रह्मविद्या है, ये दोनों पर्याय शब्दहैं ॥ उप
निषद् करके कथन करीहुई जो ब्रह्मविद्याहै उसकी स्तुत्यर्थ औ
बोधकी सुगमतार्थ कथारूपसे वर्णन करतेहैं ॥ वाज नाम अन्नको
तिस अन्नके अतिदान करने से हुवाहै यश जिसका उसी
नामहै वाजश्रवा उस वाजश्रवा ऋषिकी जो संतानहो उस
नामहै वाजश्रवसा ॥ उद्दालकऋषि बहुत अन्नदान करता
इसलिये उसका दूसरा नाम वाजश्रवसा होताभया, वह उद्दाल
ऋषि यज्ञके फलकी इच्छा करके विश्वजित् नामक यज्ञकर
को यजन करताभया, और उस यज्ञमें सर्वधनको ब्राह्मणों के प्रति
दक्षिणा देताभया, और जो सुंदर २ दूध देनेवाली गौवैं थीं उन
को अपने पुत्रके लिये यज्ञ करने से पूर्वही अलग रखलेताभया॥
और जो गौवैं वृद्धार्थीं उनको निष्फल जानकर यज्ञमें दक्षिणाके
अर्थ ब्राह्मणों के प्रति देताभया, उस उद्दालकका नचिकेता पु
छोटा पांच बरसका लड़का था, वह पिताके कुटिल व्यवहार को
देखकर और यज्ञसे पिताको अनिष्टफलकी प्राप्ति को जानका
उसको वेदोक्त यथार्थ वाक्योंमें श्रद्धा उत्पन्न होतीभई, और उस
नचिकेताने अपने मनमें विचार किया कि इसप्रकारके कुटिल
व्यवहार करने से मेरे पिता को श्रेष्ठ यज्ञफलकी प्राप्ति न होगी
इसलिये मुझको उचित है कि मैं उसके हटानेका उपाय करूं
ऐसा संकल्प उसको उस कालमें होताभया जिस कालमें उसका
पिता ऋत्विगादि ब्राह्मणों के प्रति दक्षिणा में उन गौवों को
देरहाथा ॥ १ ॥

नोट—वाज नाम अन्नका है, तिस अन्न के दान करनेसे हुआ
है श्रव याने यश जिसको तिसका नामहै वाजश्रवा, तिसका जो
पुत्र है उसका नाम है वाजश्रवसा उसीका नाम उद्दालक भी है,
वह उद्दालक यज्ञके फल की इच्छा करताहुआ विश्वजित नामक
यज्ञ में सर्वस्व दक्षिणा देता भया ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(२) तꣳ ह कुमारꣳ सन्तं दक्षिणासु नीय-
मानासु श्रद्धाऽऽविवेश सोऽमन्यत ॥ २ ॥

पदच्छेदः

तम् ह कुमारम् सन्तम् दक्षिणासु नीयमानासु
श्रद्धा आविवेश सः अमन्यत ॥

अन्वयः पदार्थ

तम् = तिस नचिकेता को
कुमारंसंतम् = कुमार अवस्था होतसन्ते
ह = भी
दक्षिणासु = दक्षिणा में गौओं को
नीयमानासु = ले जानेपर
श्रद्धा = श्रद्धा
आविवेश = होतीभई
+च = और
सः = वह
अमन्यत = विचार करताभया ॥

भावार्थ ।

तꣳहेति—नचिकेता गौवों को देखकर अपने चित्तमें विचार करता है कैसी वह गौवें हैं ॥ २ ॥

नोट—वह नचिकेता जिसकी आयु पांच वर्ष से अधिक न थी ऐसा शोचता भया कि वेदोक्त यज्ञ के विगुण व्यतिक्रम होने से अनिष्ट फलकी प्राप्ति होती है, जब ऐसी बुद्धि उस की हुई तब वह पिताके अनिष्टफल की निवृत्ति के वास्ते विचार करताहै जैसे कि दूसरे मन्त्र में लिखाहै ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(३) पीतोदकाजग्धतृणादुग्धदोहानिरिन्द्रियाः॥
अनन्दानाम ते लोकास्तान्स गच्छति ता ददत् ॥३॥

पदच्छेदः

पीतोदकाः जग्धतृणाः दुग्धदोहाः निरिन्द्रियाः अनन्दाः नाम ते लोकाः तान् सः गच्छति ताः ददत् ॥

अन्वयः पदार्थ

पीतोदकाः = पान करलियाहै जल जिन्होंने याने आगे जल पान करने की शक्ति नहीं है जिनको
जग्धतृणाः = खालियाहै घास जिन्होंने याने अब घास खानेकी शक्ति नहीं है जिनको
दुग्धदोहाः = दुहि लियागया है दुग्ध जिनका याने आगे को प्रसूतयोग्य नहीं हैं जो
निरिन्द्रियाः = निष्फल होगई हैं इन्द्रियां जिनकी याने मरने के समीपहैं जो
ताः = ऐसी गौवों को
+यः = जो पुरुष
ददत् = देता है
ते = वे
+ये = जो
अनन्दाः = आनन्दरहित
नाम = नामवाले
लोकाः = लोक हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तान् = तिनको
सः = वह
गच्छति = प्राप्त होताहै ॥

पीतोदका इति–पानकरलिया है पूर्वही जल जिन्होंने अर्थात् अब उनको जलपीनेकी सामर्थ्य नहीं है ॥ जग्धतृणाः ॥ भक्षण करलियाहै घास को जिन्होंने अर्थात् अब घास खानेकी सामर्थ्य जिनमें नहीं है ॥ दुग्धदोहाः ॥ पूर्वही दोहन करलियागया है दूध जिनका याने अब उनमें दूध देनेकी शक्ति नहीं रही है ॥ निरिन्द्रियाः ॥ गर्भके धारण करने की शक्ति से हीन हैं जो अर्थात् अतिबूढ़ी जो होगई हैं ॥ तान् ॥ ऐसी गौवों को जो दक्षिणामें देता है वह पुरुष ॥ अनन्दानाम ॥ असुखरूप जो लोकहैं अथवा योनि हैं उनमें वह दानका कर्त्ता जाता है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

(४) सहोवाच पितरं तत कस्मै मान्दास्यसीति द्वितीयंतृतीयन्तꣳहोवाच मृत्यवे त्वाददामीति ४॥

पदच्छेदः

सः ह उवाच पितरम् तत कस्मै माम् दास्यसि इति द्वितीयम् तृतीयम् तम् ह उवाच मृत्यवे त्वा ददामि इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	= वह नचिकेता	कस्मै	= किसके प्रति
ह	= निश्चयकरके	माम्	= मुझको
तरम्	= पितासे	दास्यसि	= देगा तू
वाच	= कहताभया कि	इति	= इसप्रकारसे
तत	= हे तात हे पिता	यदा	= जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वितीयम् = दूसरी	मृत्यवे = मृत्युके प्रति
तृतीयम् = तीसरी बार	ददामि = देऊंगा मैं
+सः = वह नचिकेता	इति = ऐसा तब
ह = हठकरके	+उद्दालकः = उद्दालक
उवाच = कहताभया	आह = कहताभया
त्वा = तुझको	

भावार्थ ।

सहोवाचेति-पिताके अनिष्टफल के दूरकरने के लिये नचिकेता अपने पितासे कहता है हे तात ! किस ऋत्विग् के प्रति मुझको आप दक्षिणामें देवोगे, ऐसा जब नचिकेताने पितासे कहा तब पिता नहीं बोला, फिर जब दूसरी तीसरी बार नचिकेताने पिताको कहा कि मेरेको किसके प्रति देवोगे, तब पिताने क्रोधित होके कहा तुझको मृत्युके प्रति मैं दूंगा, पिताके इसप्रकारके वचन श्रवण करके नचिकेता अपने मनमें चिंतवन करता है ॥ ४

मूलम् ॥

(५) बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यः किंस्विद्यमस्य कर्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति ॥

पदच्छेदः

बहूनाम् एमि प्रथमः बहूनाम् एमि मध्यः किंस्वित् यमस्य कर्तव्यम् यत् मया अद्य करिष्यति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
बहूनाम्	= बहुतेरों में	एमि	= होता हूं मैं उ
प्रथमः	= प्रथम	+च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहूनाम् = बहुतेरों में	कर्तव्यम् = प्रयोजन है
मध्यमः = मध्यम	यत् = जो
एमि = होता हूं मैं	मया = मुझकरके
किंस्वित् = क्या	अद्य = अब
यमस्य = यमराज का	करिष्यति = सिद्धहोगा ॥

भावार्थ ।

बहूनामिति–पिताने मेरेको ऐसा क्यों कहा कि मैं तुमको यमप्रति दूंगा, शायद वह क्रोधके वशमें होकर ऐसा कहा होगा क्योंकि ॥ बहूनाम् ॥ बहुतेरे पुत्रों और शिष्यों के मध्यमें मैं प्रथमहूं याने श्रेष्ठहूं क्योंकि बिना आज्ञा गुरुकी और पिताकी मैं न कहीं जाताहूं और न किसी कामको करताहूं, पिता और गुरुकी सेवामें परायण रहताहूं, और बहुतेरे शिष्यों और पुत्रों के मध्यमें मैं मध्यमहूं, कनिष्ठ नहीं हूं, क्योंकि गुरुकी सेवामें तत्पर रहताहूं, और पिताकी आज्ञा को उल्लंघन नहीं करताहूं, तब फिर मुझ ऐसे श्रद्धासम्पन्न पुत्रका त्याग करना पिताको अयुक्त है, और यमके पास मेरे जानेसे यमका भी कोई उपकार नहीं मालूम होता है, मुझको अपने पिताके लिये यम महाराजके प्रति क्या इष्ट कर्तव्य है, मेरा त्याग मेरा पिता व्यर्थही करता है॥ ५ ॥

नोट–ऐसा नचिकेता अपने पिताके कहनेपर अपने मनमें विचार करता भया और जब उद्दालक को शापके पीछे पश्चात्ताप होनेलगा तब नचिकेता अगले मन्त्रमें समझाता है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

(६) अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथापरे सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिव जायते पुनः ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथा अपरे सस्य
इव मर्त्यः पच्यते सस्यम् इव जायते पुनः ॥

अन्वयः पदार्थ

+हे तात = हे पिता
यथा = जैसे
पूर्वे = पूर्व तुम्हारे पिता पितामह आदि वर्त
थे उनको
अनुपश्य = देखो
तथा = तैसेही
अपरे = अन्य जो शिबि दशरथादि हुये हैं उन
प्रतिपश्य = अच्छीतरहसे देखो अर्थात् जैसे वे अ
अपने वचनों को पालते थे वैसेही आ
भी अपने वचनको पालन करो
सस्यम् इव = धानके वृक्षके समान
मर्त्यः = मनुष्य भी
पच्यते = परिपक्व होकर नाश होताहै
+च = और
सस्यम् इव = धानके वृक्षवत्
पुनः = फिर
+मनुष्यः = मनुष्य मरकरके
जायते = उत्पन्न होता है ॥

भावार्थ ।

इधर उद्दालकऋषि के चित्तमें बड़ा पश्चात्ताप हुआ था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने क्या किया क्यों मैंने अपने गुणवान् पुत्रका वृथाही त्याग कर दिया॥इतने में नाचिकेता आकर अपने पिताको जब शोकातुर देखा तब विचार करनेलगा कि अब वह उपाय करना चाहिये जिससे पिताका वचन मिथ्या न हो ऐसा विचार करके नाचिकेता पिताके प्रति कहताहै॥ अनुपश्येति॥ हे पिता! जिस प्रकार आपके पिता और पितामह आदिकोंने अपने वचनकी पालनाकी है, और जिसप्रकार और महात्मा व राजऋषि लोक दशरथादिकों ने अपने वचन कीपालनाकी है, उसीप्रकार आपभी अपने वचनकी पालनाकरैं, मेरेको यमराजके पास जानेकेलिये आज्ञादीजिये, वचन को मिथ्या करने से कोई भी अजर अमर नहीं होता है, उलटाही अनर्थ को प्राप्तहोता है, इसलिये आप अपने वचन को सत्यकरो, मेरेको यमपुरी में जानेकी आज्ञा दो यह शरीरादिक सब अनित्य हैं खेतियोंकी तरह हैं, अर्थात् जैसे एक खेती पककर नष्ट होजाती, दूसरी बोई जाती है, इसी तरह मनुष्योंके भी पुराने शरीर नष्ट होकर नये उत्पन्न होते हैं, यह जो जन्ममरणरूपी काल चक्र है, सो सदैव चलताही रहता है, ऐसा विचारकर आप मेरेको अब यमके पास जानेके लिये आज्ञा दीजिये, और अपने वाक्य को सत्य करिये॥ ६॥

नोट-नाचिकेता पितासे कहता है कि जैसे तुम्हारे पिता पितामहादि अपने वचनों की पालना करते आये हैं, और दशरथादिकों ने जैसे किया है, वैसे आपभी अपने वचनकी पालना करो, अर्थात् हमको यमपुरी जानेकी आज्ञा देवो, यह शरीर तो धान के वृक्षवत् उत्पत्ति नाश होताही रहताहै, मेरे में मोह को त्यागकर यमपुरी जानेवाले वचन को आज्ञा देकर सत्य करो॥ ६॥ जब पिताने नाचिकेताको यमराजके पास जाने की आज्ञादी तब वह शरीरसे पितृभक्तिके प्रभावसे यमपुर में गया और जब यमपुरीके द्वार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर पहुँचा तब उसको मालूम हुआ कि यमराज किसी कार्य के प्रति देशान्तर को गये हैं, तब तिस के द्वारपर खड़ारहा, जब यमराज की स्त्री को मालूम हुआ कि एक अतिथि ब्राह्मण हमारे द्वारपर निराहार खड़ा है, तब उसने आकर बड़े सत्कार से भोजन करने के लिये कहा तब, नचिकेताने कहा कि विना यमराज के भेंट किये मैं अन्न जलका ग्रहण नहीं करूंगा, जब तीन रात्रि दिन नचिकेता निराहार खड़ारहा, और चौथे दिन यमराज आये, तब उनकी स्त्रीने नचिकेताके आनेका समाचार कहा, और मन्त्र पढ़कर उनको समझाती है कि–

मूलम् ॥

(७) वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहान् तस्यैताꣳशान्तिं कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

वैश्वानरः प्रविशति अतिथिः ब्राह्मणः गृहान् तस्य एताम् शान्तिम् कुर्वन्ति हर वैवस्वत उदकम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
वैवस्वत =	हे विवस्वत सूर्य के पुत्र हे भगवन्
+ यथा =	जैसे
वैश्वानरः =	वैश्वानर अग्नि
गृहान् =	घरों में

अन्वयः	पदार्थ
प्रविशति =	प्रवेशकरताहै
+ तथा एव =	वैसाही
+ एषः =	यह
अतिथिः =	अतिथि
ब्राह्मणः =	ब्राह्मण अग्निरूपाति
+ तव द्वारे =	तुम्हारेद्वारहेद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ स्थितः = स्थित है	एताम् = इस
उदकम् = जलको	+ तैजसीम् = तेजको
हर = ले जावो	शान्तिम् = शान्ति
+ च = और	+ कुरु = करो ॥
तस्य = उसके	

भावार्थ ।

वैश्वानर इति–जब कि नचिकेताने अपने पिता को अनेक युक्तियों और प्रमाणों करके समझाया, तब पिता उद्दालकने उसको यमपुरी जानेकी आज्ञा दिया, नचिकेता पिताके तपके प्रभाव से अपने शरीरके सहित यमराजपुरी को गया, और राजगृहके द्वारपर जाकरके उसने महाराज यम के भृत्यों से कहा मेरे पिताने मेरेको यमके भेटार्थ भेजा है, ऐसा यमसे जाकर केकहो, भृत्योंने कहा यमराज किसी कार्य्य के लिये देशान्तर को गये हैं, उनकी स्त्री और पुत्र घरमें हैं, हम उनसे जाकर कहतेहैं, भृत्योंने यमकी स्त्री और पुत्रों से कहा कि एक ब्राह्मणका बालक अतिथि होकर तुम्हारे द्वारपर खड़ाहै, ऐसा सुनकर अतिथि सत्कारके लिये वे सब दौड़ आये, और नचिकेतासे भोजनादिकों के करनेकी प्रार्थनाकी, नचिकेता ने कहा मेरा प्रयोजन यमराजके साथ है, जबतक यमराज नहीं आवेंगे, तबतक मैं भोजनादिकों को ग्रहण नहीं करूंगा, ऐसा कहकर तीनदिन, तीन रात्री, निराहार वहांपर खड़ारहा, अतिथि को निराहार देखकर यमके नगरनिवासियों ने भी तीन दिनतक उपवास किया, चौथे दिन जब यमराज अपने घर आये तब उनसे उनकी स्त्री इसप्रकार कहती है ॥ वैश्वानरः ॥ हे वैवस्वत यम महराज ! एक अतिथि ब्राह्मण अग्निरूप होकर आपके घरमें प्रवेश करना चाहताहै, वह द्वारपर खड़ाहै, उसका सत्कार, पाद्य अर्घादिकों करके करिये, श्रेष्ठपुरुषों का धर्म अतिथिका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्कार करनाहै, जो अतिथि का सत्कार नहीं करताहै, उसको दोष जैसा आगेवाले मंत्रमें लिखाहै होताहै ॥ ७ ॥

नोट-जिसके द्वारपर अथिति भूखा रहजावै, उसका जो फल है, उसको अगले मन्त्र में यमराज की स्त्री कहती है ॥

मूलम् ॥

(८) आशाप्रतीक्षेसङ्गतꣳसूनृताञ्चेष्टापूर्तेपुत्र पशूꣳश्च सर्वान् एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

आशा प्रतीक्षे सङ्गतम् सूनृताम् च इष्टापूर्ते पुत्र पशून् च सर्वान् एतत् वृङ्क्ते पुरुषस्य अल्पमेधसः यस्य अनश्नन् वसति ब्राह्मणः गृहे ॥

अन्वयः	पदार्थ
यस्य	= जिस
अल्पमेधसः	= अल्पबुद्धिवाले
पुरुषस्य	= पुरुष के
गृहे	= गृह बिषे
अनश्नन्	= भूखा
ब्राह्मणः	= ब्राह्मण
अतिथिः	= अतिथि
वसति	= वास करता है

अन्वयः	पदार्थ
एतत्	= उसका भूखा रहना
तस्य	= उस गृहस्थ पुरुष के
आशा प्रतीक्षे	= स्वर्गादि सुख तथा मनन किये हुये सुख की इच्छा को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सङ्गतम् = सत्सङ्गके फलको	च = और
सूनृतम् = प्रियवाणी बोलनेके फलको	सर्वान् = सब
इष्टापूर्तं = इष्टपूर्त कर्मको	पुत्रपशून् = पुत्र और पशुओं को
	वृङ्क्ते = नाश करताहै॥

भावार्थ।

आशाप्रतीक्षे इति-जैसे अशान्ताग्नि घरको जला देताहै तैसे असत्कृत अतिथिभी सम्पूर्ण सामग्री के सहित घरको जला ताहै ॥ आशाप्रतीक्षे ॥ परोक्ष स्वर्गादिकों की इच्छाका नाम आशा, है और अपरोक्ष राज्यादि सुखकी इच्छाका नाम प्रतीक्षा ॥ देवताकी उपासना जन्य जो फलहै, उसका नाम संगतहै, और प्रियभाषण से जो फल होताहै, उसका नाम सूनृतहै, और अग्निहोत्रादि यागजन्य जो फलहै,उसका नाम इष्टहै, और वापी कूपादिकोंके बनवाने से जो फल होता है, उसका नाम पूर्त्त है, ॥ इन सबका और पुत्र और पशुवोंकाभी नाश उस अल्पबुद्धिवाले पुरुषके गृहमें होजाताहै, जिसके द्वारपर अतिथि आकर भूखा रहजाताहै, इसलिये हे यम! आप शीघ्र जाकर प्रथम इस अतिथि ब्राह्मण का सत्कार करिये ॥ ८ ॥

नोट-जब यमराज महाराज ने अपनी स्त्री से ऐसा सुना तब शीघ्र द्वारपर जाकर नचिकेता से कहते भये ॥

मूलम् ॥

तिस्रोरात्रीर्यदवात्सीर्गृहेमेऽनश्नन् ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात्प्रतीन् वरान् वृणीष्व ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

तिस्रः रात्रीः यत् अवात्सीः गृहे मे अनश्नन् ब्रह्मन् अतिथिः नमस्यः नमः ते अस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मे अस्तु तस्मात् प्रति त्रीन् वरान् वृणीष्व ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
ब्रह्मन्	= हे ब्रह्मन्	ते	= तेरे प्रति
तिस्रः	= तीन	अस्तु	= होवै
रात्रीः	= राततक	ब्रह्मन्	= हे ब्रह्मन्
मे	= मेरे	+ यतः	= जिससे
गृहे	= घरमें	मे	= मेरे लिये
यत्	= जो	स्वस्ति	= कल्याण
अनश्नन्	= भूखा	तस्मात्	= तिसलिये
अतिथिः	= अतिथिहोकर	प्रति	= तीन रात
अवात्सीः	= रहा तू		बदले
+ ततः	= तिस कारणसे	त्रीन्	= तीन
नमस्यः	= पूजनीय है तू	वरान्	= वरोंको
नमः	= नमस्कार	वृणीष्व	= मांगले तू

भावार्थ ।

यमराज महाराज तुरन्त अतिथि ब्राह्मणके पास जाकर कहने लगे ॥ तिस्रोरात्रीर्यदिति ॥ हे ब्राह्मण ! आप तीनरात्रि दिकों के विनाही मेरे द्वारपर अतिथि होकर खड़ेरहे इस लिये आपको नमस्कार करताहूं, आप मेरे अपराधको क्षमा करें और इच्छा पूर्वक मांगिये, मैं बारंबार आपको नमस्कार करता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जो कुछ मेरी अयोग्यताहो, उसको अपने अन्तःकरणसे दूर करिये, और आशीर्वाद दीजिये कि मेरा भद्रहो ॥ ९ ॥

नोट-नचिकेता से यमराज कहते हैं कि जो तू अतिथि होकर तीन रात्री मेरे द्वारपर भूखा खड़ा रहाहै इसवास्ते तीनवर तू मांगले सो नचिकेता अब वरों को मांगता है ॥

मूलम् ॥

(१०) शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्याद्वीत मन्युर्गौतमो मामभिमृत्यो त्वत्प्रसृष्टं माऽभिवदेत् प्रतीतएततत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे ॥ १० ॥

पदच्छेदः

शान्तसङ्कल्पः सुमनाः यथा स्यात् वीतमन्युः गौतमः मा अभि मृत्यो त्वत्प्रसृष्टम् मा अभिवदेत् प्रतीतः एतत् त्रयाणाम् प्रथमं वरं वृणे ॥

अन्वयः	पदार्थ
शान्तसङ्कल्पः =	शान्तहुआ है सङ्कल्प जिसका
सुमनाः =	शुद्ध हुआ है चित्त जिसका
वीतमन्युः =	दूर होगयाहै क्रोधजिसका
यथा =	ऐसा
गौतमः =	उद्दालक मेरा पिता
त्वत्प्रसृष्टः =	तुझकरकेछूटे हुये
मा अभि =	मुझसे
मृत्यो =	हे भगवन्
प्रतीतः =	प्रसन्न
स्यात् =	हो
च =	और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिवदेत् = सम्भाषणकरै	प्रथमम् = प्रथम
त्रयाणाम् = तीनों वरोंमेंसे	वरं = वरको
एतत् = इस	वृणे = मांगताहूं

भावार्थ ।

शांतसंकल्प इति-यमराज की आज्ञा सुनकर नचिके कहता है ॥ शान्तसंकल्पः ॥ हे मृत्यो महराज ! आपके आनेसे मेरे पिता गौतमको जो ऐसी चिंता होरही है कि पुत्रकी यमके पास जानेसे क्या जाने कैसी अनिष्टदशा हुई हो सो वह उनका संकल्प दूर होजावे, और प्रसन्न मनहों, और उनका क्रोध मेरे ऊपर हुआथा वहभी शान्त होजावे, और मैं आपका भेजाहुवा अपने घरको जाऊं तब मेरे पिताको ऐ मालूमहो कि यह वही मेरा पुत्रहै, और पूर्ववत् मेरेमें प्रीतिम और यह प्रेत होकर यमराजके पाससे नहीं आयाहै, यह प्रथम तीनों वरोंमेंसे मांगताहूं ॥ १० ॥

॥ नोट-नचिकेता कहता है कि हे मृत्यो भगवान् गौतम जो पिताहै उसको जो यह चिन्ता होरही है कि मेरे पुत्रकी यम के पा जानेपर क्या जाने कैसी दशा होरही है सो इस सङ्कल्प से रहित होकर प्रसन्न चित्तहो और मेरेपर जो उसका क्रोधहुआ वह भी दूर होजावै, और जब मैं तुम्हारे यहां से फिर पिता के पा वापिस जाऊं तब वह पूर्ववत् मेरे को जानै कि यह मेरा पुत्र यह पहला वर मैं मांगता हूं उसके जवाब में मृत्यु भगव कहते हैं कि-

मूलम् ॥

(११) यथापुरस्ताद्भविताप्रतीतऔद्दालकिरारुणिर्मत्प्रसृष्टः सुखंरात्रीः शयितावीतमन्युस्त्वांददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम् ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यथा पुरस्तात् भविता प्रतीतः औद्दालकिः आरुणिः मत्प्रसृष्टः सुखम् रात्रीः शयिता वीतमन्युः त्वाम् ददृशिवान् मृत्युमुखात् प्रमुक्तम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यथा	= जैसे	भविता	= रहैगा
पुरस्तात्	= पहले	+ च	= और
+ आसीत्	= था	त्वाम्	= तुझको
+ तथा	= वैसाही	मृत्युमुखात्	= मृत्युके मुखसे
औद्दालकिः	= उद्दालक	प्रमुक्तम्	= छुटाहुआ
आरुणिः	= अरुणका पुत्र	ददृशिवान्	= देखकर
वीतमन्युः	= क्रोधसेरहित होता हुआ	मत्प्रसृष्टः	= मेरेप्रसादसे
+ च	= और	सुखम्	= सुखपूर्वक
प्रतीतः	= प्रसन्न होता हुआ	रात्रीः	= रातोंतक
		शयिता	= सोवैगा ॥

भावार्थ ।

यथापुरस्तादिति-यमराज भगवान् कहते हैं हे नचिकेतः ! औद्दालकिऋषि, तुम्हारा पिता, है जब तुम मेरे पाससे जावोगे, तब पूर्ववत् प्रीतियुक्त तुमसे मिलैगा, और ऐसा उसको विश्वास होगा कि यह वही मेरा पुत्र है, और मेरे प्रसादसे वह रात्री सुखपूर्वक शयन करनेवालाभी होगा अर्थात् चिंतासे रहित होकर नींदभर सोवैगा और मृत्युके मुखसे छूटाहुवा तुमको देखकर क्रोधसे शांतहोगा ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१२) स्वर्गेलोकेनभयं किञ्चनास्ति नतत्रत्वं जरयाबिभेति उभेतीर्त्वाअशनापिपासेशोकाति गोमोदतेस्वर्गलोके ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

स्वर्गे लोके न भयम् किञ्च न अस्ति तत्र त्वम् न जरया बिभेति उभे तीर्त्वा अशनापिपासे शोकातिगः मोदते स्वर्गलोके ॥

अन्वयः	पदार्थ
स्वर्गेलोके	= स्वर्गलोकमें
किञ्चन	= कुछभी
भयम्	= भय
न	= नहीं
अस्ति	= है
+ च	= और
तत्र	= तहां
त्वम्	= तुम मृत्युभी
न	= नहीं
असि	= हो
+ च	= और
+ तत्र	= तहां
जरया	= जराअवस्थाकरके
कः	= कोई पुरुष
न बिभेति	= भयको नहीं प्राप्तहोताहै
+ च	= और
अशना पिपासे	= क्षुधा और पिपासा
उभे	= दोनोंको
तीर्त्वा	= तरकरके
शोकातिगः	= शोकसेरहित तहोताहुआ
स्वर्गलोके	= स्वर्गलोकमें
मोदते	= हर्षको प्राप्त होता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ।

स्वर्गेलोकइति ॥ स्वर्गकी प्राप्तिका साधनभूत जो अग्नि है, तिसके पूछने की कामनावाला होकर प्रथम स्वर्ग के स्वरूपको नचिकेता पूंछता है॥स्वर्गेलोके॥ स्वर्गलोक से यहांपर ब्रह्मलोक का ग्रहणहै, ऐसे स्वर्गलोकमें जो रहते हैं, उनको रोगादिकों से जन्य किञ्चित् भी भय नहीं होता है, और न आप हे मृत्युभगवान्! उस ब्रह्मलोक में रहकर किसीका नाश करते हैं, और न उस लोकमें जराअवस्थाका भयहै, और क्षुधा पिपासा सताताहै, इनसबको अतिक्रमण करके पुरुष उसलोक में आनन्द को भोगता है ॥ १२ ॥ मूलम् ॥

(१३) स त्वमग्निꣳस्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्र ब्रूहि तꣳ श्रद्दधानाय मह्यम् स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

सः त्वम् अग्निम् स्वर्ग्यम् अध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि तꣳ श्रद्दधानाय मह्यम् स्वर्गलोकाः अमृतत्वम् भजन्ते एतत् द्वितीयेन वृणे वरेण ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	= वह	अग्निम्	= अग्निको
उवाच	= कहता भया कि	अध्येषि	= जानते हो
मृत्यो	= हे मृत्युभगवन्	+तु	= तो
		तम्	= उसको
[illegible]दि	= अगर	मह्यम्	= मुझ
[illegible]म्	= आप	श्रद्दधानाय	= श्रद्धावान् के लिये
[illegible]म्	= स्वर्ग साधक		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रब्रूहि = कहो	भजन्ते = प्राप्त होते
× यं ज्ञात्वा = जिसको जानकर	एतत् = इसीको
	द्वितीयेन = दूसरे
स्वर्गलोकाः = स्वर्गनिवासी	वरेण = वर करके
अमृतत्वम् = अमरभावको	वृणे = मांगता हूं।

भावार्थ ।

स्वमग्निमिति–पूर्वोक्त गुणों करके युक्त स्वर्गसाधनभू
जो अग्नि है और जिसको आप जानते हैं उसविद्या को
मृत्यो ! आप मुझ श्रद्धावान् नचिकेता के प्रति कहिये औ
तिसके अंग को भी मेरेप्रति कहिये और जिस अग्निवि
करकेकर्मी स्वर्गलोकमें जाकर अमर होजाते हैं तिस को आ
कृपाकरके मुझे दीजिये यह दूसरा वर मैं मांगता हूं ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

(१४) प्रते ब्रवीमितदुमे निबोध स्वर्ग्यमग्निं
नचिकेतः प्रजानन् अनन्तलोकाप्तिमथोप्रतिष्ठां
विद्धि त्वमेनन्निहितं गुहायाम् ॥ १४ ॥

पदच्छेदः

प्रते ब्रवीमि तत् उ+मे निबोध स्वर्ग्यम् अ
ग्निम् नचिकेतः प्रजानन् अनन्तलोकाप्तिम् अ
प्रतिष्ठाम् विद्धि त्वम् एनम् निहितम् गुहायाम्

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
नचिकेतः	= हे नचिकेता	अग्निम्	= अग्नि
× अहम्	= मैं	प्रजानन्	= जानता
स्वर्ग्यम्	= स्वर्गसाधक	प्रते	= तेरे प्रति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रवीमि = कहताहूं
तत् = उसको
मे = मुझसे
निबोध = जान तू
उ = और
अनन्तलोकाप्तिम् = स्वर्गमेंपहुँचानेवाली
अथो = और
प्रतिष्ठाम् = सबका आश्रयभूत
× च = और
गुहायाम् = हृदयरूपी गुहामें
निहितम् = स्थित
एनम् = इस अग्नि को
त्वम् = तू
विद्धि = जान ॥

भावार्थ ।

प्रतेब्रवीमीति—नचिकेताकी प्रार्थना सुनकर भगवान् यमराज नचिकेताके प्रति अग्निविद्याका उपदेश करतेहैं ॥ प्रतेब्रवीमि ॥ हे नचिकेता ! स्वर्गका साधक जो अग्निविद्याहै उसको मैं जानता हूं, उसको मैं कहताहूं, अबतुम एकाग्रमन करके उस अग्निविद्या को मेरे से सुनो, वह अग्नि नाशसे रहित स्वर्गलोककी प्राप्तिका साधन है, वही विराट्रूप जगत्की प्रतिष्ठाहै, वही विद्वानों के हृदयरूपी गुहामें स्थितहै, उसी करके कर्मी देवगतिको प्राप्त होते हैं ॥ १४ ॥

मूलम् ॥

(१५) लोकादिमग्निन्तमुवाचतस्मैयाइष्टकायावतीर्वायथा वासचापितत्प्रत्यवदद्यथोक्तमथास्यमृत्युःपुनरेवाहतुष्टः ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

लोकादिम् अग्निम् तम् उवाच तस्मै याः इष्टकाः यावतीः वा यथा वा सः च अपि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् प्रत्यवदत् यथोक्तं अथ अस्य मृत्यु-
पुनः एव आह तुष्टः ॥

अन्वयः पदार्थ

लोकादिम् = लोकोंकेआदि कारण
अग्निम् = अग्निको
च = और
याः = जो
इष्टकाः = ईंट के कुंड
यावतीः = जितनी होनी चाहिये उसको
वा = और
यथा = जिसप्रकार काहोना चाहिये
तम् = तिस सबको
तस्मै = नचिकेताके प्रति

अन्वयः पदार्थ

तुष्टः = प्रसन्नचित्त
मृत्युः = यमभगवान्
उवाच = कहतेभये
अथच = और
सः = वहनचिकेता
अपि = भी
तत् = उसको
पुनः = फिर
एव = वैसाही
प्रत्यवदत् = कहताभया
यथोक्तम् = जैसाकियम महाराज ने
अस्य = उसके बारे में
आह = कहा था ॥

भावार्थ ।

लोकादिमिति–पृथिव्यादि लोकोंका सिद्ध करनेवाला प्रथम शरीर जो विराट् है, उसका साधक अग्नि है, तिसको [illegible] केताके प्रति यमराजने कहा और हवनकुण्डमें जितनी ईंट गती है उनके स्वरूप को और गिनती को भी यमने कहा, और कुण्ड बनाकर जिस प्रकार उसमें अग्नि स्थापन कीजाती है तिं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विधि को भी यमने कहा, फिर नचिकेता से पूंछा कि हे नचकेता! तुमने मेरी उपदेश कीहुई विद्या को भली प्रकार जाना या नहीं, हे नचिकेता ! यदि तुम मुझ उपदेशकृत अग्निविद्या को समुझगये होतो कहो तब नचिकेताने कहा कि मैं सम्पूर्ण आप करके कहीहुई अग्निविद्या को जान लिया और यह कह करके जिसरीति से यमने नचिकेताके प्रति अग्निविद्या कहा था उसी रीतिसे नचिकेताने यमराज को सुनादिया यमराज सुन करके बड़े प्रसन्नहुये और आगेवाले मन्त्रमें उसको एक और वर देने को कहा ॥ १५ ॥

नोट-जैसा यमराज भगवान् ने अग्निका विधान वर्णन कियाथा वैसेही नचिकेता समुझकर उनको सुनाताभया ॥

मूलम् ॥

(१६) तमब्रवीत् प्रीयमाणो महात्मा वरन्तवेहाद्य ददामि भूयः तवैव नाम्ना भवितायमग्निःसृङ्कां चेमामनेकरूपां गृहाण ॥ १६ ॥

पदच्छेदः

तम् अब्रवीत् प्रीयमाणः महात्मा वरम् तव इह अद्य ददामि भूयः तव एव नाम्ना भविता अयम् अग्निः सृङ्काम् च इमाम् अनेकरूपाम् गृहाण ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तम्	= तिसनचिकेतासे	+इदम्	= यह
तथमाणः	= प्रसन्नहोकर	वरम्	= वर
हात्मा	= यमराज	तव	= तुझको
मृत्यवेब्रवीत्	= कहतेभयेकि	भूयः	= और
		ददामि	= देताहूं कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इह = संसार में	च = और
अद्य = अब	इमाम् = यह
अयम् = यह	अनेकरूपाम् = विचित्रपवाली
अग्निः = अग्नि	
तवएव = तेरेही	सृङ्काम् = माला
नाम्ना = नामकरके	गृहाण = ग्रहणकर
भविता = प्रसिद्ध होगी	

भावार्थ ।

तमब्रवीदिति–नचिकेता से उदारचित्त यमराजभगवान् कहते हैं हे नचिकेता ! हम तुम्हारी प्रज्ञा को देख तुमसे अति प्रसन्न हैं, तीनवर हमने तुमको देनेको कहा था, उनमें से दो वर हम तुमको देचुके हैं, एक वर बाकी है, उसके सिवाय हम प्रसन्न होकर अपनी तरफ से तुमको चतुर्थ वर देते हैं, संसार में तुम्हारेही नामसे यह अग्निविद्या प्रसिद्ध होगी, अर्थात् सबलोग इसको नचिकेतसंज्ञक अग्नि कहेंगे, यह माला जो अनेक प्रकारकी हम तुम्हारे प्रति देते हैं, इसको तुम ग्रहण करो नचिकेताने यमराज करके दीहुई मालाको ग्रहण किया १६ ॥

मूलम् ॥

(१७) त्रिणचिकेतस्त्रिभिरेत्यसन्धिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू ब्रह्मयज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निचाय्येमाञ्छान्तिमत्यन्तमेति ॥ १७ ॥

पदच्छेदः

त्रिणचिकेतः त्रिभिः एत्य सन्धिम् त्रिकर्म तरति जन्म मृत्यू ब्रह्मयज्ञम् देवम् ईड्यम् विदित्वा निचाय्य इमाम् शान्तिम् अत्यन्तम् एति ॥ १७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः पदार्थ

त्रिभिः = तीनों माता पिता और आचार्यद्वारा
त्रिणाचिकेतः = तीनबार ग्रहण किया है अग्नि को जिसने ऐसा अग्निका उपासक पुरुष
सन्धिम् = अनुसन्धान यानी स्वर वर्ण और मात्रा को
एत्य = प्राप्त होकरके
त्रिकर्मकृत् = तीनों कर्मोंको अर्थात् यज्ञ अध्ययन और दान को करताहुआ
जन्ममृत्यू = जन्ममरणको यानी आवागमनको
तरति = पारकरजाता है
+ च = और
ब्रह्मजज्ञम् = ब्रह्महिरण्यगर्भ से उत्पन्नभये सर्वज्ञ
ईड्यम् = स्तुतिकरने योग्य
देवम् = वैश्वानर अग्नि आत्मदेव को
विदित्वा = जानकर
+ च = और
निचाय्य = अनुभव करके
इमाम् = उस
अत्यन्तम् = अत्यन्त
शान्तिम् = शान्तिको
एति = प्राप्तहोता है

मूलम् ॥

तथा(१८) त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा य एवं वांश्चिनुते नाचिकेतम् स मृत्युपाशान् पुरतः मृत्योर्ह्य शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥ १८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

त्रिणाचिकेतः त्रयम् एतत् विदित्वा यः एवम् विद्वान् चिनुते नाचिकेतम् सः मृत्युपाशान् पुरतः प्रणोद्य शोकातिगः मोदते स्वर्गलोके ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	जो
विद्वान्	विद्वान्
त्रिणाचिकेतः	त्रिणाचिकेत संज्ञक अग्निकासेवन करनेवाला
एवम्	इसप्रकार
विदित्वा	जानकरके
एतत्	इस
त्रयम्	तीनप्रकार की
नाचिकेतम्	नाचिकेत नामक अग्निको
चिनुते	उपासना करता है
सः	वह
पुरतः	पहिलेही से
मृत्युपाशान्	मृत्युके पाशों को
प्रणोद्य	काटकर
शोकातिगः	शोकरहित होताहुआ
स्वर्गलोके	स्वर्गलोक में
मोदते	प्रसन्न होताहै

भावार्थ ॥

त्रिणाचिकेत इति-यमराजभगवान् अब नाचिकेतसंज्ञक अग्निविद्या के फल को कहते हैं हे नाचिकेता! जो विद्वान् कुण्ड आकार का, उसमें लगेहुये ईंट को, उन के आकार और उन संख्या को जानकर त्रिणाचिकेत अग्नि को तीनबार स्थ करके आत्मभावसे उसकी उपासना करता है वह मृत्युके पाश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छूट जाता है अथवा अधर्म अज्ञान और रागादि के पाशों से शरीरपात से पूर्वही उल्लङ्घन करके शोकरहित होकर आनन्द को प्राप्तहोता है ॥ १७ । १८ ॥

मूलम् ॥

(१९) एषतेऽग्निर्नचिकेतः स्वर्ग्योऽयमवृणीथा द्वितीयेन वरेण एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनास स्तृतीयं वरन्नचिकेतो वृणीष्व ॥ १९ ॥

पदच्छेदः ॥

एषः ते अग्निः नचिकेतः स्वर्ग्यः अयम् अवृणीथाः द्वितीयेन वरेण एतम् अग्निम् तव एव प्रवक्ष्यन्ति जनासः तृतीयम् वरम् नचिकेतः वृणीष्व ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एषः	= यह	एतम्	= इस
अयम्	= वह	अग्निम्	= अग्नि को
स्वर्ग्यः	= स्वर्गसाधक	तवएव	= तेरेही
अग्निः	= अग्नि है	+ नाम्ना	= नाम से
नचिकेतः	= हेनचिकेता	जनासः	= लोक
+ यम्	= जिसको	प्रवक्ष्यन्ति	= कथन करेंगे
अवृणीथाः	= तूपूछताभया	नचिकेतः	= हे नचिकेता
+ इदम्	= इसको	अद्य	= अब
द्वितीयेन	= दूसरे	तृतीयम्	= तीसरे
तथावरेण	= वरकरके	वरम्	= वरको
ते	= तेरे लिये	वृणीष्व	= मांगलेतू
मृत्यो	= हे दिया मैंने		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

एषतेऽग्निरिति–दूसरे वरके प्रकरण को अब समाप्त करते हैं। एषतेऽग्निः ॥ यम कहते हैं हे नचिकेता ! यह स्वर्गका साधन-भूत अग्निविद्या को जो तुमने दूसरे वरकरके मांगा था मैंने तुम्हारेप्रति कहा, यह अग्निविद्या संसारमें तुम्हारेही नाम करके लोक कथन करैंगे, अब तुम अपने तीसरे वरको मांगो॥१९॥

मूलम् ॥

(२०) येयम्प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्ये-केनायमस्तीतिचैके एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाऽहं वराणामेषवरस्तृतीयः ॥ २० ॥

पदच्छेदः ॥

या इयम् प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये अस्ति इति एके न अयम् अस्ति इति च एके एतत् वि-द्याम् अनुशिष्टः त्वया अहम् वराणाम् एषः वर-तृतीयः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+नचिकेताउवाच	= नचिकेतापूछताभयाकि	मनुष्ये	= पुरुष में
एके	= कोई एक	+आत्मा	= आत्मा
+आचार्य्याः	= आचार्य्य	अस्ति	= है
इति	= ऐसा	च	= और
+ वदन्ति	= कहते हैं कि	एके	= कोई आचार्य्य
प्रेते	= मरेहुये	+ इति	= ऐसुक पाश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+वदन्ति = कहते हैं कि
नाऽस्ति = नहीं है
इयम् = यह
या = जो
विचिकित्सा = संशय है
तस्याः = तिसकी
+निवृत्तिः = निवृत्ति
या = जो है
एतत् = उसको
अहम् = मैं
त्वया = आप करके
अनुशिष्टः = शिक्षितहुआ
विद्याम् = जानूं
एषः = यह
तृतीयः = तीसरा
वरः = वर
वराणाम् = वरोंमें से
याचे = मांगताहूं मैं

भावार्थ ॥

येयंप्रेते इति—जो दो वर नचिकेताने यमराजसे पायेहैं, उनको अनित्य जानकर उनसे उपराम होकर और मुमुक्षु बनकर आत्माके याथात्म्यज्ञान को तीसरे वर करके नचिकेता मांगता है ॥ येयमिति ॥ हे महाराज ! जब संसार में प्राणधारी मनुष्य मरजाता है तब उस मृतक शरीर को देखकर कोई ऐसा कहता है कि देहादिसंघात से भिन्न लोकान्तर में गमन करनेवाला आत्मा है सो इस शरीर में से चला गया और कोई ऐसा कहते हैं कि देहादि संघात से व्यतिरिक्त याने भिन्न होकर लोकान्तर में गमन करनेवाला आत्मा नहीं है, वह इसी मृतक शरीर में मौजूद है इस प्रकार संदिग्ध जो आत्मतत्त्व है उसको मैं आपसे जानना चाहताहूं, आप मेरे गुरू हैं, इस तत्त्वज्ञान को तीसरे वर करके मैं आपसे मांगताहूं ॥२०॥ मूलम् ॥

तथास्तु = देवैरत्रापिविचिकित्सितं पुरा न हि सु
च = षधर्मः अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व मा
मृत्यो = हेमृतेमासृजैनम् ॥ २१ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

देवैः अत्र अपि विचिकित्सितम् पुरा न हि सुविज्ञेयम् अणुः एषः धर्मः अन्यम् वरम् नचिकेतः वृणीष्व माम् उपरोत्सीः अति मा सृज एनम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
अत्र	= इस ब्रह्मविद्या बिषे
देवैः	= देवतों करके
अपि	= भी
पुरा	= पहले से
विचिकित्सितम्	= संशय किया गया है
हि	= क्योंकि
एषः	= यह
अणुः	= सूक्ष्म
धर्मः	= धर्म
नसुविज्ञेयम्	= अच्छे प्रकार जाननेको शक्य है
नचिकेतः	= हे नचिकेता
अन्यम्	= और
वरम्	= वरको
वृणीष्व	= मांगलेतू
माम्	= मुझको
माउपरोत्सीः	= मतरोक
+ मा	= मेरे लिये
एनम्	= इसवरको
अतिसृज	= छोड़देतू

भावार्थ ॥

देवैरत्रापीति—नचिकेता के तीसरे वरको सुनकर यमराज भगवान् नचिकेता की परीक्षा करते हैं, इस बातके ज्ञ कि आया नचिकेता इस आत्मज्ञानरूपी तीसरे वर आच्छ नहीं, इसलिये प्रथम इस वरके बदले में और प दिखाते हैं, ताकि वह लोभमें फँसकर आत्मविद्या पाप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवैरत्रापि ॥ हे नचिकेता ! देवतों को भी इस आत्मतत्त्व बिषे संशयही है, वेभी यथार्थ नहीं जानते हैं, तब फिर मनुष्य तिस आत्मतत्त्वको कैसे निस्सन्देह जानेंगे, क्योंकि यह आत्मतत्त्व अति-दुर्विज्ञेय है, और जो सबका अधिष्ठान आत्मा है सो अतिसूक्ष्म है, इसवास्ते हे नचिकेता ! आत्मज्ञानसे अतिरिक्त और वरको तुममांगो, इस वरके लेनेमें तुम हमसे हठ मतकरो ॥ २१ ॥

मूलम् ॥

(२२) देवैरत्रापिविचिकित्सितं किल त्वं च मृत्यो यन्न सुविज्ञेयमात्थ वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यो नान्यो वरस्तुल्य एतस्य कश्चित् ॥ २२ ॥

पदच्छेदः ॥

देवैः अत्र अपि विचिकित्सितम् किल त्वम् च मृत्यो यत् न सुविज्ञेयम् आत्थ वक्ता च अस्य त्वादृक् अन्यः न लभ्यः न अन्यः वरः तुल्यः एतस्य कश्चित् ॥

अन्वयः	पदार्थ
अत्र	= इस विषय में
देवैः	= देवतों करके
अपि	= भी
विचिकित्सितम्	= संशय किया गया है
तथास्तु	= सो ठीक है
च	= और
मृत्यो	= हेमृत्युभगवान्

अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो
त्वम्	= आप
एनम्	= इसको
नसुविज्ञेयम्	= दुर्विज्ञेय
आत्थ	= कहतेहो
किल	= सोभीठीकहै
परन्तु	= परंतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्य = इसका	च = और
वक्ता = कहनेवाला	अन्यः = दूसरा
त्वादृक् = आपकेतुल्य	कश्चित् = कोई
अन्यः = और कोई	वरः = वर
नलभ्यः = मिलनेयोग्य- नहीं है	एतस्य = इसके ननुल्यः = तुल्यभीनहीं

भावार्थ ॥

देवैरत्रापीति भगवान् यमकी बातोंको श्रवण करके अब नचिकेता कहता है, हे यम ! आप कहते हैं कि देवतोंको भी इस आत्मतत्त्व बिषे संशय है, और फिर यहभी कहते हैं कि आत्मतत्त्व सुज्ञेयहै, इसलिये ऐसा मालूम होताहै कि आत्मतत्त्वका वक्ता और द्रष्टा आपही हैं, आपसे अतिरिक्त और कोई दूसरा नहीं मुझे दिखाई देताहै, और न इस वरके तुल्य और कोई वर मैं देखता क्योंकि ब्रह्मात्मा से भिन्न सारा प्रपंच अनित्य है ॥ २२ ॥

मूलम् ॥

(२३) शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान् भूमेर्म्महदायतनं वृणीस्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि ॥ २३ ॥

पदच्छेदः ॥

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यम् अश्वान् भूमेः महत् आयतनम् वृणीस्वयम् च जीव शरदः यावत् इच्छसि ॥

अन्वयः	पदार्थ
+नचिकेतः	= हे नचिकेता
शतायुषः	= सौवर्षकीआ- युवाले

अन्वयः	पदार्थ
पुत्रपौत्रान्	= पुत्रपौत्रों
वृणीष्व	= मांगलेतू
बहून्	= बहुतसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पशून् = पशुवोंको	वृणीष्व = मांगले
हस्तिहिरण्यम् = हस्ती और द्रव्यों को	च = और
	स्वयम् = तूभी
अश्वान् = घोड़ोंको	यावत् = जबतक
भूमेः = पृथिवीके	इच्छसि = इच्छाकरै
महत् = बड़े	तावत् = उतने
आयतनम् = स्थानकोया- नेलोकोंको	शरदः = वर्षोंतक
	जीव = जीतारहै

भावार्थ ॥

शतायुषइति—यमराज नचिकेताके वैराग्यकी परीक्षामें प्रथम भोगोंको दिखाकरके उसको लोभायमान करते हैं ॥ शतायुषः ॥ हे नचिकेता ! सौ बरस जीनेवाले पुत्र और पौत्रोंको तुम मांगलो, बहुतसे हस्ती घोड़े आदिक पशुवोंको मांगलो, और स्वर्णको भी मांगलो, पृथिवीपर चक्रवर्ती राज्यको भी मांगलो, और जीनेकी इच्छापर्यन्त आयु मांगलो ॥ २३ ॥

मूलम् ॥

(२४) एतत्तुल्यं यदि मन्यसे वरं वृणीष्व वित्तं चिरजीविकाञ्च महाभूमौ नचिकेतस्त्वमेधि कामानां त्वा कामभाजं करोमि ॥ २४ ॥

पदच्छेदः ॥

एतत्तुल्यम् यदि मन्यसे वरम् वृणीष्व वित्तम् चिरजीविकाम् च महाभूमौ नचिकेतः त्वम् एधि कामानाम् त्वा कामभाजम् करोमि ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदा
यदि	= अगर	वृणीष्व	= मांगले
एततुल्यम्	= इस वर के तुल्य	महाभूमौ	= महान्भूमि में
नचिकेतः	= हेनचिकेता	त्वम्	= तू
वित्तम्	= धनको	एधि	= वृद्धिको प्राप्त हो
च	= और	कामानाम्	= सबभोगों
चिरजीवि काम्	= बड़ीआयुको	त्वा	= तुझको
वरम्	= श्रेष्ठ	कामभाजम्	= भोग्यके योग्य
मन्यसे	= समझता है तू	करोमि	= करताहूं
तु	= तो		

भावार्थ ॥

एततुल्यमिति—और ऊपर कहेहुये वस्तुके तुल्य और किसी वस्तुको तुम जानतेहो उसको भी हमसे मांगलो, कीमती रत्नादिक को और चिरकाल आयुको मांगलो, और नचिकेता ! इस महान्भूमिका तू महाराजाहो और जिस पदार्थ की तुम्हारे में कामना हो उस पदार्थ को तुम मेरे आशीर्वाद से प्राप्तहो ॥ २४ ॥

॥ मूलम् ॥

(२५) ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान् कामांश्छन्दतः प्रार्थयस्व इमा रामाः सरथाः सतूर्या नहीदृशालम्भनीया मनुष्यैराभिर्मत्प्रताभि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिचारयस्व नचिकेतो मरणं मानुप्राक्षीः ॥ २५ ॥

पदच्छेदः ॥

ये ये कामाः दुर्लभाः मर्त्यलोके सर्वान् कामान् छन्दतः प्रार्थयस्व इमाः रामाः सरथाः सतूर्याः न हि ईदृशाः लम्भनीयाः मनुष्यैः आभिः मत्प्रताभिः परिचारयस्व नचिकेतः मरणम् मा अनुप्राक्षीः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
ये ये	= जो जो	ईदृशाः	= वैसी स्त्रियां
कामाः	= विषयभोग्य	+इह	= इस मनुष्य लोकमें
मर्त्यलोके	= मनुष्यलोकमें	मनुष्यैः	= मनुष्यों करके
दुर्लभाः	= दुर्लभ हैं	नलम्भनीयाः	= नहीं प्राप्त होने योग्य हैं
+तान्	= उन	आभिः	= इन
सर्वान्	= सब	मत्प्रताभिः	= मेरीदीहुई अप्सराओं से
कामान्	= भोगोंको	परिचारयस्व	= अपनी सेवा करवा
छन्दतः	= इच्छानुसार	नचिकेतः	= हेनचिकेता
प्रार्थयस्व	= मांगलेतू		
+यथा	= जैसी		
इमाः	= ये		
रामाः	= अप्सरायें		
सरथाः	= सहित रथों के		
+च	= और		
सतूर्याः	= सहित बाजों के हैं		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ परन्तु = परंतु	+ प्रश्नम् = प्रश्नको
मरणम् = मरणस-	मानुप्राक्षीः = मत पूछ
म्बन्धी	

भावार्थ ॥

येयेकामाइति—यमराज कहते हैं हे नचिकेता ! इस लोक जो पदार्थ मनुष्योंको दुर्लभहैं उन सबको इच्छापूर्वक मांगो, और जो स्वर्गीय पुरुषोंके भोगकेलिये सुंदर २ अप्सराहैं उनको भी तुम मांगो, और सुंदर २ रथोंको और अनेकप्रकारके बाजोंको भी तुम मांगो, हे प्रियदर्शन ! अप्सरा मनुष्योंको दुर्लभ हैं, मुझकर दीहुई अप्सराओंसे तुम अपनी सेवा करावो, और विषयानन्द प्राप्तहोवो, पर हे नचिकेता ! मरणसम्बन्धी वरको तुम मत मांगो इस मेरी आज्ञाको उल्लङ्घन मत करो ॥ २५ ॥

मूलम् ॥

(२६) श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत् सर्वेन्द्रियाणाञ्जरयन्ति तेजः अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीते ॥ २६ ॥

पदच्छेदः ॥

श्वोभावाः मर्त्यस्य यत् अन्तक एतत् सर्वेन्द्रियाणाम् जरयन्ति तेजः अपि सर्वम् जीवितम् अल्पम् एव तव एव वाहाः तव नृत्यगीते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अन्तक =	हे यमराज हे नाशकर्त्ता	श्वोभावाः =	श्वे संशय यु- क्त भाववाले पदार्थ
यत् =	जो		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मर्त्यस्य = मनुष्य के
सर्वेन्द्रियाणाम् = सब इन्द्रियोंके
तेजः = तेजको
जरयन्ति = क्षीण करते हैं
अपि = और
एव = निश्चयकरके
एतत् = यह
सर्वम् = सम्पूर्ण
जीवितम् = आयु
अल्पम् = अल्पही है
+तस्मात् = इसलिये
तव = आपके
वाहाः = रथादिक सवारियां
+ च = और
नृत्यगीते = नाचना गाना
तवएव = आपहीके पास रहैं

भावार्थ ॥

स्वोभावामर्त्यस्येति–यमराजमहाराज जिन २ उत्तम भोगों की प्रशंसा करके नचिकेता को लोभाना चाहते थे उनको अनित्य जानकर उनमें जो दोष है उसको नचिकेता दिखाता है ॥ स्वोभावाः ॥ नचिकेता कहता है हे मृत्यो ! जिन भोगोंका आप हमको लोभ दिखातेहो वे सब क्षणभंगुर हैं, याने आज हैं कल नहीं, और जो अप्सरा आदिक हैं वे मनुष्य के इन्द्रियों के तेज को नाश करनेवाली हैं, धर्म, यश, प्रज्ञा आदिकों को नाश करके पुरुष को अनर्थ में डालनेवाली हैं, और मनुष्यकी जो आयु है वहभी अल्पही है, इसलिये ये सब अप्सरा आदिक भोग आपही के पासरहैं, मैं इन नाशी भोगों को नहीं चाहताहूं ॥ २६ ॥

मूलम् ॥

(२७) न वित्तेन तर्पणीयोमनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा जीविष्यामो यावदीशिष्यसि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

न वित्तेन तर्पणीयः मनुष्यः लप्स्यामहे वित्तम् अद्राक्ष्म चेत् त्वा जीविष्यामः यावत् ईशिष्यसि त्वम् वरः तु मे वरणीयः सः एव ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
मनुष्यः	= मनुष्य	जीविष्यामः	= जीतेरहेंगे
वित्तेन	= धन करके		= हम
नतर्पणीयः	= तृप्त होने योग्यनहींहै	यावत्	= जबतक
		ईशिष्यसि	= राजकरोगे तुम
वित्तम्	= धन को	तु	= परंतु
लप्स्यामहे	= पावैंगे हम	मे	= मेरे
चेत्	= जब कि	वरणीयः	= मांगनेयोग्य
अद्राक्ष्म	= देखाहै हमने	वरः	= वर
त्वा	= आपको	सःएव	= वही मनुष्य संबन्धी
च	= और		

भावार्थ ॥

नवित्तेनेति—हे यममहाराज! भोगोंके समुदाय करके मनुष्य तृप्ति को नहीं प्राप्त होताहै, और धनादिकोंकी प्राप्ति आपके दर्शनसेही होजायगी, इनके मांगनेकी कुछ आवश्यकता नहीं, और चिरकालतक जीना भी मुझको आप अपना जानकर के देवेंगे, इसके मांगनेकी कोईभी जरूरत नहीं, मैं तीसरा वर जो आप से मांगा है वही लूंगा, आप कृपा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(२८) अजीर्यतामृतानामुपेत्य जीर्यन्मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन् अभिध्यायन् वर्णरतिप्रमोदानतिदीर्घे जीविते को रमेत ॥ २८ ॥

पदच्छेदः ॥

अजीर्यताम् अमृतानाम् उपेत्य जीर्य्यन् मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन् अभिध्यायन् वर्णरतिप्रमोदान् अतिदीर्घे जीविते कः रमेत ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अजीर्य्यताम्	= जरारहित	वर्णरतिप्रमोदान् =	रूपप्रतिविषयानन्दको यानी अप्सरादि विषयों को
अमृतानाम्	= देवतनको		
उपेत्य	= प्राप्तहोकर	अभिध्यायन्	= विचार करता हुआ
जीर्य्यन्	= जरामरणवान्	अतिदीर्घे	= अतिशय
क्वधःस्थः	= पृथिवी में रहनेवाला	जीविते	= जीवनेविषे
कः	= कौन	रमेत	= रमणकरैगा
प्रजानन्	= विवेकी		
मर्त्यः	= पुरुष		

भावार्थ ।

अजीर्यतामिति—जिस पुरुषको उत्तम फलकी प्राप्ति होतीहो तो उस उत्तम फलको त्याग करके निकृष्ट फलकी इच्छा करै तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह मूर्ख है, मैं अपने उत्तम फल कोही लेऊंगा ॥ अजीर्य्यताम् ॥ हे यम ! जरा मरण धर्मवाला जो मनुष्य है वह चिरकालस्थायी जो देवता हैं उनके समीप प्राप्तहोकर और उनसे उत्तम फलकी प्राप्तिकी इच्छा करके फिर कैसे निकृष्ट फलकी कामना करसक्ता है, मैं अपने उसी उत्तम वरको लेऊंगा जिसको कि मैंने मांगा है । मनुष्य जराआदिक दोषों से संयुक्त हैं और पृथिवीपर सुन्दर स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करने से जो हर्ष होता है वह भी दुःखरूप है उनमें और अतिदीर्घ आयु की कामना में कौन बुद्धिमान् पुरुष आसक्त होवैगा ॥ २८ ॥

मूलम् ॥

(२९) यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत् योऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टोनान्यन्तस्मान्नचिकेता वृणीते ॥ २९ ॥

पदच्छेदः ॥

यस्मिन् इदम् विचिकित्सन्ति मृत्यो यत् साम्पराये महति ब्रूहि नः तत् यः अयम् वरः गूढम् अनुप्रविष्टः न अन्यम् तस्मात् नचिकेता वृणीते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यस्मिन्	= जिसमृतकविषे	साम्पराये	= परलोककी गतिविषे
+ च	= और	यत्	= जो
यस्मिन्महति	= जिसबड़ी		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इदम् = यह	अनुप्रविष्टः = गुप्त
विचिकित्सन्ति = संशयकरते हैं	वरः = वर
तत् = तिसको	तस्मात् = तिससे भिन्न
नः = मेरेलिये	अन्यम् = और
ब्रूहि = कहतू	+वरम् = वरको
यः = जो	नचिकेताः = नचिकेता
अयम् = यह	न = नहीं
गूढम् = कठिन	वृणीते = मांगता है ॥
+च = और	

इति प्रथमाध्यायेप्रथमावल्लीसंपूर्ण ॥

भावार्थ ।

यस्मिन्निति—नचिकेता कहता है, हे मृत्यो ! जिस आत्मतत्त्व प्रति देवता भी संशयको प्राप्त हैं, यानी शरीर से अतिरिक्त लोकान्तर, देशान्तर, जन्मान्तर बिषे गमन करनेवाला कोई आत्मा है वा नहीं है, और जिसका निर्णय देवता भी नहीं करसक्के हैं, तिस आत्मतत्त्वका निर्णय आप मेरेप्रति करिये, मैं जानताहूं कि आत्माका ज्ञान गोप्य है, परन्तु मैं अपने इस गूढ़वरको छोड़कर और किसीवरको नहीं चाहताहूं और न लेऊंगा ॥ २९ ॥

इति कठोपनिषदिप्रथमावल्लिः ॥ १ ॥

मूलम् ॥

(१) ॐ अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषꣳसिनीतः तयोः श्रेयआददानस्य साधुभवति हीयतेऽर्थाद्यउ प्रेयोवृणीते १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

अन्यत् श्रेयः अन्यत् उत एव प्रेयः ते उभे नानार्थे पुरुषम् सिनीतः तयोः श्रेयः आददानस्य साधु भवति हीयते अर्थात् यः उ प्रेयः वृणीते॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यमराज उवाच =	यमराज बोलते भये कि	तयोः =	उन दोनों में से
श्रेयः =	श्रेययाने विद्या	श्रेयः =	विद्या
अन्यत् =	और ही है	आददा नस्य =	ग्रहण करनेवाले का
उत =	और	साधु =	कल्याण
प्रेयः =	प्रेययानेअविद्या	भवति =	होता है
अन्यत् एव =	औरही है	उ =	और
ते =	वे	यः =	जो
उभे =	दोनों	प्रेयः =	अविद्या को
नानार्थे =	भिन्न२प्रयोजन के वास्ते	वृणीते =	ग्रहण करता है
पुरुषम् =	पुरुषको	+ स =	वह
सिनीतः =	बांधते हैं	अर्थात् =	पुरुषार्थ से
		हीयते =	हीन होता है॥

भावार्थ ।

जब यमराज ने नाचिकेता की परीक्षा करके जाना कि वह आत्मविद्याका अधिकारी है तब विद्या और अविद्याका विभाग करके नाचिकेता के प्रति आत्मविद्याको उपदेश करते हैं॥ अन्यच्छ्रेयइति॥ यमराज कहते हैं हे नाचिकेता! मोक्षकाहेतु जो विद्याहै सो पृथक् है और विषय भोगका साधनकर्म पृथक् है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्या, और कर्म यह दोनों भिन्न २ फलवाले होनेसे मोक्ष और विषय भोगका अर्थी जो पुरुष है तिसको बंधायमान करते हैं, उन दोनोंमें से जो श्रेय याने मोक्षका ग्रहण करनेवाला है, उसको मोक्षरूपी नित्यफलकी प्राप्ति होतीहै, और जो अविवेकी अविद्यात्मक कर्मका ग्रहण करनेवाला है उसको निकृष्टनाशी फल मिलताहै और वह मोक्षसे गिरजाताहै याने मोक्षको नहीं प्राप्त होता है ॥ १ ॥ मूलम् ॥

(२) श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः श्रेयोहिधीरोऽभिप्रेयसोवृणीते प्रेयोमन्दो योगक्षेमाद्वृणीते ॥ २ ॥

पदच्छेदः

श्रेयः च प्रेयः च मनुष्यम् एतः तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः श्रेयः हि धीरः अभिप्रेयसः वृणीते प्रेयः मन्दः योगक्षेमात् वृणीते ॥

अन्वयः	पदार्थ
श्रेयः	= श्रेय
च	= और
प्रेयः	= प्रेय
मनुष्यम्	= मनुष्यको
एतः	= प्राप्त होते हैं
तौ	= उनदोनों को
सम्परीत्य	= देखकरके
धीरः	= बुद्धिमान् पुरुष (उनको)
विविनक्ति	= पृथक् २ करता है
धीरः	= धीरपुरुष
श्रेयः	= श्रेयको
हि	= ही
अभिप्रेयसः	= प्रेय से भिन्न
वृणीते	= ग्रहण करता है
च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन्दः = मन्दबुद्धिवाला पुरुष	योगक्षेमात्	= योगक्षेम करके
प्रेयः = प्रेयकोही	वृणीते = ग्रहण करताहै।	

भावार्थ ।

श्रेयश्चेति-(प्र०) जब पुरुषकेही आधीन मोक्ष और बन्धनके साधन हैं तब फिर क्योंनहीं पुरुष मोक्षकेही साधनों को करता है ॥ उ० ॥ मोक्ष और विषयभोग अर्थात् ब्रह्मविद्या और कर्मोंका भेदज्ञान लोगोंको नहीं है इसीलिये मोक्षके साधनों को लोग नहीं करते हैं, इसी वार्त्ताको मन्त्रभी कहता है ॥ श्रेयश्चप्रेयश्चेति ॥ श्रेय और प्रेय याने ब्रह्मविद्या और कर्म यह दोनों पुरुषको प्राप्तहोने योग्य हैं, धीरपुरुष उन दोनों के फलको प्रथक् २ करके देखता है, और विचार व अल्पपरिश्रम करके साध्य महान् फलवाली जो आत्मविद्या है उसको ग्रहण करता है, और भारी परिश्रम करके साध्य अल्पनाशी फलवाला जो कर्म है, उसको त्यागता है जो अल्पबुद्धिवाला पुरुष है, वह योगक्षेम करके अविद्यारूपी कर्मोंकाही ग्रहण करता है ॥ २ ॥

मूलम् ॥

(३) सत्वं प्रियान् प्रियरूपांश्च कामानभिध्यायन्नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः नैतां सृङ्कां वित्तमयीमवाप्तोयस्यां मज्जन्ति बहवो मनुष्याः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

सः त्वम् प्रियान् प्रियरूपान् च कामान् अभिध्यायन् नचिकेतः अत्यस्राक्षीः न एताम् सृङ्काम् वित्तमयीम् अवाप्तः यस्याम् मज्जन्ति बहवः मनुष्याः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सः	= सो
त्वम्	= तू
नचिकेतः	= हे नचिकेता
प्रियान्	= प्रियपुत्र कलत्र धनादिकों को
च	= और
प्रियरूपान्	= प्रियरूप
कामान्	= भोगों को
अभिध्यायन्	= विचारता हुआ
वित्तमयीम्	= धनयुक्तकर्मगतिको
यस्याम्	= जिसमें
बहवः	= बहुत से
मनुष्याः	= मनुष्य
मज्जन्ति	= डूबते हैं
न	= नहीं
अवाप्तः	= प्राप्त होता
भया तू ॥	

अन्वयः	पदार्थ
एताम्	= इस
सृङ्काम्	= बाहुल्यता
त्यत्याक्षीः	= त्यागताभया

भावार्थ ।

सत्वमिति–यम कहते हैं हे नाचिकेता ! तुम मोक्षके अधिकारी हो, तुमने पुत्रादिक और अप्सराआदिक जोकि प्रिय विषय हैं, उनको अनित्य और असार जानकर और उनमें दोष दृष्टि करके उनका त्याग किया है, यह तुम्हारी बड़ी बुद्धिमत्ता है, यह जो मूढ़जनोंकी प्रवृत्तिका विषयभूत धनादिक हैं, और जिसमें अनेक अज्ञानी पुरुष मग्नहोते हैं, उन सबको तुमने त्याग किया है, तुम धन्यहो, धन्यहो ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

(४) दूरमेते विपरीते विषूची अविद्या या च विद्येति ज्ञाता विद्याभीप्सिनन्नचिकेतसंमन्येन कामा बहवोलोलुपन्तः ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

दूरम् एते विपरीते विषूची अविद्या च या विद्येति ज्ञाता विद्याभीप्सिनम् नचिकेतसम् मन्ये त्वा कामाः बहवः लोलुपन्तः ॥

अन्वयः	पदार्थ
एते	= ये दोनों
या	= जो
विद्या	= विद्या
च	= और
अविद्या	= अविद्या
इति	= करके
ज्ञाता	= प्रसिद्ध हैं
ते	= वे
दूरम्	= अत्यन्त
विपरीते	= एक दूसरेसे विरुद्ध धर्मवाली
च	= और
विषूची	= भिन्न भिन्न फल वाली हैं
त्वा	= तुझ
नचिके तसम्	= नचिकेता
विद्याभी प्सिनम्	= विद्याका हनेवाला
मन्ये	= मानता हूं
+ हि	= क्योंकि
+ त्वाम्	= तुझको
बहवः	= बहुत
कामाः	= भोग भी
न लोलु पन्तः	= नहीं लुभाये ॥

भावार्थ ।

दूरमेतइति–विद्या और अविद्या के स्वरूप में और उनके फलमें जो विरोध है उसको दिखलाते हैं ॥ दूरमेते ॥ यह वक्ष्यमाण विद्या और अविद्या हैं, सो दोनों स्वरूपसेही एक सरे के विरोधी और परस्पर विलक्षण हैं, और भिन्न २ फलवा भी हैं, कर्मरूप अविद्या विषय सुखका साधन है, और आत्मज्ञ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप विद्या मोक्षका साधन है ॥ हे नचिकेता ! इन दोनों के मध्य विषे मैं तुमको विद्या अर्थात् मोक्षका अधिकारी मानताहूं ॥ क्योंकि अनेकप्रकार की जो कामना अप्सरा आदिक विषयभोग हैं उन सबको तुमने त्यागदिया ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

(५) अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

अविद्यायाम् अन्तरे वर्त्तमानाः स्वयम् धीराः पण्डितम्मन्यमानाः दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढाः अन्धेन एव नीयमानाः यथा अन्धाः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अविद्यायाम्	= अविद्याके	दंद्रम्यमाणाः	= अनेक कुटिलभेषको धारणकरतेहुये
अन्तरे	= मध्य बिषे	परियन्ति	= भ्रमते रहते हैं
वर्त्तमानाः	= वर्त्तते हुये	यथा	= जैसे
मूढाः	= मूढजन	अन्धः	= अन्धापुरुष
स्वयम्	= अपने को	अन्धेनएव	= अन्धे करकेही
धीराः	= धीर	नीयमानाः	= लेगयाहुआ भ्रमताहै तैसे॥
पण्डितम्	= पण्डित		
मन्यमानाः	= माननेवाले		

भावार्थ ।

अविद्यामन्तरइति ॥ इसप्रकार मोक्षार्थी नचिकेता की स्तुति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को करके यमराज अब शास्त्रविहित कर्मोंके अनुष्ठान करनेवा
अज्ञानियोंकी निंदा करतेहैं ॥ अविद्यायामन्तरे ॥ अविद्या
अविद्याका कार्य्य जो कर्म है उसके अभिमानी जो अविवे
मूढ़जन हैं, वे कहते हैं कि अलौकिक बुद्धिमान् हमहीं हैं,
अपने को ही शास्त्री पण्डित मानते हैं, और अपने तुल्य दूसरे
सीको भी नहीं मानते हैं, और अत्यन्त कुटिल मार्ग जो जरा मृ
रोग करके दूषितहैं तिसीकी वे इच्छा भी करते हैं, और इसीका
वे अनेक प्रकारके अनर्थों कोही प्राप्तहोते हैं, जैसे एक अ
दूसरे अन्धेको मार्ग दिखलाने के लिये ले जाताहै, और आप
गड्ढेमें गिरता है और दूसरेको भी गिराता है, तैसे वे पण्डित
भिमानी कर्मीभी हैं, आप तो अनर्थरूपी संसारको प्राप्तहोते
हैं औरों कोभी अपने साथ ले जाते हैं ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

(६) न साम्परायः प्रतिभाति बालम्प्रमाद्य
वित्तमोहेन मूढम् अयं लोको नास्ति पर
मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

न साम्परायः प्रतिभाति बालम् प्रमाद्यन्त
वित्तमोहेन मूढम् अयम् लोकः न अस्ति
इति मानी पुनः पुनः वशम् आपद्यते मे ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
साम्परायः	= शास्त्रोक्तकर्म	बालम्	= अविवेकी
वित्तमोहेन	= धन पुत्रादि मोह करके	प्रमाद्यन्तम्	= प्रमादीको
मूढम्	= मूढ़	नप्रतिभाति	= नहीं प्रकाशता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अयम् = यही	मानी = मानने वाला पुरुष
लोकः = लोक है	पुनः पुनः = वारंवार
परः = परलोक	मे = मुझ यमराजके
नअस्ति = नहीं है	वशम् = वशको
इति = ऐसा	आपद्यते = प्राप्त होता है॥

भावार्थ।

नसांपरायइति—पूर्वोक्त मन्त्र करके शास्त्रविहित कर्मों के करनेवालोंकी यमराज ने निंदा की है अब इस मन्त्रकरके निषिद्धकर्मोंके करनेवालों की भी यमराज निंदा करते हैं॥ नेति॥ सांपराय नाम परलोकका है, तिसकी प्राप्तिका साधन कर्म उपासना आदिक हैं, सो कर्मउपासना आदिक विवेक से शून्य पुरुषों को अच्छे नहीं लगते हैं, क्योंकि वे प्रमादी हैं, और न उनको कर्मउपासना का फल मिलताहै, क्योंकि उनका चित्त स्त्री धनादिकों की प्राप्तिमेंही लगा रहता है, और धनके लोभसे उनके अन्तःकरण आच्छादित हैं, इसी वास्ते वे नास्तिक हैं, क्योंकि वह कहते हैं कि यह जो दृश्यमान स्त्री पुत्रादिकों करके युक्त लोक है वही सत्यहै, जोकि दिखाई नहीं पड़ता है वह असत्है, यमराज भगवान् कहते हैं वे बार २ जन्मते मरते हैं, और पुनः २ मेरेही पास आतेहैं, और मैंहीं उनको तुच्छयोनीमें डालकर शासना देताहूं॥६॥

मूलम्॥

(७) श्रवणायापिबहुभिर्योनलभ्यः शृण्वन्तोपिबहवोयन्न विद्युराश्चर्य्योवक्ता कुशलोऽस्यलब्धाऽऽश्चर्य्योज्ञाता कुशलानुशिष्टः॥ ७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

श्रवणाय अपि बहुभिः यः न लभ्यः शृण्वन्तः अपि बहवः यम् न विद्युः आश्चर्य्यः वक्ता कुशलः अस्य लब्धा आश्चर्य्यः ज्ञाता कुशलानुशिष्टः॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो
बहुभिः	= बहुतों करके
श्रवणाय	= सुननेके लिये
अपि	= भी
नलभ्यः	= नहीं प्राप्तहोने योग्य है
+ च	= और
यम्	= जिसको
शृण्वन्तः	= सुनते हुये
अपि	= भी
बहवः	= बहुतेरे
नविद्युः	= नहीं जानते हैं
इति	= ऐसे
वक्ता	= आत्मा का कहनेवाला
आश्चर्यः	= आश्चर्यरूप है
+ च	= और
अस्य	= इसका
लब्धा	= पानेवाला
कुशलः	= निपुण है
+ च	= और
अस्य	= इसका
ज्ञाता	= जाननेवाला
कुशलानुशिष्टः	= श्रोत्रियब्रह्मनेष्ठि आचार्य से शिक्षितहुवा भी
आश्चर्यः	= आश्चर्यरूपहै॥

भावार्थ ।

श्रवणायापीति–यमराज कहते हैं हे नचिकेता! संसाररूपी चक्रमें भ्रमण करते जो अनेकपुरुष हैं उनमें से कोई बिरलाही तुम्हारे सदृश मोक्षका भागी होताहै, क्योंकि आत्मतत्त्व बड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्विज्ञेय है इसीवास्ते बहुत से पुरुषों को तो यह आत्मतत्त्व श्रवणकरने को भी नहीं मिलताहै, और बहुत से पुरुष नित्यश्रवण भी करते हैं तब भी नहीं जानसक्के हैं, क्योंकि उनका अन्तःकरण मलीन है, यमराज कहते हैं जैसे इस आत्माका श्रोता दुर्लभ है तैसेही इसका वक्ताभी दुर्लभ है,इस आत्माको श्रवण करके भी जानना कठिन है,जिसने आत्माका साक्षात्कार करलिया है,ऐसा ब्रह्मवित् आचार्य कोई बिरलाही संसार में होता है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

(८) ननरेणावरेण प्रोक्तएषः सुविज्ञेयोबहुधा चिन्त्यमानोऽनन्यप्रोक्ते गतिरत्र नास्त्यणीयान् ह्यतर्क्यमणुप्रमाणात् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

न नरेण अवरेण प्रोक्तः एषः सुविज्ञेयः बहुधा चिन्त्यमानः अनन्यप्रोक्ते गतिः अत्र न अस्ति अणीयान् हि अतर्क्यम् अणुप्रमाणात् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अवरेण	= अश्रेष्ठतर्की	नसुविज्ञेयः	= नहीं सम्यक् प्रकार जानने योग्य है
नरेण	= पुरुषकरके	+ च	= और
बहुधा	= बहुतप्रकारसे	अनन्यप्रोक्ते	= अद्वैत वादि आचार्य्यकर के कहे हुये
प्रोक्तः	= कहाहुआ और		
चिन्त्यमानः	= विचाराहुआ		
एषः	= यहआत्मा		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अत्र = इस आत्माविषे	+एषः आत्मा=यह आत्मा
गतिः = कोई चिंता या शंका	अतर्क्यम् = तर्करहित
नअस्ति = नहीं है	अणुप्रमाणात् = सूक्ष्म परमाणु से भी
हि = क्योंकि	अणीयान् = सूक्ष्म है॥

भावार्थ।

ननरेणेति–आत्माके वक्ता और ज्ञाताकी दुर्लभता में जो कारण है उसको कहतेहैं। जिसने आप अपने आत्माका साक्षात्कार नहीं कियाहै उस बलहीनका कहाहुवा यह आत्मा सम्यक्ज्ञात नहीं होताहै, क्योंकि बहुत प्रकारके वादियोंका जो विवाद है वही आत्मा के जानने में हानिहै, कोई कहता है आत्माहै, कोई कहता नहीं है, कोई उसको कर्त्ता कहता है, कोई अकर्त्ता कहता है, कोई शुद्ध कोई अशुद्ध बताताहै, इसप्रकार बहुत तरहके विवाद हैं, जिसके कारण आत्मा यथार्थ ज्ञात नहीं होताहै॥ प्र०। तब फिर किस करके कहाहुवा आत्मा सुष्ठुज्ञात होताहै? ॥ उ०। अनन्यप्रोक्तेति॥ मैं ब्रह्मसे भिन्न नहींहूं और न मेरेसे ब्रह्म भिन्न है इसप्रकार के ज्ञानवान् आचार्य्य के उपदेश से जो आत्मज्ञान है वह संशयात्मक और विपर्ययात्मक नहीं होताहै, यह आत्मा अतिसूक्ष्म है, इसलिये विना आत्मवित् आचार्य्य के उपदेशसे केवल तर्क करके प्राप्तहोने योग्य नहीं॥ ८॥

मूलम्॥

(९) नैषातर्केण मतिरापनेया प्रोक्तान्येनैव सुज्ञानाय प्रेष्ठयान्त्वमापः सत्यधृतिर्बतासित्वादृङ्नो भूयान्नचिकेतःप्रष्टा॥ ९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

न एषा तर्केण मतिः आपनेया प्रोक्ता अन्येन एव सुज्ञानाय प्रेष्ठ यामृ त्वमृ आपः सत्यधृतिः बत असि त्वादृक् नः भूयात् नचिकेतः प्रष्टा ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एषा	= यह	तत्	= वह
मतिः	= ब्रह्मविषयिणीबुद्धि	अन्येन	= आत्मवेत्ता-करके
तर्केण	= तर्ककरके	एव	= ही
न	= नहीं	प्रोक्ता	= उपदेशकीहुई
आपनेया	= प्राप्त होनेयोग्यहै	सुज्ञानाय	= आत्मज्ञानार्थ
प्रेष्ठ	= हेप्रियदर्शन	+ भवति	= होती है
त्वम्	= तू	नचिकेतः	= हेनचिकेता
सत्यधृतिः	= सत्य धर्मावलम्बी	त्वादृक्	= तेरेसमान
बत असि	= श्रेष्ठहै	नः	= हमको
याम्	= जिसब्रह्मविषयिणीबुद्धिको	+ अन्यः	= अन्य
आपः	= प्राप्तहुआहैतू	प्रष्टा	= प्रश्नकर्ता
		+ अपि	= भी
		भूयात्	= मिलै ॥

भावार्थ ।

(नैषेति–प्र०) स्वबुद्धि करके भी कोई एक तर्क कुशल पुरुष आत्माको जानलेगा आचार्य्य की क्या आवश्यकता है ॥ उ० ॥ नैषातर्केण ॥ यह जो आत्मविषयिणी बुद्धि है सो तर्ककरके अर्थात् अपनी कल्पनामात्रकरके प्राप्तहोने के योग्य नहीं है हे प्रेष्ठ!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे प्रियतम ! नास्तिकसे भिन्न जो आस्तिक है उसीके उपदेश से यह आत्मज्ञान आत्मा के साक्षात्कार होनेका हेतु होताहै । हे नचिकेता ! मेरी ऐसी इच्छा होतीहै कि जैसे तुम कुशल प्रश्नकर्ता हो, ऐसा दूसरा भी मिले, तुम सत्यधृतहो, अर्थात् अपनीधीरता से चलायमान न होनेवाले केवल एक तुमहींहो, तुम्हारे ऐसे प्रश्नका करता मैंने दूसरा कोई नहीं देखाहै ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

(१०) जानाम्यहꣳशेवधिरित्यनित्यं न ह्यध्रुवैः प्राप्यतेहि ध्रुवन्तत् ततो मया नाचिकेतश्चितोऽग्निरनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः

जानामि अहम् शेवधिः इति अनित्यम् न हि अध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवम् तत् ततः मया नाचिकेतः चितः अग्निः अनित्यैः द्रव्यैः प्राप्तवान् अस्मि नित्यम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
शेवधिः	= स्वर्गादिकर्म फल
अनित्यम्	= अनित्य है
इति	= ऐसा
अहम्	= मैं
जानामि	= जानता हूं
हि	= क्योंकि
अध्रुवैः	= अनित्य यज्ञ अग्निहोत्रादिकर्म से
हि	= निश्चयकरके
ध्रुवम्	= नित्यसाक्षी आत्मा
नप्राप्यते	= नहींप्राप्तहोताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ततः = इसलिये	चितः = सेवनकी गईहै
मया = मुझकरके	+ च = और
नाचिकेतः = नाचिकेतसं-	+तस्मात् = इसकारण
ज्ञक	+ अहम् = मैं
अग्निः = अग्नि	नित्यम् = नित्य यमपद-
अनित्यैः = अनित्य	वीको
द्रव्यैः = पशु आदि	प्राप्तवान् = प्राप्तहुआ
द्रव्यों करके	अस्मि = हूँ ॥

भावार्थ ।

जानाम्यहमिति—यमराज कहतेहैं हे नचिकेता ! कर्मोंका फल-रूप जो निधि है वह अनित्यहै, और ज्ञानसे उत्पन्न जो मोक्षरूपी फलहै वह नित्यहै, यह मोक्षफल अनित्य साधनों याने कर्म्मोंकरके प्राप्त नहीं होताहै, कर्मोंका अनित्यफल द्रव्य पशुआदिकहैं, उन्हों करके चयनकरी हुई स्वर्गसुखसाधक अग्नि है, तिसी करके मैं चिरस्थायी यमपदवी को प्राप्तहुवाहूं, सोभी अनित्यही है ॥ १० ॥

नोट—यमराज भगवान् कहतेहैं कि मैंने ब्रह्मज्ञानके अनन्तर नचिकेतनामक अग्नि के उपासना द्वारा यमराजपदवी को नित्यजान कर अपनेको प्राप्त कियाहै सो उसको तूत्यागता भया इसलिये हे नचकेता ! तू धन्यहै धन्यहै ॥

मूलम् ॥

(११) कामस्याप्तिञ्जगतः प्रतिष्ठां क्रतोरा नन्त्यमभयस्यपारम् स्तोम महदुरुगायम्प्रतिष्ठां दृष्ट्वा धृत्या धीरो नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

कामस्य आप्तिम् जगतः प्रतिष्ठाम् क्रतोः आनन्त्यम् अभयस्य पारम् स्तोम महत् उरुगायम् प्रतिष्ठाम् दृष्ट्वा धृत्या धीरः नचिकेतः अत्यस्राक्षीः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
कामस्य	= कामनाकी	+ च	= और
आप्तिम्	= प्राप्ति को	स्तोम महत्	= स्तुत्य ऐश्वर्य को
+ च	= और	+ च	= और
जगतः	= जगत् के	उरुगायम्	= भारीगतिको
प्रतिष्ठाम्	= आश्रय को	+ च	= और
+ च	= और	प्रतिष्ठाम्	= प्रतिष्ठाको
क्रतोः	= यज्ञके	दृष्ट्वा	= देखकरके
आनन्त्यम्	= अनंतफलको	धृत्या	= धैर्यतासे
+ च	= और	धीरः	= तूबुद्धिमान्
अभयस्य	= अभय याने स्वर्गके	नचिकेतः	= हेनचिकेता
पारम्	= पार को अर्थात् स्वर्ग की प्राप्ति को	अत्यस्राक्षीः	= त्यागकरता भया ॥

भावार्थ।

कामस्येति-यम कहतेहैं हे नचिकेता! संपूर्ण कामनाओं की अवधिको और चराचरात्मक जगत्का आधार जो हिरण्यगर्भ उसकी यज्ञके अनन्तफलको स्वर्ग की प्राप्ति के तुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त होनेयोग्य भारीगतिको प्रतिष्ठाको देखकरके धीर्यता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्याग करताभया तू धन्य है तेरे बराबर संसार में कोई नहीं है तू ब्रह्मविद्या के योग्य है ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

(१२) तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं गुहाहितङ्गह्वरेष्ठं पुराणम् अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

तम् दुर्दर्शम् गूढम् अनुप्रविष्टम् गुहाहितम् गह्वरेष्ठम् पुराणम् अध्यात्मयोगाधिगमेन देवम् मत्वा धीरः हर्षशोकौ जहाति ॥

अन्वयः	पदार्थ
तम्	= उस
दुर्दर्शम्	= दुर्दर्श
गूढम्	= सघन
अनुप्रविष्टम्	= छिपे हुये
गुहाहितम्	= बुद्धिमें रखेहुये
+ च	= और
गह्वरेष्ठम्	= अन्तःकरण रूपी गुहा में स्थितहुये
पुराणम्	= सनातन
देवम्	= आत्माको
अध्यात्मयोगाधिगमेन	= आत्मविद्या के योग से
मत्वा	= अनुभवकरके
धीरः	= धीरपुरुष
हर्षशोकौ	= हर्षशोकको
जहाति	= त्याग करता है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

तंदुर्दर्शमिति—यमराज भगवान् अब नचिकेता के प्रति आत्मलाभ के साधनों को और उनके फलको दिखलाते हैं ॥ तंदुर्दर्शमिति ॥ हे नचिकेता ! जिस आत्मा के जानने की इच्छा करके तुम मुझसे पूछतेहो सो वह आत्मा अध्यात्मयोग करके अधिगम्यहै अर्थात् चित्तकी एकाग्रता करकेही जानाजाता है, और उसको मनके निरोधद्वारा साक्षात्कार करके बुद्धिमान् पुरुष हर्ष शोकसे रहित होजाता है, वह आत्मा असमाहित चित्तवाले पुरुषों करके प्राप्तहोने को अशक्यहै, मायाके कार्य्यों करके आवृत है, कार्य्य कारण समुदायकोंको रचकरके उसमेंही व्याप्त होकर स्थित है, और जीवों के बुद्धिरूपी गुहाविषे स्थित है, और सनातन है ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

(१३) एतच्छ्रुत्वा सम्परिगृह्य मर्त्यः प्रवृह्य धर्म्यमणुमेतमाप्य स मोदते मोदनीयꣳ हि लब्ध्वा विवृतꣳहि सद्म नचिकेतसम्मन्ये ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

एतत् श्रुत्वा सम्परिगृह्य मर्त्यः प्रवृह्य धर्म्यम् अणुम् एतम् आप्य सः मोदते मोदनीयम् हि लब्ध्वा विवृतम् हि सद्म नचिकेतसम् मन्ये ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एतत्	= इस	प्रवृह्य	= पृथक्करके
धर्म्यम्	= धर्मकरके प्राप्य आत्माको	+ च	= और
		एतम्	= इस
श्रुत्वा	= सुनकरके	अणुम्	= अतिसूक्ष्म आत्माको
संपरिगृह्य	= मननकरके		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप्य = प्राप्तहोकरके
+ च = और
मोदनीयम् = हर्ष करनेयोग्य आत्माको
लब्ध्वा = पाकरके
सः = आत्मवेत्ता
मर्त्यः = पुरुष
मोदते = प्रसन्न होताहै

हि = इस लिये
हि = निश्चयकर के
नचिके, तसम् = तुझ नचिकेता को
सद्म = ब्रह्मलोक के द्वार के
विवृतम् = सन्मुख
मन्ये = मानताहूं मैं ॥

भावार्थ ।

एतच्छ्रुत्वेति—मूलके सहित संसारका नाशक जो तत्वज्ञानहै तिसको दिखला करके अब आनन्द की प्राप्तिके साधन को कहते हैं ॥ एतच्छ्रुत्वा ॥ इस धर्म्म से प्राप्य सूक्ष्म आत्म तत्वको गुरुमुख से श्रवणकरके मननकरके, निदिध्यासनकरके और साक्षात्कार करके विद्वान् हर्षको प्राप्त होताहै हे, नचिकेता ! इसप्रकार के आत्मारूपी मन्दिर में तुम प्रवेश होनेके योग्यहो ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

(१४) अन्यत्रधर्मादन्यत्राधर्मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात् अन्यत्र भूताच्च भव्याच्च यत्तत्पश्यसि तद्वद ॥ १४ ॥

पदच्छेदः

अन्यत्र धर्मात् अन्यत्र अधर्मात् अन्यत्र अस्मात् कृताकृतात् अन्यत्र भूतात् च भव्यात् च यत् तत् पश्यसि तत् वद ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
+ यत्	= जो
धर्म्मात्	= धर्म से
अन्यत्र	= पृथक् है
+ च	= और
+ यत्	= जो
अधर्मात्	= अधर्म से
अन्यत्र	= पृथक् है
+ च	= और
+ यत्	= जो
अस्मात्	= इस
कृताकृतात्	= कार्य कारणसे
+ अपि	= भी
अन्यत्र	= पृथक् है
+ च	= और
+ यत्	= जो
भूतात्	= भूतकाल से
+ च	= और
भव्यात्	= भविष्यत् काल से
अन्यत्र	= पृथक् है
तत्	= तिसको
+ यदि	= अगर
पश्यसि	= जानतेहो तो आप
तत्	= उसको
वद	= कहिये ॥

भावार्थ ।

अन्यत्रेति—नचिकेता यमराज से पूछताहै ॥ अन्यत्रधर्मात् ॥ हे महाराज ! फल और कारक के सहित यज्ञादिरूप जो धर्म है उससे भी जो पृथक्है, और शास्त्रअहित जो हिंसादिरूप अधर्म है उससे भी जो पृथक् है, और हमारी बुद्धिका विषय जो कृत्य अकृत्य है अर्थात् कार्य्यकारण है उससे भी जो प्रथक् है, और भूत भविष्यत् वर्त्तमान् जो तीनकाल हैं उससे भी जो पृथक् है उस वस्तुको, यदि आप जानतेहों, तो मुझसे कृपाकरके मेरे प्रति कहिये ॥ १४ ॥

नोट—नचिकेता के प्रश्नका उत्तर यमराज भगवान् अगले मन्त्रों में देते हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१५) सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणिच यद्वदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य्यञ्चरन्ति तत्तेपदंसंग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

सर्वे वेदाः यत् पदम् आमनन्ति तपांसि सर्वाणि च यत् वदन्ति यत् इच्छन्तः ब्रह्मचर्य्यम् चरन्ति तत् ते पदम् संग्रहेण ब्रवीमि ओम् इति एतत् ॥

अन्वयः	पदार्थ
सर्वे	= सब
वेदाः	= वेद
यत्	= जिस
पदम्	= पदको
आमनंति	= प्रतिपादन करते हैं
च	= और
सर्वाणि	= सब
तपांसि	= तपस्या
यत्	= जिसको
वदन्ति	= प्रतिपादन करते हैं
+ च	= और
यत्	= जिसको
इच्छन्तः	= इच्छा करते हुये
+मुमुक्षवः	= मुमुक्षुजन
ब्रह्मचर्य्यम्	= ब्रह्मचर्य्यको
चरन्ति	= करते हैं
तत्	= उस
पदम्	= पदको
ते	= तेरेलिये
संग्रहेण	= संक्षेप से
ब्रवीमि	= कहताहूं मैं
एतत्	= उसी पदका
ओम्	= ओम्
इति	= करके भी
+ वदन्ति	= कहते हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

सर्वेवेदाइति–साधनों से विना तत्त्वज्ञानका होना असंभव है, इसलिये नाचिकेता के प्रति प्रथम यमराज आत्मज्ञान के साधनों को कहते हैं ॥ सर्वेवेदाः । सम्पूर्ण वेदान्त जिस आत्मपदको प्रतिपादन करते हैं और संपूर्ण तपरूप कर्म चित्तकी शुद्धिद्वारा जिसपदको प्रतिपादन करते हैं और जिस पदकी प्राप्तिकी इच्छा करके मुमुक्षुजन ब्रह्मचर्य्य को धारण करते हैं, उस आत्मपदको मैं तुम्हारे प्रति कहताहूं॥ हे नाचिकेता ! ॐमित्येतत् ॥ ॐ यह जो अक्षर है सोई ब्रह्मका वाचक है,और सोई ब्रह्मका प्रतीक भी है, इसीलिये यही ब्रह्महै ॥ समाहित चित्तवालों को ॐकार के उच्चारण करने से साक्षीचेतनका ज्ञान होताहै, इसलिये यही ब्रह्म है,इसही ॐकारको आश्रयकरके 'ब्रह्माहमस्मि' मैंही ब्रह्महूं ऐसा चिन्तन करै, या इसमेंही ब्रह्मदृष्टि करै ॥ १५ ॥

मूलम् ॥

(१६) एतद्ध्येवाक्षरम्ब्रह्म एतदेवाक्षरम्परम् एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत् ॥ १६ ॥

पदच्छेदः

एतत् हि एव अक्षरम् ब्रह्म एतत् एव अक्षरम् परम् एतत् हि एव अक्षरम् ज्ञात्वा यः यत् इच्छति तस्य तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एतत्	= यही	एतत्एव	= यही
एव हि	= निश्चयकरके	अक्षरम्	= अविनाशी
अक्षरम्	= नाशरहित	परम्	= परब्रह्म है
ब्रह्म	= अपर ब्रह्म है	एतत्एव	= इसही
+च	= और	अक्षरम्	= अक्षर को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञात्वा = जान करके	तस्य = उसी को
+यः = जो	तत् = वह
यत् = जिसको	भवति = प्राप्त होताहै॥
इच्छति = चाहता है	

भावार्थ।

एतदिति—आत्मज्ञानका साधन भूत जो प्रणव की उपासना है तिसको कहकर अब ॐकार अक्षर की स्तुति और फलको कहते हैं। यह जो प्रणवरूप अक्षर है वही ब्रह्मरूप है, इसीको पर अपररूप ब्रह्म जानकरके और ध्यानकरके उपासक पर अपररूप ब्रह्मभाव को प्राप्त होताहै, अर्थात् उपासक यदि परब्रह्मरूप होनेकी इच्छाको करता है तो वह परब्रह्म होताहै, यदि अपर ब्रह्म जो हिरण्यगर्भ है उसकी प्राप्तिकी इच्छा करताहै तो हिरण्यगर्भभाव को प्राप्त होताहै अर्थात् जब निर्गुणब्रह्मकी उपासना ॐकार अक्षर करके करता है तो वह निर्गुण ब्रह्म होजाता है और जब सगुणब्रह्मकी उपासना ॐकार अक्षर करके करता है तो सगुणब्रह्म होजाता है॥ १६॥

मूलम्॥

(१७) एतदालम्बनश्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते॥ १७॥

पदच्छेदः

एतत् आलम्बनम् श्रेष्ठम् एतत् आलम्बनम्
परम् एतत् आलम्बनम् ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एतत्	= यह ॐकार	+च	= और
आलम्बनम्	= आलम्बन	एतत्	= यह
श्रेष्ठम्	= श्रेष्ठहै	आलम्बनम्	= आलम्बन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परम् = उत्कृष्ट है	ज्ञात्वा = जानकर के
+ च = और	ब्रह्मलोके = ब्रह्मलोकमें
एतत् = इस	महीयते = पूज्य होता
आलम्बनम् = आलम्बन	है ॥
ओंकार को	

भावार्थ।

एतदालम्बनमिति-एतत् ॥ यह जो ओंकाररूप अक्षरहै सोई आलम्बन करने के योग्य है ॥ और ब्रह्मके ध्यानका उपकारी जो गायत्रीआदिक वेदके मन्त्रहैं उनसे भी यह श्रेष्ठ है, यहओंकारही परब्रह्मके ध्यानका उपकारी है, परब्रह्मकी प्राप्ति इसीके आलंबन करने से होतीहै, इसी ओंकार अक्षरकी उपासनाकरके ब्रह्मलोक में उपासक महिमा को प्राप्त होताहै ॥ १७ ॥

मूलम् ॥

(१८) नजायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् अजोनित्यः शाश्वतो यम्पुराणो नहन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ १८ ॥

पदच्छेदः

न जायते म्रियते वा विपश्चित् न अयम् कुतश्चित् न बभूव कश्चित् अजः नित्यः शाश्वतः अयम् पुराणः न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+ आत्मा	= आत्मा	न	= नहीं
नजायते	= नहींउत्पन्न होताहै	म्रियते	= मरता है
वा	= और	+ परन्तु	= परन्तु
		विपश्चित्	= सर्वज्ञहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अयम् = यह आत्मा
कुतश्चित् = किसी से
कश्चित् = कभी
न बभूव = नहीं हुआहै
+तस्मात् कारणात् } = इसकारणसे
अयम् = यहआत्मा
अजः = अजयाने जन्मरहितहै
नित्यः = नित्य है
शाश्वतः = नाशरहितहै
पुराणः = आदि है
अयम् = यह आत्मा
शरीरे = शरीर के
हन्यमाने = नाशहोने पर भी
नहन्यते = नहीं नाशहोता है ॥

भावार्थ ।

नजायतइति-मन्द और मध्यम अधिकारिके भेद करके दो प्रकार की उपासना को यमने नचिकेता के प्रति पूर्व कहा, अब उत्तम अधिकारि के प्रति निरुपाधिक आत्मतत्त्व को नचिकेता के प्रति कहते हैं ॥ नजायतेम्रियतेवा ॥ विपश्चितः ॥ चैतन्य नित्य स्वरूप आत्मा न जन्मता है, और न मरता है, और न नाशको प्राप्तहोता है ॥ नायंबभूव ॥ यह आत्मा किसी कारण से भी उत्पन्न नहीं हुआ है, क्योंकि इसका कोई कारण नहीं है, सबका कारण यह आपही है, और शरीरादिक कार्य्योंके नाशहोनेपर भी इसका नाश नहीं होताहै, इसीलिये आत्मा अज है, नित्य है, शाश्वत है, और बुद्धि वृद्धि से रहित है ॥ १८ ॥

मूलम् ॥

(१९) हन्ता चेन्मन्यते हन्तुछंहतश्चेन्मन्यते हतम् उभौ तौ न विजानीतो नायछंहन्ति न हन्यते ॥ १९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

हन्ता चेत् मन्यते हन्तुम् हतः चेत् मन्यते हतम् उभौ तौ न विजानीतः न अयम् हन्ति न हन्यते॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
चेत्	= अगर	मन्यते	= मानता है तो
हन्ता	= मारनेवाला पुरुष	तौ उभौ	= वे दोनों
हन्तुम्	= हननकरनेको आत्मा	नविजानीतः	= नहीं जानते हैं क्योंकि
मन्यते	= मानता है	अयम्	= यह आत्मा
च	= और	न हन्ति	= न तो मारता है
हतः	= माराहुआपुरुष	च	= और
हतम्	= हनन क्रिया के कर्मको आत्मा	न हन्यते	= न मरता है॥

भावार्थ।

हन्तेति–यदि हन्ता हनन क्रियाका कर्त्ता आत्मा को मानता है, या हननक्रियाका कर्म आत्माको मानता है, तो ये दोनों आत्माको नहीं जानतेहैं, क्योंकि आत्मा न किसीको मारता है, और न हननक्रियाका कर्म होताहै, जितने धर्माऽधर्मादिक हैं सब आत्मा के अज्ञान करकेही होतेहैं, आत्मा के ज्ञान करके इनकी निवृत्ति होजाती है॥ १९॥

मूलम्॥

(२०) अणोरणीयान् महतोमहीयानात्माऽस्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्तोर्निहितो गुहायाम् तमक्रतुः पश्यति वीत शोको धातुः प्रसादान् महिमानमात्मनः ॥ २० ॥

पदच्छेदः

अणोः अणीयान् महतः महीयान् आत्मा अस्य जन्तोः निहितः गुहायाम् तम् अक्रतुः पश्यति वीतशोकः धातुः प्रसादात् महिमानम् आत्मनः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अणोः	= छोटेसे	अक्रतुः	= निष्काम
अणीयान्	= अति छोटा	वीतशोकः	= शोकरहित पुरुष
महतः	= बड़े से	धातुः प्रसादात्	= मन के प्रसाद से
महीयान्	= अति बड़ा	तम्	= उस
आत्मा	= आत्मा है	आत्मनः	= अपने
अस्य	= इस	महिमानम्	= महिमा को अथवा अपने आत्मा को
जन्तोः	= जीव के	पश्यति	= देखता है ॥
गुहायाम्	= हृदयरूपी गुहाविषे		
+ सः	= वह		
निहितः	= स्थित है		
च	= और		

भावार्थ।

अणोरणीयान्, महतोमहीयान्—अति सूक्ष्म जो मनादिक हैं उनसे भी सूक्ष्म है, और नैयायिकोंने जो महत् परिमाणवाले आकाशादिक माने हैं उनसे भी अति बड़ाहै, इसी कारण आत्माका नाश नहीं होताहै और ब्रह्मासे लेकर जितने प्राणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं उन सबकी बुद्धिरूपी गुहामें स्थित है, तिस आत्मा को निष्काम शोकरहित पुरुष मनआदि कारणों की प्रसन्नता याने शुद्धता से अपने आपेमें देखता है ॥ २० ॥

मूलम् ॥

(२१) आसीनोदूरं व्रजति शयानोयाति सर्वतः कस्तम्मदामदं देवं मदन्योज्ञातुमर्हति ॥ २१ ॥

पदच्छेदः

आसीनः दूरम् व्रजति शयानः याति सर्वतः कः तम् मदामदम् देवम् मदन्यः ज्ञातुम् अर्हति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
आत्मा	= आत्मा	मदामदम्	= शरीरादिउपाधिके संबंधवाले हर्षशोकवान्
आसीनः	= स्थित हुआ		
दूरम्	= दूर		
व्रजति	= जाताहै		
च	= और		
शयानः	= सोयाहुआ	देवम्	= देवको
सर्वतः	= सब तरफ	मदन्यः	= मेरेसे अन्य
याति	= फिरता है	कः	= कौन
तम्	= तिस	ज्ञातुम्	= जानने को
		अर्हति	= समर्थहोसकताहै ॥

भावार्थ ।

आसीनइति-आसीनः ॥ जाग्रत् और स्वप्न में मन आदिकों को व्यापारों के साथ आत्मा साक्षिरूप से स्थितहुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूर देशको गमन करजाताहै अर्थात् मनआदिकों में प्रतिबिम्ब रूप होकर उसके साथ दूर देशको गमन करता हुआ परतीत होताहै, वास्तव से वह गमन नहीं करता है, क्योंकि वह सर्वत्र पूर्णहै और जब करण जो इन्द्रिया हैं उनके उपरम होनेसे विशेष ज्ञानका अभाव होजाता है, तब सुषुप्त अवस्था कहीजाती है और तब सामान्य ज्ञानवाला आत्मा कहाजाता है और वही बुद्धिआदिक संघात के साथ तादात्म्याध्यास होने के कारण धनादि प्रयुक्त मदवाला कहाजाता है, वास्तव से तो वह मद रहितहै, यमराज कहते हैं ऐसे प्रकाशस्वरूप आत्माको मुझ विवेकी पुरुषसे भिन्न दूसरा कौनजाननेको समर्थहोसक्ताहै॥ २१ ॥

नोट—यह आत्मा अचल स्थित है परन्तु मनआदि उपाधि साथ मिलकर ब्रह्मलोकपर्य्यन्त जाता है वैसेही स्वप्न में इन्द्रियों के साथ मिलकर अनेक विषयों में रमण करता है॥

मूलम्॥

(२२) अशरीरंशरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम्
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति॥ २२॥

पदच्छेदः

अशरीरम् शरीरेषु अनवस्थेषु अवस्थितम् महान्तम् विभुम् आत्मानम् मत्वा धीरः न शोचति॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
शरीरेषु	= शरीरों बिषे	अवस्थितम्	= नित्य है
अशरीरम्	= शरीररहित है	+ एवम्	= ऐसे
अनवस्थेषु	= अनित्यों बिषे	महान्तम्	= महान्
		विभुम्	= व्यापक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मानम् = आत्माको	न शोचति = नहीं शोकको
मत्वा = जानकरके	प्राप्त होताहै ।
धीरः = बुद्धिमान् पुरुष	

भावार्थ ।

अशरीरमिति—अब आत्मज्ञानके फलको कहते हैं, हे नचि केता ! अनित्य जो संपूर्ण शरीर हैं उनमें साक्षीरूप होकर नित्य आत्मा स्थित है, और आप स्थूल सूक्ष्मकारण तीनों शरीरों से रहित है, सबसे महान् भी है और सर्वत्र व्यापक है, इसप्रका आत्माको अपने भीतर ब्रह्मसे अभिन्न जानकर विवेकी पुरु शोकको प्राप्त नहीं होताहै, अर्थात् कर्तृत्वादिरूप बन्धसे रहि होकर अपने में स्थित होजाता है ॥ २२ ॥

मूलम् ॥

(२३) नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मे या न बहुना श्रुतेन यमेवैषवृणुते तेन लभ्यस्तस्य षआत्माविवृणुते तनुꣳस्वाम् ॥ २३ ॥

पदच्छेदः

न अयम् आत्मा प्रवचनेन लभ्यः न मेधया न बहुना श्रुतेन यम् एव एषः वृणुते तेन लभ्यः तस्य एषः आत्मा विवृणुते तनुम् स्वाम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अयम् = यह		नलभ्यः = नहीं प्राप्त	
आत्मा = आत्मा		योग्य है	
प्रवचनेन = बहुत वेदाध्ययन करने से		च = और	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेधया = ग्रंथार्थ धारण शक्ति से
न = नहीं
+ लभ्यः = प्राप्त होने योग्य है
+ च = और
बहुना = बहुत
श्रुतेन = शास्त्रके श्रवण करने से
+ अपि = भी
न = नहीं
+ लभ्यः = प्राप्त होने योग्य है

यम् = जिसको
एव = निश्चय करके
एषः = यह मुमुक्षु
वृणुते = इच्छा करता है
तेन = तिसही करके
लभ्यः = पाने योग्य है
+ च = और
तस्य = उसी को
एषः = यह
आत्मा = आत्मा
स्वाम् = अपने
तनुम् = स्वरूप को
विवृणुते = प्रकाशकरताहै॥

भावार्थ ।

नायमिति—यममहराज कहते हैं कि यह आत्मा वेदों के अध्ययन करके भी लभ्य नहीं है, याने जानानहीं जाताहै, और न ग्रन्थों के धारण करनेवाली शक्ति से जानाजाता है, और न अनेक शास्त्रोंके श्रवण करनेसे (प्र०) फिर किस साधन करके आत्मा का लाभ होताहै (उ०) जो मुमुक्षु अपने आत्माको श्रवण मननादिकों करके चिन्तन करता है, उसीको वह प्राप्तहोताहै, उसी मुमुक्षुको हृद्याकाश में यह आत्मा अपने आनन्दस्वरूप को प्रकाश करता है ॥ २३ ॥

मूलम् ॥

(२४) नाविरतोदुश्चरितान्नाशान्तोनासमाहि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तोनाशान्तमानसोवापिप्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्॥२४॥

पदच्छेदः

न अविरतः दुश्चरितात् न अशान्तः न असमाहितः न अशान्तमानसः वा अपि प्रज्ञानेन एनम् आप्नुयात् ॥

अन्वयः	पदार्थ
दुश्चरितात्	= दुष्कृतकर्मसे
अविरतः	= नहीं निवृत्त भया है जो
अशान्तः	= नहीं शान्त हुआहै जो
असमाहितः	= नहीं एकाग्र कियाहै चित्तको जिसने
वा	= और
अशान्तमानसः	= नहीं हुआहै शान्त मन जिसका
एतैःपुरुषैः	= ऐसे पुरुषों करके
आत्मा	= आत्मा
नलभ्यः	= प्राप्त होने योग्य नहींहै
प्रज्ञानेन	= ज्ञान करके
अपि	= ही
एनम्	= इस आत्मा को
पुरुषः	= पुरुष
आप्नुयात्	= प्राप्तहोता है

भावार्थ ।

नाविरतइति–शमदमादि साधनों करकेही आत्मज्ञान प्राप्तिहोती है, शमदमादि साधनों के विना नहीं होती है, इसीसे इसमन्त्र में यमराज नचिकेता के प्रति कहते हैं ॥ नाविरतः॥ नचिकेता ! जो पुरुष भोगों में अशान्त है याने जिसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय भोगोंसे शान्त नहीं हुवाहै और जो विक्षिप्त चित्त होताहुआ समाधि के फल अणिमादि सिद्धियों की इच्छा करनेवाला है वह आत्मज्ञानको कदापि प्राप्त नहीं होताहै ॥ पर जो विषयभोगोंसे निवृत्त होकर शान्त हुआहै और समाहित चित्तवाला है और अणिमादि सिद्धियों की जिसको इच्छा नहीं है वही ब्रह्मवित् आचार्य्य के उपदेश से आत्मज्ञान को प्राप्तहोता है ॥ २४ ॥

मूलम् ॥

(२५) यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनम्
मृत्युर्यस्योपसेचनं क इत्था वेद यत्र सः ॥ २५ ॥

इतिद्वितीयावल्ली समाप्ता ॥

पदच्छेदः

यस्य ब्रह्म च क्षत्रम् च उभे भवतः ओदनम्
मृत्युः यस्य उपसेचनम् कः इत्था वेद यत्र सः ॥

अन्वयः	पदार्थ
च	= और
यस्य	= जिसका
ब्रह्म	= ब्राह्मण
च	= और
क्षत्रम्	= क्षत्रिय
उभे	= दोनों
ओदनम्	= भात
भवतः	= होरहे हैं
+च	= और
यस्य	= जिसका
मृत्युः	= मृत्यु
उपसेचनम्	= दाल साग है
कः	= यः = जो
इत्था	= इस प्रकार
यत्र	= इस बिषे
वेद	= जानता है
सः	= सोई
आत्मा	= ब्रह्मरूप
भवति	= होता है

इतिकठवल्लीउपनिषत्प्रथमाध्यायेद्वितीयावल्लीभाषाटीकासमाप्ता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

यस्येति–हे नचिकेता ! जिस तमःप्रधान मायोपाधि ईश्वर के ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों अर्थात् चराचरात्मक सम्पू जगत् भातहैं, और लोकनाशक मृत्यु सागदालहै, तिस शुद्धस्व रूप ईश्वर को भलीप्रकार जानताहूं, दूसरा मेरेसे समान नहीं अब सावधान होकर मेरे अमृतरूपी वचनों को सुनो ॥ २५ ॥

इति काठकोपनिषदि द्वितीयावल्लीभावार्थः ॥

मूलम् ॥

(१) ॐ ऋतंपिबन्तौस्वकृतस्यलोकेगुहाम्प्रविष्टौपरमेपरार्द्धे छायातपौब्रह्मविदोवदन्ति पञ्चाग्नयोयेचत्रिणाचिकेताः ॥ १ ॥

पदच्छेदः

ऋतम् पिबन्तौ स्वकृतस्य लोके गुहाम् प्रविष्टौ परमे परार्द्धे छायातपौ ब्रह्मविदः वदन्ति पञ्चाग्नयः ये च त्रिणाचिकेताः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सुकृतस्य =	अपने किये हुये कर्मों के	परार्द्धे =	हृदयाकाश बिषे
ऋतम् =	सत्रूप फलको	गुहाम् =	बुद्धिरूपी गुहा को
पिबन्तौ =	पान किये हुये हैं जो	प्रविष्टौ =	जीवऔर साक्षीरूप होकर प्रा तहै जो
च =	और		
लोके =	शरीर में		
परमे =	शुद्ध		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तौ = उनदोनोंको
ये = जो
ब्रह्मविदः = ब्रह्मवित् हैं
च = और
पञ्चाग्नयः = गृहस्थी हैं
च = और

त्रिणाचिकेताः = नाचिकेतनामक अग्निकेउपासकहैं

ते = वे
छायातपौ = छायाधूपवत्
वदन्ति = कहते हैं

भावार्थ ।

ऋतंपिबन्तौ—पूर्व कथनकृत विद्या अविद्या के स्वरूप के साधनों को और उनके फलको निरूपण करते हैं ॥ ऋतंपिबन्तौ ॥ पूर्वजन्मों में किये जो सुकृत असुकृत कर्म हैं, उनके फलको अवश्यही भोगना पड़ता है, जीव और ईश्वर दोनों इस शरीरके उत्कृष्ट हृद्याकाश के अन्तर बुद्धिरूपी गुहा बिषे छाया धूपकी तरह याने विलक्षण धर्मको धारते हुये स्थित हैं, जीव कर्मों के फलका भोक्ता है, और ईश्वर उसका साक्षी अभोक्ता है, इस अलौकिक ज्ञानको वही प्राप्तहोते हैं जिन्होंने नाचिकेतसंज्ञक पञ्चअग्नि याने दाक्षिणात्य, गार्हस्थ्य, आहवनीय, सभ्य और आवस्थ्य को स्थापन किया है, चाहे वे ब्रह्मज्ञानीहों चाहे गृहस्थीहों, इस प्रकार ब्रह्मवित्लोक कथन करते हैं हे नचिकेता! तुम इस वल्ली में मन लगाकर श्रवणकरो, अवश्य अपने इच्छित पदको प्राप्तहोगे और भी पुरुष इस तुम्हारे मेरे संवाद को श्रवण मनन करके अपने शुद्ध मनोरथको प्राप्तहोंगे ॥ १ ॥

मूलम् ॥

(२) यःसेतुरीजानानामक्षरम् ब्रह्मयत्परम् अभयम् तितीर्षतांपारं नाचिकेतंशकेमहि ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यः सेतुः ईजानानाम् अक्षरम् ब्रह्म यत् पर
अभयम् तितीर्षताम् पारम् नाचिकेतम् शकेमहि

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो	तितीर्षताम्	= संसारसे तरनेवालोंके
परम्	= परम	अभयम्	= निर्भय
अक्षरम्	= अक्षर	पारम्	= पारहोने के लिये
ब्रह्म	= ब्रह्म है	नाचिकेतम्	= नचिकेता नामकअग्नि है
तत्	= सो	तत्सेतुम्	= उसकोसेतु
ईजानानाम्	= यज्ञ करने वालों को	शकेमहि	= जानतेहैं हम
सेतुः	= सेतु है		
च	= और		
यः	= जो		

भावार्थ ।

यहति—जो नाचिकेत संज्ञक विराट् अग्निको स्थापना करते हैं, वही कर्मी कहे जातेहैं, उन कर्मियोंके लिये यह अग्नि दुःखरूप संसार से तारनेका सेतु है, ऐसे नाचिकेत संज्ञक अग्निके जानने और चयन करने को मैंहीं समर्थ हूं, और संसाररूपी समुद्रके पार जो मोक्षपद है, और ब्रह्मवेत्तों के प्राप्तहोने योग्य जो परम है, और जिसका नाम अक्षर है, अर्थात् जो कभी भी नाशको प्राप्त नहीं होता है, और जो षट्भाव विकार से रहित अपना आत्मा है उस को मैंहीं जानने को समर्थ हूं, मेरे करके ज्ञात जो परब्रह्म है उसीको परम्परा करके और भी ज्ञानीलोग जानकर मोक्षको प्राप्त होजाते हैं, हेनाचिकेता! मुझ ऐसे आचार्य से उपदेशित हुआ तू भी अवश्य अपनी स्वरूप में स्थित होताहुआ शान्तिको प्राप्त होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(३) आत्मानꣳरथिनं विद्धि शरीरꣳरथमेव तुबुद्धिन्तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेवच ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

आत्मानम् रथिनम् विद्धि शरीरम् रथम् एव तु बुद्धिम् तु सारथिम् विद्धि मनः प्रग्रहम् एव च॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
आत्मानम्	= आत्माको	बुद्धिम्	= बुद्धिको
रथिनम्	= रथकास्वामी	सारथिम्	= सारथी
विद्धि	= जान तू	विद्धि	= जान तू
+ च	= और	च	= और
शरीरम्	= शरीरको	मनः	= मनको
रथम्	= रथ	प्रग्रहम्	= बाग
एव	= निश्चयकरके	एव	= निश्चयकरके
+ विद्धि	= जान तू	विद्धि	= जान तू ॥
तु	= और		

भावार्थ ।

आत्मानमिति–हे नचिकेता ! आत्मानं ॥ त्वं पदका अर्थ जो जीवात्मा है उसको तुम रथका स्वामी जानो, वह जीवात्मा शरीररूपी रथ करके ही संसार और मोक्षमार्ग में गमन करता है, हे नचिकेता ! शरीरको तुम गमन करने का साधनरूप रथ जानो, बुद्धिको शरीररूपी रथका चलानेवाला सारथि जानो, और संकल्प विकल्पात्मक जो मन है, उसको तुम घोड़ों के चलाने का लगाम जानो ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(४) इन्द्रियाणिहयानाहुर्विषयांस्तेषुगोचरान्
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

इन्द्रियाणि हयान् आहुः विषयान् तेषु गोचरान् आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम् भोक्ता इति आहुः मनीषिणः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इन्द्रियाणि	= इन्द्रियोंको	आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम्	= शरीरइन्द्रिय मन सहित
हयान्	= घोड़े	+ आत्मानम्	= आत्माको
आहुः	= कहते हैं	मनीषिणः	= विवेकीजन
विषयान्	= विषयोंको	भोक्ताइति	= भोक्ताकरके
तेषु	= उनके	आहुः	= कहते हैं
गोचरान्	= मार्ग		
+ आहुः	= कहते हैं		

भावार्थ ।

इन्द्रियाणीति–हे नचिकेता ! चक्षुरादिक जो बाह्यविषयों के ज्ञानके करण हैं, वेही शरीररूपी रथके लेजानेवाले घोड़े हैं, उन इन्द्रियारूपी घोड़ों के चलाने के मार्ग रूपादिक विषय हैं, और जीवात्मा सहित इन्द्रियों और मनके सुख दुःख का भोक्ता है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

(५) यस्त्वविज्ञानवान् भवत्ययुक्तेन मनसा सदा
तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वाइव सारथेः ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यः तु अविज्ञानवान् भवति अयुक्तेन मनसा सदा
तस्य इन्द्रियाणि अवश्यानि दुष्टाश्वाः इव सारथेः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तु	= और	तस्य	= उसकी
यः	= जो पुरुष	इन्द्रियाणि	= इन्द्रियां
अयुक्तेन	= अयुक्त	सारथेः	= सारथि के
मनसा	= मनकरके	दुष्टाश्वाः	= दुष्टघोड़ोंके
सदा	= सदा	इव	= समान
अविज्ञानवान्	= अविवेकी	अवश्यानि	= बेवश
भवति	= होता है	+ भवन्ति	= होती हैं

भावार्थ ।

यइति–जिसका बुद्धिरूपी सारथी अविज्ञानवाला होताहै अर्थात् मनके निग्रहद्वारा इन्द्रियों को बाह्यविषयों की तरफसे हटाने के जो साधन कहे हैं उन करके शून्य होता है, और सर्वदा काल लगामरूपी मनको अपने वश नहीं करसक्ताहै,उसके इन्द्रियारूपी अशिक्षित घोड़े उसके शरीररूपी रथ के सहित जीवात्मा स्वामी को अनेक दुष्टयोनिरूपी गड्ढों में गिरादेते हैं, जैसे मूर्ख सारथी अपने घोड़ों को सुमार्ग में चलाने को असमर्थ होता है, और वे दुष्ट घोड़े उसके रथको कंटकादि दुर्गमस्थान में गिरादेते हैं, और रथ टूटफूटजाता है और रथी दुःख उठाता है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

(६) यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा

तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

यः तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा
तस्य इन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वाः इव सारथेः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तु	= और	तस्य	= उसकी
यः	= जोपुरुष	इन्द्रियाणि	= इन्द्रियां
युक्तेन	= युक्त	सारथेः	= सारथीके
मनसा	= मनकरके	सदश्वाःइव	= श्रेष्ठघोड़ोंके समान
सदा	= सदैव	वश्यानि	= वशीभूत
विज्ञानवान्	= विवेकी	+ भवन्ति	= होती हैं
भवति	= होताहै		

भावार्थ ।

यस्त्वेति-जिस पुरुषका बुद्धिरूपी सारथी विज्ञानयुक्त है अर्थात् मनके निग्रहद्वारा इन्द्रियोंको बाह्यविषयोंकी तरफसे हटाने के जो साधन हैं उन साधनों करके जिसकी बुद्धि ज्ञानसम्पन्न निश्चल शान्त होगई है, उसीके वशवर्ती सब इन्द्रियां होती हैं जैसे स्वाधीन सुशिक्षित घोड़ों करके चतुर सारथी रथके स्वामी को सुमार्ग में लेचलकर उसके धामपर पहुँचादेताहै, तैसेही बुद्धि विज्ञानयुक्त अपने स्वामी जीव आत्मा शरीरारूढ़ को निग्रहीत मन आदिक इन्द्रियरूपी घोड़ों करके उसके परमधाम पहुँचा देताहै ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(७) यस्त्वविज्ञानवान् भवत्यमनस्कःसदाशुचिः न सतत्पदमाप्नोति संसारंचाधिगच्छति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

यः तु अविज्ञानवान् भवति अमनस्कः सदा अशुचिः न सः तत् पदम् आप्नोति संसारम् च अधिगच्छति ॥

अन्वयः	पदार्थ
तु	= और
यः	= जो
अविज्ञानवान्	= विवेकरहित
च	= और
अमनस्कः	= मनकीएकाग्रतासे रहित
सदा	= सदैव
अशुचिः	= अपवित्र
भवति	= होताहै
सः	= सो
तत्पदम्	= उसपदकोयानीमोक्षको
न	= नहीं
आप्नोति	= प्राप्तहोता है
च	= परन्तु
संसारम्	= संसारकोही
अधिगच्छति	= प्राप्तहोताहै ॥

भावार्थ ।

यस्त्वविज्ञानवानिति—जो इस शरीररूपी रथका स्वामी जीव विज्ञान से रहितहै, और अनिरुद्ध मनवालाहै, अर्थात् जिसका मन अपने वशवर्ती नहीं है, किंतु सदैवकाल विषयों की वासनाकरके अपवित्र रहताहै, और इन्द्रियां जिसकी यथेष्टाचरणको करती हैं, वह आत्मपद को नहीं प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eG

मूलम् ॥

(८) यस्तु विज्ञानवान् भवति समनस्कः सदा शुचिः सतु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयोनजायते॥८

पदच्छेदः

यः तु विज्ञानवान् भवति समनस्कः सदा शुचिः सः तु तत् पदम् आप्नोति यस्मात् भूयः न जायते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तु	और	तु	निश्चय करके
यः	जो	तत्	उस
विज्ञानवान्	विवेकी	पदम्	पदको
समनस्कः	एकाग्रचित्तवाला	आप्नोति	प्राप्त होताहै
सदा	सदा	यस्मात्	जिसकरके
शुचिः	पवित्र	भूयः	फिर
भवति	होताहै	न	नहीं
सः	वह	जायते	उत्पन्न होताहै

भावार्थ।

यस्तुविज्ञानवानिति—जिस विवेकी पुरुष रथीका जो सुशिक्षित बुद्धिरूपी सारथी है, और जिसने अपने मन को नियत किया है, और जो सर्वदाकाल विषयवासनासे रहित शुद्धचित्त वालाहै, वही ब्रह्मपदको प्राप्तहोता है, और फिर जन्म मरणरूप संसार में नहीं आता है ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(९) विज्ञानसारथिर्यस्तु मनः प्रग्रहवान्नरः सो ऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णोःपरमम्पदम् ॥ ९ ॥

पदच्छेदः

विज्ञानसारथिः यः तु मनः प्रग्रहवान् नरः सः अध्वनः पारम् आप्नोति तत् विष्णोः परमम् पदम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो	नरः	= पुरुषहै
विज्ञान् सारथिः	= विज्ञान सारथी है	सः	= वह
तु	= और	अध्वनः	= संसार मार्गके
मनः	= मनरूपी	पारम्	= पारको
प्रग्रहवान्	= बागकाग्रहणकरने वाला	आप्नोति	= प्राप्तहोता है
		तत्	= सोई
		विष्णोः	= विष्णुका
		परमम्	= परम
		पदम्	= पद है ॥

भावार्थ ।

विज्ञानसारथिरिति–जिस पुरुष रथीकी विवेकवती बुद्धि और मन वशवर्ती है, वह विद्वान् पुरुष संसारसमुद्र से पार होकर मुक्त होजाता है, और जो संसार का पार स्थान है, वही व्यापकरूप ब्रह्मका स्वरूपहै, वही विष्णुका परमपद है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

(१०) इन्द्रियेभ्यः पराह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः मनसश्च परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः ॥ १० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

इन्द्रियेभ्यः पराः हि अर्थाः अर्थेभ्यः च पर
मनः मनसः च परा बुद्धिः बुद्धेः आत्मा महा
परः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इंद्रियेभ्य	= इन्द्रियों से	मनः	= मन है
पराः	= परे	च	= और
हि	= निश्चयकरके	मनसः	= मनसे
अर्थाः	= विषयहैं क्योंकिइन्द्रियोंकी प्रवृत्ति विषयोंके आधीन है	परा	= परेयानेसूक्ष्म
		बुद्धिः	= बुद्धि है
		च	= और
		बुद्धेः	= बुद्धिसे
अर्थेभ्यः	= विषयोंसे	परः	= परे
परम्	= परे	महान्	= महान्
		आत्मा	= हिरण्यगर्भ

भावार्थ।

इन्द्रियेभ्यइति-इन्द्रियेभ्यः॥श्रोत्रादिपांचज्ञानेन्द्रियों से उक्त शब्दादिक विषय हैं, क्योंकि इन्द्रियोंकी प्रवृत्ति विषयों के आधीन ही होती है, तात्पर्य यह है कि स्थूल शरीरसे सूक्ष्म इन्द्रियाँ हैं, और इन्द्रियों से सूक्ष्म विषयहैं, और विषयों से भी सूक्ष्म मनहै, क्योंकि मनही विषयों का ग्राहक है, और संकल्प विकल्परूपी मनसे भी सूक्ष्म बुद्धि है, क्योंकि मनका व्यापार भी बुद्धिकेही आधीन है और अस्मदादिव्यष्टिबुद्धिसे सूक्ष्म समष्टिबुद्धि हिरण्यगर्भ अर्थात् महत्तत्त्व है॥ १०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(११) महतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः पुरुषान्न परं किञ्चित्सा काष्ठा सा परा गतिः ॥११॥

पदच्छेदः

महतः परम् अव्यक्तम् अव्यक्तात् पुरुषः परः पुरुषात् न परम् किंचित् सा काष्ठा सा परा गतिः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
महतः	= हिरण्यगर्भसे	सा	= सोई
परम्	= परे	काष्ठा	= अवधि है यानी परम आश्रय है
अव्यक्तम्	= अव्याकृत है	+ च	= और
अव्यक्तात्	= अव्याकृतया-नेमाया से	सा	= सोई
परः	= परे	परा	= सर्वोत्तम
पुरुषः	= आत्मा है	गतिः	= गतिहैअर्थात् प्राप्तहोने यो-ग्य है ॥
पुरुषात्	= आत्मासे		
परम्	= परे		
नकिंचित्	= कुछ नहीं है		

भावार्थ ।

महतइति—और समष्टिबुद्धिसे भी उत्कृष्ट अव्यक्त है, क्योंकि वह सम्पूर्ण जगत्का कारण है, और तिस अव्यक्त से सर्वत्र पूर्ण जो पुरुष है वह सूक्ष्म है, क्योंकि वह पुरुष अथवा आत्मा संपूर्ण जडवर्गका प्रकाशक है, और स्वयं प्रकाशरूप सर्वत्र परिपूर्ण है, उससे सूक्ष्म कोईभी वस्तु नहीं है, वही सबकी अवधि है और वही परमगति है ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१२) एषसर्वेषु भूतेषु गूढात्मा नप्रकाशते दृश्यते त्वग्रया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

एषः सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते दृश्यते तु अग्रया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एषः	= यह	अग्रया	= एकाग्र
गूढात्मा	= गूढात्मा	सूक्ष्मया	= सूक्ष्म
सर्वेषु	= सब	बुद्ध्या	= बुद्धिद्वारा
भूतेषु	= भूतों बिषे	सूक्ष्म दर्शिभिः	= सूक्ष्मदर्शी ज्ञानियोंकरके
न	= नहीं		
प्रकाशते	= प्रकाशता है यानीसबको नहीं देखाई देता है	+दृश्यते	= देखा जाता है याने अनुभवकिया जाता है ॥
तु	= परन्तु		

भावार्थ ।

एषइति—यह जो इन्द्रिय आदिकों से परे आत्मा कहा है, सोई ब्रह्मा से लेकर स्तंब पर्यंत प्राणियों में अविद्या करके आच्छादित है, इसीलिये तिसका प्रकाश सबको प्रतीत नहीं होता है ॥ प्र० ॥ पूर्व कहा है कि आत्मा को शोकरहित पुरुष देखता है, और अब कहते हैं कि किसी को भी उसका प्रकाश नहीं होता है, एकही उपनिषद् में परस्पर विरोधी दो बातें क्यों कही हैं ॥ उ० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्तकी शुद्धि और अशुद्धि के कारण दो प्रकार के अधिकारी पुरुष होते हैं, दोनों में जो कि शुद्धचित्तवाले हैं याने जिनकी बुद्धि साधनों करके और विचार करके शुद्ध होगई है, उन सूक्ष्मदर्शियों के हृदय में वह आत्मा साक्षात्कार सूर्यवत् भाषने लगता है, और जिनकी बुद्धि मलिन है उनके हृदय में आत्मा का प्रकाश नहीं होता है ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

(१३) यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानआत्मनि ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

यच्छेत् वाङ्मनसी प्राज्ञः तत् यच्छेत् ज्ञाने आत्मनि ज्ञानम् आत्मनि महति नियच्छेत् तत् यच्छेत् शान्ते आत्मनि ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
प्राज्ञः	= बुद्धिमान् पुरुष	यच्छेत्	= लयकरै
वाक्	= वाणीको	+ च	= और
मनसी	= मनबिषे	ज्ञानम्	= ज्ञानयानेबुद्धिको
यच्छेत्	= लयकरै	महति	= महान्
+ च	= और	आत्मनि	= हिरण्यगर्भमें
तत्	= उसमनको	नियच्छेत्	= लयकरै
ज्ञाने	= ज्ञानरूपी	+ च	= और
आत्मनि	= आत्मा याने बुद्धिमें		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् = तिस महा-नात्मा हिर-एयगर्भ को
आत्मनि = अधिष्ठान आत्मा में
यच्छेत् = लयकरै ॥
शान्ते = शान्त

भावार्थ ।

यच्छेद्ज्ञानसीति–बुद्धिकी एकाग्रता के विना सूक्ष्म आत्मा का भान नहीं होता है, इसलिये बुद्धिके एकाग्र करने को कहते हैं ॥ यच्छेत् ॥ आत्मजिज्ञासु पुरुष प्रथमवागादिक इन्द्रियों को मनमें लयकरै, अर्थात् मनके व्यापार से भिन्न इन्द्रियों के व्यापार का अभाव करदेवै, फिर तिस मनको निश्चलबुद्धि में लयकरै, याने बुद्धिके व्यापार से भिन्न मनके व्यापार का अभाव करदेवै, फिर तिस व्यष्टिबुद्धि को समष्टिबुद्धि में लयकरै अर्थात् समष्टिबुद्धि से भिन्न व्यष्टिबुद्धि नहीं है, ऐसा चिन्तन करै, फिर तिस समष्टि बुद्धिको निर्विकार प्रत्यगात्मा में लयकरै आत्मा से अतिरिक्त जोकि समष्टि बुद्धिहै उसका अभाव करदेवै ऐसा चिंतन करने से आत्मा से भिन्न सब कल्पितपदार्थ मिथ्या प्रतीत होनेलगतेहैं, तब हे नचिकेता! वह पुरुष महान् आनन्द में मगन हो जाता है ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

(१४)उत्तिष्ठतजाग्रतप्राप्यवरान्निबोधत क्षुरस्य धारानिशितादुरत्ययादुर्गम्पथस्तत्कवयोवदन्ति १४

पदच्छेदः

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गम् पथः तत् कवयः वदन्ति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+ हे जन्तवः	= हेमनुष्यो	ज्ञानम्	= ज्ञान
+ यूयम्	= तुम	क्षुरस्य	= छुरीकी
उत्तिष्ठत	= उठो	निशिता	= तीक्ष्ण
जाग्रत	= जागो	धारा	= धारकीतरह
च	= और	दुरत्यया	= कठिन है
वरान्	= श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठ आचार्य्य को	च	= और
प्राप्य	= प्राप्तहोकर	तत्	= उसीको
+ आत्मानम्	= आत्माको	कवयः	= विद्वान् लोक
निबोधत	= जानो	दुर्गम् पथः	= दुर्गममार्ग
		वदन्ति	= कहते हैं ॥

भावार्थ ।

उत्तिष्ठेति—योगाभ्यास द्वारा चित्तकी एकाग्रताको करके आत्मामें समष्टिबुद्धिका लय करना जिस अधिकारी के प्रति श्रुति ने कहा है उसी अधिकारी के प्रति आत्मज्ञान में यत्न करने को श्रुति कहती है ॥ उत्तिष्ठेति ॥ हे साधन सम्पन्न अधिकारी पुरुषो ! उठो, आत्मज्ञानके लिये यत्न करो, अज्ञानरूपी निद्रासे जागो, ब्रह्मवित् आचार्य्य के उपदेशको श्रवण करके आत्मज्ञानको प्राप्त हो, उन्हीं करके उपदेश कियेहुये आत्मतत्त्व को जानो, और निश्चय करो, यह आत्मतत्त्व सब पुरुषों को प्राप्तहोने योग्य नहीं है, यह आत्मज्ञान अतिशय करके कठिन है, और जैसे उस्तरे का तेज धारपर चलना अति कठिन है इसी तरह आत्मज्ञान का मार्ग भी अति कठिन है, उसपर चलना इस मार्ग से बड़े बड़े पण्डित भी भयभीत होते हैं ॥ १४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१५) अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथाऽरस
न्नित्यमगन्धवच्च यत् अनाद्यनन्तम्महतः परन्ध्रुवं
निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

अशब्दं अस्पर्शम् अरूपम् अव्ययम् तथा अरसम् नित्यम् अगन्धवत् च यत् अनादि अनंतम् महतः परम् ध्रुवम् निचाय्य तत् मृत्यु मुखात् प्रमुच्यते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो	अनादि	= आदिरहितहै
अशब्दम्	= शब्दरहितहै	अनन्तम्	= अंतरहितहै
अस्पर्शम्	= स्पर्शरहितहै	महतः	= महत्तत्वसे
अरूपम्	= रूपरहितहै	परम्	= परेहै
अव्ययम्	= अविनाशीहै	ध्रुवम्	= अचल है
तथा	= और	तत्	= तिसको
अरसम्	= रसरहितहै	निचाय्य	= जानकरके
नित्यम्	= नित्यहै	+ पुरुषः	= पुरुष
अगन्धवत्	= गन्धरहितहै	मृत्युमुखात्	= मृत्युकेमुखसे
च	= और	प्रमुच्यते	= छूटजाताहै ॥

भावार्थ ।

अशब्दमिति-प्र०॥ आत्मज्ञान की प्राप्ति अति कठिन क्यों है। उ० ॥ अशब्दं ॥ जो ब्रह्म शब्द रहित है, स्पर्श रहित है, रूपरहित है, नाशरहित है, रसरहित है, गन्धरहित है, नित्य है, आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहित है, अन्त रहित है, महत्तत्त्व से परे है, अचल है, उसको जो पुरुष जानता है, वह मृत्युके मुख से छूट जाता है, याने जब मुमुक्षु माया और मायाके कार्य को गुण युक्त नाशी पाता है, और ब्रह्मको उनसब का अधिष्ठान होतेहुयेभी उनसे विलक्षण पाता है, तब वह जीवन मुक्त होकर शरीरत्याग पश्चात् आवागमन से रहित होजाता है ॥ १५ ॥

मूलम् ॥

(१६) नाचिकेतमुपाख्यानं मृत्युप्रोक्तं सनातनम् उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते ॥ १६ ॥

पदच्छेदः

नाचिकेतम् उपाख्यानम् मृत्युप्रोक्तं सनातनम् उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
मृत्युप्रोक्तम्	= मृत्युकरके कहीहुई	उक्त्वा	= कथनकरके
सनातनम्	= सनातन	च	= और
नाचिकेतम्	= नचिकेता सम्बन्धी	श्रुत्वा	= श्रवणकरके
उपाख्यानम्	= आख्यायिका	मेधावी	= बुद्धिमान् पुरुष
		ब्रह्मलोके	= ब्रह्मलोक में
		महीयते	= महिमा को प्राप्त होता है ॥

भावार्थ ।

नाचिकेतमिति-पूर्वोक्तज्ञान की स्तुतिको श्रुति करती है ॥ नाचिकेतम् ॥ मृत्युकरके कथन कियाहुआ जो आत्मज्ञान है, वह चिरकालस्थायि है, जिस ज्ञानको उपनिषद् की तीनवल्लियों करके मृत्युने नचिकेता के प्रति कहा है, उस ज्ञानको जो आप आचार्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा श्रवण करके ब्राह्मणादि तीनों वर्णों को सुनाता है, वह ब्रह्मलोक में जाकर महान् महिमाको प्राप्तहोकर ब्रह्माकी तरह पूज्य होजाता है ॥ १६ ॥

मूलम् ॥

(१७) यइमं परमं गुह्यं श्रावयेद् ब्रह्मसंसदि प्रयतः श्राद्ध काले वा तदानन्त्याय कल्पते तदानन्त्याय कल्पते इति ॥ १७ ॥ इति तृतीयावल्ली ३ ॥

पदच्छेदः

यः इमम् परमम् गुह्यम् श्रावयेत् ब्रह्मसंसदि प्रयतः श्राद्धकाले वा तत् आनन्त्याय कल्पते तत् 'आनन्त्याय' कल्पते इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो
इमम्	= इस
परमम्	= परम
गुह्यम्	= गोपनीय विद्याको
ब्रह्मसंसदि	= ब्राह्मणों की सभामें
वा	= अथवा
प्रयतः	= पवित्रहोकर
श्राद्धकाले	= श्राद्धकेसमय
श्रावयेत्	= सुनावै तो
तत्	= वह सुनाना
आनन्त्याय	= अनन्त फल के अर्थ
कल्पते	= मानाजाता है
तत्	= वह सुनाना
आनन्त्याय	= अनन्त फल के अर्थ
कल्पते	= मानजाताहै
इति	= ऐसाकहतेहैं॥

इतिप्रथमाध्यायेतृतीयावल्ली ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

यइममिति–प्रथम अध्याय की अब समाप्ति को करते हैं ॥ यइति ॥ जो पुरुष पवित्र होकर यत्नसे इस परमउत्कृष्ट और गोपनीय उपनिषद् को ब्राह्मणोंकी सभामें पढ़कर सुनाता है और उसके अर्थको समझाता है या श्राद्धकाल में जब ब्राह्मण भोजन करने लगते हैं तब सुनाता है तो उसको अनन्त फल प्राप्तहोता है॥ १७॥

इति तृतीयावल्ली ॥ ३ ॥

इतिप्रथमोध्यायःसमाप्तः ॥

मूलम् ॥

(१) ॐ पराञ्चि खानि व्यतृणत स्वयम्भूस्तस्मा त्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन् कश्चिद्धीरः प्रत्यगा-त्मानमैक्षदावृतचक्षुरमृतत्वमिच्छन् ॥ १ ॥

पदच्छेदः

पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूः तस्मात् प-राक् पश्यति न अन्तरात्मन् कश्चित् धीरः प्रत्यक् आत्मानम् ऐक्षत् आवृतचक्षुः अमृतत्वम् इच्छन् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
स्वयम्भूः	= परमेश्वर	पराङ्	= विषयोंकोही
खानि	= इन्द्रियोंको	पश्यति	= देखती हैं
पराञ्चि	= बाह्यविषयोंकीओर जानेवाली	अन्तरात्मन्	= अन्तरात्मा को
व्यतृणत्	= रचताभया	न	= नहींदेखती हैं
तस्मात्	= निमीकारणसे	कश्चित्	= कोई बिरला
		धीरः	= धीरपुरुष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतत्वम् = अमरभावकी	प्रत्यक् = अंतर
इच्छन् = इच्छाकरताहुवा	आत्मानम् = आत्माको
आवृतचक्षुः = चक्षु इन्द्रियों को विषयोंसे हटाकर	ऐक्षत = देखता है॥

भावार्थ।

पूर्वले अध्याय में संक्षेपसे जिस ब्रह्मका लक्षण कहा है, उ
इस अध्याय में विस्तार करके तिसी ब्रह्मके लक्षणको कहते हैं
पराँचीति ॥ स्वयंभूः ॥ स्वतन्त्र जो परमेश्वर है, उसने इन्द्रि
को बाह्यशब्दादिक विषयों के प्रकाश करने में सामर्थ्यवाला
है और जिस कारण परमेश्वर ने इन्द्रियों को बाह्यमुख रचा
इसी कारण इन्द्रियां बाह्यविषयों की तरफही दौड़ती हैं
सम्पूर्णप्राणी इन्द्रियों द्वारा बाह्यविषयोंको ही देखते हैं, अन
र्यामि प्रत्यगात्मा को नहीं देखते हैं, जो कोई एक विवेकी पु
है, वह विषयों की तरफसे चक्षुको हटाकर अन्तरात्मा को देख
है, वह मोक्षको प्राप्त होता है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

(२) पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते मृत्यो
न्ति विततस्य पाशम् अथ धीराअमृतत्वं विदि
ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते ॥ २ ॥

पदच्छेदः

पराचः कामान् अनुयन्ति बालाः ते मृत्यो
यन्ति विततस्य पाशम् अथ धीराः अमृतत्व
विदित्वा ध्रुवम् अध्रुवेषु इह न प्रार्थयन्ते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
पराचः	= बाह्य	धीराः	= विवेकी पुरुष
कामान्	= विषयों को	ध्रुवम्	= नित्य
बालाः	= अज्ञानीपुरुष	अमृतत्वम्	= अमररूप आत्माको
अनुयन्ति	= प्राप्तहोते हैं	विदित्वा	= जानकरके
च	= और	इह	= इससंसार बिषे
ते	= वेही	अध्रुवेषु	= अनित्य भोगोंको
मृत्योः	= मृत्यु के	नप्रार्थयन्ते	= नहीचाहतेहैं ॥
विततस्य	= फैलेहुये		
पाशम्	= रस्सीको		
यन्ति	= प्राप्तहोते हैं		
अथ	= और		

भावार्थ ।

पराचइति-आत्मदर्शी को संसारकी निवृत्ति और आत्मादर्शी को संसारकी प्राप्ति अब इस मन्त्रकरके कहते हैं ॥ पराचः ॥ जो कोई अल्प बुद्धिवाला है, अर्थात् बालवत् मूढ़ अज्ञानी है, वह दृष्टाऽदृष्ट विषयों की तरफही दौड़ता है, अर्थात् पूर्वोक्त इन्द्रियों करके वह विषयों को ही अनुभव करता है, और यमराजकी विस्तृत नानाप्रकार की पाशोंमें बार २ फसता है, बार २ जन्ममरण को प्राप्तहोता है, अज्ञानकी ऐसी दुर्दशाको देखकर विवेकी पुरुष अपने अमररूप आत्माको जानकर ब्रह्म और नित्यानन्द को अनुभवकर अनित्य संसारी भोगोंसे लेकर ब्रह्मलोकके भोगोंपर्यंत की इच्छा नहीं करता है ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(३) येनरूपंरसंगन्धं शब्दान् स्पर्शांश्चमैथुनान् एतेनैवविजानाति किमत्रपरिशिष्यते एतत्तत् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

येन रूपम् रसम् गन्धम् शब्दान् स्पर्शान् च मैथुनान् एतेन एव विजानाति किम् अत्र परिशिष्यते एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ
येन	= जिससाक्षि आत्मा करके
रूपम्	= रूपको
रसम्	= रसको
गन्धम्	= गन्धको
शब्दान्	= शब्दोंको
स्पर्शान्	= स्पर्शोंको
च	= और
मैथुनान्	= मैथुनों को
एव	= ठीक ठीक
+पुरुष	= पुरुष
विजानाति	= अच्छे प्रकार जानता है
तत्	= सोई
वै	= निश्चयकरके.
एतत्	= यहब्रह्महै
च	= और
एतेन	= इसआत्मा से और
किम्	= क्या
अत्र	= यहां
परिशिष्यते	= जाननेकोशेष रहताहै यानी जाननेयोग्य कुछ भी बाकी नहीं रहता है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

येनेति ॥ जिस अपरोक्ष साक्षीरूप आत्माकरके नीलपीतादिरूपोंको, और मधुराम्लादिक रसोंको, सुरभी अदुरभी आदिक गन्धों को, ध्वन्यात्मिक वर्णात्मिक शब्दों को, शीत उष्णादिक स्पर्शोंको, और स्त्रीसंसर्गजन्य सुखविशेषको, पुरुष अनुभव करता है सोई धर्माऽधर्मादिकों से अतीत तत्त्वरूप ब्रह्म है, वही आत्मतत्त्व है हे नाचिकेता ! यह वही है जिसके प्रति तुमने पूंछा था ॥ प्र० ॥ सब लोक तो इन्द्रियादिकों करके ही रूपादिकों को जानते हैं, और ऐसा तो कोई नहीं कहता है कि साक्षी चेतनकरके इस वस्तुको मैं जानताहूं ॥ उ० ॥ इन्द्रिय आदिक सब जड़ हैं, उनमें रूपादिकों के जानने की सामर्थ्य नहीं है, उनसे अतिरिक्त दूसरा कोई चेतन आत्मा साक्षी सबका जाननेवाला अवश्य है, और जिसकी सत्ता से देह इन्द्रियादिक सब अपने २ व्यवहार को करते हैं वह देहादिकों से भिन्न है, जो अपने आत्मा को ब्रह्म करके जानता है उसको इसलोकमें कुछ भी बाकी जानने योग्य वस्तु नहीं रहता है ॥ ३ ॥ मूलम् ॥

(४) स्वप्नान्तंजागरितान्तञ्चोभौ येनानुपश्यति महान्तं विभुमात्मानं मत्वाधीरोनशोचति ॥४॥

पदच्छेदः

स्वप्नान्तम् जागरितान्तम् च उभौ येन अनुपश्यति महान्तम् विभुम् आत्मानम् मत्वा धीरः न शोचति ॥

अन्वयः	पदार्थ
उभौ	= दोनों यानी
स्वप्नांतम्	= स्वप्नकालके पदार्थोंको
च	= और
जागरितान्तम्	= जाग्रत्काल के पदार्थोंको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

येन = जिस साक्षी चेतनकरके
+पुरुषः = पुरुष
अनुपश्यति = स्पष्टदेखता है
+एतत् = वही
+वै = निश्चय करके
+तत् = यह ब्रह्महै
+च = और
महान्तम् = महान्
विभुम् = व्यापक
आत्मानम् = आत्माको
मत्वा = जानकरके
धीरः = धीर पुरुष
न शोचति = नहीं शोचको प्राप्तहोता है

भावार्थ ।

स्वप्नान्तमिति ॥ आत्मतत्त्व को अतिसूक्ष्म होने से दुर्विज्ञेय जानकर फिर भी यमराज उसी आत्मतत्त्व को प्रकारान्तर करके कहते हैं ॥ स्वप्नान्तमिति ॥ स्वप्नकाल के पदार्थ और जाग्रत् कालके पदार्थ जिस साक्षी चेतनकरके जाने जाते हैं, और जो महान् व्यापक चेतन शरीरों में मानारूप करके स्थित है, और सम्पूर्ण कल्पना का अधिष्ठानभूतहै, उसको जो कोई पुरुष अपना आत्मा जानकर साक्षात् हस्तामलकवत् करता है वह शोचको नहीं प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

(५) यइमंमध्वदंवेदआत्मानंजीवमन्तिकात्
ईशानम्भूतभव्यस्य नततोविजिगुप्सते एतद्वैतत्

पदच्छेदः

यः इमम् मध्वदम् वेद आत्मानम् जीवम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्तिकात् ईशानम् भूतभव्यस्य न ततः विजुगुप्सते एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो कोई	+ सः	= वह
इमम्	= इस	ततः	= फिर
मध्वदम्	= कर्मफलका भोक्ता	न विजुगुप्सते	= अपने आपकी रक्षाकी इच्छा किसी भय से नहीं करता है
अन्तिकात्	= समीपवर्ती	तत्	= सोई आत्मा
भूतभव्यस्य	= कालत्रयका	वै	= निश्चयकरके
ईशानम्	= नियामक	एतत्	= यह ब्रह्म है
जीवम्	= जीवरूप		
आत्मानम्	= आत्माको		
वेद	= जानताहै		

भावार्थ ।

यइममिति ॥ जीव और ईश्वरके भेदको दूर करते हुये फिर भी यमराज आत्मतत्त्व का उपदेश करते हैं ॥ यइति ॥ जो कोई इस कर्मफल का भोक्ता समीपवर्ती कालत्रय का नियामक जीव है, उसको जो कोई ब्रह्मरूप सर्वका द्रष्टा चेतनआत्मा करके जानता है, वह पुरुष फिर अपने आत्मा की रक्षा के लिये किसीका भय नहीं करता है, क्योंकि जब द्वैतभाव नष्ट होजाता है, तब न भय उसको दूसरे से और न दूसरे को भय उससे होताहै सब में अपनेही को देखताहै, और आपको सबमें देखताहै, हे नचिकेता ! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूछा था ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

(६) यःपूर्वन्तपसोजातमद्भ्यःपूर्वमजायतगुहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रविश्यतिष्ठन्तं योभूतेभिर्व्यपश्यत एतद्वैतत् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

यः पूर्व्वम् तपसः जातम् अद्भ्यः पूर्व्वम् अजायत गुहाम् प्रविश्य तिष्ठन्तम् यः भूतेभिः व्यपश्यत एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो
पूर्वम्	= पहले
तपसः	= ब्रह्मसे
जातम्	= उत्पन्नहुआ है
+ च	= और
अद्भ्यः	= जलादि पंच तत्त्वोंसे
पूर्वम्	= पूर्व
अजायत	= उत्पन्न हुआ है
+ च	= और
+यः	= जो
भूतेभिः	= कार्यकारण संघातके सहित
गुहाम्	= हृदयाकाश रूप गुहाविषे
प्रविश्य	= प्रवेशकरके
तिष्ठन्तम्	= स्थित है
+तद्धिरण्यगर्भम्	= तिस हिरण्यगर्भको
यः	= जो पुरुष
व्यपश्यत	= देखता है
तत्	= सोई
वै	= निश्चयकरके
एतत्	= यह ब्रह्म है

भावार्थ।

यःपूर्वमिति ॥ ब्रह्माण्ड का आरम्भक हिरण्यगर्भ जो पञ्चस्थूल महाभूत के प्रथम ज्ञानस्वरूप ब्रह्मसे उत्पन्न हुआ है और जो कार्य कारणसहित हर एकके हृदयाकाशगुहा बिषे स्थित है उस को जोकोई मुमुक्षु ब्रह्मरूप करके देखता है वह ब्रह्मही को देख-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताहै, हे नचिकेता ! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूंछाथा, और सम्पूर्ण कार्य्य कारण संघात में मिलकरके स्थित है ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

(७) याप्राणेनसम्भवत्यदितिर्देवतामयी गुहांप्रविश्यतिष्ठन्तीं याभूतेभिर्व्यजायत एतद्वैतत् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

या प्राणेन सम्भवति अदितिः देवतामयी गुहाम् प्रविश्य तिष्ठन्तीम् या भूतेभिः व्यजायत एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ
या	= जो
देवतामयी	= देवतारूप
प्राणेन	= प्राणकरके
सम्भवति	= उत्पन्नहोताहै
+सा	= सोई
अदितिः	= अदितिरूपहै
+च	= और
या	= जो
भूतेभिः	= सबभूतोंके साथतादात्म्यताको प्राप्तहोकर के
व्यजायत	= उत्पन्नहुवा है
+च	= और
गुहाम्	= हृदयाकाश बिषे
प्रविश्य	= प्रवेशकरके
तिष्ठन्तीम्	= स्थित है
तत्	= सोई
वै	= निश्चयकरके
एतत्	= यह ब्रह्म है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

याप्राणेनेति ॥ जो चेतनरूप आत्मा शब्दादि विषयोंका भोक्ताहै, वही प्राणोपलक्षित सूक्ष्मशरीर उपाधिकरके प्रथम देवता हिरण्यगर्भनामक परब्रह्म से उत्पन्न होताहै, उसी हिरण्यगर्भ देवता अथवा अदिति के हृद्याकाशरूपी गुहा बिषे ब्रह्म स्थित है, तिसको जो देखता है वह ब्रह्मको ही देखताहै, हे नाचिकेता ! तूने जो आत्मतत्त्व पूछा था वह यहही है, जो सम्पूर्ण भूतों के साथ तादात्म्यताको प्राप्त होकर उत्पन्न हुआसा दीखपड़ता है वास्तव से उत्पत्ति आदिकों से रहित है, ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

(८) अरण्योर्निहितोजातवेदागर्भइवसुभृतो गर्भिणीभिः दिवेदिवईड्योजागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

अरण्योः निहितः जातवेदाः गर्भः इव सुभृतः गर्भिणीभिः दिवे दिवे ईड्यः जागृवद्भिः हविष्मद्भिः मनुष्येभिः अग्निः एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अरण्योः	= दोनोंअरणियोंबिषे	गर्भिणीभिः	= गर्भवतीस्त्रियों करके
जातवेदाः	= वैश्वानरअग्निऐसे	सुभृतः	= धारणकिया हुआ
निहितः	= स्थित है	गर्भः	= गर्भ
इव	= जैसे	+निहितः	= स्थित है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च = और	मनुष्येभिः = मनुष्योंकरके
+ यः = जो	दिवेदिवे = प्रतिदिन
अग्निः = अग्नि	ईड्यः = स्तुति करने योग्यहै याने सेवन करने योग्य है
जागृवद्भिः = जाग्रत्स्वभाववाले यानेप्राणायामके करनेवाले	तत् = वही
च = और	वै = निश्चयकरके
विष्मद्भिः = हवनके करनेवाले	एतत् = यह ब्रह्महै

भावार्थ ।

अरण्योर्निहितेति ॥ पूर्वले मन्त्रकरके हिरण्यगर्भको ब्रह्मरूप करके वर्णन किया है, अब इस मन्त्र करके विराट्रूपी अग्निको भी ब्रह्मरूप करके कथन करतेहैं, ॥ अरण्योरिति ॥ जातवेदरूपी जो अग्नि है और जो अरणियों के याने दो लकड़ियों के मथन करने से निकलता है, और जो यज्ञोंविषे हविका भोक्ता है, और जो प्रत्येक शरीरमें स्थित होकर भुक्त वस्तुवोंको पचाता है, और जिसकी रक्षा योगी और क्रतुकादि ऐसे करते हैं जैसे गर्भवती स्त्री अपने गर्भ की रक्षा करती है, और जिसकी स्तुति प्रतिदिन स्वर्ग की इच्छावाले करते रहते हैं, वही ब्रह्मरूप है, क्योंकि ब्रह्मकी प्राप्ति का साधन है, ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

(९) यतश्चोदेतिसूर्य्योऽस्तं यत्रचगच्छति तन्देवाःसर्वेऽर्पितास्तदुनात्येतिकश्चन एतद्वैतत् ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यतः च उदेति सूर्य्यः अस्तम् यत्र च गच्छति तम् देवाः सर्वे अर्पिताः तत् उ न अत्येति कश्चन एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च	= और	देवाः	= देवता
यतः	= जिसप्राणवायु अधिदैव करके	अर्पिताः	= अर्पित हैं
		उ	= और
सूर्य्यः	= सूर्य	तत्	= उसको
उदेति	= उदय होता है	कश्चन	= कोई भी
च	= और	न	= नहीं
यत्र	= जिस बिषे	अत्येति	= उल्लंघन कर सक्ता है
अस्तम्	= अस्त को		
गच्छति	= प्राप्त होता है	तत्	= सोई
तम्	= तिसी में	वै	= निश्चय करके
सर्वे	= सब	एतत्	= यह ब्रह्म है

भावार्थ ॥

यतश्चोदेति ॥ यमराजने अग्निको हिरण्यगर्भ का अवयव रूपकरके नाचिकेता के प्रति पूर्वले मन्त्रकरके कहा है, अब इस मन्त्रकरके इतर देवतों को भी हिरण्यगर्भ का अवयव रूपकरके निरूपण करते हैं ॥ यतश्चोदेतीति ॥ जिस प्राणवायुरूप अधिदेवता से सूर्य्य उदय होता है, और जिसमें अस्तभाव को प्राप्त होताहै तिसी प्राणवायुमें सम्पूर्ण अग्निआदिक और वागादिक देवता अर्पित हैं, जैसे रथ के चक्र में अरे अर्पित होते हैं, तिसप्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायु हिरण्यगर्भ को कोई भी देवता उल्लंघन नहीं करसक्ता है ॥ यह प्राणवायु अधिदेवता ही ब्रह्म है जिसको हे नचिकेता ! तूने जाना था ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

(१०) यदेवेहतदमुत्रयदमुत्रतदन्विह मृत्योःस मृत्युमाप्नोति यइहनानेव पश्यति ॥ १० ॥

पदच्छेदः

यत् एव इह तत् अमुत्र यत् अमुत्र तत् अनु इह मृत्योः सः मृत्युम् आप्नोति यः इह नाना इव पश्यति ॥

अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो
एव	= निश्चय करके
इह	= यहां है
तत्	= सोई
अमुत्र	= वहां है
यत्	= जो
अमुत्र	= वहां है
तत्	= सोई
अन्विह	= यहां है
यः	= जो
इह	= इस अद्वैत चेतन बिषे
नाना	= नानात्व यानी भेदभाववाला
इव	= ऐसा
पश्यति	= देखता
सः	= सो
मृत्योः	= मृत्युसे भी
मृत्युम्	= मृत्युको
आप्नोति	= प्राप्त होता है

भावार्थ ।

यदेवेति ॥ प्र० ॥ यह जो सम्पूर्ण प्राणियों को ब्रह्मरूप करके कहाहै सो अयुक्त है, क्योंकि उपाधि अवच्छिन्नचेतन संसारी है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उपाधि से रहित जो चेतनहै वह ब्रह्महै, विरुद्ध धर्मोंवालों की ऐक्यता नहीं होती है ॥ उत्तर ॥ इसमें कोई दोष नहीं है, यदेवेह ॥ जो चेतन जीवकी उपाधि बुद्धि में साक्षीरूप करके रहताहै, वही चेतनमायारूपी ईश्वरकी उपाधि में भी रहता है, जो चेतन ईश्वरकी उपाधि मायामें है, वही चेतनजीव की उपाधि बुद्धिमें भी है, जो पुरुष वस्तुके भेदसे शून्य ब्रह्ममें भी नानात्वभाव देखता है, और समझता है, कि मैं ब्रह्म से भिन्नहूं, और मेरे से ब्रह्म भिन्नहै, वह मृत्युसे भी मृत्युको अर्थात् पुनः २ जन्म मरण को प्राप्त होता है, ॥ १० ॥

मूलम् ॥

(११) मनसैवेदमाप्तव्यन्नेहनानास्ति किञ्चन मृत्योःसमृत्युङ्गच्छति यइहनानेव पश्यति ॥ ११ ॥

पदच्छेदः

मनसा एव इदम् आप्तव्यम् न इह नाना अस्ति किंचन मृत्योः सः मृत्युम् गच्छति यः इह नाना इव पश्यति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
मनसा	= मनकरके	किञ्चन	= किंचित्मात्र भी
एव	= ही	नाना	= नानात्व याने भेद
इदम्	= यह	न	= नहीं
आप्तव्यम्	= प्राप्तहोने योग्य है	अस्ति	= है
इह	= इसब्रह्म बिषे		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो	मृत्योः	= मृत्यु से भी
इह	= इसब्रह्म बिषे	मृत्युम्	= मृत्युको यानी पुनःपुनः जन्ममरणको
नाना इव	= नानात्वकोही	गच्छति	= प्राप्तहोता है
पश्यति	= देखता है		
सः	= वह		

भावार्थ।

मनसैवेदमिति ॥ जीवात्मा और ब्रह्मात्मा के अभेद ज्ञानके साधन को अब कहते हैं ॥ मनसा ॥ एकाग्र मन करके यह ब्रह्म प्राप्तव्य है याने जानने के योग्य है, ब्रह्मजीवमें कुछभी भेद नहीं है जो मूढ़ पुरुष इस ब्रह्ममें नानात्वभेद को देखता है, वह मर कर बार २ क्षुद्र योनियों को प्राप्त होता है, ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

(१२) अंगुष्ठमात्रःपुरुषोमध्यआत्मनि तिष्ठतिईशानोभूतभव्यस्य नततोविजुगुप्सतेएतद्वैतत्॥१२॥

पदच्छेदः

अंगुष्ठमात्रः पुरुषः मध्ये आत्मनि तिष्ठति ईशानः भूतभव्यस्य न ततः विजुगुप्सते एतत् वै तत्

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अंगुष्ठमात्रः	= अंगुष्ठमात्र	मध्ये	= मध्यबिषेयाने हृदयाकाश में
पुरुषः	= पुरुष		
आत्मनि	= शरीर के		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिष्ठति = स्थित है
+ च = और
भूतभव्यस्य = कालत्रयका
ईशानः = प्रेरक है
ततः = इस लिये
+ सः = वह
विजुगुप्सते = किसी भयसे रक्षा करने की इच्छा
न = नहींकरताहै
तत् = सोई
वै = निश्चयकरके
एतत् = यह ब्रह्म है

भावार्थ ।

अंगुष्ठमात्रइति ॥ आत्मज्ञानकी दृढ़ता के लिये यमराज फिर अभेद काही उपदेश करते हैं ॥ अंगुष्ठमात्रः ॥ अंगुष्ठपरिमाण मनुष्य का हृदयाकाशरूपी पुरहै, तिसके भीतर रहने से आत्मा अंगुष्ठपरिमाणवाला कहा जाता है, उपाधिपरिमाण से पुरुष भी परिमाणवाला कहाजाता है, वास्तवसे यह आत्मा सर्वत्र पूर्णहै, और शरीर के भीतर साक्षीरूप करके स्थित है, और भूत भविष्यत् वर्त्तमान तीनों कालों में होनेवाले जितने पदार्थ हैं ! उन सबका प्रेरकहै, वह किसी का भय नहीं करताहै हे नाचिकेता ! यही वह आत्मतत्त्व है जिसको तूने पूछा था ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

(१३) अङ्गुष्ठमात्रःपुरुषोज्योतिरिवाधूमकः ईशानोभूतभव्यस्यसएवाद्यसउश्वएतद्वैतत् ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषः ज्योतिः इव अधूमकः ईशानः भूतभव्यस्य सः एव अद्य सः उ श्वः एतत् वै तत् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अंगुष्ठमात्रः	= अंगुष्ठमात्र	सः एव	= सोई निश्चयकरके
पुरुषः	= पुरुष	अद्य	= आज वर्त्तमान हैया ने प्रत्यक्ष वर्त्तमान है
अधूमकः	= धूमरहित	उ	= और
ज्योतिः	= अग्नि की	सः	= सोई
इव	= तरह प्रकाशमान है	श्वः	= कल याने गुप्त स्थित है
च	= और जो	ततः	= ताते
भूतभव्यस्य	= तीनोंकाल का	तत्	= वही
ईशानः	= नियामक ईश्वर है	वै	= निश्चय करके
		एतत्	= यह ब्रह्म है

भावार्थ ।

अंगुष्टमात्रेति ॥ अंगुष्ठमात्रः ॥ उपाधि के परिमाणसे अङ्गुष्ठमात्र परिमाणवाला आत्मा भी कहाजाताहै, और पुर नाम शरीर का है, उसमें शयन करने से वह पुरुष भी कहा जाता है, और धूमसे रहित अग्निकी तरह वह प्रकाशमान है, और भूत भव्य पदों करके सम्पूर्ण प्रपंच का ग्रहण करनेवाला है, अर्थात् सम्पूर्ण प्रपंचकों का प्रेरक है, और वर्त्तमान काल और भविष्यकाल विषे एकरस होकर रहताहै और जैसे कालखण्ड रहित है, तैसे आत्मा भी अखण्डहै, हे नाचिकेता ! यह वही आत्माहै, जिसको तूने पूछा था ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

(१४) यथोदकन्दुर्गे वृष्टं पर्वतेषुविधावति एवं धर्मान्पृथक्पश्यँस्तानेवानुविधावति ॥ १४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यथा उदकम् दुर्गे वृष्टम् पर्वतेषु विधावति एवम् धर्मान् पृथक् पश्यन् तान् एव अनुविधावति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यथा	जैसे	धर्मान्	धर्मोंको
उदकम्	जल	पृथक्	भिन्नभिन्न
दुर्गे	कठिन	प्रतिशरीरम्	प्रति शरीर में
पर्वतेषु	पर्वतपर	+ पुरुषः	जीवात्मा
वृष्टम्	बरसाहुवा	पश्यन्	देखताहुवा
विधावति	निम्न देश में फैलकर नष्ट हो- जाता है	तान्एव	तिनहीं शरीरोंको
एवम्	इसीप्रकार	अनुविधावति	वारंवारप्राप्त होताहै

भावार्थ ।

यथोदकमिति ॥ आत्मा के भेददर्शीको संसार की प्राप्ति और आत्मा के एकत्वदर्शी को मोक्षकी प्राप्ति यमराज नाचिकेताके प्रति कहचुके हैं, अब तिसी प्रसंग की समाप्ति को कहते हैं ॥ यथोदकमिति ॥ जैसे बड़े ऊंचे पर्वतों पर गिरा हुवा जल नीचेके देशमें दौड़ जाताहै, और जैसा २ उसको जगह मिलता है उसी २ आकारको प्राप्त होकर दिखलाई देताहै, तैसेही आत्मा शरीरादि उपाधियों के भेद करके भिन्न भिन्न होरहा है, जो आत्माको भिन्न २ करकेही जानता है, एक रूप करके नहीं जानताहै, वह शरीरों कोही प्राप्त होताहै, और जो नाना शरीरों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकही आत्मा देखता है, वह मोक्ष को प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

मूलम् ॥

(१५) यथोदकंशुद्धेशुद्धमासिक्तन्तादृगेव भव
एवंमुनेर्विजानतआत्माभवति गौतम ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

यथा उदकम् शुद्धे शुद्धम् आसिक्तम् तादृक्
एव भवति एवम् मुनेः विजानतः आत्मा भवति
गौतम ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
गौतम	= हे नाचिकेता	भवति	= बना रहताहै
यथा	= जैसे	एवम्	= इसी प्रकार
उदकम्	= जल	विजानतः	= ज्ञानी
शुद्धे	= शुद्धस्थानमें	मुनेः	= मुनि का
आसिक्तम्	= गिराहुआया नी वर्षाहुआ	आत्मा	= आत्मा
		+सदा	= सदा
तादृक्एव	= वैसाही	शुद्धम्	= शुद्ध
शुद्धम्	= शुद्ध	+ भवति	= रहता है

भावार्थ ।

यथोदकमिति ॥ जैसे स्वच्छ जल मेघसे गिरा हुआ स्वच्छजल में स्वच्छजलबना रहता है, तैसेही आत्मा अभेद ज्ञानवालेके शुद्ध मनमें स्थित होकर अपने शुद्ध ज्ञानस्वरूप से च्युत नहीं होताहै, वह ज्यों का त्यों वैसाही बना रहताहै, हे नाचिकेता ॥ १५ ॥

द्वितीयाऽध्यायस्यचतुर्थवल्लीसमाप्ता ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१) पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसअनुष्ठायनशोचतिविमुक्तश्चविमुच्यत एतद्वैतत् ॥ १ ॥

पदच्छेदः

पुरम् एकादशद्वारम् अजस्य अवक्रचेतसः अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तः च विमुच्यते एतत् वै तत्

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अजस्य	= जन्मरहित	अनुष्ठाय	= ध्यान करके
अवक्रचेतसः	= अकुटिलविज्ञानरूपचेतन आत्माका	नशोचति	= शोक नहीं करता है
+इदम्	= यह	+ सः	= वह
एकादशद्वारम्	= ग्यारह दरवाजे वाला	विमुक्तः	= मुक्तहुआ
पुरम्	= पुररूपीशरीरहै	च	= भी
+यः	= जो	विमुच्यते	= मुक्त होताहै
+तम्	= उस पुरके स्वामी को	तत्	= सोई
		वै	= निश्चयकरके
		एतत्	= यह ब्रह्म है

भावार्थ ।

पुरमिति ॥ जीवाभिन्न ब्रह्मके प्रतिपादन करनेके लिये प्रथम देहादि संघात से आत्मतत्त्व का विवेचन करते हैं ॥ पुरमिति ॥ जन्मादिषट् विकारों से रहित जो चेतन है और जो सूर्य्य के प्रकाश की तरह सर्वत्र ज्ञानरूप से शुद्ध मायारूपी शरीर बिषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त है उसके साथ अपने स्थूलशरीररूपी पुरके स्वामी आत्मा
अभेद जान करके जो शोकको नहीं करताहै याने शोकका
जितना दृश्य प्रपंच है उससे अपने को पृथक् देखता है,वह
क्ति को प्राप्त है, अथवा अद्वितीय आत्मज्ञान करके उसका
ल्पित अज्ञानरूपी बंध नष्ट होजाता है, और जैसे पुरके द्वार
हैं तैसेही इस शरीररूपी पुरके भी एकादश द्वारहैं, दो श्रोत्र,
चक्षु, दो नासिका, एक मुख, एक ब्रह्मरन्ध्र (जिसको द-
वां द्वार कहते हैं) एक नाभी, एक लिंग, एक गुदा ये सब
लाकर एकादशद्वारहैं, इन एकादश द्वारोंवाला जो शरीरहै,
सका स्वामी जो आत्मा चेतन है सोई ब्रह्म है, हे नाचिकेता !
सको तूने पूछाथा वह यहही है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

(२) हꣳसःशुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषद
तिथिर्दुरोणसत् नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जागोजा
ऋतुजाअद्रिजाऋतम्बृहत् ॥ २ ॥

पदच्छेदः

हंसः शुचिषत् वसुः अन्तरिक्षसत् होता वेदिषत्
अतिथिः दुरोणसत् नृषत् वरसत् ऋतसत् व्यो-
मसत् अब्जाः गोजाः ऋतुजाः अद्रिजाः ऋतम्
बृहत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अयम् आत्मा	= यह आत्मा	वसुः =	वायुरूप होकर सबको अपने बिषे बसावनेवाला है
हंसः	= हंस है		
शुचिषत्	= पवित्र आकाश में स्थितहै		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्तरिक्षसत् = अन्तरिक्षमें चलनेवाला है
होता = अग्निरूपहै
वेदिषत् = पृथिवी में स्थित है
अतिथिः = जलरूप हो कर
दुरोणसत् = कलश बिषे स्थित है
नृषत् = मनुष्यों में स्थित है
वरसत् = देवतावों में स्थित है
ऋतसत् = यज्ञमें स्थितहै
व्योमसत् = आकाश में स्थित है
अब्जाः = जलमें स्थित होने से प्रतीत होताहै
गोजाः = पृथिवीमें स्थित होने से प्रतीत होताहै
क्रतुजाः = यज्ञमें स्थित होने से प्रतीत होताहै
अद्रिजाः = पर्वतमें स्थित होने से उत्पन्न हुआ प्रतीत हो ताहै
ऋतम् = सत्य है
बृहत् = सबसे बड़ाहै

भावार्थ ।

हंसइति ॥ प्र० ॥ तुमने एक शरीर के स्वामी आत्माको ब्रह्म कहा पर एक शरीरका स्वामी तो परिछिन्न होता है इस कारण उस ब्रह्मको परिछिन्नता और अनेकता भी सिद्ध होगी क्योंकि शरीर अनेकहैं ॥ उ० ॥ सूर्य्यरूप होकर पवित्र आकाश में गमन करने से आत्मा कानाम " शुचिषत् " है और हंस भी है, वायुरूप होकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने में निवास देने से उसका नाम " वसु " है और वायु रूपहोकर आकाश में गमन करने से उसका नाम " अन्तरिक्षसत् " है, होतारूप होकर याने अग्निरूपहोकर पृथिवीरूपी वेदी में स्थित होने से उसका नाम " वेदिषत् " है और सोमरूप होकर कलश में स्थित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होने से उसका नाम "दुरोणसत्" है अथवा अतिथिरूप ब्राह्मण होकर यज्ञशाला में गमन करने से उसका नाम "दुरोणसत्" है मनुष्यों में स्थित होनेसे उसका नाम "नृषत्" है श्रेष्ठ देवताओं में स्थित होने से उसका नाम "वरसत्" है, सत्यरूप होकर यज्ञ में स्थित होनेसे उसका नाम "ऋतसत्" है आकाश में व्यापक और सूक्ष्मरूप होकर स्थितहोने से उसका नाम "व्योमसत्" है और शंख मकरादिरूप होकरके जलमें उत्पन्नहोने के कारण उसका नाम "अब्जा" है, पृथिवी में उद्भिद्रूप होकरके उत्पन्न होने से उसका नाम "गोजा" है और कर्मों का फल जो देह है उसके साथ तद्रूप करके उत्पन्न होनेसे उसका नाम "ऋतुज्जा" है और पर्वतोंसे नदीरूप होकरके उत्पन्न होनेसे उसका नाम "अद्रिजा" है इसप्रकार बाधा से रहित सर्वव्यापकरूपता ब्रह्मको ही कही है, वह न उपाधियों के परिच्छेद करके परिच्छेदवाला है, और न उपाधियोंके नाना होने से नाना है, उपाधि सब मिथ्या है, वह सत्यरूपहै हे नचिकेता ! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूछाथा २॥

मूलम् ॥

(३) ऊर्ध्वम्प्राणमुन्नयत्यपानंप्रत्यगस्यतिमध्ये वामनमासीनंविश्वेदेवाउपासते ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

ऊर्ध्वम् प्राणम् उन्नयति अपानम् प्रत्यक् अस्यति मध्ये वामनम् आसीनम् विश्वेदेवाः उपासते ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ यः	= जो
प्राणम्	= प्राणवायुको
ऊर्ध्वम्	= ऊपरकी ओर
उन्नयति	= लेजाता है
+ च	= और
अपानम्	= अपानवायुको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्यक् = नीचेकी ओर	आसीनम् = स्थित को
अस्यति = फेंकता है	विश्वे = सब
+तम् = उस	देवाः = चक्षुरादि दे-
वामनम् = अंगुष्ठमात्र	वता
शिव	उपासते = उपासना क-
मध्ये = हृदयाकाश	रते हैं
बिषे	

भावार्थ ।

ऊर्ध्वमिति ॥ पूर्वोक्त ब्रह्मात्माके स्वरूपके जानने के लिये अब चिह्नको बताते हैं ॥ ऊर्ध्वम् ॥ हे नाचिकेता ! जो आत्मा प्राणवायु को हृदयाकाशसे ऊपर के देशमें प्राप्त करता है, और जो अपानवायुको हृदयाकाश से अधोदेश में फेंकता है वही आत्मा शरीर के भीतर हृदयाकाश बिषे स्थितहै और हृदयके परिमाणसे परिच्छिन्न भान भी होरहा है, अर्थात् जैसा छोटा हृदय है वैसाही वह भी छोटे रूपसे प्रतीतहोरहा है, (वामनका अर्थ प्रशस्त फल को प्राप्तकरनेवाला भी है अर्थात् सर्वफलोंको इन्द्रियों के प्रति प्राप्तकरनेवाला जो आत्मा है उसी का नाम वामन है) उसीकी चक्षुरादि सम्पूर्ण इन्द्रियां उपासना करती हैं, और उसीको अपने अपने व्यापाररूपी संपूर्ण बलियोंको समर्पण करती हैं और जिस आत्मा के आधीन प्राणादि सम्पूर्ण करण हैं सो आत्मा प्राणादिकोंसे पृथक् है, वह उनके नाश से नाश नहीं होता है हे नाचिकेता ! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूंछा था ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

(४) अस्यविस्रंसमानस्य शरीरस्थस्यदेहिनः देहाद्विमुच्यमानस्यकिमत्रपरिशिष्यतएतद्वैतत्४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

अस्य विस्रंसमानस्य शरीरस्थस्य देहिनः देहात् विमुच्यमानस्य किम् अत्र परिशिष्यते एतत् वै तत्॥

अन्वयः	पदार्थ
विस्रंसमानस्य	= बाहर निकलनेवाले
+ च	= और
विमुच्यमानस्य	= देहको त्यागने वाले
अस्य	= इस
शरीरस्थस्य	= शरीर बिषे स्थित
देहिनः	= जीवआत्मा के
देहात्	= देहसे पृथक् होनेपर
किम्	= क्या
अत्र	= उसत्यागेहुये शरीरबिषे
परिशिष्यते	= अवशेषरहताहै अर्थात् कुछभीशेषनहीं रहता
+ तस्मात्	= इसलिये
एतत्	= यही
वै	= निश्चयकरके
तत्	= वह ब्रह्म है

भावार्थ।

अस्येति॥ इस शरीर में वर्तमान जो आत्मा है जब वह शरीर से बाहर निकल कर चलाजाता है तत्पश्चात् इस शरीर में फिर शेष क्या रहता है? इस शरीरकी स्थितिका कारण वही है जब वह चलजाताहै तब कुछ नहीं रहता है, जब आत्मा देहका त्याग कर देता है तब यह देह जलाने के योग्य होजाता है, इसी वास्ते फिर लोक इस देहको जला भी देतेहैं, इसी से सिद्ध होता है, कि देह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की स्थिति का हेतु आत्माही है, हे नचिकेता ! जिसको तूने पूछा था वह यही आत्मा है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

(५) नप्राणेननापानेनमर्त्योजीवतिकश्चन इतरेणतुजीवन्तियस्मिन्नेतावुपाश्रितौ ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

न प्राणेन न अपानेन मर्त्यः जीवति कश्चन इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन् एतौ उपाश्रितौ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
कश्चन	= कोई भी	इतरेणतु	= औरही करके
मर्त्यः	= मनुष्य	जीवन्ति	= जीवते हैं
नप्राणेन	= नप्राणोंकरके	यस्मिन्	= जिस में
च	= और	एतौ	= वेदोनों प्राणापान
नअपानेन	= न अपान करके	उपाश्रितौ	= आश्रित हो रहे हैं
जीवति	= जीता है	+ तत् एवब्रह्म	= सोई ब्रह्म है
+ परन्तु	= परन्तु		

भावार्थ ।

नप्राणेनेति ॥ प्र० ॥ देहकी स्थिति का हेतु तो अन्वयव्यतिरेक करके प्राण अपानही प्रसिद्ध होते हैं, इन से भिन्न तो कोई भी आत्मा सिद्ध नहीं होता है ॥ उ० ॥ नप्राणेनेति ॥ कोई भी जीव प्राणादिवायु करके जीवता नहीं है, किन्तु प्राणादिकों से विलक्ष जो चेतन है, तिसीकी सत्ता करके सब जीव जीवते हैं, सर्व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का कारणीभूत जो आत्माहै, उसीके आश्रय ये प्राण अपान आदि भी स्थितहैं, हे नाचिकेता ! वही यह ब्रह्महै जिसको तूने पूछाथा५॥

मूलम् ॥

(६) हन्ततइदम्प्रवक्ष्यामिगुह्यम्ब्रह्मसनातनम् यथाचमरणंप्राप्यआत्माभवतिगौतम ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

हन्त ते इदम् प्रवक्ष्यामि गुह्यम् ब्रह्म सनातनम् यथा च मरणम् प्राप्य आत्मा भवति गौतम ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
हन्त	= अब	यथा	= जिस प्रकार
ते	= तुझ से	आत्मा	= अज्ञानीपुरुष का आत्मा
इदम्	= इस	मरणम्	= मरण को
सनातनम्	= पुरातन	प्राप्य	= प्राप्त होके
गुह्यम्	= गोप्य	संसारम्	= संसार को
ब्रह्म	= ब्रह्म को	भवति	= पावता है
प्रवक्ष्यामि	= कहताहूं	तम्	= तिस्को
च	= और	शृणु	= श्रवण कर
गौतम	= हेनचिकेता		

भावार्थ ।

हंतेति ॥ यमराज कहते हैं हे नाचिकेता ! पूर्वोक्त जो गोप्य और सनातन नित्य ब्रह्म है उसीको मैं फिर भी तुम्हारे प्रति कहूंगा, हे गौतम ! जिस तरह जीव ब्रह्मको भलीप्रकार जानकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्म मरण से रहित होजाता है और उसको न जानकर फिर जन्म मरणरूपी संसारको प्राप्तहोता है उन सबको तुम्हारे प्रति कहूंगा, तुम सावधान होकर श्रवण करो ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

(७) योनिमन्येप्रपद्यन्तेशरीरत्वायदेहिनः स्थाणुमन्येऽनुसंयन्तियथाकर्मयथाश्रुतम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

योनिम् अन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः स्थाणुम् अन्ये अनुसंयन्ति यथा कर्म यथा श्रुतम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
अन्ये	= ज्ञानवान् से अन्य
देहिनः	= देहाभिमानी अज्ञानी
शरीरत्वाय	= शरीरके अर्थ
योनिम्	= अनेकयोनिको
यथाकर्म	= कर्मके अनुसार
च	= और
यथाश्रुतम्	= प्रवृत्तिशास्त्र श्रवणानुसार
प्रपद्यन्ते	= प्राप्तहोते हैं

अन्वयः	पदार्थ
अन्ये	= सकाम कर्म करने वालों से भीअन्य अत्यन्तमूढ़ पुरुष
स्थाणुम्	= जङ्गमभाव को यानीवृक्षपाषाण आदि को
यथाकर्म	= कर्मानुसार
च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यथाश्रुतम् = { कपोलक-लिपतशास्त्रश्रवणानुसार } अनुसंयन्ति = प्राप्त होते हैं

भावार्थ।

योनिमिति ॥ जो कोई अज्ञानी पुरुष हैं अर्थात् देहधारी अहंकारी जीव हैं, वे मरणको प्राप्तहोकर पुनः शरीर ग्रहण के लिये कर्मानुसार अथवा प्रवृत्तिशास्त्र श्रवण अनुसार अनेक योनिको प्राप्तहोते हैं, वीर्यद्वारा स्त्री की योनि में प्रवेश कर जाते हैं, वहां अन्य शरीर धारणकर निकल आते हैं, और जो अति पापिष्ठ हैं, वे वृक्षादि योनियों को प्राप्त होतेहैं ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

(८) यएषसुप्तेषुजागर्तिकामंकामंपुरुषो निर्मिमाणस्तदेवशुक्रंतद्ब्रह्मतदेवामृतमुच्यतेतस्मिँल्लोकाः श्रिताःसर्वेतदुनात्येतिकश्चनएतद्वैतत् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

यः एषः सुप्तेषु जागर्ति कामम् कामम् पुरुषः निर्म्मिमाणः तत् एव शुक्रम् तत् ब्रह्म तत् एव अमृतम् उच्यते तस्मिन् लोकाः श्रिताः सर्वे तत् उ न अत्येति कश्चन एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो	पुरुषः	= पुरुष
एषः	= यह	सुप्तेषु	= स्वप्न में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कामंकामम् = वांछितविषयों को	सर्वे = सब
निर्मिमाणः = रचताहुआ	लोकाः = लोक
जागर्ति = जागता है	श्रिताः = आश्रित हैं
तत् एव = सोई	+ च = और
तत् = वह	तत् = उसको
शुक्रम् = शुद्ध	कश्चन = कोई भी
ब्रह्म = ब्रह्म है	न = नहीं
च = और	अत्येति = उल्लंघन करसकताहै
तत् एव = सोई	+ अस्मात् कारणात् = इसी कारण
अमृतम् = अविनाशी	एतत् वै = यही
उच्यते = कहाजाताहै	तत् = वह ब्रह्म है
तस्मिन् = तिसहीबिषे	

भावार्थ ।

यएषजागर्ति ॥ जो यह चेतन इन्द्रियोंके सुप्त होने पर भी निद्रा से रहित होकर जागता रहताहै, और स्वप्नमें वांछित विषयों को याने पशु पुत्रादिकों को रच लेताहै, और जो स्वप्न के पदार्थों का द्रष्टा है, वही उसका अपना आत्मा है, वही शुद्ध है, और सम्पूर्ण उपाधियों से रहित है, वही ब्रह्म अविनाशी व्यापक है, उसी को श्रुतियां मोक्षस्वरूप भी कहती हैं, उसी के सब लोक आश्रित हैं उसको कोई भी उलंघन नहीं करसकताहै ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

(९) अग्निर्यथैकोभुवनंप्रविष्टोरूपंरूपंप्रतिरूपोबभूव एकस्तथासर्वभूतान्तरात्मारूपंरूपंप्रतिरूपोबहिश्च ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

अग्निः यथा एकः भुवनम् प्रविष्टः रूपम् रूपम् प्रतिरूपः बभूव एकः तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपम् रूपम् प्रतिरूपः बहिः च ॥

अन्वयः	पदार्थ
यथा	= जैसे
एकः	= एक
अग्निः	= अग्नि
भुवनम्	= भुवनविषे
प्रविष्टः	= प्रवेशकरता हुआ
रूपम् रूपम्	= रूपरूपसे याने अनेक रूपसे
प्रतिरूपः	= हरएकउपाधि के साथ तद्रूप
बभूव	= होताभया(होताहै)
तथा	= वैसेही
सर्वभूतान्तरात्मा	= सब भूतों के अन्तर का आत्मा भी
एकः	= एक होता हुआ
रूपम्रूपम्	= देह देहके प्रति
प्रतिरूपः	= तादात्म्याऽध्यास करके
बभूव	= तद्रूपहीहोता भया(स्थितहै)
च	= और
बहिः	= आकाशवत् सबके बाहर भी स्थित होता भया (स्थितहै)

भावार्थ ।

अग्निरिति ॥ जैसे एकही अग्नि भवन में याने मन्दिर में प्रविष्ट होकर उस मन्दिर के भीतर जितने रूपवाले काष्ठादि पदार्थ होते हैं उनको जलातेहुये उतनेही रूपोंवाला होताहै याने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोले काष्ठ के साथ गोला लम्बेके साथ लम्बा टेढ़े के साथ टेढ़ा और सीधे के साथ सीधा दिखलाई देताहै, परन्तु वास्तव से तेजोरूप अग्नि काष्ठ आदि उपाधियों से विलक्षणहै, न वह गोलहै, न वह लम्बाहै, न वह टेढ़ाहै, न चौड़ाहै, तैसे सम्पूर्ण भूतों का एकही अन्तर आत्मा भी सब शरीरों के साथ तादात्म्याध्यासकरके, शरीरों के आकार की तरह प्रतीत होता है, पर वास्तव से वह सब शरीरों से भिन्न है, शरीरों के गुण दोषोंके साथ लिप्यमान कदापि नहीं होता है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

(१०) वायुर्यथैकोभुवनंप्रविष्टोरूपंरूपंप्रतिरूपोबभूव एकस्तथासर्वभूतान्तरात्मा रूपंरूपंप्रतिरूपोबहिश्च ॥ १० ॥

पदच्छेदः

वायुः यथा एकः भुवनम् प्रविष्टः रूपम् रूपम् प्रतिरूपः बभूव एकः तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपम् रूपम् प्रतिरूपः बहिः च॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यथा	= जैसे	रूपम्रूपम्	= शरीर शरीर प्रति
एकः	= एक	प्रतिरूपः	= तद्रूप
वायुः	= वायु	बभूव	= होता भया
भुवनम्	= चतुर्दश लोक में	तथा	= वैसेही
प्रविष्टः	= प्रवेश करता हुआ	सर्वभूतान्तरात्मा	= सब भूतों का अन्तरात्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकः = एक होता हुआ		च = और	
रूपम्रूपम् = देहदेह प्रति		बहिः =	बाहर भी आकाशवत्व्याप्त होताभया (स्थित है)
प्रतिरूपः = तादात्म्यरूप			
बभूव = होता भया (स्थित है)			

भावार्थ।

वायुरिति ॥ जैसे एकही वायु मंदिर आदिको में प्रवेश कर के सब कोठरी और छत आदि के साथ मिल करके तत्तद्रूपवाला होजाता है अर्थात् कोठरी आदिकों के भेद करके भेदवाला प्रतीत होने लगता है, परन्तु वह खुद मन्दिर या कोठरी या उनमें जो विकार है नहीं होजाता है, तैसेही एकही आत्मा सम्पूर्ण प्राणियों के शरीरों के साथ मिलकर तत्तद्रूपवाला प्रतीत होने लगताहै परन्तु उन उपाधियों के गुणदोषों करके दोषवाला नहीं होता है ॥ १० ॥

मूलम् ॥

(११) सूर्य्योयथासर्वलोकस्य चक्षुर्नलिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः एकस्तथासर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यतेलोकदुःखेनबाह्यः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः

सूर्य्यः यथा सर्वलोकस्य चक्षुः न लिप्यते चाक्षुषैः बाह्यदोषैः एकः तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यथा = जैसे		सूर्य्यः = सूर्य	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वलोकस्य=सबलोकों का
चक्षुः = नेत्रभूतहोताहुआ
चाक्षुषैः = लोकों के चक्षुओं के
बाह्यदोषैः = बाह्यदोषों करके
नलिप्यते = नहीं लिप्यमानहोताहै

तथा = वैसेही
एकः = एक
सर्वभूतान्तरात्मा = सबभूतों का अंतरात्मा
बाह्यः = पृथक्होता हुआ
लोकदुःखेन = लोकोंकेदुःखसे
नलिप्यते = नहीं लिप्यमान होताहै

भावार्थ ।

सूर्योयथेति ॥ जैसे प्राणिमात्र के चक्षु में देवतारूप से सूर्य्य स्थित है और चक्षुओं करके निषिद्ध दर्शनजन्य या अधर्मजन्य पाप या चक्षुद्वारा बाह्य दोष अर्थात् अपवित्र वस्तुओं के साथ संसर्ग भी रखता है पर उनके पाप या अपवित्रा से लिप्यमान नहीं होताहै, और जैसे बाह्य तेजरूप सूर्य्य आकाशमें स्थित है और सम्पूर्ण पवित्र अपवित्र वस्तुओं को अपने किरणों करके स्पर्श करताहै पर न वह पवित्र न अपवित्र, होताहै, और जैसे वह एक रस ज्योंका त्यों आदि, अन्त, मध्य रहित प्रकाश सम्बंध रखते हुये भी असम्बन्ध स्थित है, तैसेही सजातीय विजातीय, स्वगत आदि भेदों से रहित सम्पूर्णभूतों का अन्तरात्मा सम्पूर्ण प्राणियोंकी बुद्धि में स्थितहुआ बुद्धिके गुणदोषों करके लिप्यमान नहीं होता है ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

(१२) एकोवशीसर्वभूतान्तरात्मा एकंरूपंबहु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मायःकरोति तमात्मस्थंयेऽनुपश्यन्तिधीरास्तेषां सुखं शाश्वतन्नेतरेषाम् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

एकः वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकम् रूपम् बहुधा यः करोति तम् आत्मस्थम् ये अनुपश्यन्ति धीराः तेषाम् सुखम् शाश्वतम् न इतरेषाम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
सर्वभूता-त्मा	= सब भूतोंका अन्तरआत्मा
एकः	= एकहै
वशी	= सबको वश करनेवालाहै
च	= और
एकंरूपम्	= अपनेएकही रूपको
यः	= जो
बहुधा	= उपाधिकरके बहुत प्रकारका
करोति	= करलेता है
तम्	= तिस

अन्वयः	पदार्थ
आत्म-स्थंम्	= शरीरमेंस्थितआत्माको
ये	= जो
धीराः	= विवेकी पुरुष
अनुपश्यन्ति	= अनुभवकरतेहैं
तेषाम्	= तिनकोही
शाश्वतम्	= नित्य
सुखम्	= सुखहोताहै
इतरेषाम्	= इतर पुरुषोंको
न	= नहीं होताहै

भावार्थ ।

एक इति ॥ जो सजातीय विजातीयादि भेद से शून्य परमात्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, वह एकही है, और सम्पूर्ण जगत् को अपने वश करके वर्त्तता है, वह सम्पूर्ण भूतों का अन्तरात्मा है, और सम्पूर्ण प्राणियों की बुद्धि में स्थित होकर अपने निरुपाधिक एक चिद्रूप को उपाधियों करके नानाप्रकार का करलेता है, उसी आत्मा को जो विवेकी पुरुष आचार्य्य के उपदेश के अनन्तर अपने में साक्षात् अनुभव करते हैं, उन कोही नित्यसुखकी प्राप्ति होती है ॥१२॥

मूलम् ॥

(१३) नित्योऽनित्यानाञ्चेतनश्चेतनानामेको बहूनांयोविदधातिकामान् तमात्मस्थंयेऽनुपश्यन्तिधीरास्तेषांशान्तिः शाश्वतीनेतरेषाम् ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

नित्यः अनित्यानाम् चेतनः चेतनानाम् एकः बहूनाम् यः विदधाति कामान् तम् आत्मस्थम् ये अनुपश्यन्ति धीराः तेषाम् शान्तिः शाश्वती न इतरेषाम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो व्याप-
	क आत्मा
अनित्यानाम्	= अनित्य
	जगत् आ-
	दिकों का
नित्यः	= अधिष्ठान
	कारणरूप
	नित्यहै

अन्वयः	पदार्थ
च	= और
चेतनानाम्	= चेतनकाभी
चेतनः	= चेतन है
सः	= सोई
एकः	= एक हुवा
	हुवा
बहूनाम्	= अनंतजी-
	वों प्रति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कामान् = कर्मों के अनुसार भोगों को
विदधाति = देताहै
तम् = तिस
आत्मस्थम् = बुद्धिमेंस्थितआत्माको
ये = जो
धीराः = विवेकी पुरुष
अनुपश्यन्ति = अनुभवकरते हैं
तेषाम् = उनको
शाश्वती = नित्य
शान्तिः = शान्तिरूपमोक्षप्राप्त है
इतरेषाम् = औरों को
न = नहीं

भावार्थ ।

नित्या इति ॥ नित्योऽनित्यानां ॥ जितने संसार में विनाशी पदार्थ हैं उनको भी व्यवहारिक नित्यत्वकी सत्ता देनेवाला एक आत्माही है, अथवा नैयायिकों के मत में जो आकाश कालादि नित्य हैं उनमें व्यापकरूप होकर उनको जो सत्तास्फुरती नित्य देनेवालाहै वह आत्माही है, और जितने चेतन ब्रह्माइन्द्रादिक हैं उन सब का भी नियन्ता आत्माही है, अथवा चेतनत्व करके लोकों को अभिमत जो बुद्धि आदिक हैं उनको भी जो अपनी चैन्यता देकर चेतन करनेवाला है वह आत्माही है, जो दूसरे किसी की सहायता से रहित होकरके सम्पूर्ण प्राणियों के प्रति वाञ्छित कामना को देताहै वह आत्माही है, ऐसे आत्मा को जो विवेकी पुरुष देखते हैं अर्थात् अपना आत्मा जानकर साक्षात्कार करते हैं उनकोही नित्यसुखकी प्राप्ति होती है इतरों को नहीं ॥ १३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१४) तदेतदितिमन्यन्तेऽनिर्देश्यम्परमंसुखम् कथन्नुतद्विजानीयांकिमुभातिविभातिवा ॥ १४ ॥

पदच्छेदः

तत् एतत् इति मन्यन्ते अनिर्देश्यम् परमम् सुखम् कथम् नु तत् विजानीयाम् किमु भाति विभाति वा ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो	+ भगवन्	= हे भगवन्
परमम्	= उत्कृष्ट	+ तत्	= उस परमात्माको
सुखम्	= सुख	कथम् नु	= कैसे
अनिर्देश्यम्	= कहनेमेंआवैनहीं	विजानीयाम्	= जानूं मैं
तत्	= सोई	+ तत्	= वह
एतत्	= यह आत्मा ज्ञानस्वरूप है	किमु	= कैसे
इति	= ऐसा	भाति	= प्रकाशताहै
+ ब्रह्मविदः	= ब्रह्मवेत्ता	वा	= और
मन्यन्ते	= मानतेहैं	+ किमु	= कैसे
		विभाति	= स्पष्टभासताहै

नोट—नचिकेता यमराज भगवान्से कहताहै कि हे भगवन्! जो सुखरूप आत्मा ब्रह्मवेत्ताओं को प्राप्त है उसको मैं कैसे जानूं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

तदेतदिति ॥ जो पूर्व कथन कियाहुआ निरतिशय आत्मानन्दहै अर्थात् जिससे अधिक और आनन्द नहीं है, जो आनन्द कथन करनेको अशक्य है, जिस आनन्द को ज्ञानी लोग अपरोक्षता करके जानते हैं, और जो आनन्द विद्वानों को अनुभव करकेही सिद्ध है उस आनन्दको हम किसप्रकार से जानें, अर्थात् किसप्रकारसे उसको हम मुमुक्षु लोग अपरोक्षता करके अपनी बुद्धिका विषय करैं, ॥ १४ ॥

मूलम् ॥

(१५) नतत्रसूर्योभातिनचन्द्रतारकन्नेमाविद्युतो भान्तिकुतोयमग्निः तमेवभान्तमनुभातिसर्वं तस्यभासासर्वमिदंविभाति ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

न तत्र सूर्यः भाति न चन्द्रतारकम् न इमाः विद्युतः भान्ति कुतः अयम् अग्निः तम् एव भान्तम् अनुभाति सर्वम् तस्य भासा सर्वम् इदम् विभाति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तत्र	= तिसको	चन्द्रतारकम्	= चन्द्रमा सहित तारोंके
सूर्य्यः	= सूर्य	+ नभाति	= नहीं प्रकाशकरसक्ता है
नभाति	= नहींप्रकाश करसक्ताहै		
च	= और		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = और
इमाः = ये
विद्युतः = बिजुलियांभी
नभान्ति = नहींप्रकाशक-
रसक्ती हैं
+ तर्हि = तब
कुतः = कैसे
+ तम् = उसको
अयम् = यह
अग्निः = लौकिक अ-
ग्नि
+ प्रकाश-यिष्यति } प्रकाशकरै-
=गी किन्तु
नहीं करैगी

तम् एव = तिसही
भान्तम् = प्रकाश मान
के पीछे
सर्वम् = सब जगत्
अनुभाति = प्रकाशमान
होताहै
च = और
तस्य = तिसही के
भासा = प्रकाशकरके
इदंसर्वम् = यह सम्पूर्ण
सूर्यादि
विभाति = प्रकाशमान
होताहै

इति द्वितीयाध्याये पञ्चमीवल्ली समाप्ता ॥

भावार्थ ।

न तत्रेति ॥ जब उस स्वात्मस्वरूप ब्रह्म में सूर्य जो सम्पूर्ण जगत् का प्रकाशकहै, प्रकाश नहीं करसक्ताहै, न चन्द्रमा सहित तारों के प्रकाश करसक्ताहै और न यह बिजुली प्रकाश करसक्तीहै, तब यह अग्नि उस ब्रह्म में क्या प्रकाश करसक्ती है, उस आत्माके प्रकाश से ही सब सूर्य्यादिक प्रकाशमान होते हैं, स्वतन्त्र न वे प्रकाशमान हैं और न दूसरों को प्रकाशमान करसक्ते हैं ॥ १५ ॥

इति श्रीद्वितीयाध्याये पञ्चमीवल्ली समाप्ता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१) ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाखएषोऽश्वत्थः सनातनःतदेवशुक्रंतद्ब्रह्मतदेवामृतमुच्यते तस्मिँल्लोकाःश्रिताःसर्वेतदुनात्येतिकश्चनएतद्वैतत् ॥ १ ॥

पदच्छेदः

ऊर्ध्वमूलः अवाक्शाखः एषः अश्वत्थः सनातनः तत् एव शुक्रम् तत् ब्रह्म तत् एव अमृतम् उच्यते तस्मिन् लोकाः श्रिताः सर्वे तत् उ न अत्येति कश्चन एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ
एषः	= यह संसार
ऊर्ध्वमूलः	= ऊर्ध्वमूल
अवाक् शाखः	= नीचे शाखा-वाला
सनातनः	= अनादिकाल का
अश्वत्थः	= पीपल का वृक्ष है
तत् एव	= तिस संसार-रूपी वृक्ष का मूल
शुक्रम्	= शुद्ध
ब्रह्म	= ब्रह्म है
च	= और
तत् एव	= वही
अमृतम्	= अविनाशी
उच्यते	= कहा जाताहै
तस्मिन्	= उस बिषे
सर्वे	= सब
लोकाः	= लोक
श्रिताः	= आश्रयको प्राप्त हैं
उ	= और
तत्	= उसको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
कश्चन	= कोई भी	एतत्	= यही
नअत्येति	= नहीं उल्लंघन कर सक्ताहै	वै	= निश्चय करके
		तत्	= वह ब्रह्म है

भावार्थ ।

पूर्ववाली वल्ली में यमराज ने नचिकेता के प्रति कहा है कि आदित्यादिकों का भी प्रकाशक ब्रह्महै, अब इस छठी वल्ली में और प्रकार करके ब्रह्मके स्वरूपको कहतेहैं ॥ ऊर्ध्वमिति ॥ यह जो प्रत्यक्षका विषय ब्रह्मा से लेकर स्थावरपर्य्यंत संसार है वह प्राचीन कालके एक वृक्ष के समानहै ॥ प्र० ॥ मूल और शाखासे रहित संसार को वृक्षरूपता कैसे है ॥ उ० ॥ ऊर्ध्व अर्थात् सबसे उत्कृष्ट जो ब्रह्म हैं सोई इस संसार का मूल है और कार्य्योपाधि हिरण्यगर्भ इस के नीचे की शाखा है, जो संसाररूपी वृक्ष का मूलकारण ब्रह्म है वह शुद्ध है व्यापक है और अविनाशी है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

(२)यदिदंकिञ्चजगत्सर्वं प्राणएजतिनिःसृतम् महद्भयंवज्रमुद्यतं यएतद्विदुरमृतास्तेभवन्ति ॥ २॥

पदच्छेदः

यत् इदम् किञ्च जगत् सर्वम् प्राणे एजति निःसृतम् महद्भयम् वज्रम् उद्यतम् ये एतत् विदुः अमृताः ते भवन्ति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो	सर्वम्	= सब
किञ्च	= कुछ	जगत्	= जगत् है
इदम्	= यह	+ तत्	= सो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राणे = प्राणरूपी ब्रह्म बिषे
एजति = चलताहै यानी उसीके आश्रयहै
+ च = और
+ ततः = तिसी से
निःसृतम् = निकसाभयाहै
महद्भयम् = वह ब्रह्म बड़ा भयवालाहै
वज्रम् = वज्रको
उद्यतम् = उठाये हुये है
ये = जो विवेकीजन
एतत् = इसको
विदुः = जानतेहैं
ते = वे
अमृताः = अमर
भवन्ति = होतेहैं

भावार्थ।

यदिति ॥ जोकुछ जगत् में प्रत्यक्ष का विषय दिखाई देता वह सब ब्रह्म से ही उत्पन्न हुआ है, जिस ब्रह्म के व्यापक होने और तीनों कालों में विद्यमान होने से संपूर्ण जगत् के प्राणीमात्र अपने २ व्यापारों को करते हैं उसी ब्रह्म का नाम महहै, जो सब से महान् हो, और संपूर्ण जगत् जिस से भय को हो उसी का नाम महद्भय है, और जैसे वज्र को हाथ में लिये हुये इन्द्र दूसरों के भय का कारण होता है तैसेही ब्रह्मभी पुरुषों के लिये भय का हेतु है अर्थात संपूर्ण जगत् उसी के से कांपता है जो विद्वान् इस प्रकार संपूर्ण जगत् के प्रवर्तब्रह्म को जानता है और उसी ब्रह्म को अपना आत्मा भी जानता है वही मुक्तस्वरूप होता है ॥ २ ॥

मूलम्॥

(३) भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपतिसूर्य्यः
भयादिन्द्रश्चवायुश्चमृत्युर्धावतिपञ्चमः ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

भयात् अस्य अग्निः तपति भयात् तपति सूर्यः भयात् इन्द्रः च वायुः च मृत्युः धावति पञ्चमः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अस्य	= इसपरमात्माके	भयात्	= भयसे
भयात्	= भयसे	+धावति	= दौड़ताहै यानी वर्षा करताहै
अग्निः	= अग्नि	+ च	= और
तपति	= तपताहै	वायुः	= वायु
च	= और	+अस्य	= इसी के
सूर्य्यः	= सूर्य्य भी	+भयात्	= भयसे
+अस्य	= इसी के	+धावति	= चलताहै
भयात्	= भयसे	+ च	= और
तपति	= तपताहै	पञ्चमः	= पांचवां
च	= और	मृत्युः	= मृत्यु
इन्द्रः	= इन्द्र	धावति	= दौड़ता फिरताहै
+अस्य	= इसके		

भावार्थ ।

भयादिति ॥ इस परमात्मा के भय से अग्नि तपताहै अर्थात् अपने कार्य दाह प्रकाशादिकों को किया करता है, सूर्य्य प्रतिदिन पूर्व से पश्चिम ऊपरसे नीचे चलकर संपूर्ण लोकों को प्रकाश करता रहता है, इन्द्र भी अपना कार्य याने वर्षा किया करता है, वायु रात्रि दिन अंतरिक्ष में दौड़ताही रहताहै, और मृत्यु यमराज उसी परमात्मा के भय से अहर्निशि पापियों को दण्ड देने के लिये दौड़ता फिरता है, जिस परमात्मा के भय से ऐसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं सूर्य्यादिक भयभीत हो रहे हैं तब औरों की कौनसी गिनती है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

(४) इहचेदशकद्बोद्धुम्प्राक्शरीरस्यविस्रसः ततःसर्गेषुलोकेषुशरीरत्वायकल्पते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

इह चेत् अशकत् बोद्धुम् प्राक् शरीरस्य विस्रसः ततः सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इह	= इसी जन्ममें	+बोद्धुम्	= जानने को
शरीरस्य	= शरीर के	+अशकत्	= समर्थ भया
विस्रसः	= पात होने से	ततः	= तो
प्राक्	= पहले	सर्गेषु	= पृथिवी आदि
चेत्	= यदि	लोकेषु	= लोकों बिषे
बोद्धुम्	= जानने को	शरीरत्वाय	= शरीरधारणार्थ
अशकत्	= समर्थ भया	कल्पते	= समर्थ होताहै यानी अनेक योनियों को प्राप्त होता है
+तदा	= तो		
+संसार बन्धनात्	= संसार के बंधन से		
+विमुच्यते	= छूटजाता है		
+नचेत्	= औरअगरनहीं		

भावार्थ ।

इहेति ॥ शरीर के पतन होने से पूर्वही इस मनुष्यदेह में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो पुरुष ब्रह्मबोध में समर्थ होता है अर्थात् ज्ञानकी प्राप्ति के साधनों करके संपन्न होता है वही ब्रह्म को जान कर संसार से मुक्त होजाता है, यदि ब्रह्मज्ञान के साधनों करके संपन्न नहीं होता है तो वह संसारचक्र में घटीयन्त्र की तरह शरीर धारण किया करता है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

(५) यथादर्शेतथाऽऽत्मनियथास्वप्ने तथा पितृलोकेयथाऽप्सुपरीवददृशेतथा गन्धर्वलोकेछायातपयोरिवब्रह्मलोके ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

यथा आदर्शे तथा आत्मनि यथा स्वप्ने तथा पितृलोके यथा अप्सु परि इव ददृशे तथा गंधर्वलोके छायातपयोः इव ब्रह्मलोके ॥

अन्वयः	पदार्थ
यथा	= जैसे
आदर्शे	= दर्पण बिषे अपना प्रतिबिंब
तथा	= तैसे
आत्मनि	= बुद्धिबिषे चिदाभास
ददृशे	= दिखाई पड़ता है
+ च	= और
यथा	= जैसे
स्वप्ने	= स्वप्न बिषे
तथा	= वैसेही
पितृलोके	= पितृलोकबिषे
+ ददृशे	= दिखलाई देता है
+ च	= और
यथा	= जैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परि इव	= चारोंतरफ से भरेहुये	+ च	= और
अप्सु	= जल बिषे प्रतिबिंब	छाया-तपयोः	= छाया धूपकी
+ ददृशे	= दिखलाई देता है	इव	= तरह
तथा	= तैसे ही	+ अयम् आत्मा	= यह आत्मा
गन्धर्व-लोके	= गन्धर्व लोक बिषे	ब्रह्मलोके	= ब्रह्मलोक बिषे
		+ ददृशे	= दिखलाई देता है

भावार्थ।

यथेति ॥ प्र० ॥ यदि इस मनुष्यशरीर में आत्मज्ञान की प्राप्ति न होगी तो पितृआदिक लोकों में प्राप्ति होगी बहुत परिश्रम क्यों करना चाहिये ॥ उ० ॥ ब्रह्मलोक से अतिरिक्त पितृआदिक लोकों में आत्मज्ञान की प्राप्ति दुर्लभ है, ब्रह्मलोक में जाकर आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है परन्तु बिना उपासना के ब्रह्मलोक की प्राप्ति अतिदुर्लभ है, और उपासना बहुत कठिन है, इस लिये इसी जन्म में आत्मज्ञानकी प्राप्ति के लिये यत्न करना अवश्य है ॥ यथेति ॥ जैसे शुद्ध दर्पण में स्पष्ट अपना प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है तैसेही साधनचतुष्टयसंपन्न मनुष्य की शुद्धि में आत्मा का प्रतिबिंब दिखाई पड़ताहै, और जसे इन्द्रियों से अजन्य बिषयों को बिषय करनेवाली अंतःकरण की वृत्तिरूपी स्वप्न अवस्था में कोई पदार्थ साफ़ नहीं दिखाई पड़ता है सब धुन्धलासा दिखाई देता है वैसेही आत्मा का स्वरूप पितृलोक में स्पष्ट नहीं दिखाई देता है, और जैसे कंपादिकोंसहित जल में अपने शरीर का प्रतिबिंब कटाकुटासा दिखाई पड़ता है तैसे ही गंधर्वलोक में आत्मा का प्रतिबिंब स्पष्ट भान नहीं होता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जैसे छाया और धूप पृथक् २ प्रतीत होते हैं तैसेही ब्रह्मलोक में उपाधि से रहित चेतन आत्मा का स्वरूप सूर्य्यवत् दिखाई देता है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

(६) इन्द्रियाणाम्पृथग्भावमुदयास्तमयौचय त्पृथगुत्पद्यमानानांमत्वाधीरोनशोचति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

इन्द्रियाणाम् पृथक् भावम् उदयास्तमयौ च यत् पृथक् उत्पद्यमानानाम् मत्वा धीरः न शोचति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च	= और	+ तत्	= उसको
पृथक्	= भिन्न	उदयास्तमयौ	= उत्पत्तिप्रलयरूप अथवा जाग्रत्सुषुप्तिरूप
उत्पद्यमानानाम्	= उत्पन्नभये	मत्वा	= जानकरके
इन्द्रियाणाम्	= इन्द्रियोंके	धीरः	= धीरपुरुष
यत्	= जो	नशोचति	= शोकको नहीं प्राप्त होताहै
पृथग्भावम्	= भिन्नभावहैं		

भावार्थ ।

इन्द्रियाणामिति ॥ आत्मा के साक्षात्कारमें विवेकरूपी ज्ञान के साधन को और उसके फलको अब कहते हैं ॥ इन्द्रियाणां ॥ श्रोत्रादिक ज्ञान इन्द्रियां जो ज्ञान के कारण हैं याने साधन हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे आकाशादिकभूतों से पृथक् २ उत्पन्न हुयेहैं इस लिये वे सब आत्मा के स्वरूप से भिन्न हैं, उन के परस्पर भेद को जो चेतन पुरुष शरीर में स्थित होकर जानताहै, अर्थात् जाग्रत् में इन्द्रियों के व्यापारों को जानता है, और स्वप्न में उन के शयन करने के व्यापार को जानता है, उस साक्षी चेतन पुरुष की साक्षात्कार करके विद्वान् शोक से तरजाता है ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

(७) इन्द्रियेभ्यःपरंमनोमनसःसत्त्वमुत्तमम् सत्त्वादधिमहानात्मामहतोऽव्यक्तमुत्तमम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

इन्द्रियेभ्यः परम् मनः मनसः सत्त्वम् उत्तमम् सत्त्वात् अधि महान् आत्मा महतः अव्यक्तम् उत्तमम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इन्द्रियेभ्यः	= इन्द्रियोंसे	महानात्मा	= महत्तत्त्व
परम्	= परेयानेश्रेष्ठ	अधि	= श्रेष्ठहै
मनः	= मन है	च	= और
मनसः	= मनसे	महतः	= महत्तत्त्वसे
सत्त्वम्	= बुद्धि	अव्यक्तम्	= अव्यक्त
उत्तमम्	= श्रेष्ठ है	उत्तमम्	= श्रेष्ठहै
सत्त्वात्	= बुद्धि से भी		

भावार्थ।

इन्द्रियेभ्यइति ॥ श्रोत्रादि इन्द्रियों से संकल्प विकल्परूपी मन श्रेष्ठ है और संकल्प विकल्परूपी मनसे बुद्धि श्रेष्ठ है और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यष्टिरूपी बुद्धिसे समष्टिरूपी बुद्धि श्रेष्ठ है और समष्टिरूपी बुद्धि से अव्याकृत जो संपूर्ण जड़ जगत् आदि का मूल कारण प्रकृति है वह श्रेष्ठ है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

(८) अव्यक्ततुपरःपुरुषोव्यापकोऽलिङ्गएव चयज्ज्ञात्वामुच्यतेजन्तुरमृतत्वञ्चगच्छति ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

अव्यक्तात् तु परः पुरुषः व्यापकः अलिङ्गः एव च यत् ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुः अमृतत्वम् च गच्छति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तु	= और	सः	= वह
यत्	= जिसको	पुरुषः	= पुरुष
ज्ञात्वा	= जानकरके	अव्यक्तात्	= अव्यक्तसे
जन्तुः	= मनुष्य	परः	= परेहै
मुच्यते	= मुक्तहोजाता है	व्यापकः	= व्यापकहै
च	= और	+ च	= और
अमृतत्वम्	= अमरभावको	एव	= निश्चयकरके
गच्छति	= प्राप्तहोता है	अलिङ्गः	= चिह्नरहितहै

भावार्थ ।

अव्यक्तादिति ॥ अव्यक्त से परे जो सब बिबे व्यापक पुरुष है वह आत्मा है, वह उत्कृष्ट है, वह साक्षात् सर्वत्र पूर्ण है, ॥ प्र० ॥ आत्मा का तो प्रत्यक्ष नहीं होता है, वह सुख दुःखादिक गुणों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का आश्रयत्व करके अनुमेय है ॥ सुख दुःखादिः साश्रयः गुणत्वात् रूपादिवत् ॥ सुख दुःखादिक गुणहोने से किसी के आश्रित अवश्य होते हैं क्योंकि जो २ गुण होता है वह द्रव्य के आश्रितही होता है, जैसे रूप रसादिक गुण पृथ्वी आदिक द्रव के आश्रितही होते हैं तैसेही पृथ्वी आदि से अलग नहीं रहसक्ते हैं सुख दुःखादिक गुण भी किसीके आश्रितही मानने पड़ैंगे ये गुण जड़ पृथ्वी आदिकों के आश्रित तो नहीं रहसक्ते हैं और चूंकि सुख दुःख चेतनही में प्रतीत होते हैं इसलिये आत्माही इनका आश्रय सिद्ध होता है और सुख दुःखादिक गुणों करके अनुमेय है ॥ उ० ॥ सुख दुःखादिक सब अन्तःकरण के आश्रितहैं अर्थात् अन्तःकरण के धर्म हैं आत्मा के नहीं, इन करके आत्मा अनुमेय यानी अनुमान प्रमाण का विषय नहीं है क्योंकि धर्म धर्मी को दिखाता है अन्य को नहीं, आत्मा अनुमितिकाजनक जो सुख दुःखादि लिंग याने चिह्न हैं उनसे भी वह परे है, श्रुति कहती है ॥ न तस्य कार्य्यं करणंच विद्यते ॥ न उस का कोई कार्य्य यानी शरीरहै, और न कोई उसका करण अर्थात् इन्द्रिय हैं, वह आत्मा निर्गुण है, अर्थात् गुणों से रहित है, ऐसे आत्मा को साक्षात्कार करके विद्वान् पुरुष मुक्त होजाता है ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

(९) नसन्दृशेतिष्ठतिरूपमस्यनचक्षुषापश्यतिकश्चनैनम् हृदामनीषामनसाभिक्लृप्तोयएतद्विदुरमृतास्तेभवन्ति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः

न सन्दृशे तिष्ठति रूपम् अस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चन एनम् हृदा मनीषा मनसा अभिक्लृप्तः ये एतत् विदुः अमृताः ते भवन्ति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अस्य	= इसप्रत्यगात्माका	+ च	= और
रूपम्	= रूप	मनसा	= मनकरके
सन्दृशे	= दर्शनविषे	अभिक्लृप्तः	= प्रकाशित हुवा
नतिष्ठति	= नहींस्थित होताहै	एतत्	= यहब्रह्महै
+ च	= और	+ एवम्	= इसप्रकार इसको
कश्चन	= कोईभी	ये	= जो
एनम्	= इसको	विदुः	= जानते हैं
चक्षुषा	= चक्षुकरके	ते	= वे
नपश्यति	= नहींदेखताहै	अमृताः	= अमर
हृदा	= हृदयमेंस्थित	भवन्ति	= होते हैं
मनीषा	= बुद्धिकरके		

भावार्थ ॥

नसंदृशेतिष्ठतीति ॥ आत्मा का स्वरूप इन्द्रियजन्य ज्ञान का विषय न होने से चक्षु या किसी अन्य इन्द्रिय करके नहीं जाना जासक्ता है ॥ प्र० ॥ तब फिर वह आत्मा कैसे जाना जाता है ॥ उ० ॥ हृदय में एकाग्रता को प्राप्त हुई जो शुद्ध शंकलरहित बुद्धि है उसी करके आत्मा जानने को शक्य है, ऐसी बुद्धि उस पुरुष की होती है जिसने विचार करके प्रथमही मनको अपने अर्थात् करलिया है और श्रवण मनन करके असम्भावनादिक दोषों को दूर किया है, जब सब विकार पुरुषके नष्ट होजाते है तब वह आत्मतत्त्व को जानकर मोक्ष को प्राप्त होजाता है ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१०) यदापञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानिमनसासह
बुद्धिश्चनविचेष्टते तामाहुःपरमाङ्गतिम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः

यदा पञ्च अवतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह
बुद्धिः च न विचेष्टते ताम् आहुः परमाम् गतिम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यदा	= जिसकाल बिषे	बुद्धिः	= बुद्धिभी
पञ्च	= पांचों	नविचेष्टते	= नहींचेष्टाकरतीहै
ज्ञानानि	= ज्ञानेन्द्रियां	ताम्	= उसअवस्थाको
सह	= सहित	परमाम्	= परम
मनसा	= मनके	गतिम्	= गति
अवतिष्ठन्ते	= आत्मामेंस्थिरहोजाती हैं	आहुः	= कहतेहैं
+ च	= और		

भावार्थ ॥

यदेति ॥ जिसकाल में अविद्याके नाश होनेपर मनके सहित पांचों ज्ञानेन्द्रियां अपने २ व्यापार से निवृत्त होजाती हैं और निश्चयात्मिक बुद्धि भी अपने व्यापार को त्याग देती है अर्थात् जब मन बुद्धि और ज्ञान इन्द्रियां अविद्यारहित शुद्धआत्मा में लीन होजाती हैं उस अवस्था को योगी परमगति कहते हैं ॥१०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(११) तांयोगमितिमन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम्अप्रमत्तस्तदा भवति योगोहिप्रभवाप्ययौ ११॥

पदच्छेदः

ताम् योगम् इति मन्यन्ते स्थिराम् इन्द्रियधारणाम् अप्रमत्तः तदा भवति योगःहि प्रभवाप्ययौ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+ मुमुक्षुः	= मुमुक्षु	हि	= क्योंकि
यदा	= जब	+ योगः	= योग
इन्द्रिय-धारणाम्	= इन्द्रियों के स्वभाव	प्रभवाप्ययौ	= उत्पत्तिऔर लयरूप है
स्थिराम्	= स्थिर	+ च	= और
+ कर्तुम्	= करने को	ताम्	= उस अवस्थाको
अप्रमत्तः	= प्रमादरहित होताहै	योगम्	= योग
तदा	= तब	इति	= करके
योगः	= योग	मन्यन्ते	= मानते हैं
+ भवति	= होताहै		

भावार्थ ॥

तामिति ॥ जिसकालमें इन्द्रियोंकी धारणाशक्ति स्थिरहोजाती है अर्थात् किसी विषयकी ओर मन चलायमान नहीं होता है उस अवस्था को योगिजन योग कहते हैं, योग के आरम्भकाल में योगी अप्रमत्त हुवा २ चित्तकी एकाग्रता के प्रति प्रयत्न करताहै, क्योंकि जबतक वह अपने को सर्व विषयों से पृथक् नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करलेता है तबतक वह योगी नहीं है, जब वह स्वआत्मा में और परमात्मा में भेद नहीं पाताहै तब वह यथार्थ योगी है, यह समझ करके योगी अहर्निशि चित्तवृत्ति को अन्त मुख रखने की यत्न किया करताहै ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

(१२) नैववाचानमनसाप्राप्तुंशक्योनचक्षुषा अस्तीतिब्रुवतोऽन्यत्रकथंतदुपलभ्यते ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

न एव वाचा न मनसा प्राप्तुम् शक्यः न चक्षुषा अस्ति इति ब्रुवतः अन्यत्र कथम् तत् उपलभ्यते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तत्	= वह ब्रह्म	इति	= करके
एव	= निश्चयकरके	कथम्	= औरकिस प्रकार
नवाचा	= न वाणी से	ब्रुवतः	= श्रद्धावान् अस्तित्ववादियोंकरके
नमनसा	= न मनसे	+ तत्	= वह
नचक्षुषा	= न चक्षुसे	उपलभ्यते	= प्राप्तकिया जाता है
प्राप्तुम्	= पानेको		
शक्यम्	= शक्यहै		
अन्यत्र	= सिवाय		
अस्ति	= अस्तिपद		

भावार्थ ॥

नैववाचेति ॥ यह जो अपना आत्माहै अर्थात् जीवाभिन्नजो प्रत्यगात्माहै सो वागिन्द्रिय करके या इदन्ता करके कथनकरने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के योग्य नहीं है, और न मन करके अथवा चक्षु इन्द्रिय करके भी देखने को शक्य है ॥ प्र० ॥ जो वागादि इन्द्रियों का विषय नहीं है उसकी स्थिति भी नहीं है आत्मा यदि वागादि करणों का विषय नहीं है तो उसकी स्थिति भी नहीं है ॥ उ० ॥ यदि आत्मा वागादिकों का अविषयहै तो 'नहीं है" इस पदकी स्थिति न होनी चाहिये, अस्ति और नास्ति इन दोनों की स्थिति अस्तिही में घटती है, और चूंकि अस्ति सत् रूप है और सत् परमात्मरूप है और यावत् पदार्थ हैं सब अस्ति से ही सम्बन्ध रखते हैं इस लिये सब सत्रूप परमात्मा हैं, यह भावना के बल श्रद्धासंयुक्तही पुरुष में होती है, इसलिये जो श्रद्धावाले अस्तित्ववादी पुरुषहैं उन्हींको ही ब्रह्म प्राप्त होता है नास्तिक को नहीं ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

(१३) अस्तीत्येवोपलब्धव्यस्तत्त्वभावेनचोभयोरस्तीत्येवोपलब्धस्यतत्त्वभावःप्रसीदति॥ १३ ॥

पदच्छेदः

अस्ति इति एव उपलब्धव्यः तत्त्वभावेन च उभयोः अस्ति इति एव उपलब्धस्य तत्त्वभावः प्रसीदति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अस्ति	= है	उपलब्धव्यः	= प्राप्त होने योग्य है
इति एव	= ऐसेही	च	= और
तत्त्वभावेन	= तत्त्वभाव करके	उपलब्धस्य	= प्राप्त होने योग्य
+ तत्	= वह आत्मा		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उभयोः =	उनदोनोंका याने सोपाधिक निरुपाधिक आत्माका	तत्त्वभावः = एकत्वभाव अस्ति = है इति = इसकरकेही प्रसीदति = प्रतीतहोता है ॥

भावार्थ ॥

अस्तीति ॥ अब आत्मा की उपलब्धि के कारण को बतलाते ॥ अस्तीति ॥ प्रथम तो जगत्का कारण जो सत् है उस करके त्माकी उपलब्धि होती है याने आत्मा का ज्ञात होताहै, जि- लोक लोकान्तर हैं और जितनी स्थावर जङ्गम सृष्टि और र्थ हैं उनकी सिद्धि के बल अस्तिपद पद करके होता है है वह अस्तिपद उसके संग प्रयोग हो चाहै नहीं हो, यह पटहै पृथ्वी है, यह जल है, यह मनुष्य है यह लोकहै यह परलोक है सबकी सिद्धि अस्ति शब्द करके होती है और आत्मा का रूप अस्ति है इसलिये सब पदार्थों में आत्मा है यह सिद्धि ाहै यदि अस्तिपद को निकाल दियाजाये तो कोई पदार्थ ीं सिद्ध होगा, इस रीतिसे उपाधि करके वशिष्ट आत्मा की लब्धि होती है पश्चात् शुद्ध मनके मनन से उपाधिरहित मल आत्माकी उपलब्धि होतीहै, इसीलिये आत्माको विदित विदित सेपृथक् श्रुतिने कथन कियाहै जो पुरुष प्रथम आत्मा अस्तित्वरूप करके जानता है उसी के शुद्ध बुद्धि में आत्मा पने प्रकाश को प्रगटकरता है और वह साक्षात् आत्मस्वरूप जाता है ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

(१४) यदासर्वेप्रमुच्यन्तेकामायेऽस्यहृदिश्रिताः थमर्त्योऽमृतोभवत्यत्रब्रह्मसमश्नुते ॥ १४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामाः ये अस्य हृदि श्रिताः
अथ मर्त्यः अमृतः भवति अत्र ब्रह्म समश्नुते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अस्य	= इस विद्वान् पुरुष के	प्रमुच्यन्ते	= छूट जाते हैं
हृदि	= हृदयविषे	अथ	= तब
ये	= जो	मर्त्यः	= मनुष्य
कामाः	= कामना	अमृतः	= अमर
श्रिताः	= स्थित हैं	भवति	= होता है
+ ते	= वे	+ च	= और
सर्वे	= सब	अत्र	= इसी जन्म में
यदा	= जब	ब्रह्म	= ब्रह्म को
		समश्नुते	= प्राप्तहोता है

भावार्थ ॥

यदेति ॥ आत्मज्ञान से पूर्व जितनी कामना इस विद्वान् के हृदय में स्थित होती हैं वे आत्मज्ञान के पश्चात् छूट जाती हैं अर्थात् सर्वत्र आत्मदृष्टि करके नाश को प्राप्त होजाती हैं, और उसी क्षण में वह अमर होजाता है अर्थात् बारम्बार जन्म मरण से रहित होकर इसी शरीर में ही ब्रह्मरूप होजाताहै ॥ १४ ॥

मूलम् ॥

(१५) यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येह ग्रन्थयः
अथमर्त्योऽमृतोभवत्येतावदनुशासनम् ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्य इह ग्रन्थयः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ मर्त्यः अमृतः भवति एतावत् अनुशासनम्॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यदा	= जब	मर्त्यः	= मनुष्य
हृदयस्य	= हृदय की	अमृतः	= मरणरहित
सर्वे	= सम्पूर्ण	भवति	= होताहै
ग्रन्थयः	= ग्रन्थियां	एतावत्	= इतनाही
इह	= इसीजन्ममें	अनुशासनम्	= उपदेश है
प्रभिद्यन्ते	= टूटजाती हैं		
अथ	= तब		

भावार्थ॥

यदा सर्वेति॥ जिसकाल में विद्वान् की हृदय स्थित ग्रन्थियें अर्थात् बुद्धि बिषे स्थित अनेक कामनारूपी ग्रन्थियें टूट जाती हैं और अहंमम वृत्तियां नाश होजाती हैं तबहीं वह विद्वान् ब्रह्म रूपहोजाता है, यहींतक सम्पूर्ण वेदों का उपदेश है, इससे परे वेदों का उपदेश नहींहै क्योंकि ब्रह्मकी प्राप्ति से परे और कोई प्राप्ति नहींहै॥ १५॥

मूलम्॥

(१६) शतञ्चैका च हृदयस्य नाड्यस्तासाम्मू र्धानमभिनिःसृतैकातयोर्ध्वमायन्नममृतत्वमेति वि ष्वङ्ङन्या उत्क्रमणे भवन्ति॥ १६॥

पदच्छेदः।

शतम् च एका च हृदयस्य नाड्यः तासाम् मूर्धानम् अभिनिःसृता एका तया ऊर्ध्वम् आयन् अमृतत्वम् एति विष्वङ् अन्याः उत्क्रमणे भवन्ति॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
च	= और
शतंएका	= एकसौ एक
हृदयस्य	= हृदय की
नाड्यः	= नाड़ियां हैं
तासां	= तिनमें से
मूर्द्धानम्	= मस्तक को
अभिनिःसृता	= भेद करके निकसीभई
एका	= एक नाड़ी है
तया	= उसीनाड़ीद्वारा
ऊर्ध्वम्	= ऊपर को
आयन्	= जाता हुआ
+जीवः	= जीव
अमृतत्वम्	= अमरभाव को
एति	= प्राप्तहोताहै
च	= और
अन्याः	= इतरनाडियां
विष्वङ्	= सर्व ओरसे
उत्क्रमणे	= मरणबिषे याने नाना योनियों की प्राप्ति बिषे
भवन्ति	= निमित्तकारणहोतीहैं

भावार्थ ॥

शतंचैकेति ॥ ब्रह्म चित्त को इसी शरीर में ब्रह्मकी प्राप्ति कही है, और जो पुरुष आत्मतत्त्व को नहीं जानते हैं उनको अग्नि विद्या करके ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है और उनसे विपरीत जो अज्ञानी हैं उनको संसार चक्र की प्राप्ति होती रहती है, एक सौ एक प्रधान नाड़ी हृदयदेश से निकसी हैं और उन नाड़ियों के मध्यमें एक सुषुम्णा नाड़ी ब्रह्मरंध्र तक गई है, वह ब्रह्मलोक के सम्मुखरहती है, इसी सुषुम्णा नाड़ीद्वारा शरीर त्याग पश्चात् अग्निका उपासक ब्रह्मलोक को प्राप्त होताहै, और प्रलय पर्य्यन्त निवास करताहै, वह ब्रह्मलोक सब लोकों के ऊपर है, और ब्रह्मा से उपदेश पाकर मुक्त होजाताहै, और नाड़ियां इतर लोकों के सम्मुख हैं, उनके द्वारा जब जीव उत्क्रमण करता है तब वह शरीरान्तर को प्राप्त होताहै ॥ १६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१७) अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदाजना
नां हृदयेसन्निविष्टः तंस्वाच्छरीरात्प्रवृहेन्मुञ्जादि
षीकांधैर्य्येण तं विद्याच्छुक्रममृतं विद्याच्छुक्रमम्
मृमिति ॥ १७ ॥

पदच्छेदः

अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषः अन्तरात्मा सदा जनानाम् हृदये सन्निविष्टः तम् स्वात् शरीरात् प्रवृहेत् मुञ्जात् इव इषीकाम् धैर्य्येण तम् विद्यात् शुक्रम् अमृतम् तम् विद्यात् शुक्रम् अमृतम् इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अङ्गुष्ठमात्रः	= अंगुष्ठमात्र	इषीकाम्	= सरकंडेको
पुरुषः	= पुरुष	+ पृथक्	= पृथक्
अन्तरात्मा	= प्रत्यक्आत्मा	+ कुर्वन्ति	= करते हैं
सदा	= सर्वदा	धैर्य्येण	= धैर्यकरके
जनानाम्	= मनुष्योंके	तम्	= तिसको
हृदये	= हृदयबिषे	शुक्रम्	= शुद्ध
सन्निविष्टः	= स्थितहै	अमृतम्	= अमृतरूप
तम्	= तिसको	इति	= ऐसा
स्वात्	= अपने	तम्	= तिसको
शरीरात्	= शरीरसे	शुक्रम्	= शुद्ध
प्रवृहेत्	= पृथक्करै	अमृतमिति	= अमृतरूप ऐसा
इव	= जैसे	विद्यात्	= जानै ॥
मुञ्जात्	= मूंजसे		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अङ्गुष्ठमात्रइति ॥ जो उपाधि सम्बन्ध करके प्रत्यक् आत्मा अंगुष्ठ परिमाण प्राणियों के हृदयाकाशदेश बिषे सर्वकाल स्थित है तिस आत्मा को अपने शरीर त्रय से धीर्यता के साथ पृथक् करै और जैसे मूंज से सर्कंडे को पृथक् करते हैं तैसेही आत्मा को शरीर के सब विकारों से पृथक्कर वे शुद्ध अमररूप जानै ॥ १७ ॥

मूलम् ॥

(१८) मृत्युप्रोक्तान्नचिकेतोऽथलब्ध्वाविद्यामेतां योगविधिञ्चकृत्स्नम् ब्रह्मप्राप्तोविरजोऽभूद्विमृत्युरन्योप्येवंयोविदध्यात्ममेव ॥ १८ ॥

पदच्छेदः

मृत्युप्रोक्ताम् नचिकेतः अथ लब्ध्वा विद्याम् एताम् योगविधिम् च कृत्स्नम् ब्रह्मप्राप्तः विरजः अभूत् विमृत्युः अन्यः अपि एवम् यः वित् अध्यात्मम् एव ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथ	= तदनन्तर	कृत्स्नम्	= संपूर्ण
मृत्युप्रोक्ताम्	= मृत्युकरके कहीहुई	योगविधिम्	= योगविधिको
एताम्	= इस	नचिकेतः	= नचिकेत
विद्याम्	= विद्याको	लब्ध्वा	= पाकरके
च	= और	ब्रह्मप्राप्तः	= ब्रह्मको प्राप्त होताहुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च = और	मुमुक्षुः = मुमुक्षुपुरुष
विरजः = धर्म अधर्मसे रहित	अध्यात्मम् = अध्यात्मविद्या को
विमृत्युः = मृत्युरहित	वित् = जाननेवाला है
अभूत् = होताभया	+ सः = वह
अन्याः अपि = और भी	+ अपि = भी
एवम् = इसप्रकार	+ ब्रह्म = ब्रह्मको
यः = जो	+ आप्नोति = प्राप्त होताहै

भावार्थ ॥

मृत्युप्रोक्तेति ॥ यमराज करके कथन करी हुई जो ब्रह्मविद्या है उस ब्रह्मविद्या को नचिकेता प्राप्त होकर और अविद्याजन्य कर्मादिकों से रहित होकर और मृत्यु से मुक्त होकर अमरभाव को प्राप्त होताभया, और भी जो कोई मुमुक्षु पुरुष इस अध्यात्म विद्याका जाननेवाला है वह भी ब्रह्म को प्राप्त होकर आवागवन से छूटजाता है ॥ १८ ॥

मूलम् ॥

(१९) ॐ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तुमाविद्विषावहै ॥ १९ ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति कठोपनिषद्समाप्तिमगात्शुभम् ॥

पदच्छेदः

सह नौ अवतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्य्यम् करवावहै तेजस्विनौ अधीतम् अस्तु मा विद्विषावहै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सः	= वह परमात्मा
नौ	= हमगुरुशिष्य दोनों को
सह	= साथही
अवतु	= रक्षाकरै
च	= और
नौ	= हमदोनों को
सह	= साथही
भुनक्तु	= पालनकरे
च	= और
आवाम्सह	= हमदोनोंसाथही
वीर्य्यम्	= सामर्थ्य को
करवावहै	= प्राप्तहोवै
नौ	= हमदोनों का
अधीतम्	= पढ़ाहुआ
तेजस्वि	= तेजवान्
अस्तु	= होवै
आवाम्	= हमदोनोंपरस्पर
मा	= न
विद्विषावहै	= द्वेषको प्राप्त होवैं ॥

भावार्थ ॥

ॐ सहनाववतु ॥ हम शिष्य और आचार्य दोनों को उपनिषद् प्रकाशित परमेश्वर रक्षा करै, हम दोनों को विद्याके फल करके पालना करै, हम दोनों के विद्याकृत सामर्थ्य को बढ़ावै, हम दोनों का अध्ययन कियाहुआ तेजवान होवै, हम दोनों परस्पर द्वेष को न प्राप्त होवें ॥ १९ ॥ ओं शान्तिः ३ इतिकठोपनिषद् द्वितीयाऽध्याये षष्ठीवल्ली समाप्ता ६ ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

इति कठोपनिषद्भाषाटीकासमाप्ता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इश्तहार

ईशावास्य उपनिषद् भाषा टीका सहित, क़ीमत -)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—जिसमें मन्त्रों के अर्थ समझने के लिये पदों के अन्वय किये गये और फिर पदार्थकी रीति पर समझाकर भावार्थ स्पष्ट किया गया ॥

प्रश्नोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत =)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित—इस में भी सब ऊपर के लिखे हुये अलङ्कारहैं शिष्य के पूछे हुये अच्छे प्रश्नों का उत्तर गुरूने बताकर ब्रह्मरूप लखायाहै ॥

मांडूक्योपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत ॥=)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषा टीका सहित—जिसमें ओंकार स्वरूप का प्रतिपादन व ब्रह्म और आत्माकी अभेदताका निरूपण चार प्रकरणों में अच्छी तरह से किया है ॥

मुंडकउपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत =)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—जिसमें वादी प्रतिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदुत्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का संभव व अग्निहोत्रादि क्रियाओंका विधान मन्त्रों द्वारा वर्णित है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत ।-)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीकासहित—जिसमें तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होनेका उदाहरण और स्वरमात्रा व वर्णों के उच्चारण की शिक्षाका नियम व वर्णों के संबन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मीकी कामनावाले पुरुषोंके अर्थ साधन जप और हवनादि की क्रियायें वर्णित हैं ॥

मैनेजर नवलकिशोर प्रेस
हजरतगंज लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उ
२५८

॥ प्रश्नोपनिषद् ॥

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषा में बाबू लालिमासिंह निवासी ग्राम अकबर-
पुर ज़िला फ़ैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल व लखनऊ
व पोस्टमास्टर जनरल रियासत ग्वालियरने पण्डित
गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशीकी
सहायता से अनुवाद किया—

तिसको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुंशी प्रयाग-
नारायणजीने सर्वलोकहितार्थ—

पहिली वार

लखनऊ

सुपरिण्टेण्डेण्ट बाबू मनोहरलाल मार्गव के प्रबन्धसे
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के यन्त्रालय में मुद्रित कराया
सन् १९०८ ई० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२५८

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् । यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः । षट्चक्रादिविचार सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तं वन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करों बन्दना ब्रह्मको । जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल । मिटै अन्धतम कूप ॥
नाम रूप जामें नहीं । नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं । रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद । ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको । लखै सकल संसार ॥
सन्त संगसे जो लख्यो । सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते । जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट । अकबरपुर है गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू । जालिमसिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है, इस के पार होने के लिये उपनिषद् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है, जिस में बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं, और होते जाते हैं, और भविष्यत्काल में होंगे, जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगईहै ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है, फिर पदच्छेद है, फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है, और दक्षिण हस्तकी ओर प्रदार्थ लिखा है, यदि वामतरफ का लिखा हुआ ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा, और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशीय भाषा में मिलेगा, और यदि बायेंतरफ से दाहिने तरफ को पढ़ाजावे तो हरएक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलैगा, जहांतक होसका है, प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागया है, इस टीका के पढ़नेसे संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा, इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पाया है, और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसीके शब्दोंही से सिद्ध कियागयाहै, अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है, हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्र के अर्थ स्पष्ट करनेके लिये रखागया है, और उसपदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै, ताकि पाठकजनोंको विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है। इस टीकाको बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल व लखनऊ व पोस्टमास्टर जनरल रियासत ग्वालियर साहित अत्यन्त सहायता पण्डित गङ्गादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अलमोड़ाख्यनगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरैं ताकि अशुद्धता दूर होजावै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ प्रश्नोपनिषद् ॥

मूलम् ॥

ॐ सुकेशाच भारद्वाजः शैव्यश्चसत्यकामःसौर्य्यायणीचगार्ग्यः कौशल्यश्चाश्वलायनो भार्गवो वैदर्भिःकबन्धी कात्यायनस्तेहैतेब्रह्मपराब्रह्मनिष्ठाः परंब्रह्मान्वेषमाणाएषहवैतत्सर्वं वक्ष्यतीतितेहसमित्पाणयो भगवन्तं पिप्पलादमुपसन्नाः १ ॥

पदच्छेदः ॥

सुकेशा च भारद्वाजः शैव्यः च सत्यकामः सौर्य्यायणी च गार्ग्यः कौशल्यः च आश्वलायनः भार्गवः वैदर्भिः कबन्धी कात्यायनः ते ह एते ब्रह्मपराः ब्रह्मनिष्ठाः परम्ब्रह्म अन्वेषमाणाः एष ह वै तत् सर्वम् वक्ष्यति इति ते ह समित् पाणयः भगवन्तम् पिप्पलादम् उपसन्नाः १ ॥

अन्वयः	पदार्थ
च	= निश्चयकरके
भारद्वाजः	= भरद्वाज ऋषि का पुत्र
सुकेशा	= सुकेशा १
च	= और
शैव्यः	= शिविकापुत्र
सत्यकामः	= सत्यकाम २
च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गार्ग्यः = गर्गकापुत्र
सौर्य्यायणी = सौर्यायणि३
च = और
अश्वलायनः = अश्वलायनका पुत्र
कौशल्यः = कौशल्य ४
+ च = और
भार्गवः = भृगुकापुत्र
वैदर्भिः = वैदर्भि ५
+ च = और
कात्यायनः = कत्यकापुत्र
कबन्धी = कबन्धी ६
ह = प्रसिद्ध
एतेते = येयानी पूर्वोक्तछयोंऋषि
ब्रह्मपराः = अपरब्रह्मको याने अपराविद्याकोजानतेहुये
+ च = और
ब्रह्मनिष्ठाः = अपराविद्याके उपासक होते हुये
+ च = और
परम्ब्रह्म = परब्रह्मकोयानेपराविद्याको
अन्वेषमाणाः = खोजतेहुये
समित्पाणयः = समिधी फल और पुष्प आदि हाथमें लियेहुये
ह = प्रसिद्ध
भगवन्तम् = पूज्य
पिप्पलादम् = पिप्पलाद नामक आचार्य्य के
उपसन्नाः = समीप
+ बभूवुः = प्राप्तहोतेभये
इति = ऐसा
ह = सोचकरके कि
एषः = यह
+पिप्पलादः = पिप्पलाद आचार्य
वै = निश्चय करके
सर्वम् = संपूर्ण
तत् = उसपरब्रह्मको
वक्ष्यति = कहैगा १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

पूर्व मन्त्र रूप मंडूक उपनिषद् के भावार्थ को लिखकर अब उसी की व्याख्या रूप जो प्रश्नोपनिषद् है, तिसके भावार्थ को लिखते हैं, इस उपनिषद् में जो प्रश्न और उत्तर करके कथा लिखी है, सो केवल ब्रह्मविद्या की स्तुति के लिये और ब्रह्मचर्य्यादि साधनों की विधान के लिये लिखी है ॥ सुकेशाचेति ॥ भरद्वाज का पुत्र सुकेशा १, शिबि का पुत्र सत्यकाम २, सूर्य्य का पुत्र गर्ग ३, आश्वलायन का पुत्र कौशल्यः ४, भृगुका पुत्र वैदर्भि ५, कत्यऋषि का पुत्र कबंधी ये सब छवो ऋषि अपराविद्या को जानते हुये और उसकी उपासना करते हुये पराविद्या को अन्वेषण करते हुये समिधि फल फूलादि हाथ में लिये हुये प्रसिद्ध पूज्य पिप्पलाद नामक आचार्य के समीपगये, ऐसा निश्चय करते हुये कि वह हमारे संपूर्ण प्रश्नों का यथार्थ उत्तर देवैंगे १॥

मूलम् ॥

तान्हसऋषिरुवाच भूयएवतपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया संवत्सरं संवत्स्यथ यथाकामंप्रश्नान् पृच्छथ यदि विज्ञास्यामः सर्वंहवोवक्ष्याम इति २ ॥

पदच्छेदः ॥

तान् ह सः ऋषिः उवाच भूयः एव तपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया संवत्सरम् संवत्स्यथ यथाकामम् प्रश्नान् पृच्छथ यदि विज्ञास्यामः सर्वम् ह वः वक्ष्यामः इति २ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	= वह	तान्	= उनसे
ऋषिः	= पिप्पलादऋषि	ह	= निश्चयकरके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति = ऐसा
उवाच = कहताभया कि
+ यद्यपि यूयंतप स्विनः = यद्यपि तुम सबतपआदिकरके युक्त हो
+ तथापि = तौभी
भूयः = फिर
एव = अवश्य
तपसा = तपस्याकरके
ब्रह्मचर्येण = ब्रह्मचर्य्यकरके
च = और
श्रद्धया = आस्तिकबुद्धि करके
संवत्सरम् = एकवर्षतक
संवत्स्यथ = मेरेसमीपनिवासकरोगे
+ ततः = तत्पश्चात्
यथाकामम् = इच्छानुसार
प्रश्नान् = प्रश्नोंको
पृच्छथ = पूछोगे
+ तदा = तब
यदि = अगर
वयम् = हम
विज्ञास्यामः = प्रश्नों के उत्तरों को जानतेहोंगे
तदा = तब
ह = अवश्य
वः = तुम्हारे प्रति
सर्वम् = संपूर्ण
वक्ष्यामः = कहैंगे २ ॥

भावार्थ ॥

तानिति । सूक्ष्मदर्शी पिप्पलाद ऋषि उन छवों ऋषियों से कहते भये ॥ कि हे ऋषियो ! यद्यपि आप लोगोंने पूर्वतपादिकों को किया है, तौ भी ब्रह्मविद्या के ग्रहण के लिये फिर भी आप सब कोई ब्रह्मचर्य्य रूपी तपको श्रद्धाके साथ करो, हे ऋषियो ! स्त्री का स्मरण करना १, उसके साथ क्रीड़ा करना २, उसके तरफ देखना ३, छुपकरके उससे संभाषण करना ४, उसकी प्राप्ति का संकल्प करना ५, उसके भोगने का निश्चय करना ६, उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ संबन्ध करना ७,वीर्य का त्याग करना ८, ये आठ प्रकार के मैथुन कहेगये हैं, इससे रहित होने का नामही ब्रह्मचर्य्य है, गुरु और वेदवाक्यों में आस्तिक बुद्धि का करना श्रद्धा है,ऐसी आस्तिक बुद्धि और ब्रह्मचर्यसे सम्पन्न होकर आप सब एक वर्ष पर्यंत मेरे समीप निवास करो,उसके पश्चात् जैसी आप सबकी इच्छा हो प्रश्न करना,यदि मैं आप लोगों के प्रश्नों के उत्तर को कसकूंगा तो अवश्य दूंगा ॥ २ ॥

मूलम् ॥

अथ कबन्धीकात्यायन उपेत्य पप्रच्छभगवन् कुतोहवाइमाः प्रजाःप्रजायन्त इति ३ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ कबन्धी कात्यायनः उपेत्य पप्रच्छ भगवन् कुतः ह वै इमाः प्रजाः प्रजायन्ते इति ३ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथ =	एकवर्षकेपीछे	भगवन् =	हे भगवन्
कात्यायनः =	कत्यकापुत्र	इमाः =	ये
कबन्धी =	कबन्धी	प्रजाः =	ब्राह्मणादि प्रजा
उपेत्य =	पिप्पलादमुनि केसमीपआकर	कुतः =	कहांसे
इति =	ऐसा	ह वै =	निश्चय करके
पप्रच्छ =	पूछताभयाकि	प्रजायन्ते =	उत्पन्नहोती हैं ३ ॥

भावार्थ ॥

अथेति । उन छवो ऋषियों ने ब्रह्मचर्य्य रूपी तपको श्रद्धा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eG

करके एक वर्ष तक आचार्य पिप्पलाद ऋषि के पास जाकर निवास करके उसके पश्चात् अपने २ प्रश्नों को पूछते भये, प्रथम कात्य के पुत्र कबंधी ने पूंछा, हे भगवन् ! किस कारण विशेष से यह नानाप्रकार की चर अचर प्रजा उत्पन्न होती है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाच प्रजाकामो वै प्रजापतिः सतपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वा समिथुनमुत्पादयतेरयिंचप्राणं चेत्येतौमेबहुधाप्रजाःकरिष्यत इति ४ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच प्रजाकामः वै प्रजापतिः सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा सः मिथुनम् उत्पादयते रयिम् च प्राणम् च इति एतौ मे बहुधा प्रजाः करिष्यतः इति ४ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
ह	= प्रसिद्ध	प्रजापतिः	= स्थावरजंगमप्रजा का स्वामी
सः	= वह पिप्पलादाचार्य्य	प्रजाकामः	= प्रजाकीउत्पत्तिकीकामना कर्त्ताहुआ
तस्मै	= उसकात्याय नकबंधी से	सः	= वहप्रजापति
इति	= ऐसा	तपः	= सृष्टिविषयक विचारको
उवाच	= कहताभया		
वै पुरा	= सृष्टि के आदि में		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतप्यत = बिचारताभया
+ततः = उसकेपश्चात्
सः = वह
तपः = सृष्टिविषयक कार्य को
तप्त्वा = अण्डोत्पत्ति आकाशादि सृष्टि कर्म से सृजके
रयिम् = अन्नरूप चन्द्रमा
च = और
प्राणम् = अन्नका भोक्ता अग्नि रूप सूर्य
इति = इन
मिथुनम् = दोनों को
उत्पादयते = उत्पन्न करता भया
च = और
सः = वह
इति = ऐसा
+अविचा- रयत् = सोचताभया कि
एतौ = ये दोनों
मे = मेरी
प्रजाः = प्रजाओं को
च = अवश्य
बहुधा = बहुत
करिष्यतः = करैंगे याने वृद्धिको प्राप्त करैंगे ४ ॥

भावार्थ ॥

तस्मैसहोवाचेति । तब उस कात्यायन कबंधी के प्रति पिप्पलाद कहते भये ॥ हे ऋषि ! पूर्वजन्म के कर्मों के फल करके कल्पके आदि में हिरण्यगर्भ प्रथम उत्पन्न हुआ, वह हिरण्यगर्भ प्रजाकी उत्पत्ति की इच्छावाला होकर तपको करताभया, अर्थात् प्रजा को उत्पन्न करना चाहिये ऐसा विचार करता भया, तत्पश्चात् आकाशादिको रचकरके प्रथम चन्द्रमा और सूर्यको उत्पन्न किया, फिर उन्हीं करके साध्य जो संवत्सररूपी काल है, उसको रचता भया, फिर सूर्य्य चन्द्रमा करके साध्य जो व्रीहि यवादि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप अन्न है, उनको रचता भया, फिर अन्न से वीर्य्य को उत्पन्न करता भया, वीर्य से मनुष्यादि प्रजाको रचता भया, और सब के साधनभूत जो स्त्री पुरुष जे हैं उनको रचता भया ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

आदित्योहवैप्राणोरयिरेवचन्द्रमारयिर्वाएतत्सर्वं यत्मूर्त्तंचामूर्त्तंचतस्मात्मूर्तिरेवरयिः ५ ॥

पदच्छेदः ॥

आदित्यः ह वै प्राणः रयिः एव चन्द्रमाः रयिः वै एतत् सर्व्वम् यत् मूर्त्तम् च अमूर्त्तम् च तस्मात् मूर्त्तिः एव रयिः ५ ॥

अन्वयः	पदार्थ
ह	= निश्चय करके
आदित्यः	= सूर्य्य
वै	= ही
प्राणः	= प्राणरूप भोक्तारूप अग्नि है
+च	= और
चन्द्रमाः	= चन्द्रमा
एव	= ही
रयिः	= अन्न है याने भोग है

अन्वयः	पदार्थ
च	= और सूर्य चंद्र की अभेद दृष्टि से
यत्	= जो
मूर्त्तम्	= स्थूल
च	= और
अमूर्त्तम्	= सूक्ष्म
सर्वम्	= सब है
एतत्	= यह
रयिः	= रयि याने भोग्य रूप
+वै	= ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+अस्ति = है	एव = ही
+परंतु = परंतु	रयिः = { रयियानेभोग रूप
तस्मात् = भेददृष्टि से	
+ तु = तो	अस्ति = है ॥ ५ ॥
मूर्त्तिः = स्थूल	

भावार्थ ॥

आदित्य इति ॥ पूर्वले मन्त्र में जो रयि और प्राण शब्द कथन किये हैं उनके अर्थ को अब दिखाते हैं ॥आदित्यः॥ प्राण नाम आदित्यका है, और रयिनाम चन्द्रमाका है, सूर्य और चन्द्र पद करके सूर्यलोक और चन्द्रलोक बिषे स्थित पुरुष का ग्रहण है, प्रत्यक्ष सूर्य और चन्द्र का नहीं, ये केवल जड़ भूलोककी तरह हैं वह अचेतन पुरुष उपाधि सम्बन्धसे दो रूप करके याने भोक्ता और भोग्यसे स्थित है, चाहे वह मूर्त हो अथवा अमूर्त हो, भोग्य सब चन्द्रमा रूप हैं, मूर्तशब्द करके पृथ्वी, जल, तेज का ग्रहण है, और अमूर्त शब्द करके वायु, आकाशका ग्रहण है, सूर्य का नाम प्राण, अग्नि, और भोक्ता भी है, वैसेही चन्द्रमा का नाम रयि, जल, भोग्य हैं, याने वह पुरुष भोक्ता भोग्य रूप धारण कर के सम्पूर्ण सृष्टि को उत्पन्न, पालन, पोषण करता है, अथवा सांख्यशास्त्र अनुसार पुरुष प्रकृति होकर सृष्टि की रचना करता है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

अथादित्यउदयन् यत्प्राचीं दिशं प्रविशतितेन प्राच्यान्प्राणान् रश्मिषुसन्निधत्ते यद्दक्षिणां यत्प्रतीचीं यदुदीचीं यदधोयदूर्ध्वंयदन्तरादिशो यत्सर्वं प्रकाशयतितेन सर्वान् प्राणान्रश्मिषु सन्निधत्तेऽ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

अथ आदित्यः उदयन् यत् प्राचीम् दिशम् प्रविशति तेन प्राच्यान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते यत् दक्षिणाम् यत् प्रतीचीम् यत् उदीचीम् यत् अधः यत् ऊर्ध्वम् यत् अन्तराः दिशः यत् सर्वम् प्रकाशयति तेन सर्वान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते ॥ ६ ॥

अन्वयः	पदार्थ
अथ	= और
यत्	= जिसकारण
उदयन्	= उदयहोताहुआ
आदित्यः	= सूर्य
प्राचीम्	= पूर्व
दिशम्	= दिशाको
प्रविशति	= अपने किरणोंसेव्याप्त करता है
तेन	= तिसी कारण
प्राच्यान्	= पूर्वदिशा सम्बन्धी
प्राणान्	= प्राणियों को
रश्मिषु	= अपने किरणों बिषे
सन्निधत्ते	= अन्तर्गतकरता है
+ एवम्	= इसीप्रकार
यत्	= जिसकारण
दक्षिणाम्	= दक्षिणदिशाको
यत्	= जिसकारण
प्राचीम्	= पश्चिमदिशाको
यत्	= जिसकारण
उदीचीम्	= उत्तर दिशाको
यत्	= जिसकारण
अधः	= अधोलोक को
यत्	= जिसकारण
ऊर्ध्वम्	= ऊर्ध्वलोकको
यत्	= जिसकारण
अन्तराः	= कोण
दिशः	= दिशाओं को
+ च	= और
यत्	= जिसकारण
सर्वम्	= संपूर्णलोकोंको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सः = वह
प्रकाशयति = { प्रकाश करता है }
तेन = इसीकारण
सर्वान् = सबलोकस्थ
प्राणान् = प्राणियों को
रश्मिषु = अपनी किरणों बिषे
सन्निधत्ते = { अंतर्गत करताहै यानेसर्व व्यापकरूप आत्मा है ६॥

भावार्थ ॥

अथेति ॥ सूर्य प्रातःकाल पूर्वदिशा से उदयहोकर आकाश में गमन करता हुआ पश्चिमदिशा में अस्त होताहै और अपने प्रकाश से इनदिशों के मध्य बिषे स्थित लोकों के चक्षु इन्द्रियों को जिस में वह अपने आप सूक्ष्मरूप से प्रवेश करके बैठा है किरणों करके पदार्थों के देखने की शक्ति देता है, और अपने किरणों द्वारा उनके शरीरों में बाह्याभ्यन्तर होकर उनका पालन पोषण करता है इसीप्रकार जब सूर्य दक्षिण उत्तर अधः ऊर्ध्वः दिशाओं में और ईशानादिक कोनों में प्रवेश करताहै तब उन बिषे स्थित लोकों को अपने किरणों से आच्छादित करके उन में विराजमान होताहै, और उनकी वृद्धिको करताहै, इसीवास्ते सब लोकों का प्रकाशक केवल एक सूर्यही है वही व्यापक आत्माहै, उसके आश्रय सम्पूर्ण प्राणी हैं॥ ६ ॥

मूलम् ॥

सएषवैश्वानरो विश्वरूपःप्राणोऽग्निरुदयते तदेतदृचाभ्युक्तम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

सः एषः वैश्वानरः विश्वरूपः प्राणः अग्निः उदयते तत् एतत् ऋचा अभ्युक्तम् ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eG

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	सो	उदयते	सूर्यरूपहोकर उदयको प्राप्त होताहै
एषः	यह	+ च	और
प्राणः	प्राणभूत	तत्	ऐसाही
विश्वरूपः	बहुरूप	एतत्	यह
वैश्वानरः	सर्वात्मा	ऋचा	मंत्रकरके भी
अग्निः	अग्नि	अभ्युक्तम्	कहागया है

भावार्थ ॥

सएषइति ॥ सोई प्रकाशरूप सूर्य सम्पूर्ण पुरुषों को प्रत्यक्ष वैश्वानररूप अग्निहै, वही सर्वरूपका कारण है, वही दाहप्रकाश का हेतु है, और वही ऊर्ध्वगमन करनेवाला है, ऐसेही मन्त्र ने भी कहा है, ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं परायणं ज्योतिरेकं तपन्तं सहस्ररश्मिः शतधावर्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येषसूर्य्यः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

विश्वरूपम् हरिणम् जातवेदसम् परायणम् ज्योतिः एकम् तपन्तम् सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः प्राणः प्रजानाम् उदयति एषः सूर्य्यः ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सहस्ररश्मिः	= असंख्यहैं किरणजिसके
शतधा वर्तमानः	= अनेकरूप हैं जिसके
प्रजानाम्	= चराचर प्रजावोंका
प्राणः	= प्राणभूत है जो ऐसा
एषः	= यह
+ सूर्यः	= सूर्य
उदयति	= उदयकोप्राप्त होता है
+ एनम्	= इसीको
+ सूरयः	= बुद्धिमान्लोक
विश्वरूपम्	= सर्वरूप
हरिणम्	= किरणवाला
जातवेदसम्	= उत्पन्नहुआ हैज्ञानजिस को यानेज्ञानस्वरूप
परायणम्	= सर्वाधिष्ठान
ज्योतिः	= सब प्राणियों का चक्षुभूत
एकम्	= अद्वितीय
तपन्तम्	= तपानेवाला
वदन्ति	= कहते हैं ८ ॥

भावार्थ ॥

विश्वरूपमिति ॥ यह सूर्य्य सर्वरूपवाला है, और इसका नाम जातवेदस भी है, क्योंकि सम्पूर्ण जगत् के लोक इसी के आश्रय रहते हैं, इसी से सबको ज्ञान उत्पन्न होता है, और सम्पूर्ण इन्द्रियोंका आश्रयभूत यही है, यह प्रकाशरूप है, एक है द्वैत से रहित है, यह बाहर भीतर प्रवेश करके सम्पूर्ण जगत् को तपानेवाला है, यह अपनी असंख्य किरणों करके नाना प्राणियों में स्थित है, और सम्पूर्ण स्थावर जङ्गम प्रजा का प्राणरूप भी है, और उदय होकर सम्पूर्ण प्राणियों के व्यवहारों का उनके चक्षु इन्द्रिय को शक्ति देकर करानेवाला है, बुद्धिमान् लोक इसको ऐसाही कहते हैं ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

संवत्सरो वै प्रजापतिस्तस्यायने दक्षिणं चोत्तरं च तद्येहवैतदिष्टापूर्त्तं कृतमित्युपासते ते चान्द्रमसमेवलोकमभिजयन्ते ते एव पुनरावर्तन्ते तस्मादेत ऋषयः प्रजाकामादक्षिणंप्रतिपद्यन्तेएषहवैरयिर्यः पितृयाणः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

संवत्सरः वै प्रजापतिः तस्य अयने दक्षिणम् च उत्तरम् च तत् ये ह वै तत् इष्टापूर्त्तं कृतम् इति उपासते ते चान्द्रमसम् एव लोकम् अभिजयन्ते ते एव पुनः आवर्तन्ते तस्मात् एते ऋषयः प्रजाकामाः दक्षिणम् प्रतिपद्यन्ते एषः ह वै रयिः यः पितृयाणः ९ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
संवत्सरः	= काल	इष्टापूर्त्तं	= यज्ञदानआदि
वै	= ही	हवै	= निश्चयकरके
प्रजापतिः	= प्रजापति है	तत्कृतम्	= मुख्यकर्महैं
दक्षिणम्	= दक्षिण	इति	= ऐसा
च	= और	+ ज्ञात्वा	= जानकर
उत्तरम्	= उत्तर	ये	= जोब्राह्मणादि
तस्य	= उसके	तत् = तम्	= उससंवत्सर प्रजापतिकी
+ च	= निश्चयकरके	उपासते	= उपासनाकरतेहैं
अयने	= दो मार्ग हैं		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते = वे
चान्द्रमसम् = चन्द्रमा सम्बन्धी
लोकम् = लोकों को
एव = निःसन्देह
अभिजयन्ते = जीतते हैं याने पहुँचते हैं
+ च = और
ते = वे
एव = अवश्य
पुनरावर्त्तन्ते = कर्मक्षयहोनेपरजन्ममरणभावको प्राप्त होते हैं
तस्मात् = इसीकारण

प्रजाकामाः = संतानकी इच्छाकरनेवालेगृहस्थीपुरुष
+ च = और
ऋषयः = स्वर्गकीकामनावालेऋषि
एते = ये सब
दक्षिणम् = पुनरावृत्ति मार्ग को
प्रतिपद्यन्ते = प्राप्तहोते हैं
+ च = और
यः = जो
ह वै = निश्चयकरके
एषः = यह
पितृयाणः = दक्षिणमार्गहै
+ सः एव = सोई
रयिः = रयिचन्द्ररूपहै ९

भावार्थ ॥

संवत्सरः ॥ सूर्यही काल है और कालही प्रजापति है, और प्रजापतिही संवत्सर है, तिस संवत्सर के दो मार्ग हैं, एक तो छः महीने का दक्षिणायन मार्ग है, दूसरा छः महीने का उत्तरायण मार्गहै, जब सूर्य्य दक्षिण की तरफ जाताहै तब दक्षिणायन कहाताहै, जब उत्तरकी तरफ जाता है तब उत्तरायण कहा जाता है, दोनोंमार्गों से एकही संवत्सर का स्वरूप सिद्ध होता है, जो कर्मी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इष्टपूर्त्तकर्मों को अर्थात् श्रौत और स्मार्त कर्मों को करते हैं वे चन्द्रलोकसंबन्धी भोगों को अर्थात् स्वर्ग में उत्तम भोगों को भोग करके फिर इसीलोक में लौट आते हैं, उनलोकों को प्रजा की कामनावाले कर्मी दक्षिणायन मार्ग सेही जाते हैं, यही पितृ-मार्ग भी कहाजाताहै, स्वर्गादि भोग्य रयिरूप है, इसी को सूर्य का उपासक प्राणी सूर्यरूप होकर भोगता है॥ ९ ॥

मूलम् ॥

अथोत्तरेणतपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धयाविद्ययाऽऽत्मानमन्विष्यादित्यमभिजायन्ते एतद्वैप्राणानामायतनमेतदमृतमभयमेतत् परायणमेतस्मान्न पुनरावर्त्तन्त इत्येषनिरोधस्तदेषश्लोकः ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

अथ उत्तरेण तपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया विद्यया आत्मानम् अन्विष्य आदित्यम् अभिजायन्ते एतत् वै प्राणानाम् आयतनम् एतत् अमृतम् अभयम् एतत् परायणम् एतस्मात् न पुनः आवर्त्तन्ते इति एषः निरोधः तत् एषः श्लोकः १० ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथ =	पक्षांतरबिषे यानेदूसरेपक्ष उत्तरमार्गबिषे	श्रद्धया =	आस्तिक्य बुद्धि करके
		विद्यया =	विद्या करके
ये =	जोउपासक	आत्मानम् =	आत्माको
तपसा =	तपकरके	अन्विष्य =	अन्वेषणकरके
ब्रह्मचर्येण =	ब्रह्मचर्यकरके		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदित्यम् = आदित्यलोक को
अभिजायन्ते = प्राप्तहोते हैं
+ ते = वे
पुनः = फिर
आवर्त्तन्ते = जन्म मरण भावकोनहीं पाते हैं
हि = क्योंकि
एतत् वै = यह आदित्यही
प्राणानाम् = सबप्राणियों का
आयतनम् = आश्रय है
एतत् = यह
एव = ही
अमृतम् = मोक्षपदार्थहै

एतत्एव = यह ही
अभयम् = निर्भय स्वरूप है
+ अतएव = यहही
परायणम् = परमआश्रय है
इतिएषः = ऐसायहउत्तरमार्ग
कर्मिणाम् = कर्मियों को
निरोधः = प्राप्य है
तत् = तत्र = इस संवत्सरप्रजापति बिषे
एषः = यहअगला
श्लोकः = मन्त्रभी प्रमाण है

भावार्थ ॥

अथेति ॥ चन्द्रलोक की प्राप्ति दक्षिणायन मार्ग करके कही गई है अब उत्तरायणमार्ग करके सूर्य्यलोक की प्राप्ति को कहते हैं ॥ अथोत्तरेण ॥ जिन साधनों करके उत्तरायण मार्ग से उपासक सूर्य्यलोक को प्राप्त होते हैं उन्हीं को अब कहते हैं ॥ शरीरका सुखानेवाला जो तप है व इन्द्रियोंका दमन करनेवाला जो ब्रह्मचर्य्य है और गुरु और वेद वाक्यों में आस्तिक बुद्धि करानेवाली जो श्रद्धा है इन सब करके आत्माका अन्वेषण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता हुआ सूर्यका उपासक सूर्यलोकको प्राप्त होताहै और जन्म मरणभावसे रहित होजाताहै, क्योंकि वह सूर्य की अहंग्रे उपासना करके सूर्यरूपही होजाता है, प्राण शब्दका वाच्य जो चक्षुरादि इन्द्रिय हैं,उनका आश्रय सूर्य्यही है,वह सूर्य अविनाशी वृद्धिक्षय से रहित है, यही सूर्य्य उपासकों की प्राप्तिका आश्रय है, और उत्तरायण मार्ग से प्राप्त होने के योग्यभी है,इस उत्तरायण मार्गसे जो उपासक गमन करता है वह फिर लौटकर इस लोक में नहीं आता है, इस उत्तरायणमार्ग को कर्मों करके नहीं जासक्ते हैं, इसी अर्थ को आगे वाला मंत्र भी कहता है ॥ १० ॥

मूलम् ॥

पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परेअर्द्धे पुरीषिणम् अथेमे अन्य उ परे विचक्षणं सप्तचक्रे षडर आहुरर्पितमिति ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

पञ्चपादम् पितरम् द्वादशाकृतिम् दिवः आहुः परे अर्द्धे पुरीषिणम् अथ इमे अन्ये उ परे विचक्षणम् सप्तचक्रे षडरे आहुः अर्पितम् इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
पञ्चपादम् =	हेमन्त और शिशिरकोए- क समझ के पांच ऋतु- रूपीचरणहैं जिसके	पितरम् =	सबकाजनक यानेउत्पन्नक- रनेवालाहैजो
		द्वादशा कृतिम् =	द्वादश अव- यवहैं जिसके
		दिवः =	अन्तरिक्ष के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परेअर्द्धे = उत्तरार्द्ध बिषे
पुरीषिणम् = { जलवान् स्थित है जो
तम् = उसको
+सूर्यं संवत्सरम् = { सूर्यरूप संवत्सर
इति = ऐसा
+कालवेत्तारः = { कालके वेत्ता लोक
आहुः = कहते हैं
अथ उ = और
यः = जो

परे = उत्कृष्ट
षडरे = { षट्ऋतुरूपी अरावाले
सप्तचक्रे = { सप्ताश्वरथ चक्र बिषे
अर्पितम् = अर्पित है
तम् = उसको
विचक्षणम् = ज्ञानात्मक
सूर्यम् = { सूर्यरूपी संवत्सर
इति = ऐसा
इमेअन्ये = और लोक
+आहुः = कहतेहैं

भावार्थ ॥

पंचपादेति ॥ प्र० ॥ आदित्यरूपी संवत्सर कैसा है ॥ उ० ॥ यह पांच पादवालाहै याने पांच ऋतुवाला है ॥ लोकमें षट्ऋतु प्रसिद्ध हैं, परन्तु यहां पर हेमंत और शिशिर दोनोंको एक करके मानाहै इसीकारण संवत्सरको हेमंत, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, पांच ऋतुवाला माना है, आदित्यरूपी संवत्सर इन्हीं करके एक पांच पादवाला कहा जाता है वही संवत्सरवृष्टि अन्नादि द्वारा संपूर्ण जगत्का जनक है और बारह चैतसे लेकर के महीने हैं, येही उस संवत्सरके बारह अंग हैं, और अंतरिक्ष लोकसे भी उसका स्थान ऊपर है, वही जलवाला भी है, ऐसा कालके वेत्ता पुरुष कहते हैं, और कोई बुद्धिमान् कालके वेत्ता ऐसा भी कहते हैं कि सूर्यरूपी संवत्सरके रथमें सात घोड़ेरूपी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोक सहित ६ ऋतु हैं, वे सदाही चला करते हैं, कभी ठहरते नहीं हैं, सात जो घोड़ेहैं वेही सात प्रकार के आदित्यरूपी संवत्सरके सातशक्तिहैं, वे अरेहोकर उसके पहियेरूपी लोकोंकेचलाने वाले हैं, याने लोक उनहीं के आश्रय हैं, तात्पर्य इसके कहने का यहहै कि कालही सूर्य चन्द्र होकर सम्पूर्ण सृष्टिका कर्ता है, ११ ॥

मूलम् ॥

मासोवै प्रजापतिस्तस्य कृष्णपक्षएवरयिः शुक्लः प्राणस्तस्मादेत ऋषयः शुक्ल इष्टिं कुर्वन्ति इतर इतरस्मिन् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ॥

मासः वै प्रजापतिः तस्य कृष्णपक्षः एव रयिः शुक्लः प्राणः तस्मात् एते ऋषयः शुक्ले इष्टिम् कुर्वन्ति इतरे इतरस्मिन् ॥

अन्वयः	पदार्थ
मासः	= मास
वै	= ही
प्रजापतिः	= प्रजापति है
तस्य	= तिसमासका
कृष्णपक्षः	= कृष्णपक्ष
एव	= ही
रयिः	= चन्द्रहै
+च	= और
शुक्लः	= शुक्लपक्ष
प्राणः	= सूर्यहै
तस्मात्	= इसीलिये
एते	= ये
ऋषयः	= उत्तर मार्ग के उपासक ऋषि
शुक्ले	= शुक्लपक्षविषे
इष्टिम्	= यज्ञ को
कुर्वन्ति	= करते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = और

इतरे = दक्षिणमार्ग के उपासक | इतरस्मिन् = कृष्णपक्ष बिषे यज्ञ करते हैं

भावार्थ ॥

मासोवै ॥ पन्दरह दिनका कृष्णपक्ष होता है, और पन्दरह दिनका शुक्लपक्ष होता है,दोनों पक्षोंका एक मास होताहै,वह दो पक्षवाला मास प्रजापति रूपही है तिस प्रजापतिका शुक्ल पक्ष सूर्य है और कृष्णपक्ष चन्द्रमा है, जो कृष्ण पक्ष है वही रयि है, और जो शुक्ल पक्ष है सोई प्राण है जो बुद्धिमान् उपासिक सूर्य कोही सर्वरूप करके प्राणही जानते हैं, वे प्राणहीं को सर्वरूप करके देखते हैं प्राण से भिन्न कोई वस्तु उनको नहीं दिखाई देती है प्राण को सर्व वस्तु से श्रेष्ठमान् है इसीलिये प्राणरूपी शुक्लपक्ष में ही इष्टपूर्त्त कर्मों को करते हैं, कृष्ण पक्ष में नहीं और जो उत्तरलोक हैं वे शुक्ल पक्ष में इष्टपूर्त्त कर्मों को करतेभी हैं तबभी वह कृष्णही पक्षका अनुभव करतेहैं क्योंकि प्राणोंकी उपासनासेरहित जो हैं वे इस विभागको नहीं जानतेहैं और इसीलिये वे कृष्णपक्ष में इष्टपूर्त्त कर्मों को करते हैं और यदि शुक्लपक्षमें जो करदेते हैं तबभी उनको कृष्ण पक्षकाही फल मिलताहै॥१२॥

मूलम् ॥

अहोरात्रो वै प्रजापतिस्तस्याहरेव प्राणोरात्रिरेवरयिः प्राणंवाएते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते ब्रह्मचर्यमेव तद्यद्रात्रौ रत्या संयुज्यन्ते ॥१३॥

पदच्छेदः ॥

अहोरात्रः वै प्रजापतिः तस्य अहः एव प्राणः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात्रिः एव रयिः प्राणम् वै एते प्रस्कदन्ति ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते ब्रह्मचर्यम् एव तत् यत् रात्रौ रत्या संयुज्यन्ते ॥

अन्वयः	पदार्थ
अहोरात्रः	= दिन और रात
वै	= निश्चयकरके
प्रजापतिः	= प्रजापतिहै
तस्य	= उस प्रजापतिका
अहः	= दिन
एव	= ही
प्राणः	= सूर्यहै
+ च	= और
रात्रिः	= रात
एव	= ही
रयिः	= चन्द्रमाहै
वै	= इसलिये
ये	= जो लोक
दिवा	= दिनमें
रत्या	= स्त्रीसे
संयुज्यन्ते	= संयुक्तहोते हैं याने भोगकरते हैं
एते	= वेमूर्ख
+ वै	= निश्चयकरके
प्राणम्	= तेजरूप अपने प्राणको
प्रस्कन्दन्ति	= त्यागतेहैं
+ च	= और
यत्	= जो
रात्रौ	= रात्रीबिषे
रत्या	= भोगकेवास्ते स्त्रीसे
संयुज्यन्ते	= संयुक्तहोतेहैं
+ तेषाम्	= उनको
तत्	= यह कर्म
एव	= निश्चयकरके
ब्रह्मचर्यम्	= ब्रह्मचर्य है

भावार्थ ॥

अहोरात्रइति ॥ तीस घड़ीका एक दिन होता है और तीसही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घड़ी की रात्री होती है साठ घड़ीका दिनरात्र दोनों होते हैं सो दिन रात्र भी प्रजापति रूपही है, तीस घड़ी प्रमाणवाला जो दिनहै वह आदित्य है, याने सूर्य्य है और तीस घड़ी प्रमाणवाली जो रात्री है, वह चन्द्रमा है इसलिये दिनमें स्त्रीके साथ भोग करने का निषेध किया है जो लोग दिनमें मैथुन करते हैं, वे अपने प्राणों को नाश करते हैं, याने प्राणों को सुखाते हैं, जो पुरुष दिन में स्त्री के साथ क्रीड़ा नहीं करते हैं, परन्तु रात्री मेंही करते हैं, उन का जो रात्रीमें मैथुन करनाहै, वह ब्रह्मचर्यहीहै, इसलिये रात्रीमेंही अपनी स्त्रीके साथ पुरुष भोगकरै, परस्त्री को किसी काल में भी भोग न करै ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

अन्नंवैप्रजापतिस्ततो हवै तद्रेतस्तस्मादिमाः प्रजाः प्रजायन्त इति ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ॥

अन्नम् वै प्रजापतिः ततः ह वै तत् रेतः तस्मात् इमाः प्रजाः प्रजायन्ते इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अन्नम्	= अन्न	रेतः	= वीर्य्य
वै	= ही	जायते	= उत्पन्न होता है
प्रजापतिः	= प्रजापति है	तस्मात्	= उसीवीर्यसे
ततः	= उस अन्नरूप प्रजापतिसे	इति	= दृश्यमान
हवै	= निश्चयकरके	इमाःप्रजाः	= येसंपूर्णप्रजा
तत्	= वह प्रजोत्पादनसमर्थ	जायन्ते	= उत्पन्न होती हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अन्नमिति ॥ पूर्वत्राले मंत्रों में जो कुछ कहा है सो सब उपयोगी जानकरके कहागयाहै ॥ और जो यह प्रश्न कियागयाथा कि सब प्रजा किससे उत्पन्न होती हैं सो अब उसके उत्तर को कहते हैं ॥ अन्नंवैप्रजापतिः ॥ यह जो प्रसिद्ध व्रीहि यवादिरूप अन्न है यही प्रजापति है अर्थात् दिन मास संवत्सररूप जो काल है तद्रूपही यह अन्न भी है तिसी अन्नके भक्षण करने से वीर्य्य उत्पन्न होता है तिसी वीर्य्यसे नानाप्रकारके प्राणियों के शरीर उत्पन्न होते हैं ॥ १४ ॥

मूलम् ॥

तद्ये हवै तत्प्रजापतिव्रतं चरन्ति तेमिथुनमुत्पादयन्ते तेषामेवैष ब्रह्मलोकोयेषां तपो ब्रह्मचर्य्यं येषु सत्यंप्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ॥

तत् ये ह वै तत् वै प्रजापतिव्रतम् चरन्ति ते मिथुनम् उत्पादयन्ते तेषाम् एव एषः ब्रह्मलोकः येषाम् तपःब्रह्मचर्य्यम् येषु सत्यम् प्रतिष्ठितम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तत् =	इसलिये	चरन्ति =	करते हैं
ये =	जो गृहस्थीलोक	ते =	वे
ह वै =	निश्चय करके	मिथुनम् =	पुत्रपुत्रीरूप मिथुन याने जोड़े को
तत्प्रजापतिव्रतम् =	ऋतुकालबिषे भार्यागमनरूप व्रतको	उत्पादयन्ते =	उत्पन्न करते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

×तेषामेतत् { उनका यह
दृष्टफलम् = { दृष्टफल है
च = और
येषाम् = जिनका
तपः = स्नातकव्रत
आदितपहै
च = और
ब्रह्मचर्यम् = { ऋतुकाल
बिषेभार्या
गमनादि
नियम
यथोक्त- = { विधिपूर्व-
मस्ति = { कहै

च = और
येषु = जिनके बिषे
सत्यम् = सत्य
प्रतिष्ठितम् = सदास्थितहै
तेषाम् एव = उन्हींका
एषः = यह पूर्वोक्त
ब्रह्मलोकः = दक्षिण मार्ग-
रूप चंद्रलोक
भवति = कर्मफलभोग
पर्यंत होताहै
तेषामेतत् = { उनका यह
अदृष्टफलम् { अदृष्टफल है

भावार्थ ॥

तद्येहेति !! प्रश्न के उत्तर को कहकर शास्त्र विहित मैथुन के दृष्ट फलको दिखाते हैं ॥ तत् ॥ इस संसार मंडलमें जो गृहस्थाश्रमवाले पूर्वोक्त प्रजापति के व्रतको आचरण करते हैं अर्थात् दिनमें मैथुन का त्याग करकें ऋतुकाल में स्वभार्या से गमन करते हैं वे पुत्र और कन्याके जोड़ेको उत्पन्न करते हैं अब उसी प्रजापति व्रतके अदृष्टफलको कहतेहैं ॥ उन्हींको ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है जिन्हों ने स्नातक व्रतादि तपको ऋतुकाल बिषे स्वभार्या गमनरूपी ब्रह्मचर्य्यको, और सत्यभाषणको स्वीकार किया है १५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तेषामसौविरजोब्रह्मलोकोनयेषु जिह्ममनृतंन मायाचेति ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ॥

तेषाम् असौ विरजःब्रह्मलोकः न येषु जिह्मम् अनृतम् न माया च इति १६ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च	= और	असौ	= यह पूर्वोक्त
येषु	= जिनपुरुषोंबिषे	विरजः	= रोगादि दोषों से रहित
जिह्मम्	= कुटिलता	ब्रह्मलोकः	= उत्तरायणमार्ग-रूपी सूर्यलोक
न	= नहीं है	+भवति	= प्राप्त होताहै
च	= और	इति	= प्रथम प्रश्नकी समाप्तिहै
अनृतम्	= असत्यता		
न	= नहीं है		
तेषाम्	= उनपुरुषों को		

भावार्थ ॥

तेषामिति ॥ पूर्वके मंत्रमें केवल कर्मियों को चन्द्रलोक की प्राप्ति कही है, अब इस मंत्र में ज्ञान के सहित कर्मियों को जो फल प्राप्तहोताहै उसको कहते हैं ॥ तेषामिति ॥ जिन उपासकों में कुटिलता, असत्य भाषणता, और छल प्रपञ्चता भीतर बाहर से नहीं है,और हिंसा,चोरी, आदि दुष्टकर्म नहीं है,उन निष्काम कर्मियों को उत्तरायण मार्ग करके वृद्धि क्षयरहित ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है ॥ १६ ॥

इति प्रथमः प्रश्नः ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

अथहैनंभार्गवोवैदर्भिः पप्रच्छभगवन् कत्येवदेवाःप्रजांविधारयन्ते कतरएतत्प्रकाशयन्तेकः पुनरेषांवरिष्ठइति १ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ ह एनम् भार्गवः वैदर्भिः पप्रच्छ भगवन् कति एव देवाः प्रजाम् विधारयन्ते कतरे एतत् प्रकाशयन्ते कः पुनः एषाम् वरिष्ठः इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
अथह	= इसकेपीछे
वैदर्भिः	= विदर्भदेशका रहनेवाला
मार्गवः	= भार्गवऋषि
एनम्	= उसपिप्पलाद मुनि से
इति	= ऐसा
पप्रच्छ	= पूछताभया कि
भगवन्	= हेभगवन्
कति	= कितने
देवाः	= देवतायानेआकाशादि पंच महाभूत चक्षुरादि पंचज्ञानेन्द्रिय वागादि पांचकर्मेन्द्रिय मन और प्राण जो देवता करके प्रसिद्ध हैं उनमें से कितने देवता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एनाम् = इस	प्रकाशयन्ते=प्रकाशकरतेहैं
प्रजाम् = शरीरको	पुनः = और
विधारयन्ते=धारण करतेहैं	एषाम् = इनमेंसे
+ च = और	कः = कौन
कतरे = कौनसेदेवता	वरिष्ठः = श्रेष्ठ
एतत् = इसशरीरको	+अस्ति = है

भावार्थ ॥

अथहैनमिति ॥ अब पिप्पलाद मुनिसे भृगुकुल में उत्पन्न हुवा जो वैदर्भि नामवाला ऋषि है सो पूछता है हे भगवन् ! जो देवता प्राणियों के शरीरोंको धारण कररहे हैं वे सबदेवता कितने हैं, अर्थात् जो ज्ञानेन्द्रियों में, कर्मेन्द्रियोंमें, प्राणोंमें, मनादिकों में स्थित होकर शरीरको धारण करते हैं और प्रकाश भी करते हैं वे देवता सब कितने हैं,और इन देवतों के बीचमें श्रेष्ठ देवता को,है सो मेरे प्रति कहिये ॥ १ ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाचाकाशोहवाएष देवोवायुरग्निरापः पृथिवीवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रंचतेप्रकाश्याभिवदन्तिवयमेतद्बाणमवष्टभ्यविधारयामः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच आकाशः ह वा एषः देवः वायुः अग्निः आपः पृथिवी वाक् मनः चक्षुः श्रोत्रम् च ते प्रकाश्य अभिवदन्ति वयम् एतत् बाणम् अवष्टभ्य विधारयामः ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
तस्मै	= उस भार्गव मुनि से
सः	= वहपिप्पलाद
ह्वः	= स्पष्ट
उवाच	= कहता भया कि
एषः	= यह
आकाशः	= आकाश
ह्वा	= प्रसिद्ध
देवः	= देवताहै
वायुः	= वायु
+देवः	= देवताहै
अग्निः	= अग्नि
+देवः	= देवताहै
पृथिवी	= पृथिवी
+देवः	= देवताहै
वाक्	= वाक
+देवता	= देवताहै
मनः	= मन
देवता	= देवताहै

अन्वयः	पदार्थ
चक्षुः	= चक्षु
देवता	= देवताहै
श्रोत्रम्	= श्रोत्र
+देवता	= देवताहै
+तेषाम्	= उनमेंसे
ते	= वेयानेपांच कर्मेन्द्रियां और पांच ज्ञानेन्द्रियां
+स्वमा हात्म्यम्	= अपने माहात्म्यको
प्रकाश्य	= प्रकाशकरके
अभिवदन्ति	= परस्पर कहतेभये कि
वयम्	= हम
एतत्	= इस
बाणम्	= शरीरको
अवष्टभ्य	= स्थितकरके
विधारयामः	= धारण करते हैं

नोट–वाक् उपलक्षण करके पांच कर्मेन्द्रिय देवताहैं मन उपलक्षणकरके वृत्तिचतुष्टय अन्तःकरण देवताहैं चक्षु और श्रोत्र उपलक्षण करके पांच ज्ञानेन्द्रिय देवताहैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

तस्मैसहेति ॥ वैदर्भि ने जब ऐसा प्रश्न किया तब पिप्लाद ऋषि उससे कहतेभये॥ आकाश,वायु,अग्नि,जल, पृथिवी ये पांच महा भूतरूप देवता हैं, वाक्,पाणि,पाद, पायु,उपस्थ ये पांच कर्मेन्द्रिय-रूपी देवता हैं, चक्षु,श्रोत्र, घ्राण, रसना,त्वक् ये पांच ज्ञानेन्द्रिय-रूपी देवता हैं,और मन, बुद्धि, चित्त,अहंकार ये चार अन्तःकरण के वृत्तिरूपी देवताहैं,येसब शरीर में स्थित होकर अपने २ कार्य को करते हैं और शरीर को प्रकाशते हैं,एक समय ये पूर्वोक्त सब देवता परस्पर अभिमानको करते भये और हरएक उनमें से कहताभया कि हमहीं श्रेष्ठ हैं हमनेही इस शरीर को दृढ़ करके धारण कर रक्खा, अगर हम न हो, तो तुम सब नाश होजावो, हमारीही स्थिति से तुम्हारी सबकी स्थिति है ॥ २ ॥

मूलम् ॥

तान्वरिष्ठःप्राण उवाच मामोहमापद्यथाऽहमे-वैतत् पंचधात्मानं प्रविभज्यैतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामीति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

तान् वरिष्ठः प्राणः उवाच मा मोहम् आपद्यथ अहम् एव एतत् पञ्चधा आत्मानम् प्रविभज्य एतत् बाणम् अवष्टभ्य विधारयामि इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तान्	= उन सब से	प्राणः	= प्राणदेवता
वरिष्ठः	= श्रेष्ठ	उवाच	= कहताभया कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+यूयम् = तुम सब	प्रविभज्य = विभाग करके याने अपानादि भेदसे पांच प्रकारका होकर
मा = मत	
मोहम् = अज्ञानको	
आपद्यथ = प्राप्त हो	
अहम् = मैं	एतत् = इस
एव = ही	बाणम् = शरीर को
एतत् = इस	अवष्टभ्य = स्थिर करके
आत्मानम् = अपने आपको	विधारयामि = भली प्रकार धारण करता हूँ
पञ्चधा = पांच प्रकार से	

भावार्थ ॥

तानिति ॥ तब उन सब अभिमानी देवताओं से प्राण हाथ उठाकर कहने लगा, तुम सब कोई अज्ञानको मत प्राप्त हो, मैंही इस शरीर में मुख्य हूं, मैं ही पांचरूप धारणकरके याने प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, होकर इस शरीर को स्थित कररक्खा हूं और नानाप्रकार के कार्य्यों के करने में मैंनेही इसको सामर्थ्यवाला बनारक्खा हूं ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

तेऽश्रद्दधाना बभूवुः सोऽभिमानाद्ऊर्ध्वमुत्क्रामत इव तस्मिन्नुत्क्रामत्यथेतरे सर्व एवोत्क्रामन्ते तस्मिंश्चप्रतिष्ठमाने सर्व एव प्रतिष्ठन्ते तद्यथा मक्षिकामधुकरराजानमुत्क्रामन्तं सर्वा एवोत्क्रामन्ते तस्मिंश्चप्रतिष्ठमाने सर्वा एव प्रतिष्ठन्त एवं वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं च ते प्रीताःप्राणंस्तुन्वन्ति ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

ते अश्रद्दधानाः बभूवुः सः अभिमानात् ऊर्ध्वम् उत्क्रामते इव तस्मिन् उत्क्रामति अथ इतरे सर्वे एव उत्क्रामन्ते तस्मिन् च प्रतिष्ठमाने सर्वे एव प्रतिष्ठन्ते तत् यथा माक्षिकाः मधुकरराजानम् उत्क्रामन्तम् सर्वाः एव उत्क्रामन्ते तस्मिन् च प्रतिष्ठमाने सर्वाः एव प्रतिष्ठन्ते एवम् वाक् मनः चक्षुः श्रोत्रम् च ते प्रीताः प्राणम् स्तुन्वन्ति ॥ ४ ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ तस्मिन्	= इस कहनेपर
ते	= वेमनआदि
अश्रद्दधानाः	= अविश्वासमान
बभूवुः	= होतेभये
+ तदा	= तब
सः	= वह प्राण उनके अविश्वासको जानके
अभिमानात्	= अहंकारसे उनकोत्याग करके
ऊर्ध्वम्	= ऊर्ध्वको
उत्क्रामते इव ॥	= उत्क्रमणसा करताभया
तस्मिन्	= उसप्राणके
उत्क्रामति	= उत्क्रमणकरने पर.
इतरे	= चक्षुरादि
सर्वे	= सब
एव	= ही
उत्क्रामन्ते	= उत्क्रमण करते भये
च	= और
तस्मिन्	= उसप्राणके
प्रतिष्ठमाने	= स्थितहोनेपर
सर्वे	= सब
एव	= ही चक्षुरादि
देवता	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिष्ठन्ते = सम्यक्प्रकार स्थितहोतेभये
तद्यथा = जैसे
उत्क्रामन्तम् = उड़तेहुये
मधुकर राजानम् = मधुकरों के राजाके साथ
सर्वाः = सब
एव = ही
मक्षिकाः = मधुकरमक्षिका
उत्क्रामन्ते = उड़जाती हैं
च = और
तस्मिन् = मधुकरराजाके
प्रतिष्ठमाने = स्थितहोनेपर
सर्वाः = सब
एव = ही
मक्षिकाः = मधुकरमक्षिका

प्रतिष्ठन्ते = स्थित होजाती हैं
एवम् = ऐसेही
वाक् = वाणी
मनः = मन
चक्षुः = चक्षु
च = और
श्रोत्रम् = श्रोत्रासब
ते = येप्राणकेमाहात्म्यकोजानकर और अपने अविश्वासकोछोड़कर
प्रीताः = प्रसन्नहोती हुई
प्राणम् = प्राणको
स्तुवन्ति = स्तुतिकरती हैं

नोट—जब सब इन्द्रियां प्राणकी श्रेष्टताको जानतीभई तब आपुसमें एक दूसरे से प्राणके माहात्म्यको अगले दोमन्त्रों में कहकर उसके सम्मुख होकर उसकी स्तुतिकरनेलगीं ॥

भावार्थ ॥

तेऽश्रद्दधानेति ॥ वे जो श्रोत्रादिक देवता थे सो प्राण के वाक्य पर श्रद्धा न करके आस्तिक बुद्धि से रहित होकर हँसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगे, जब प्राणने देखाकि अभिमानी देवता मेरीहँसी करते हैं तब उनके अभिमान को दूरकरने के लिये शरीर से बाहर निकलने की तैयारी की, उसके निकलतेही श्रोत्रादिक जितने देवता शरीर में थे सब कंपायमान होकर व्याकुलहुये और उसके पीछे२ चलनेलगे,जब प्राण वापिस आया, तब वे सब फिर उसके साथही शरीर में वापिस आये, जिस काल में शरीर से प्राण उत्क्रमण करता है उसी काल में इतर सब देवता उत्क्रमण कर जाते हैं, और जिस काल शरीर में प्राण स्थिर होजाता है उसीकाल सब देवता भी स्थिर होजाते हैं, शरीरमें सब देवतोंकी स्थिति प्राणकेही आधीन है, स्वतंत्र कोई भी देवता नहीं है, इसीमें अब दृष्टांतको कहते हैं, जैसे मधुको इकट्ठा करनेवाली सब मक्षिका अपने राजाके आधीन रहतीहैं अर्थात् जिस काल में मधुके छत्ते को त्यागकर मधुमक्षिका का राजा उड़जाताहै, तब सबमक्षियांभी उसके पीछे उड़जाती हैं फिर जब वह आकर मधुके छत्तेपर बैठ जाता है, तब सब मक्षिका भी तिसके साथही बैठजाती हैं, इसी तरह प्राण के उत्क्रमण करने के समय सब इन्द्रियां भी उसके साथही उत्क्रमण करजाती हैं, सब इन्द्रियां प्राणकेही आधीनहैं, जिस काल में प्राण शरीर से उत्क्रमण करने की तैयारी करता है, उसी काल में सब इन्द्रियां व्याकुल होकर उसके साथ गमन करने लगती हैं, जब सब इन्द्रियां प्राणकी श्रेष्ठताको जानतीभई तब सब आपुस में उसके महत्त्वको कहने लगीं ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

एषोऽग्निस्तपत्येष सूर्य्य एष पर्जन्यो मघवानेष वायुरेष पृथिवी रयिर्देवःसदसच्चामृतंचयत् ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

एषः अग्निः तपति एषः सूर्य्यः एषः पर्जन्यः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मघवान् एषः वायुः एषः पृथिवी रयिः देवः सत् असत् च अमृतं च यत् ॥ ५ ॥

अन्वयः	पदार्थ
एषः	= यही प्राण
अग्निः	= अग्निहोके
तपति	= तपताहै
एषः	= यहीप्राण
सूर्यः	= सूर्यहोकेप्रकाश करताहै
एषः	= यही प्राण
पर्जन्यः	= मेघहोके वर्षा करताहै
एषः	= यही प्राण
मघवान्	= इन्द्रहोकेप्रजाका पालन करता है और राक्षसों को मारताहै
एषः	= यही
वायुः	= आवहप्रवहादि रूपहो के ब्रह्मांडको धारण करता है
+एषः	= यही प्राण
पृथिवी	= पृथिवीरूप होके अन्नादि औषधी से प्राणीयों का पालन करताहै
+एषः	= यहीप्राण
रयिः	= चन्द्रमा
देवः	= देवहोके विश्वकापोषण करताहै
+एषः	= यही प्राण
सत्	= स्थूल
+च	= और
असत्	= सूक्ष्मरूप सब जगत्है
च	= और
+एषः	= यहीप्राण
अमृतंच	= अमृतरूपभीहौ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट–आवह वह वायुहै जिस करके मेघ चलते हैं और बरसतेहैं ॥ प्रवह वह वायुहै जिसकरके सूर्य चन्द्र आदि नक्षत्र तारागण चलते हैं ऐसेही पांचप्रकार के और वायु ब्रह्मांड के धारण करनेवाले हैं ॥

भावार्थ ॥

एष इति ॥ यह प्राणही अग्निरूप होकर संसारको तपाता है,यही सूर्य्यरूप होकर जगत् को प्रकाश करता है, यही मेघरूप होकर वर्षा करताहै,यही इन्द्ररूप होकर प्रजाकी पालना करता है,और वायुरूप होकर ब्रह्मांडको धारण करता है,यही पृथिवीरूप होकर अन्नादि औषधि से प्राणियोंका पालन करता है,यही चन्द्रमाहोकर विश्वको पोषण करताहै, यही प्रकाशमानहै, यही स्थूल और सूक्ष्मरूप सब जगत् है, और देवतों के जीवनका हेतुभूत यही अमृत है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

अराइवरथनाभौप्राणेसर्वंप्रतिष्ठितं ऋचोयजूंषिसामानियज्ञःक्षत्रं ब्रह्मच ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

अराः इव रथनाभौ प्राणे सर्वम् प्रतिष्ठितम् ऋचः यजूंषि सामानि यज्ञः क्षत्रम् ब्रह्म च ॥ ६ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इव	= जैसे	अराः	= आरास्थितहैं
रथनाभौ	= रथचक्रपिंडका बिषे	+ तथा	= तैसेही
		प्राणे	= प्राणबिषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वम् = श्रद्धादि नामपर्यंतसर्व शरीर षोडश कलावाला जिसका व्याख्यान षष्ठप्रश्न चतुर्थमंत्र बिषे है

प्रतिष्ठितम् = स्थितहै

च = और

ऋचः = ऋक्

यजूंषि = यजु

सामानि = साम ये तीन प्रकारके वेद

+च = और

यज्ञः = इन वेदों से प्रतिपादयज्ञ

+च = और

क्षत्रम् = क्षत्रियजाति

ब्रह्म = ब्राह्मणजाति ये सब प्राण बिषे स्थित हैं ॥

नोट—सब इन्द्रियां अलग आपुसमें ऊपर कहे प्रकार विचारकर प्राण के संमुख हो उसकी स्तुति करती हैं ॥

॥ भावार्थ ॥

अराइवेति ॥ जैसे रथचक्रपिंडका बिषे अर लगे रहते हैं तैसेही संसाररूपी चक्र में नाभिरूपी जो प्राण है उसमें अरवत्, सूर्य, चन्द्र, तारागण आदि लोक, ऋक्, यजु, साम आदि वेद, पृथिवी और इन वेदोंसे प्रतिपाद्य यज्ञ, और श्रद्धा आदि साधन, और ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि जाति लगे हैं, अर्थात् जो कुछ माया और मायाका कार्य्य है, वह सब प्राणहीमें अर्पित है, प्राणके बाहर कोई वस्तु नहीं, सब प्राणही रूप है ॥ ६ ॥

नोट— जिसमें पादोंका संकेतहो उन मंत्रोंका नाम ऋचा है
जिसमें पादोंका नियम नहो उन मंत्रोंका नाम यजु है
जो गायनकी तरह पढ़ा जावै उन मंत्रोंका नाम साम है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

प्रजापतिश्चरसिगर्भेत्वमेवप्रतिजायसे तुभ्यंप्राणःप्रजास्त्विमाबलिंहरन्तियःप्राणैःप्रतिष्ठसि ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

प्रजापतिः चरसि गर्भे त्वम् एव प्रतिजायसे तुभ्यम् प्राण प्रजाः तु इमाः बलिम् हरन्ति यः प्राणैः प्रतिष्ठसि ॥ ७ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
प्राण	= हे प्राण	तु	= और
त्वम्	= तू	यः	= जोतू
प्रजापतिः	= विराट्रूपहुवा	प्राणैः	= चक्षुरादि प्राणों के साथ
गर्भे	= प्राणियों के गर्भ बिषे	प्रतिष्ठसि	= सम्यक् प्रकार स्थितहै
चरसि	= व्याप्त है	+एतदर्थम्	= इसलिये
त्वमेव	= तूही	इमाःप्रजाः	= ये चक्षुरादि सबप्रजा
प्रतिजायसे	= प्रतिशरीर बिषे मातृ पितृ आदि रूपसेउत्पन्न होताहै	तुभ्यम्	= तेरे अर्थ
		बलिम्	= भागको
		हरन्ति	= प्राप्त करतेहैं

भावार्थ ॥

प्रजापतिरिति ॥ इन्द्रियादिक देवता प्राणों की स्तुति करते हैं, हे प्राण ! विराट्रूप तूही है, तूही पिताके शरीर में वीर्य्यरूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर माता के गर्भ में स्थितहोताहै तूही माताके गर्भ से पुत्ररूप होकर बाहर निकलताहै, तूही प्रजापति रूपहै, और जितने चक्षुरादि इन्द्रियांहैं सब तेरे लियेही बलीभाग को देती हैं क्योंकि तू उनसब के साथ होकर सर्वशरीर में पांच रूपसे स्थितहै ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

देवानामसिवह्नितमः पितॄणांप्रथमास्वधाऋषीणांचरितंसत्यमथर्वाङ्गिरसामसि ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

देवानाम् असि वह्नितमः पितॄणाम् प्रथमा स्वधा ऋषीणाम् चरितम् सत्यम् अथर्वाङ्गिरसाम् असि ॥ ८ ॥

अन्वयः	पदार्थ
+त्वम्	= तूही
देवानाम्	= इन्द्रादि देवताओं का
वह्नितमः	= श्रेष्ठ अग्निरूपयानेयज्ञ भागका सम्यक्प्रकार प्राप्त करनेवाला
+असि	= है
+च	= और
+त्वम्	= तूही

अन्वयः	पदार्थ
पितॄणाम्	= पितरोंका
प्रथमा	= प्रथम
स्वधा	= भागप्राप्तकरनेवालानांदी श्राद्धबिषे
+असि	= है
+च	= और
+त्वम्	= तूही
अथर्वाङ्गिरसाम्	= देहधारणकरनेवाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषीणाम् = चक्षुरादि देवताओं का	चरितम् = चैतन्य
सत्यम् = सत्य	असि = है ॥

नोट-स्वाहा शब्द देवतों के निमित्त यज्ञ भागका प्राप्त करनेवालाहै, याने स्वाहा शब्द करके हवनादि कर्म कियेजातेहैं, अर्थात् हवनादिकों बिषे स्वाहा शब्द उच्चारण करके देवतों के निमित्त बलिदी जाती है॥ स्वधा॥यज्ञ या श्राद्धबिषे पितरों के निमित्त जो भाग दिया जाताहै सो "स्वधा" शब्द करके दिया जाताहै- ॥ अथर्वांगिरसाम्॥अथर्वा = प्राण, आंगिरसाम् = अंगबिषे रसरूप है जो, याने शरीर बिषे मुख्यतत्वहै जो, सोई है प्राण ॥

भावार्थ ॥

देवानामिति ॥ जितने इन्द्रादिक देवता हैं उन्न सबको अग्निरूपहो कर तूही बलि भागको पहुंचाताहै, और पितर लोकमें निवास करनेवाले जितने पितर हैं, उन्नके प्रति भी तूही स्वधा शब्दद्वारा हविको पहुंचाता है अर्थात्—देवतों और पितरों के प्रति जो अन्नादिदियाजाता है वह अन्नरूप भी तूही है और जो इन्द्रियों, शरीरों के धारण करने की सामर्थ्य है वह भी तू है॥ ८॥

मूलम् ॥

इन्द्रस्त्वंप्राणतेजसा रुद्रोऽसिपरिरक्षितात्वमन्तरिक्षेचरसि सूर्य्यस्त्वं ज्योतिषांपतिः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

इन्द्रः त्वम् प्राण तेजसा रुद्रः असि परिरक्षिता त्वम् अन्तरिक्षे चरसि सूर्य्यः त्वम् ज्योतिषाम्पतिः ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
प्राण	= हे प्राण
त्वम्	= तूही
इन्द्रः	= परमेश्वर
असि	= है
तेजसा	= पराक्रमकरके
रुद्रः	= जगत् संहारकारक रुद्ररूप
त्वम्असि	= तूही है
+ च	= और
त्वम्	= तूही
परिरक्षिता	= सबप्रकार रक्षकहै
+ च	= और
+ त्वम्	= तूही
सूर्यः	= सूर्यरूपहोके
अन्तरिक्षे	= आकाशबिषे
चरसि	= निरंतर चलताहै
+ च	= और
+ त्वम्	= तूही
ज्योतिषाम्पतिः	= अग्नि आदिदेवतोंका भी ईश्वर है

भावार्थ ॥

इन्द्रस्त्वमिति ॥ हे प्राण ! परमेश्वर तूही है, और रुद्ररूप होकर अपने बल से सम्पूर्ण जगत् का नाशकरनेवाला तूही है, और जगत्की स्थितिकालमें रक्षाकरनेवाला भी तूही है, और तूही सूर्यरूप होकर आकाश में विचरताहै, और सम्पूर्ण तारों को अपने तेज से प्रकाशमान करता है, और तूही अग्नि आदिकों का ईश्वर है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

यदात्वमभिवर्षस्यथेमाः प्राणते प्रजा आनन्दरूपास्तिष्ठन्ति कामायान्नंभविष्यतीति ॥ १० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

यदा त्वम् अभिवर्षसि अथ इमाः प्राणते प्रजाः आनन्दरूपाः तिष्ठन्ति कामाय अन्नम् भविष्यति इति ॥ १० ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यदा	= जब	कामाय	= आगे को प्रशस्त
त्वम्	= तू	अन्नम्	= अन्न
अभिवर्षसि	= मेघहोके वर्षा करता है	भविष्यति	= होगा
अथ	= तब	इति	= ऐसा विचारकर
इमाः	= ये	आनन्दरूपाः	= आनंदरूप होतीहुई
प्रजाः	= प्रजा	तिष्ठन्ति	= स्थित होतीं हैं
प्राणते	= प्राणों की चेष्टाको करती हैं		
+च	= और		

भावार्थ ॥

यदेति ॥ हे प्राण ! जिस कालमें तू मेघरूप होकर वर्षा को करता है, तिस काल में ये सम्पूर्ण प्रजा जीवनशक्ति की चेष्टा को करती हैं, और आन्द को प्राप्त होती हैं, क्योंकि उस काल में सम्पूर्ण प्रजाको यह निश्चय होता है कि अब तू हमारी इच्छा को पूर्ति करैगा और हमारे भोगके लिये वर्षाद्वारा बहुतसा अन्न उत्पन्न करैगा ॥ १० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

व्रात्यस्त्वंप्राणैक ऋषिरत्ता विश्वस्यसत्पतिः व-
यमाद्यस्यदातारः पितात्वंमातरिश्वनः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

व्रात्यः त्वम् प्राण एकः ऋषिः अत्ता विश्वस्य सत्पतिः वयम् आद्यस्य दातारः पिता त्वम् मातरिश्वनः ॥ ११ ॥

अन्वयः	पदार्थ
प्राण =	हे प्राण
त्वम् =	तू
व्रात्यः =	संस्कार विना स्वभाव सेही शुद्ध है क्योंकि प्रथम होनेसे तेरा पिता कोई नहीं है
+त्वम् =	तूही
एकर्षिः =	एकर्षिनामक मुख्य अग्नि है
त्वम् =	तूही
अत्ता =	सबहविर्द्रव्यों का भोक्ता है
+त्वम् =	तूही
विश्वस्यसत्पतिः =	सब विद्यमान जगत्का उत्तम पति है
च =	और
वयम् =	हमसब इन्द्रियां
आद्यस्य =	तेरे अर्थ भोग्यवस्तुको
दातारः =	प्राप्त करने वाले हैं
त्वम् =	तू
मातरिश्वनः =	हमारा
पिता =	पिता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

व्रात्यस्त्वमिति ॥ जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो उसका नाम व्रात्यहै हे प्राण ! वह व्रात्य रूप तूही है, क्योंकि स्वभाव सेही शुद्ध है, और प्रथम तूही उत्पन्न हुआहै, तेरा पिता कोई नहींहै हे प्राण ! एकर्षिनामक जो अग्निहै, वह तूहीहै, तूही सब हविर्द्रव्योंका भोक्ताहै, तूही चराचर जगत्का भोक्ता,और संहार करता है और जितने ब्रीहियवादिक अन्न हैं, उन सबको उत्पन्न करनेवाला तूही है, और हम जितने श्रोत्रादिक देवता हैं, उन सबको भोग देनेवाला तूही है, हम सब देवतों को उत्पन्न करनेवाला पिता भी तूही है, और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण करनेवाला वायु तूही है, तू सब विद्यमान जगत् का उत्तम पति है, हम सब इन्द्रियां तेरे अर्थ भोग्यवस्तु को प्राप्त करनेवाले हैं, हे प्राण ! तू हमलोकों का पिताहै ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

यातेतनूर्वाचिप्रतिष्ठितायाश्रोत्रे या च चक्षुषिया चमनसिसन्ततांशिवांतांकुरुमोत्क्रमीः ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ॥

या ते तनूः वाचि प्रतिष्ठिता या श्रोत्रे या च चक्षुषि या च मनसि सन्तता शिवाम् ताम् कुरु मा उत्क्रमीः ॥ १२ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
या	= जो	वाचि	= वाणी बिषे
ते	= तेरी	प्रतिष्ठिता	= स्थित है
तनूः	= मूर्त्ति	च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या = जो
मूर्त्तिः = मूर्त्ति
श्रोत्रे = करण बिषे स्थित है
च = और
या = जो
मूर्त्तिः = मूर्त्ति
चक्षुषि = नेत्रबिषे स्थितहै
+ च = और
या = जो मूर्त्ति
मनसि = मन बिषे
सन्तता = व्याप्तहै
ताम् = तिस
शिवाम् = कल्याणवती मूर्त्तिको
कुरु = धारणकर
माउत्क्रमीः=उत्क्रमण मत कर

भावार्थ ॥

यातेतनूरिति ॥ हे प्राण ! जो तेरी यह प्रसिद्ध अपानरूपी मूर्ति है सो वागिन्द्रिय में स्थित होकर बोलने के व्यापार को करती है, और जो व्यानरूपी तेरी मूर्ति है सो श्रोत्रेन्द्रिय में स्थित होकर शब्द के सुननारूपी व्यापारको करती है और जो प्राणरूपी तेरी मूर्तिहै वह मुख और नासिका द्वारा बाहर भीतर गमन रुपी व्यवहारकोकरती है और जो तेरी मूर्ति चक्षु इन्द्रिय में स्थितहै वह देखनेरूपी व्यापार को करती है और जो तेरी मूर्ति मन में स्थित है वह संकल्पादि व्यापार को करती है, हे प्राण ! तू इसशरीर से उत्क्रमण मतकर, हम सबोंपर दया कर के हमारे कल्याण के लिये इसी शरीरमें स्थितरह ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

प्राणस्येदंवशेसर्वं त्रिदिवेयत्प्रतिष्ठितं मातेव पुत्रान्रक्षस्वश्रीश्चप्रज्ञाञ्चविधेहिन इति ॥ १३ ॥

इति द्वितीयः प्रश्नः ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

प्राणस्य इदम् वशे सर्वम् त्रिदिवे यत् प्रतिष्ठितम् माता इव पुत्रान् रक्षस्व श्रीः च प्रज्ञाम् च विधेहि नः इति ॥ १३ ॥

अन्वयः	पदार्थ
इदम्	= यह दृश्यमान
सर्वम्	= सब उपभोग
+तव	= तुझ
प्राणस्य	= प्राणके
वशे	= वशमें है
च	= और
त्रिदिवे	= स्वर्गबिषे
यत्प्रतिष्ठितम्	= जो देवभोग्यहै
+तदर्पितववशे	= सोभी तेरे वश में है
+अतः	= इसलिये
पुत्रान्	= हमपुत्रों को
माताइव	= माताके समान
रक्षस्व	= तू रक्षाकर
च	= और
श्रीः	= ब्रह्मक्षात्रियों को
+च	= और
प्रज्ञाम्	= अपने पुत्रजापतित्व ज्ञानयोग्य बुद्धिको
नः	= हमारे लिये
विधेहि	= विधानकर
इति	= ऐसे प्राण की स्तुति करके मन आदि इंद्रियांतू षणीं होती भईं

इति द्वितीयःप्रश्नः ॥ २ ॥

भावार्थ ॥

प्राणस्येति ॥ हे प्राण ! यावत् जो कुछ जगत् दिखाई पड़ताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसको हमलोक तेरीही कृपासे विषयकरते हैं, और जो कुछ संसार में है हे प्राण ! सब तेरेही बसमें हैं, हे प्राण ! तू हम पुत्रोंकी माता की तरह रक्षाकर, अनर्थों से बचा, और हमको कल्याणकारक जो कि बुद्धिहै उसको दे, स्वर्गाबिषे जो देवभोग है वह सब तेरे आधीनहै, इसप्रकार प्राणकी स्तुतिकरके मनादि इन्द्रियां तूष्णीं होती भईं ॥ १३ ॥

इति द्वितीयःप्रश्नः ॥ २ ॥

मूलम् ॥

अथहैनंकौशल्यश्चाश्वलायनः पप्रच्छभगवन् कुतएषप्राणोजायते कथमायात्यस्मिञ्छरीर आत्मानंवाप्रविभज्यकथंप्रातिष्ठते केनोत्क्रमते कथं बाह्यमभिधत्तेकथमध्यात्ममिति १ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ ह एनम् कौशल्यः च आश्वलायनः प्रच्छ भगवन् कुतः एषः प्राणः जायते कथम् आयाति अस्मिन् शरीरे आत्मानम् वा प्रविभज्य कथम् प्रातिष्ठते केन उत्क्रमते कथम् बाह्यम् अभिधत्ते कथम् अध्यात्मम् इति ॥ १ ॥

अन्वयः	पदार्थ
अथहच	= तदनंतर
एनम्	= इस पिप्पलाद आचार्य्य से
आश्वलायनः	= अश्वलायन मुनिका पुत्र
कौशल्यः	= कौशल्यनामक ऋषि
इति	= ऐसा
पप्रच्छ	= पूछताभया कि
भगवन्	= हे भगवन्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एषः = यह
प्राणः = प्राण
कुतः = किस कारण करके
जायते = उत्पन्न होताहै
कथम् = किसप्रकार
+अस्मिन् = इस
+शरीरे = देहबिषे
आयाति = आगमन करताहै
वा = पुनः
कथम् = किस प्रकार
अस्मिन् = इस
शरीरे = शरीर में
आत्मानम् = अपनेआपको
प्रविभज्य = अपानादिपांच विभाग करके
प्रातिष्ठते = स्थित रहताहै
केन = किसवृत्तिविशेष करके
उत्क्रमते = उत्क्रमणइस शरीर से करता है
कथम् = कैसे
बाह्यम् = अधिभूत अधिदैवको
+ च = और
कथम् = कैसे
अध्यात्मम् = अध्यात्मको
अभिधत्ते = धारण करताहै

भावार्थ ॥

अथेति ॥ जब प्रथम प्रश्न के उत्तर को पिप्पलाद ऋषिने समाप्त किया तत्पश्चात् आश्वलायन का पुत्र कौशलनामक ऋषि पूछता भया हे भगवन्! किस उपादान और निमित्त कारणसे यह प्राण उत्पन्न होताहै, किस प्रकार करके इस स्थूल शरीर में आजाता है, किस निमित्त से शरीर को ग्रहण करता है और किस तरहसे यह प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान भेद करके शरीर में स्थिर होकर शरीरको धारण करताहै, और फिर शरीर के किस द्वारसे मरते समय उत्क्रमण कर जाता है, और किस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार करके बाहर के आधिभूत और आधिदैव को अर्थात् पञ्च महाभूतों को और उनके अभिमानी देवताओं को अथवा इस वर्तमान देह और इन्द्रियोंको धारण करता है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाचातिप्रश्नान्पृच्छसिब्रह्मिष्ठोऽसि इतितस्मात्तेऽहम्ब्रवीमि ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच अतिप्रश्नान् पृच्छसि ब्रह्मिष्ठः असि इति तस्मात् ते अहम् ब्रवीमि ॥ २ ॥

अन्वयः	पदार्थ
तस्मै =	तिसको-शल्य ऋषिकेप्रति
ह =	निश्चय करके
सः =	वह पिप्पलादमुनि
उवाच =	कहता भया कि
त्वम् =	तू
अतिप्रश्नान् =	अतिप्रश्नों को
पृच्छसि =	पूछताहै
+परंतु =	परंतु
+त्वम् =	तू
ब्रह्मिष्ठः =	ब्रह्मविषे श्रद्धावान्
असि =	है
तस्मात् =	इसलिये
इति =	ऐसाजानकर
अहम् =	मैं
ते =	तेरेप्रति
ब्रवीमि =	कहताहूं

भावार्थ ॥

तस्माइति ॥ तब पिप्पलाद आचार्य्य ने उस कौशल्यऋषि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से कहा कि तुम अति प्रश्नोंको पूछते हो जो शास्त्रमें मनाहै परन्तु तुम ब्रह्मिष्ठहो अर्थात् वेद के अर्थ के ज्ञाताहो, उत्तम अधिकारी हो, तुम्हारे प्रति हम इन प्रश्नों के उत्तरको कहते हैं, सावधान होकर श्रवण करो ॥ २ ॥

मूलम् ॥

आत्मनएवप्राणोजायते यथैषा पुरुषेछायैतस्मि न्नेतदाततम्मनो कृतेनायात्यस्मिञ्छरीरे ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

आत्मनः एव प्राणः जायते यथा एषा पुरुषे छाया एतस्मिन् एतत् आततम् मनोकृतेन आयाति अस्मिन् शरीरे ॥ ३ ॥

अन्वयः	पदार्थ
आत्मनः	= परमात्मासे
एव	= ही
प्राणः	= प्राण
जायते	= उत्पन्न होताहै
यथा	= जैसे
पुरुषे	= पुरुष बिषे
एषा	= यह दृश्यमान
छाया	= प्रतिबिंबहै
+तथा	= तैसे
एतस्मिन्	= इसपरमात्मा बिषे
एतत्	= यह प्राणतत्व
आततम्	= समर्पितहै
+ च	= और
अस्मिन्	= इस
शरीरे	= शरीरबिषे
+ प्राणः	= प्राण
मनोकृतेन	= मनके संकल्पकृत कर्म के वशसे
आयाति	= प्रवेशकरताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

आत्मनइति ॥ यह जो प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान पञ्च वृत्तिरूप प्राण है सो अक्षय परमात्मा से उत्पन्न होताहै, और उसी के आश्रय रहता है, उससे इसकी पृथक् सत्ता नहीं है, जैसे लोक में पुरुषके शरीर से उत्पन्न हुई जो छाया है वह वास्तवमें सत्य नहीं है और न शरीर से अलग है प्राणों का कारणीभूत जो ब्रह्मात्मा है उसी में आरोपित है, वास्तव में यह नहीं है और जैसे प्रतिबिम्ब की बिम्ब से अपनी पृथक् सत्ता कोई नहीं है तैसे प्राण की भी आत्मा से पृथक् सत्ता अपनी नहीं है, परमात्माकेही आश्रित है और मनके सङ्कल्पादिकों से उत्पन्न हुआ जो कर्म है उसी कर्म के निमित्त करके इस स्थूल शरीर में प्राण प्रवेश करता है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

यथा सम्राडेवाधिकृतान् विनियुङ्क्ते एतान् ग्रामानेतान्ग्रामानधितिष्ठस्वेति एवमेवैष प्राण इतरान् प्राणान् पृथक् पृथगेवसन्निधत्ते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

यथा सम्राट् एव अधिकृतान् विनियुङ्क्ते एतान् ग्रामान् एतान् ग्रामान् अधितिष्ठस्व इति एवम् एव एषः प्राणः इतरान् प्राणान् पृथक् पृथक् एव सन्निधत्ते ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
यथा	= जैसे
सम्राट्	= राजा
अधिकृतान्	= अधिकारी लोकों को याने अपने नौकरों को
इति	= ऐसा
विनियुंक्ते	= आज्ञा देताहै कि
+त्वम्	= तुम
एतान्	= इन
ग्रामान्	= ग्रामों में
एतान् ग्रामान्	= इनग्रामोंमें
अधितिष्ठस्व	= स्थितहोकर स्वकार्य में तत्परहो

अन्वयः	पदार्थ
एवम्एव	= वैसेही
एषः	= यह
प्राणः	= प्राण
इतरान्	= अपने से पृथक्
प्राणान्	= चक्षुरादि इंद्रियोंको और अपानादि वायुको
पृथक्	= अलग
पृथक्	= अलग
एव	= निश्चय करके
सन्निधत्ते	= कर्म बिषे नियोग याने प्रेरणा करता है

भावार्थ ॥

यथेति ॥ जिस प्रकार राजा अपने अधिकारी भृत्योंको आज्ञा देताहै कि तुम कुरुक्षेत्र देश आदि में जाकर बन्दीबस्त करो, उनदेशों का मैंने तुमको हाकिम किया है, इसी प्रकार यह मुख्य प्राण भी अपने से भिन्न चक्षुरादि इन्द्रियों को भी और अपान आदि वायु को इस शरीर के पृथक् २ स्थानों में रखकर उन को कर्मविषे नियोग करता है ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

पायूपस्थेऽपानम् चक्षुः श्रोत्रेमुखनासिकाभ्याम् प्राणः स्वयम् प्रातिष्ठते मध्येतु समानः एषो ह्येतद्धुतमन्नं समन्नयति तस्मादेताः सप्तार्चिषो भवन्ति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

पायूपस्थे अपानम् चक्षुः श्रोत्रे मुखनासिकाभ्याम् प्राणः स्वयम् प्रातिष्ठते मध्ये तु समानः एष हि एतत् हुतम् अन्नम् समन्नयति तस्मात् एताः सप्तार्चिषः भवन्ति ॥ ५ ॥

अन्वयः	पदार्थ
पायूपस्थे =	पुरीषमूत्र मोचन स्थानबिषे
अपानम् =	अपानवायुको
+स्थापयति =	स्थापित करता है
चक्षुःश्रोत्रे =	नेत्र और करणबिषे
मुखनासिकाभ्याम् =	मुख और नासिकाबिषे
प्राणः =	प्राण
स्वयम् =	आपही
प्रातिष्ठते =	स्थित होता है
तु =	और
मध्ये =	प्राण अपानके मध्यनाभिबिषे
समानः =	समान वायु रूपसे स्थित होताहै
हि =	प्रसिद्ध
एषः =	यह समानवायु
हुतम् =	भुक्त
अन्नम् =	अन्नपानको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समन्नयति = { यथा योग्य-स्थानोंमें प्राप्त करता है } सप्तार्चिषः = { सात ज्योतिः- स्वरूपमस्तक गतज्ञानेंद्रियां }

तस्मात् = { इसीकारण उदर अग्नि से प्राणद्वारा } भवन्ति = { रूपादि के ग्रहणकरने में समर्थ होती हैं }

एताः = ये चक्षुरादि

नोट-मुखनासिकाभ्याम् चतुर्थी विभक्तिहै परन्तु अर्थ सप्तमी विभक्तिका इस मन्त्र बिषे देताहै ॥

भावार्थ ॥

पायूपस्थइति ॥ गुदा और शिश्न इन्द्रिय में यह प्राण अपान वायु होकर स्थित होताहै, और मल और मूत्र को बाहर निकालता है, चक्षु, श्रोत्र, मुख, और नासिका में प्राण आपही स्थितहोकर गमनाऽगमन क्रियाको किया करताहै, शरीर का मध्य देश जो नाभि है उसमें समानरूप से यह प्राण स्थित होता है, और भक्षण कियेहुये अन्न के रसको नाडियों में विभाग करके बांटताहै, और इसी कारण दो श्रोत्र, दो नासिका, दो नेत्र, एकमुख ये सात अग्नि की लाटें कही जाती हैं, और अन्नादि के भोगने में और रूपादि के ग्रहण करने में समर्थ होती हैं ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

हृदि ह्येष आत्माऽत्रैतदेकशतं नाडीनांतासां शतंशतमेकैकस्यां द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः प्रतिशाखानाडीसहस्राणिभवन्त्यासुव्यानश्चरति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

हृदि हि एषः आत्मा अत्र एतत् एकशतम् नाडीनाम् तासाम् शतम् शतम् एकैकस्याम् द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः प्रतिशाखानाडीसहस्राणि भवन्ति आसु व्यानः चरति ॥ ६ ॥

अन्वयः	पदार्थ
एषः	= यह प्रसिद्ध
आत्मा	= जीवात्मा
हि	= निश्चय करके
हृदि	= हृदयाकाशबिषे स्थितहै
अत्र	= तिस हृदय बिषे
एतत्	= यह
एकशतम्	= एकसौ एक प्रधान नाड़ी हैं
तासाम्	= उन
नाडीनाम्	= नाड़ियों में से
एकैकस्याम्	= एक एकनाड़ी बिषे
शतंशतम्	= सौ सौ नाड़ी के विस्तार से
द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः	= बहत्तर बहत्तर हज़ार
प्रतिशाखानाडीसहस्राणि	= प्रतिशाखा नाड़ियां
भवन्ति	= होती हैं
आसु	= इननाड़ियोंबिषे
व्यानः	= व्यानवायु
चरति	= संचारकरता है

नोट-प्रथम हृदयाकाश बिषे १०१ मुख नाड़ी हैं, तिन नाड़ियों में से हरएक नाड़ी से सौ सौ नाड़ी निकली हैं, इसलिये एकसौ एकको सौके साथ गुणा करने से दशहजार एकसौ १०१०० नाड़ी हुईं, फिर तिन एकहजार एकसौ नाड़ियों में से हरएक नाड़ी में से ७२००० बहत्तर बहत्तर हजार नाड़ी निकली हैं, तिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहत्तर हजार को दशहजार एकसौ के साथ गुणा करने से ७२७२००००० बहत्तरकरोड़ बहत्तरलाख नाड़ीहुई, तिन में १०१ और १०१०० जोड़ने से कुल ७२७२१०२०१ नाड़ी हुई ॥

भावार्थ ॥

हृदीति ॥ अब नाडियोंके उत्पत्तिके स्थानको कहते हैं ॥ हृदि॥ हृदय कमल में यह जीवआत्मा प्राण रहता है इसी हृदयदेश से एकसौ एक १०१ प्रधान नाड़ियें निकसी हैं, उन एकसौ एक नाड़ियों में से हरएक नाड़ी से एक २ सौ नाडियों की शाखायें निकसी हैं, और सब नाड़ी शाखाओं की संख्या एक ऊपर दश हजार होती है, इन नाड़ियों में से हरएक नाड़ी से बहत्तरहजार ७२००० नाड़ियें निकसी हैं, यदि एकसौ ऊपर दशहजार १०१०० नाड़ियों को बहत्तरहजार ७२००० से जो गुणा किया जाय तब बहत्तरकरोड़ और बहत्तरलक्ष सब नाड़ी हुई ७२७२००००० होती हैं इन में यदि १०१ प्रधान नाड़ी और १०१०० शाखा नाड़ी जोड़ी जायँ तो ७२७२१०२०१ होती हैं कोई आचर्य्य ऐसा कहते हैं कि एकही नाड़ी सब नाड़ियों का मूलभूत सुषुम्ना नामवाली नाड़ी हृदय से निकसी है, और उसी से शाखावत् दश नाड़ियें निकसी हैं उन दश नाड़ियों में से हर एक नाड़ी से नव नव ९० नाड़ियें निकसी हैं, और दश शाखा वाली नाड़ी को उनकी नब्बे प्रति शाखा नाड़ियों के साथ मिला देने से एकसौ नाड़ी होती हैं, और इन एकसौ नाड़ियों में से हर एक नाड़ी से एक २ सौ नाड़ी और निकसी हैं, तब इनका सब जोड़ दशहजार एकसौ एक नाड़ी हुई, फिर उन्हीं के मध्य में से हर एक नाड़ी से बहत्तर २ हजार नाड़ी निकसी हैं अगर उनको दश हजार के साथ गुणा कियाजाय तब बहत्तरकरोड़ नाड़ी होती हैं, इनके साथ दशहजार एकसौ एक नाड़ी के मिलाने से सब बहत्तरकरोड़ दशहजार एकसौ एक नाड़ी होती हैं ७२००१०१०१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्हीं सूक्ष्म नाड़ियों में प्राण व्यान वायु होकर गमन करता है इन्हीं सूक्ष्म नाड़ियोंमें व्याप्त होकर सब शरीरके सूक्ष्म व स्थूल अवयवों में घूमता है ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

अथैकयोर्ध्व उदानःपुण्येन पुण्यं लोकं नयति पापेन पापमुभाभ्यामेव मनुष्यलोकम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ एकया ऊर्ध्वः उदानः पुण्येन पुण्यम् लोकम् नयति पापेन पापम् उभाभ्याम् एव मनुष्यलोकम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथ	= अब पिप्पलाद मुनिकहते हैं कि	+च	= और
एकया	= एक सुषुम्णा नाड़ीद्वारा	पापेन	= पापकर्म से
ऊर्ध्वः	= ऊर्ध्वको उत्क्रान्तहुवा	पापम्	= नरकादिलोकको
उदानः	= उदानवायु	+च	= और
+देहिनम्	=जीवको	उभाभ्याम्	= पुण्य पाप मिश्रितकर्म से
पुण्येन	= पुण्यकर्म से	मनुष्य लोकम्	= मनुष्यलोक को
पुण्यम् लोकम्	=पुण्यलोक को	एव	= निश्चय करके
		नयति	= प्राप्त करता है

भावार्थ ॥

अथेति ॥ अब उदान वायु के स्थान और उसके उत्क्रमण को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहतेहैं ॥ अथेति ॥ यद्यपि उदान वायु सब नाड़ियों में विचरता है, तथापि एक सुषुम्णा नाड़ी के मार्गसेही ऊर्ध्वलोकों में शरीर छूटते समय लिंगशरीर संयुक्त जीवको लेकरके जाता है, पुण्य-कर्मोंवाले को पवित्र देवादि योनियों में प्राप्त करता है, और पापकर्म्मोंवाले को पापयोनियों में याने पशु या नरकादिकों में लेजाकर प्राप्त करता है, और मिश्रित कर्म्म के करनेवालों को मनुष्य योनि को प्राप्त करता है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

आदित्योहवैबाह्यः प्राणउदयत्येष ह्येनं चाक्षुषं प्राणमनुगृह्णानः पृथिव्यां या देवता सैषा पुरुषस्यापानमवष्टभ्यान्तरा यदाकाशः स समानो वायुर्व्यानः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

आदित्यः ह वै बाह्यः प्राणः उदयति एषः हि एनम् चाक्षुषम् प्राणम् अनुगृह्णानः पृथिव्याम् या देवता सा एषा पुरुषस्य अपानम् अवष्टभ्य अन्तरा यत् आकाशः सः समानः वायुः व्यानः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+यः	= जो	एनम्	= इस
हवै	= प्रसिद्ध	चाक्षुषम्	= चक्षु विषे स्थित
आदित्यः	= सूर्य	प्राणम्	= प्राणको
हि	= निश्चयकरके		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एषा = यह
पुरुषस्य = पुरुष के
अपानम् = अपानवायु को नीचे के तर्फ
अवष्टभ्य = आकर्षण करके
+ स्थिता = स्थितहै
+ च = और
यत् = जो
अन्तरा = मध्य बिषे
आकाशः = आकाशरूप
समानः = समान
वायुः = वायुहै
सः = सोई
व्यानः = व्यान वायु पर अनुग्रह करता हुआ स्थितहै

अनुगृह्णानः = अनुगृहीत करताहुआ अर्थात् रूप के ग्रहण करनेमें समर्थ करताहुआ
उदयति = उदयको प्राप्तहोताहै
+ सः = सोई
एषः = यह
बाह्यः = बाह्य
प्राणः = प्राणहै
+ तथा = तैसेही
पृथिव्याम् = पृथिवी बिषे अभिमानी
या = जो
देवता = अग्निरूप प्राणहै
सा = सोई

नोट-जो सूर्यरूप समष्टि प्राणवायुहै सोई व्यष्टिरूप प्राणवायु होकर प्राणियोंके चक्षुबिषे स्थितहै,जो अग्निरूप समष्टि प्राणवायु पृथिवी बिषे स्थितहै,सोईव्यष्टिरूप अपानवायु होकर प्राणियोंके नीचे के भाग बिषे स्थित है,जो समष्टि प्राणवायु अन्तरिक्षलोक बिषे याने स्वर्ग और पृथिवी के मध्यभाग बिषे जो आकाश है तिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिषे जो समष्टि प्राणवायु स्थितहै सोई व्यष्टिरूप समानवायु हाकर प्राणियोंके मध्यभाग बिषे स्थितहै, और जो समष्टि प्राणवायु बाहर ब्रह्मलोक से लेकर पाताललोक पर्यन्त व्याप्त है सोई व्यष्टिरूप व्यानवायु होकर सम्पूर्ण प्राणियों के अन्तर नख शिख पर्यन्त स्थित है,इसीलिये समष्टि प्राणवायु के सहायता विना व्यष्टि प्राण वायु जो प्राणियों के शरीर बिषे स्थितहै नहीं रहसक्ताहै ॥

भावार्थ ॥

आदित्य इति ॥ सूर्य्यमण्डल अभिमानी जो पुरुषरूपी बाह्य मुख्य प्राणहै वह उदय होताहुआ जीवोंके चक्षु बिषे जो प्राणहै उसपर अपने प्रकाश से अनुग्रह करताहुआ उन चक्षुवोंको रूप के ग्रहण करनेमें सामर्थ्य करताहै,और पृथिवी अभिमानी जो प्राण देवता है वह पुरुषों के स्थूलशरीर के अपान वायुको अपनीतरफ खैंचताहै और उसपर अनुग्रहकरताहै और इसी कारण यह शरीर स्थित रहता है,यदि वह पृथिवी में रहनेवाला प्राणवायु जीवों के अपानवायु पर अनुग्रह न करै तो शरीर भारी होकर गिरपड़ै यानेरुकावटके कारण ऊर्ध्व को प्राणवायु के बल से उड़जाय सूर्य व पृथ्वी के बीच में जो आकाश है उसमें जो प्राण वायु स्थित है वह जीवों के शरीरों के मध्यबिषे समान वायु की सहायता करता है और जो बाहर की प्रसिद्ध प्राणवायुहै सोई जीवों के व्यानवायु की सहायता करताहै तात्पर्य्य इसका यहहै कि यदि बाह्य प्राण वायु जीवों के अभ्यन्तरी प्राणवायु की सहायता न करै तो उनके शरीर स्थित नहीं रहसक्तेहैं ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

तेजोहवैउदानस्तस्मादुपशान्ततेजाः पुनर्भव मिन्द्रियैर्मनसिसंपद्यमानैः ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

तेजः ह वै उदानः तस्मात् उपशान्ततेजाः पुनर्भवम् इन्द्रियैः मनसि सम्पद्यमानैः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
ह वै =	निश्चयकरके उत्क्रान्तिधर्मवाला	मनसि =	मनकी भावना बिषे
उदानः =	उदानवायु	सम्पद्य मानैः =	प्रवेश करते हुये
तेजः =	तेजस्वरूपहै	इन्द्रियैः =	इन्द्रियों के संग
तस्मात् =	इसलिये	पुनर्भवम् =	शरीरान्तरको प्राप्तहोताहै
+तस्य +उत्क्रान्तौ =	उसके निकलने पर		
उपशान्त तेजाः =	मरण निकट को प्राप्तहुवा पुरुष याने जीव		

भावार्थ ॥

तेजोहवै इति ॥ दाह और प्रकाशको करनेवाली जो प्रसिद्ध तेजरूपी समष्टि बाह्यवायु है याने सबपदार्थों को वंश देनेवाली जो वायुहै वह जीवों के व्यष्टि उदानवायु पर अनुग्रह करताहै और इसी कारण वे तेजस्वी प्रतीत होतेहैं याने जीते रहतेहैं, जब पुरुष के शरीर में तेज उच्छिन्न होजाता है, तब वह इस शरीरको त्याग करके शरीरान्तर को प्राप्त होताहै, शरीर के त्यागकाल में प्रथम इन्द्रियगण अन्तःकरणमें प्रवेश करजातीहैं तत्पश्चात् जीव, इन्द्रियों और मनआदिकों के सहित शरीरान्तरको प्राप्त होजाताहै ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाहाजन मंदिर

॥ मूलम् ॥

यच्चित्तस्तेनैषप्राणमायाति प्राणस्तेजसायुक्तः सहात्मनायथासंकल्पितंलोकंनयति ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

यच्चित्तः तेन एषः प्राणम् आयाति प्राणः तेजसा युक्तः सह आत्मना यथा सङ्कल्पितम् लोकम् नयति ॥ १० ॥

अन्वयः	= पदार्थ	अन्वयः	= पदार्थ
यच्चित्तः	= मरण समय पुरुषका जैसा चित्त होता है	तेजसा	= उदान वायुसे
		युक्तः	= युक्तहोताहुवा
तेन	= उस चित्त करके	आत्मना सह	= अपने साथ
		+जीवम्	= जीवको
एषः	= यह जीव	यथासंकल्पितम्	= उसके संकल्प के अनुसार
प्राणम्	= प्राणको		
आयाति	= प्राप्त होता है	लोकम्	= योनि को
+ च	= और	नयति	= प्राप्तकरताहै
प्राणः	= प्राण		

भावार्थ ॥

यच्चित्तइति ॥ कर्मों के अनुसार मरणकाल में इस जीव का चित्त जिस २ देवता मनुष्य पशु आदिक योनियों की ओर जाताहै, उसी २ योनिमें वह अभिमानी जीव सहित इन्द्रिय देवताओं के और मनआदि अन्तःकरण के जाकर उत्पन्न होताहै, मरणकाल में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुखप्राण तेजरूपी उदानवायु से संयुक्त होकर भोक्ता जीव को उसके कर्मजन्य संकल्प के अनुसार कर्म्मफल भोगाने को लोकलोकान्तर देहदेहान्तर में लेजाता है ॥ १० ॥

मूलम् ॥

यएवंविद्वान् प्राणंवेदनहास्य प्रजाहीयतेऽमृतो भवतितदेषश्लोकः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

यः एवम् विद्वान् प्राणम् वेद न ह अस्य प्रजा हीयते अमृतः भवति तत् एषः श्लोकः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो	न	= नहीं
एवम्	= इसप्रकार	हीयते	= हीनहोतीहै
विद्वान्	= बुद्धिमान्पुरुष	+ च	= और
प्राणम्	= प्राणको	+ सः	= वह
वेद	= जानताहै	अमृतः	= अमर
अस्य	= उसप्राणउपासककी	भवति	= होता है
प्रजा	= संतति	तत्	= इसबिषे
ह	= इसलोक बिषे	एषः	= यहआगेवाला
		श्लोकः	= मंत्र प्रमाण है

भावार्थ ॥

यइति ॥ प्राण के स्वरूप को कथन करके अब प्राणकी उपासना को कथन करते हैं ॥ यइति ॥ जो विद्वान्पुरुष पूर्वोक्त प्रकार करके प्राणोंको जानता है तिस प्राणोपासक विद्वान् की सन्तति कदापि नष्ट नहीं होती है और शरीर के पात होनेपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह अमरभाव को प्राप्त होताहै, इसी अर्थको आगेवाला मन्त्र भी कहता है ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

उत्पत्तिमायतिं स्थानं विभुत्वं चैव पञ्चधा अध्यात्मं चैव प्राणस्य विज्ञायामृतमश्नुते विज्ञाया मृतमश्नुत इति १२ प्रश्नः ३ ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ॥

उत्पत्तिम् आयतिम् स्थानम् विभुत्वम् च एव पञ्चधा अध्यात्मम् च एव प्राणस्य विज्ञाय अमृतम् अश्नुते विज्ञाय अमृतम् अश्नुते इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
इति	= ऐसा
+ प्राणोपासकः	= प्राणका उपासक
प्राणस्य	= प्राणके
उत्पत्तिम्	= उत्पत्तिको
+ च	= और
आयतिम्	= शरीरबिषेउसकेआगमनको
+ च	= और
स्थानम्	= शरीरबिषेउसकेस्थानको
+ च	= और
पञ्चधा	= उसकेपांच प्रकारके
विभुत्वंएव	= व्यापकत्वको
च	= और
अध्यात्मम्	= अध्यात्मको
एव	= भी
विज्ञाय	= भलीप्रकार जानके
अमृतम्	= मोक्षको
अश्नुते	= प्राप्तहोता है
विज्ञाय	= भलीप्रकार जानके
अमृतम्	= मोक्षको
अश्नुते	= प्राप्तहोताहै

इति तृतीयःप्रश्नः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

उत्पत्तिमिति ॥ मुख्यप्राण की परमात्मा से उत्पत्ति है और मनकरके कियेगये जो कर्मों के धर्माऽधर्मरूपी संस्कार हैं उन्हीं के प्रेरणा करके प्राण शरीर में प्रवेश करता है, और अपने को पांच विभाग करके स्थित होताहै, जो प्राण सूर्यादिलोकों में और आकाशादि पञ्चमहाभूतों में स्थित है, वह राजाकी तरह है वह अपनी प्रजारूपी जीवसंयुक्त प्राणोंपर अनुग्रह करता है, और तबही जीव कार्यके करनेमें समर्थ होताहै, जो कुछ विद्यमानहै, सब प्राणोंकीही विभूति है, इसी से इसको अध्यात्म भी कहते हैं जो पुरुष पूर्वोक्त प्रकार करके प्राणों को जानता है, वह हिरण्यगर्भ की सायुज्यतारूपी मोक्षको प्राप्त होताहै, अर्थात् आत्मानन्द को प्राप्त होकर आवागमन से रहित होजाताहै ॥ १२ ॥

इति तृतीयः प्रश्नः ॥

मूलम् ॥

अथ हैनं सौर्य्यायणो गार्ग्यः पप्रच्छ भगवन्नेतस्मिन्पुरुषे कानि स्वपन्ति कान्यस्मिन् जाग्रति कतर एष देवः स्वप्नान्पश्यति कस्यैतत् सुखंभवति कस्मिन्नु सर्वे संप्रतिष्ठिताभवन्तीति ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ ह एनम् सौर्यायणः गार्ग्यः पप्रच्छ भगवन् एतस्मिन् पुरुषे कानि स्वपन्ति कानि अस्मिन् जाग्रति कतरः एषः देवः स्वप्नान् पश्यति कस्य एतत् सुखम् भवति कस्मिन् नु सर्वे सम्प्रतिष्ठिताः भवन्ति इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः पदार्थ

अथ = तृतीय प्रश्नके पश्चात्

ह = प्रसिद्ध

एनम् = पिप्पलाद मुनि से

गार्ग्यः = गर्ग का पुत्र

सौर्यायणिः = सौर्यायणिनामकऋषि

इति = ऐसा

पप्रच्छ = प्रश्न करता भया कि

भगवन् = हे भगवन्

एतस्मिन् = इस

पुरुषे = पुरुष बिषे

कानि = कौनइन्द्रियां

स्वपन्ति = सोतीहैं अर्थात् स्वकार्य से रहित हो विश्राम करती हैं

अन्वयः पदार्थ

च = और

अस्मिन् = इस सुप्तपुरुष बिषे

कानि = कौनसी इन्द्रियां

जाग्रति = जागती हैं याने व्यापारको करती हैं

कतरः = कौन

एषः = यह

देवः = देव

स्वप्नान् = स्वप्नों को अर्थात् स्वप्नावस्था बिषे जाग्रत्वत् स्वप्न के व्यापारों को

पश्यति = देखता है

कस्य = किसपुरुषको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एतत्	= इस सुषुप्ति अवस्थाबिषे प्रसिद्ध	सम्प्रतिष्ठिताः	= जाग्रत् और स्वप्नअवस्था से विलक्षण आनंदितव्या पाररहितहो आनंद से
सुखम्	= सुख		
भवति	= होताहै		
नु	= और		
कस्मिन्	= किस बिषे	भवन्ति	= प्रवेश करती हैं
सर्वे	= सब इन्द्रियां		

भावार्थ ॥

अथेति ॥ कौशल्यनामक ऋषिके प्रश्नके अनन्तर सौर्य्याणि गार्ग्यगोत्रवंशी पिप्पलाद मुनिसे पूंछता भया ॥ हे भगवन्! इस हाथ पांववाले शरीर में कौन २ इन्द्रियां शयन करती हैं अर्थात् स्वकार्य से रहित होकर विश्राम करती हैं और कौन इन्द्रियां इसशरीरमें जागती हैं अर्थात् जाग्रत् अवस्थामें अपने व्यापारको करती हैं और इस कार्य कारणरूपी संघात में कौनदेव अहंपश्यामि अहंशृणोमि मैं देखताहूं, मैं सुनताहूं ऐसा अनुभवकरताहै, और यही स्वप्नके गजरथादिकों कौन रचता है व देखता है और जाग्रत् व स्वप्न के उपरत होजाने पर कौन देव सुषुप्ति के सुख को भोग करता है और फिर किस देवता बिषे सम्पूर्ण प्राण इन्द्रियादि एकता को प्राप्त होकर लीन होजाती हैं ॥ १ ॥

मूलम् ॥

तस्मै सहोवाच यथा गार्ग्यमरीचयोऽर्कस्यास्तङ्गच्छतःसर्वा एतस्मिंस्तेजोमण्डलएकीभवन्ति ताः पुनःपुनरुदयतः प्रचरन्त्येवं ह वैतत्सर्वम्परेदेवे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनस्येकीभवन्ति तेन तर्ह्येषपुरुषो न शृणोति न पश्यति न जिघ्रति न रसयते न स्पृशते नाभिवदते नादत्ते नानन्दयते न विसृज्यते नेयायते स्वपितीत्याचक्षते ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच यथा गार्ग्यमरीचयः अर्कस्य अस्तम् गच्छतः सर्वाः एतस्मिन् तेजोमण्डले एकीभवन्ति ताः पुनः पुनः उदयतः प्रचरन्ति एवम् ह वा एतत् सर्वम् परे देवे मनसि एकीभवन्ति तेन तर्हि एषः पुरुषः न शृणोति न पश्यति न जिघ्रति न रसयते न स्पृशते न अभिवदते न आदत्ते न आनन्दयते न विसृज्यते न इयायते स्वपिति इति आचक्षते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तस्मै	= तिसगार्ग्य के प्रति	अस्तम्	= अस्त को
सः	= वह पिप्पलादमुनि	गच्छतः	= प्राप्तहोतेहुये
ह	= निश्चय करके	अर्कस्य	= सूर्य के
उवाच	= कहतेभयेकि	सर्वाः	= सब
गार्ग्य	= हे गार्ग्य	मरीचयः	= किरण
यथा	= जैसे	एतस्मिन्	= उससूर्यरूप
		तेजोमंडले	= तेजोमंडल विषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकीभवन्ति = एकताकोप्रा-
प्त होजातेहैं
च = और
उदयतः = उदय होते
हुये सूर्य के
ताः = वे किरण
पुनःपुनः = फिर
प्रचरन्ति = फैलजाते हैं
एवमेव = ऐसेही
यदा = जब
एतत् = यह
सर्वम् = सबविषयइन्द्रियां
परेदेवे = चक्षुरादि देवों
का परमदेव
मनसि = मन बिषे
एकीभवन्ति = एकताकोप्रा-
प्त होजातीहैं
तर्हि = तब
तेन = तिसकारण
एषः = यह
पुरुषः = पुरुष
न शृणोति = न सुनताहै
नपश्यति = न देखताहै
न जिघ्रति = न सूंघता है
न रसयते = न रसलेताहै
न स्पृशते = न स्पर्श कर-
ता है
न अभिवदते = न बोलताहै
नआदत्ते = नग्रहणकर-
ताहै
न आनन्दयते-न आनंदित
होता है
नविसृजते = न मलमूत्रको
त्यागता है
न इयायते = न गमन कर-
ता है
+परन्तु = परंतु
स्वपितिइति = सोताहैऐसा
आचक्षते = कहते हैं
लोक बिषे

भावार्थ ॥

तस्माइति ॥ पिप्पलाद आचार्य कहते हैं कि स्वप्नावस्था में मन और प्राणोंसे भिन्न जितने इन्द्रिय हैं, वे सब सोजातेहैं और इसी बात के पुष्टके लिये दृष्टान्त को दिखाते हैं, हे गार्ग्य ! जैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सायङ्काल समय जब सूर्य्य अस्तभावको प्राप्त होताहै, तब सूर्य्य की सम्पूर्ण किरणें उसी तेजोरूप सूर्य्यमण्डलमें प्रवेश करजाती हैं, फिर दूसरे दिन जब सूर्य्यउदय होता है, तब फिर सूर्य्यकी सम्पूर्ण किरणें चारों दिशोंमें फैलजाती हैं, इसी प्रकार सम्पूर्ण वागादिक इन्द्रियां भी मनमें जो सब व्यवहारों का साधक है स्वप्नकाल विषे लयको प्राप्त होजाती हैं और फिर जाग्रत्काल में उठकर मनदेव की प्रेरणाकरके स्वकार्य करने लगती हैं, जब इन्द्रियां मन विषे लीन रहती हैं, तब यह जीव न सुनता है, न देखता है, न सूंघता है, न रस लेताहै, न स्पर्श करता है, न बोलता है,न ग्रहण करता है, न त्यागता है, न गमन करता है, न सुख भोगता है, और न मल मूत्रका विसर्जन करता है, और विद्वान्लोग कहतेहैं कि अब यह पुरुष शयन करताहै॥ २॥

मूलम् ॥

प्राणाग्नयएवैतस्मिन्पुरेजाग्रति गार्हपत्योहवा एषोऽपानोव्यानोऽन्वाहार्य्यपचनो यद्गार्हपत्यात्प्रणीयते प्रणयनादाहवनीयःप्राणः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

प्राणाग्नयः एव एतस्मिन् पुरे जाग्रति गार्हपत्यः ह वा एषः अपानः व्यानः अन्वाहार्यपचनः यत् गार्हपत्यात् प्रणीयते प्रणयनात् आहवनीयः प्राणः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
एतस्मिन्	= इस नवद्वार वाले
पुरे	= देहबिषेचक्षुरादिकरणके सुषुप्ति समय
प्राणाग्नयः	= प्राणादिपांच वायुअग्निरूप
एव	= ही
जाग्रति	= जागतेरहते हैं
हवा	= उनपांचों बिषे
एषः	= प्रसिद्ध यह
अपानः	= अपान वायु
गार्हपत्यः	= गार्हपत्याग्नि है
+ च	= और

अन्वयः	पदार्थ
व्यानः	= व्यान वायु
अन्वाहार्यपचनः	= दक्षिणाग्नि नामा अग्निहै
यत्	= जो अग्नि
प्रणयनात्	= प्रणयनयोग्य याने लेआने योग्य
गार्हपत्यात्	= गार्हपत्यअग्निसे
प्रणीयते	= लायाजाताहै
सः	= वह
प्राणः	= प्राण
आहवनीयः	= आहवनीय नामकअग्नि है

नोट-गार्हपत्याग्नि-दक्षिणाग्नि-आहवनीयाग्नि-येतीनप्रकारके अग्नि यज्ञ आदिबिषे प्रसिद्ध हैं गार्हपत्याग्नि यजमानके वाम कुण्डका अग्नि है (१) और दक्षिणाग्नि यजमान के दहने कुण्डका अग्नि है (२) और आहवनीयाग्नि वहअग्नि है(३) जो गार्हपत्यअग्नि से निकालकर मध्य अग्निकुण्ड बिषे स्थापन कियाजाता है ॥

भावार्थ ॥

प्राणाग्नयइति ॥ सुषुप्तिकालमें इस नवद्वारवाले देह बिषे जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राण, अपान, उदान, व्यान, समानरूपी पांच अग्निहैं वेईजागते हैं अपानवायु मलमूत्रको नीचेकी तरफ़ फेंकता है इसलिये यह गार्हपत्य अग्नि स्थानापन्न है व्यानवायु भोजनादि को पचाताहै इसलिये वह अन्वाहार्य्य पचनरूप अग्निहै, अर्थात् दक्षिणाग्नि है जैसे दक्षिणाग्नि हवन करने के कुण्ड में दक्षिण ओर स्थित होतीहै तैसे व्यानवायुभी हृदय के पांच छिद्रोंमें से दक्षिण वाले छिद्रमें स्थित है और इसी कारण व्यानको दक्षिणाग्नि कहा है और जैसे अग्निहोत्री के हवनकुण्ड में निरन्तर स्थित जो कि गार्हपत्याग्निहै उस अग्नि से अलग अग्नि निकल करके होम के लिये आहवनीय अग्नि होमके कुण्ड में रक्खाजाता है तैसेही हृदय छिद्र में स्थित जो अपानवायु है, उसी से निकस करके प्राणवायु बाहर भीतर नासिकाआदिद्वार से आताजाताहै, यही आहवनीय स्थानापन्न अग्निहै, यह मुखअग्निहै, पूर्वमन्त्रमें अपान व्यान समान और प्राणके साथ गार्हपत्याग्नि दक्षिणापत्यअग्नि, आहवनीयअग्निको विधान कियाहै अब इसमन्त्रमें समान वायुको होतृत्वदृष्टि से विधान करते हैं ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

यदुच्छ्वासनिःश्वासावेतावाहुती समं नयतीति स समानः मनो ह वाव यजमान इष्टफलमेवोदानः सएनंयजमानमहरहर्ब्रह्मगमयति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

यत् उच्छ्वासनिःश्वासौ एतौ आहुती समम् नयति इति सः समानः मनः ह वाव यजमानः इष्टफलम् एव उदानः सः एनम् यजमानम् अहरहः ब्रह्म गमयति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो
एतौ	= इन प्रसिद्ध
उच्छ्वास निश्वासौ	= ऊर्ध्वश्वास अधःश्वास रूप
आहुती	= आहुतियों को
इति	= इसप्रकार
समम्	= समानताको
नयति	= प्राप्त करता है
सःसमानः	= सो समान वायु है
ह वाव	= इसअग्निहोत्र कुंडरूपी शरीरबिषे
मनः	= मन
यजमानः	= यज्ञका कर्ता है
उदानः	= उदानवायु
एव	= ही
तस्य	= उसका
दृष्टफलम्	= इच्छितफल है
सः	= सो उदान-वायु
एनम्	= इसमनरूपी
यजमानम्	= यजमान को
अहरहः	= प्रतिदिनसु-षुप्तिकालबिषे
ब्रह्म	= ब्रह्मको
गमयति	= प्राप्तकरताहै

भावार्थ ॥

यदुच्छ्वासेति ॥ जैसे होता अर्थात् हवन का करनेवाला प्रातः काल और सायंकाल दो आहुती को अग्नि में प्रक्षेप करता है याने डालता है, तैसेही मुख और नासिका दो अग्निकुण्ड हैं, इनमें श्वासों का आना जाना मानो दो आहुती हैं, इन्हीं को उन हवन कुण्डों में समान वायु आहुती देताहै, इसलिये होता उपासक अपनी दृष्टि को इनमेंही लगाये रक्खै, और इस अग्नि-होत्ररूपी यज्ञ का करनेवाला यजमान मन है, और इस यज्ञका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इष्टफल उदान वायु है क्योंकि मरणकालमें उदानही स्वर्गरूपी फल मनसंघ जीवको प्राप्त करता है और सुषुम्णानाडी द्वारा स्वर्गको लेजाता है और आनंद को प्राप्तकरता है और जबतक मनरूपी यजमान इसशरीरमें रहताहै, तबतक उदान वायु उसको प्रतिदिन सुषुप्तिकाल में आनन्दरूप ब्रह्म को प्राप्त करता है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

अत्रैषदेवःस्वप्नेमहिमानमनुभवति यद्दृष्टंदृष्टमनुपश्यति श्रुतंश्रुतमेवार्थमनुशृणोतिदेशदिगन्तरैश्चप्रत्यनुभूतं पुनःपुनःप्रत्यनुभवति दृष्टंचादृष्टं च श्रुतंचाश्रुतंचानुभूतंचाननुभूतंच सच्चासच्चसर्वं पश्यति सर्वःपश्यति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

अत्र एषः देवः स्वप्ने महिमानम् अनुभवति यत् दृष्टम् दृष्टम् अनुपश्यति श्रुतम् श्रुतम् एव अर्थम् अनुशृणोति देशदिगन्तरैः च प्रत्यनुभूतम् पुनः पुनः प्रत्यनुभवति दृष्टम् च अदृष्टम् च श्रुतम् च अश्रुतम् च अनुभूतम् च अननुभूतम् च सत् च असत् च सर्वम् पश्यति सर्वः पश्यति ॥ ५ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अत्र =	सुषुप्तिअवस्था से प्रथम	एषः =	यह
स्वप्ने =	स्वप्नअवस्था बिषे	देवः =	मनरूपी देव
		महि मानम् =	विभूतिकोअर्थात्विषयरूपीअ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेक भावों को
अनुभवति = अनुभव करता है
च = और
यत् = जिस पुत्र मित्र आदिकों को
दृष्टंदृष्टम् = पुनःपुनःदेखाहै उसीको
अनुभवति = देखता है
श्रुतम् श्रुतम् = पुनःपुनःश्रवण कियेहुये
एव = ही
अर्थम् = अर्थको
अनुशृणोति = फिर श्रवणकरता है
च = और
देशादिगन्तरैः = देशांतरऔरदिगंतरों के सहित
प्रत्यनुभूतम् = वहांवहांअनुभवकियेवस्तुको
पुनःपुनः = फिर फिर
प्रत्यनुभवति = अनुभव करता है

च = और
दृष्टम् = इस जन्म में देखेहुये को
च = और
अदृष्टम् = जन्मान्तरबिषे देखेहुये को
च = और
श्रुतम् = इस जन्म बिषे सुनेहुये को
च = और
अश्रुतम् = जन्मान्तर बिषे सुनेहुयेको
च = और
अनुभूतम् = अनुभवकिये हुये को
च = और
अननुभूतम् = न अनुभवकिये हुये
सर्वम् = सबको
पश्यति = देखताहै
एवम् = इसप्रकार
सर्वः = सबइन्द्रियों का स्वामी मन
पश्यति = स्वप्नोंकोदेखताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अत्रेति॥ यह जो प्रश्न था कि कौन देवता स्वप्न को देखता है अब उसके उत्तर को कहते हैं ॥ अत्रेति ॥ इस स्वप्नावस्था में वागादि इन्द्रियों की उत्पत्ति और लय का आश्रय भूत जो कि मनहै सो चेतनकरके प्रतिबिंबितहुवा २ अपनी महिमाको आपही अनुभव करताहै, अर्थात् स्वप्नमें हाथी घोड़े आदिकों को आपही मन रचता है, और आपही उन को अनुभव करताहै,इसीकारण स्वप्न मनकाही धर्म है, आत्माका धर्म नहीं है, हां आत्माके साथ मनका अध्यास होनेसे वह आत्मा याने मनसेही प्रतीत होताहै,जो कुछ जाग्रत्कालमें मन ने देखा है, उसी को फिर स्वप्न में देखता है, जो कुछ जाग्रत् में सुनाहै, उसी को फिर सुनता है जो कुछ देशदेशांतर में देखा या सुना है, या अनुभव कियाहै या नहीं देखा सुना या अनुभवकियाहै उसीको स्वप्न में वारंवार अनुभव करताहै, और जो इस वर्त्तमान जन्ममें देखाहै या जो पूर्व जन्मों में देखाहै, और जो कुछ इसजन्ममें या पूर्व जन्ममें सुनाहै, और स्थूल सूक्ष्म पदार्थों को अनुभव किया है, उन सब को स्वप्न में देखताहै प्र० ॥ जो पदार्थ जाग्रत् में देखे थे वे तो यहां प्रथमरहे नहीं और जो पदार्थ कि पूर्व जन्ममें देखे थे वे सब नष्ट होगये, तब फिर स्वप्न में मन उनको कैसे देख सक्ता है ॥ उ० ॥ जाग्रत् अवस्थामें पुरुष जिस २ पदार्थ को देखता है, उस उस पदार्थ के संस्कार मनमें बैठ जाते हैं, और जन्मान्तरों में जो पदार्थ देखे थे उनके भी संस्कार मनमें बैठे हैं वे संस्कार अनन्त हैं, स्वप्नावस्था में निद्राके बल से वे संस्कार उद्बुद होआते हैं, और पूर्वले देखे सुने हुये पदार्थों का स्मरण कराही देते हैं, मन उनको नई तरह से रचकर फिर उनकोही देखता और उनकेसाथ क्रीड़ाकरताहै ५॥

मूलम् ॥

स यदातेजसाऽभिभूतोभवति अत्रैषदेवः स्वप्नान्न पश्यत्यथतदैतस्मिञ्छरीरे एतत्सुखंभवति ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

स यदा तेजसा अभिभूतः भवति अत्र एषः देवः स्वप्नान् न पश्यति अथ तदा एतस्मिन् शरीरे एतत् सुखम् भवति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यदा	= जबसुषुप्तिकाल बिषे	स्वप्नान्	= स्वप्नोंको
		न	= नहीं
सः	= वहमनरूपीदेव	पश्यति	= देखता है
तेजसा	= तेजसे	अथ तदा	= और तबही
अभिभूतः	= तिरस्कृतअर्थात्वासना तिरोभाव	एतस्मिन्	= इस
		शरीरे	= शरीर बिषे
		एतत्	= यह सुषुप्ति
भवति	= होताहै	सुखम्	= आनन्द
अत्र	= तब	तस्यमनसः	= उस मनको
एषः	= यह	भवति	= होताहै
देवः	= मनरूपी देव		

भावार्थ ॥

सयदेति ॥ किसको यह सुख होताहै ऐसा जो ऋषि ने प्रश्न किया था उसके उत्तर को कहतेहैं ॥ सयदेति ॥ जिस काल में यह मनरूपी देवता तेज करके याने नाड़ीगत पित्त करके तिरस्कृत होजाता है और वासनों के उद्भूत करनेवाले कर्म सब उपरम होजाते हैं तब सम्पूर्ण कर्मों के उपरमरूपी सुषुप्ति में यह मन देववासनामय स्वप्न के पदार्थों को नहीं देखता है किन्तु ब्रह्मानन्द सुखको प्राप्त होताहै इस कहने से यह सिद्ध होता है कि सुषुप्ति में भी सूक्ष्मरूप करके मन रहता है ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

सयथासौम्यवयांसि वासोवृक्षंसंप्रतिष्ठन्तेएवंह वैतत्सर्वंपरआत्मनिसंप्रतिष्ठते ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

सः यथा सौम्य वयांसि वासोवृक्षम् सम्प्रतिष्ठन्ते एवम् ह वा एतत् सर्वम् परे आत्मनि सम्प्रतिष्ठते ७ ॥

अन्वयः	पदार्थ
सौम्य	हे सौम्य हे गार्ग्य
सः	सो दृष्टांत ऐसा है कि
यथा	जैसे
वयांसि	पक्षी
वासोवृक्षम्	सायंकाल बिषे निवास वृक्षपर
सम्प्रतिष्ठन्ते	अन्य कार्य्य को त्यागके प्रस्थान करते हैं
एवम्हवा	ऐसेही अगले मंत्रबिषे कहाहुआ
हवा	निश्चय करके
एतत्	यह
सर्वम्	पृथिवी आदि सब
परे	परम
आत्मनि	आत्माबिषे
सम्प्रतिष्ठन्ते	प्रस्थान करते हैं याने लीन होतेहैं

भावार्थ ॥

सयथेति ॥ यह जो प्रश्नथा कि सम्पूर्ण इन्द्रियादिक किसके आश्रित स्थित हैं इसके उत्तर को अब कहते हैं ॥ सयथेति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे सौम्य! जिसप्रकार पक्षी दिन बिषे चारों दिशामें भ्रमण करते रहतेहैं और सायंकाल समय निवास के लिये अपने वृक्षपर आजाते हैं, इसीप्रकार यह सम्पूर्ण इन्द्रियगण भी दिनमें अपने २ व्यवहार को करती हैं और रात्री को अपने चैतन्य आत्मारूपी वृक्षपर स्थिति करती हैं ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

पृथिवी च पृथिवीमात्रा चापश्चापोमात्राचतेज श्चतेजोमात्राच वायुश्च वायुमात्राचाकाशश्चा काशमात्राच चक्षुश्च द्रष्टव्यंच श्रोत्रंच श्रोतव्यंच घ्राणंचघ्रातव्यंच रसश्च रसयितव्यंच त्वक्च स्प: र्शयितव्यंच वाक्च वक्तव्यंच हस्तौचादातव्यंचोप स्थश्चानन्दयितव्यंच पायुश्च विसर्जयितव्यंच पादौचगन्तव्यंच मनश्च मन्तव्यंच बुद्धिश्च बोद्ध व्यंचाहंकारश्चाहंकर्त्तव्यंच चित्तंच चेतयितव्यंच तेजश्च विद्योतयितव्यंच प्राणश्च विधारयितव्यं च ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

पृथिवी च पृथिवीमात्रा च आपः च आपो-मात्रा च तेजः च तेजोमात्रा च वायुः च वायु-मात्रा च आकाशः च आकाशमात्रा च चक्षुः च द्रष्टव्यम् च श्रोत्रम् च श्रोतव्यम् च घ्राणम् च घ्रातव्यम् च रसः च रसयितव्यम् च त्वक् च स्पर्शयितव्यम् च वाक् च वक्तव्यम् च हस्तौ च

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदातव्यम् च उपस्थः च आनन्दयितव्यम् च पायुः च विसर्जयितव्यम् च पादौ च गन्तव्यम् च मनः च मन्तव्यम् च बुद्धिः च बोद्धव्यम् च अहंकारः च अहङ्कर्त्तव्यम् च चित्तम् च चेतयितव्यम् च तेजः च विद्योतयितव्यम् च प्राणः च विधारयितव्यम् च ॥ ८ ॥

अन्वयः		पदार्थ
१	पृथिवी	= स्थूल पृथिवी
	च	= और
	पृथिवीमात्रा	= सूक्ष्मपृथिवी
	च	= ऐसेही
२	आपः	= जल
	च	= और
	आपोमात्रा	= सूक्ष्मजल
	च	= ऐसेही
३	तेजः	= तेज
	च	= और
	तेजोमात्रा	= सूक्ष्मतेज
	च	= ऐसेही
४	वायुः	= वायु
	च	= और
	वायुमात्रा	= सूक्ष्मवायु
५	च	= ऐसेही
	आकाशः	= आकाश
	च	= और
	आकाशमात्रा	= सूक्ष्माकाश
	एतानिपंचमहाभूतानि	= येपांचमहाभूतहैं
	च	= ऐसेही
	वाक्	= वाणी
	च	= और
१	वक्तव्यम्	= वाक्इन्द्रियकाविषय
	च	= ऐसेही
२	हस्तौ	= दोनोंहाथ
	च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चक्षुः = नेत्रइन्द्रिय
च = और
१ द्रष्टव्यम् = नेत्रइन्द्रिय का विषय
च = ऐसेही

श्रोत्रम् = श्रवणइन्द्रिय
च = और
२ श्रोतव्यम् = श्रोतइन्द्रिय का विषय
च = ऐसेही

घ्राणम् = नासिका इन्द्रिय
च = और
३ घ्रातव्यम् = घ्राणकाविषय
च = ऐसेही

रसः = रसनाइन्द्रिय
च = और
४ रसयितव्यम् = रसनाइन्द्रिय का विषय
च = ऐसेही

त्वक् = त्वक्इन्द्रिय
च = और
५ स्पर्शयितव्यम् = त्वक्इन्द्रिय का विषय

आदातव्यम् = हाथों का विषय
च = ऐसेही
उपस्थः = उपस्थइन्द्रिय
च = और
३ अनन्दयितव्यम् = उपस्थइन्द्रिय का विषय
च = ऐसेही

पायु = गुदाइन्द्रिय
च = और
४ विसर्जयितव्यम् = गुदाइन्द्रियकाविषय
च = वैसेही

पादौ = दोनों चरण
च = और
५ गन्तव्यम् = चरणइन्द्रियका विषय

+ एतानिपञ्च कर्मेन्द्रियाणि = ये पांचकर्मेन्द्रियां हैं
च = ऐसेही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+एतानि पंचज्ञानेन्द्रियाणि = ये पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं

१ च = ऐसेही
मनः = मन
च = और
मन्तव्यम् = मन इन्द्रिय का विषय

२ च = ऐसेही
बुद्धिः = बुद्धि
च = और
बोद्धव्यम् = बुद्धीन्द्रिय का विषय

३ च = ऐसेही
अहङ्कारः = अहंकार
च = और
अहङ्कर्तव्यम् = अहङ्कारका विषय

४ च = ऐसेही
चित्तम् = चित्त
च = और
चेतयितव्यम् = चित्त का विषय
च = ऐसेही

तेजः = तेज
च = और
विद्योतयितव्यम् = तेजका विषय
च = ऐसेही
प्राणः = प्राण
च = और
विधारयितव्यम् = प्राण सूत्रात्माकरकेधारणकरने योग्यनामरूपात्मकसबजगत्

+एतानिसर्वाणिआत्मनिलीनानिभवन्ति = येसबपिछलेमंत्रमेंकहेहुयेआत्माबिषेलीन होते हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

पृथिवीचेति ॥ स्थूल पृथिवी और इसका कारण गंधतन्मात्रा, स्थूलजल और इसका कारण रसतन्मात्रा, स्थूल अग्नि और इसका कारणरूप तन्मात्रा, स्थूलवायु और इसका कारण स्पर्शतन्मात्रा, स्थूल आकाश और इसकाकारण शब्द तन्मात्रा, चक्षु इन्द्रिय और इसका विषयरूप श्रोत्रेन्द्रिय और इसका विषय शब्द, घ्राणेन्द्रिय और इसका विषय गन्ध, रसनाइन्द्रिय और इसका विषय रस, त्वगिन्द्रिय और इसका विषय स्पर्श, वागिन्द्रिय और इसका विषय वक्तव्य, पाणिइन्द्रिय और इसका विषय आदातव्य (ग्रहणकरना) पादइन्द्रिय और इसका विषय गन्तव्य, उपस्थेन्द्रिय और इसका विषय मैथुन कर्म्म, गुदाइन्द्रिय और इसका विषय मलत्याग कर्म, मन और इस का विषय मन्तव्य, बुद्धि और इसका विषय बोद्धव्य, अहङ्कार और इसका विषय अहंकर्त्तव्य, चित् और इसका विषय स्मरण, तेज और इसका विषय क्रान्ति, प्राण और इसका विषय धारणा शक्ति, ये सब परमात्मा केही आश्रित हैं और उसी में लय होते हैं ८ ॥

मूलम् ॥

एषहि द्रष्टास्प्रष्टा श्रोताघ्राता रसयिता मन्ता बोद्धाकर्त्ताविज्ञानात्मापुरुषः सपरेऽक्षरेआत्मनिसम्प्रतिष्ठते ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

एषः हि द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोता घ्राता रसयिता मन्ता बोद्धा कर्त्ता विज्ञानात्मा पुरुषः सः परे अक्षरे आत्मनि सम्प्रतिष्ठते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
द्रष्टा	= देखनेवाला
स्प्रष्टा	= स्पर्शकरनेवाला
श्रोता	= श्रवणकरनेवाला
घ्राता	= सूंघनेवाला
रसयिता	= रसलेनेवाला
मन्ता	= मननकरनेवाला
बोद्धा	= जाननेवाला
कर्त्ता	= प्राणादिकोंका कर्त्ता

अन्वयः	पदार्थ
एषः	= जलबिषेसूर्यकी छायावत् शरीरोंमें प्रविष्टहुआ यह
यः	= जो
विज्ञानात्मा	= सबकाज्ञाता
पुरुषः	= पुरुषहै
सः	= सो
अक्षरे	= अविनाशी
परे	= परम
आत्मनि	= आत्मा बिषे
हि	= निश्चयकरके
सम्प्रतिष्ठते	= लीनहोजाता है ॥

भावार्थ ॥

एषहीति ॥ केवल जड़ प्रपञ्च पृथिवी आदि कहीं नहीं उस परमात्मा में स्थित हैं किन्तु जीव भी उसी परमात्मा में ही स्थित है ॥ एषहीति ॥ यह जो देखनेवाला है, स्पर्श करनेवालाहै, श्रवण करनेवाला है, गन्धका ग्रहण करनेवाला है, रसका स्वाद लेनेवाला है, मनका मनन करनेवाला है, पदार्थों का जाननेवाला है, कर्मों का कर्ता है, वही सबका ज्ञाता पुरुषहै, वही जीवआत्मा है, वही शरीर व इन्द्रिय में व्यापक है, वही अक्षर ब्रह्म में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थितहै,उससे भिन्न नहीं है,जैसे प्रतिबिम्ब बिम्बकेही आश्रयहै, बिम्ब से भिन्न नहीं है ९ ॥

मूलम् ॥

परमेवाक्षरंप्रतिपद्यतेसयोहवैतदच्छायमशरीरमलोहितं शुभ्रमक्षरंवेदयते यस्तुसौम्यससर्वज्ञः सर्वोभवतितदेषश्लोकः ॥ १० ॥

पदच्छेदः

परम् एव अक्षरम् प्रतिपद्यते सः यः ह वा एतत् अच्छायम् अशरीरम् अलोहितम् शुभ्रम् अक्षरम् वेदयते यः तु सौम्य सः सर्वज्ञः सर्वः भवति तत् एषः श्लोकः ॥

अन्वयः	पदार्थ
सौम्य =	हे सौम्य
यः =	जो पुरुष
हवा =	ईषणारहित
एतत् =	इस
अच्छायम् =	अज्ञान रहित
अशरीरम् =	निराकार
अलोहितम् =	निर्गुण
शुभ्रम् =	शुद्ध

अन्वयः	पदार्थ
अक्षरम् =	नाश से रहित सत्य ज्ञानानन्द रूप परमात्मा को
वेदयते =	जानता है
सःएव =	सोई
परम् =	परम
अक्षरम् =	ब्रह्मको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिपद्यते = स्वयं प्राप्त होता है	भवति = होता है
तु = और	तत् = इस विषे
यः = जो	एषः = यह आगे वाला
सर्वज्ञः = सबकाज्ञाताहै	श्लोकः = मन्त्रप्रमाण
सः = सोई	+अस्ति = है ॥
सर्वः = सबका आत्मरूप	

भावार्थ ॥

परमेवाक्षरमिति ॥ जो सम्पूर्ण जगत् का आधारभूतब्रह्म है सो अज्ञानरूपी अन्धकार से रहितहै, नामरूप प्रपञ्च अर्थात् उपाधियों से रहित है, रक्त पीतादि वर्णों से रहित है, सत्त्व रज तमरूपी गुणों से भी रहित है और इसीकारण वह शुद्ध है, ऐसे ब्रह्म को कोई बिरलाही अधिकारी श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठ आचार्य्य के उपदेश करके यथार्थरूप से जानता है, हे सौम्य ! जो अधिकारी पूर्वोक्त ब्रह्मके स्वरूपको अपना आत्मा करके जानलेता है वही सर्वज्ञ है, क्योंकि सर्वको अपना आत्मा करकेही जानता है, वह इसी वर्त्तमान शरीर में जीतेहीजी ब्रह्म होजाता है, इसी अर्थ को आगेवाला मन्त्रभी कहताहै १० ॥

मूलम् ॥

विज्ञानात्मासहदेवैश्चसर्वैःप्राणाभूतानिसंप्रतिष्ठन्ति यत्र तदक्षरंवेदयतेयस्तुसौम्यससर्वज्ञःसर्वमेवाविवेशेति ११ चतुर्थःप्रश्नः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

विज्ञानात्मा सह देवैः च सर्वैः प्राणाः भूतानि सम्प्रतिष्ठन्ति यत्र तत् अक्षरम् वेदयते यः तु सौम्य सः सर्वज्ञः सर्वम् एव आविवेश इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
सौम्य	हे सौम्य
यत्र	जिस सत्यादि स्वरूप बिषे
प्राणाः	सब प्राण चक्षुरादि
च	और
भूतानि	सब भूत पृथिवी आदि
सर्वैः	सम्पूर्ण
देवैःसह	अग्निआदि देवतावों के साथ
सम्प्रतिष्ठन्ति	सम्यक् प्रकारस्थित होते हैं याने लीन होते हैं

अन्वयः	पदार्थ
सः	सोई
विज्ञानात्मा	विज्ञानस्वरूप है
च	और
तत्	सोई
अक्षरम्	अविनाशी है
+च	और
यस्तु	जो
+तत्	उस अमरको
इति	इस प्रकार
वेदयते	जानता है
सः	सोई
सर्वज्ञः	सबका ज्ञाता हुआ
सर्वं	सब बिषे
आविवेश	प्रवेशकरताहै॥

इति चतुर्थःप्रश्नः ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

विज्ञानात्मेति ॥ जो अन्तःकरणावशिष्ट जीवात्मा है सोई सम्पूर्ण इन्द्रियों के सहित और पांचों प्राणों के सहित और पृथिवी आदिक पांचोभूतों के सहित अविनाशी ब्रह्म बिषेही लीन होताहै, सो जीव आत्मा विज्ञान स्वरूप है, सोई अविनाशी है, जो अधिकारी उसको इसप्रकार जानता है वही सब का ज्ञाता होता है, वही ब्रह्मस्वरूप है, वही जीवनमुक्त है, वही पूजनीय है ११ ॥

इति चतुर्थः प्रश्नः ४ ॥

मूलम् ॥

अथहैनंशैव्यःसत्यकामःपप्रच्छ सयोहवैतद्भगवन्मनुष्येषुप्रयाणान्तमोङ्कारमभिध्यायीत कतमंवावसतेनलोकंजयतीति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

अथ ह एनम् शैव्यः सत्यकामः पप्रच्छ सः यः ह वा एतत् भगवन् मनुष्येषु प्रयाणान्तम् ओंकारम् अभिध्यायीत कतमम् वाव सः तेन लोकम् जयति इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथ	= अब	सत्यकामः	= सत्यकाम नामक ऋषि
ह	= प्रसिद्ध	एनम्	= पिप्पलाद आचार्य से
शैव्यः	= शिविका पुत्र		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति = ऐसा
पप्रच्छ = पूछताभया
किं
भगवन् = हे भगवन्
सः = वह
यः = जो कोई
ह्वा = निश्चय
करके
मनुष्येषु = मनुष्योंबिषे
एतत् = इस
ओंकारम् = प्रणवको
प्रयाणान्तम् = परलोकया-
त्रापर्यंत
अभिध्यायीत = उपासना
करै
वाव = तौ
तेन = उस उपास-
ना से
सः = वह उपासक
कतमम् = किस
लोकम् = लोक को
जयति = { जीतता है
अर्थात् प्राप्त
होता है ॥

भावार्थ ॥

अथेति ॥ अब शिबिका पुत्र सत्यकाम नामक ऋषि पिप्प-लादमुनि से पूछता है हे भगवन् ! मनुष्यों के मध्य में जो कोई अधिकारी ॐकार का ध्यान मरण पर्यन्त करता है, वह उपासक उस उपासना के करने से किस लोकको प्राप्त होता है १ ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाच एतद्वैसत्यकामपरंचापरंच ब्रह्म यदोंकारस्तस्माद्विद्वानेतेनैवायतनेनैकतरमन्वेति २ ॥

पदच्छेदः

तस्मै सः ह उवाच एतत् वै सत्यकाम परम् च अपरम् च ब्रह्म यत् ओंकारः तस्मात् विद्वान् एतेन एव आयतनेन एकतरम् अन्वेति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तस्मै	= उससत्यकाम ऋषि से	परम् च	= पर और
सः	= वह पिप्पलाद मुनि	अपरम्	= अपर
उवाच	= कहता भया कि	ब्रह्म	= ब्रह्महै
सत्यकाम	= हे सत्यकाम	तस्मात्	= इसलिये
वै	= प्रसिद्ध	एतेनएव	= इस प्रणव के ही
यत्	= जो	आयतनेन	= आश्रयकरके
एतत्	= यह	विद्वान्	= उपासक
ओंकारः	= प्रणव है	एकतरम्	= पर या अपर ब्रह्मको
सःएव	= सोई	अन्वेति	= प्राप्तहोताहै॥

भावार्थ ॥

तस्मैसहेति ॥ तब उस सत्यकाम ऋषिसे पिप्पलाद मुनि ने कहा हे सत्यकाम! यह जो पूर्व कथन किया हुआ सद्रूप निर्गुण परब्रह्म और हिरण्यगर्भरूप करके अपर ब्रह्म है सो पर अपर रूप करके ओंकारहीहै, उसी को प्रणव भी कहते हैं, जो विद्वान् इस प्रणव की उपासना करता है वह पर अथवा अपर ब्रह्मको उपासना अनुसार प्राप्त होता है २ ॥

मूलम् ॥

स यद्येकमात्रमभिध्यायीत सतेनैवसंवेदितस्तूर्णमेवजगत्यामभिसमम्पद्यते तमृचोमनुष्यलोकमुपनयन्ते स तत्र तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया सम्पन्नोमहिमानमनुभवति ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

सः यदि एकमात्रम् अभिध्यायीत सः तेन एव संवेदितः तूर्णम् एव जगत्याम् अभिसम्पद्यते तम् ऋचः मनुष्यलोकम् उपनयन्ते सः तत्र तपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया सम्पन्नः महिमानम् अनुभवति ॥

अन्वयः	पदार्थ
सः	= वह उपासक
यदि	= अगर
एकमात्रम्	= एकमात्रावाले प्रणव को याने अकार मात्रको
अभिध्यायीत	= उपासना करै
+ तु	= तो
सः	= वह
तेन	= उस उपासना के बल से
एव	= निश्चय करके
संवेदितः	= सम्यक्प्रकार बोधवान् हुवा
तूर्णम्	= शीघ्र
एव	= ही
जगत्याम्	= पृथिवी बिषे
अभिसम्पद्यते	= जन्मको प्राप्त होता है
+ च	= और
तम्	= उस को
+ पुनः	= फिर
ऋचः	= ऋग्वेद के मन्त्र
मनुष्यलोकम्	= मनुष्य शरीर को
उपनयन्ते	= प्राप्तकरते हैं
+ च पुनः	= और फिर
तत्र	= तिसमनुष्य देहबिषे
सः	= वह उपासक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तपसा = तप करके	सम्पन्नः = युक्त होता
ब्रह्मचर्येण = ब्रह्मचर्य्यकर-	हुआ
के	महिमानम् = ऐश्वर्य्य को
श्रद्धया = श्रद्धा करके	अनुभवति = प्राप्त होताहै॥

भावार्थ ॥

सयदीति ॥ पूर्व त्रिमात्ररूप ॐकार की उपासना का विधान किया है, अब उस ॐकार की एक मात्रा की उपासना करने से जो उत्तम फल होताहै उसको दिखाते हैं ॥ सयदीति ॥ अकार, उकार, मकार, यह तीन ॐकार की मात्रा हैं, इन तीन मात्रों के अग्नि, वायु, सूर्य्य अथवा ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये तीन देवता हैं, भूर्भुवः, स्वः, ये तीन उन तीन मात्रों के स्थान हैं, जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति ये तीन उनकी अवस्थाहैं, और ऋग्यजुसाम ये उनके तीन वेद हैं, इनके विधानको भलीप्रकार न जानकर जो कोई एकही अकार मात्रा का ध्यान करता है, वह उस मात्रा के बलसे शीघ्रही पृथिवीलोकको प्राप्त होताहै, और ऋग्वेद के अभिमानी देवता के प्रसादसे मनुष्य शरीर को पाता है, और तप करके ब्रह्मचर्य्य करके और श्रद्धा करके ऐश्वर्य को प्राप्त होताहै ३ ॥

मूलम् ॥

अथ यदि द्विमात्रेण मनसि सम्पद्यते सोऽन्तरिक्षं यजुर्भिरुन्नीयते स सोमलोकंससोमलोके विभूतिमनुभूय पुनरावर्तते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

अथ यदि द्विमात्रेण मनसि सम्पद्यते सः अन्तरिक्षम् यजुर्भिः उन्नीयते सः सोमलोकम् सः सोमलोके विभूतिम् अनुभूय पुनरावर्त्तते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
अथ	= और
यदि	= अगर
सः	= वह उपासक
द्विमात्रेण	= द्विमात्र प्रणवसे याने अकार उकार मात्रा से
मनसि	= मन बिषे
संपद्यते	= ध्यान करताहै अर्थात् उपासना करता है
+ तु	= तो
सः	= वह
यजुर्भिः	= यजुर्वेद के मंत्रों करके
अन्तरिक्षं	= अन्तरिक्षबिषे
सोमलोकम्	= चंद्रलोकको
उन्नीयते	= प्राप्त किया जाता है
सः	= वह
सोमलोके	= चंद्रलोकबिषे
विभूतिम्	= महिमा को
अनुभूय	= भोग करके
पुनरावर्त्तते	= फिरइसलोक बिषे जन्मलेताहै ॥

भावार्थ ॥

अथेति ॥ और यदि किसी पुण्य विशेष करके वह उपासक द्विमात्रारूपी ॐकारका ध्यान मनमें करता है तो वह मरण पश्चात् अन्तरिक्ष बिषे चन्द्रलोक को यजुर्वेद के मन्त्रों करके प्राप्त होता है, और सब प्रकार के भागों को भोग करके वह उपासक पुण्य कर्मोंके छिन्न होने पर मृत्युलोकको लौट आता है, और कर्मानुसार मनुष्य शरीर को प्राप्त होता है ४ ॥

मूलम् ॥

यः पुनरेतं त्रिमात्रेणैवोमित्येतेनैवाक्षरेण पर म्पुरुषमभिध्यायीत सतेजसिसूर्य्येसम्पन्नोयथापा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोदरस्त्वचाविनिर्मुच्यत एवं ह वै सपाप्मनाविनिर्मुक्तः ससामभिरुन्नीयते ब्रह्मलोकंस एतस्माज्जीवघनात्परात्परम्पुरिशयं पुरुषमीक्षते तदेतौश्लोकौभवतः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

यः पुनः एतत् त्रिमात्रेण एव ॐ इति एतेन एव अक्षरेण परम् पुरुषम् अभिध्यायीत सः तेजसि सूर्य्ये सम्पन्नः यथा पादोदरः त्वचा विनिर्मुच्यते एवम् ह वै सः पाप्मना विनिर्म्मुक्तः सः सामभिः उन्नीयते ब्रह्मलोकम् सः एतस्मात् जीवघनात् परात्परम् पुरिशयम् पुरुषम् ईक्षते तत् एतौ श्लोकौ भवतः ॥

अन्वयः	पदार्थ
पुनः	= और
यः	= जो उपासक
त्रिमात्रेण	= तीन मात्रा याने अकार उकार मकार करके युक्त
एतेन	= इस
अक्षरेण	= पूर्णअक्षर
ओमितिः	= ओम्करके
एतत्एव	= उसी
परंपुरुषम्	= परमपुरुषको
एव	= निश्चयपूर्वक
अभिध्यायीत	= उपासनाकरै
एव	= तो
सः	= वह उपासक
तेजसिसूर्ये	= तेजरूप सूर्य बिषे
संपन्नः	= संयुक्तहोताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च = और
यथा = जैसे
पादोदरः = सर्प
त्वचा = प्राचीनत्वचा से
विनिर्मुच्यते = मुक्त होता है
एवमेव = ऐसेही
सः = वह उपासक
पाप्मना = पाप से
विनिर्मुक्तः = छूटाहुआ
सामभिः = सामवेदकेमंत्रों करके
ब्रह्मलोकम् = हिरण्यगर्भलोकको
उन्नीयते = प्राप्त कियाजाता है

+ च = और
सः = फिर वह उपासक
एतस्मात् = इस
परात् = उत्कृष्ट
जीवघनात् = हिरण्यगर्भसेभी
परम् = सर्वोत्कृष्ट
पुरिशयम् = नवद्वारआदि पुरबिषे शयन करने वाले
पुरुषम् = परमपुरुषको
ईक्षते = देखता है
तत् = तिस बिषे
एतौ = ये दोनों
श्लोकौ = मन्त्र
भवतः = प्रमाण हैं

भावार्थ ॥

यःपुनरिति—जो उपासक इसप्रसिद्ध ओंकारकी तीन मात्रा याने अकार उकार मकारकी उपासनाको करताहै और उसी ॐकार अक्षर करके पूर्ण परमात्माका जो सूर्य्य मंडल बिषे स्थितहै ध्यान करताहै, वह सूर्य्य मंडलमें जा प्राप्त होताहै और भयानक पाप से छूट जाता है, और जैसे सर्प अपनी पुरानी त्वचा के त्यागने से नवीन सुंदर प्रतीत होनेलगताहै इसी प्रकार ॐकारका उपासक भी अपने पापरूपी त्वचा सूक्ष्मशरीर के त्यागने पर शुद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्मल होजाताहै औरतब साम वेदके मंत्र जिसको उसने चित्त लगाकर अध्ययन किया था उस उपासिक को ब्रह्मलोक में ले जाकरके प्राप्त कर देते हैं और वहां पर वह हिरण्यगर्भ आत्मा से संयुक्त होजाता है और फिर आवागमन से मुक्त हो जाता है इसमें अगलेवाले दोनों मंत्र प्रमाण हैं ५ ॥

मूलम् ॥

तिस्रोमात्रामृत्युमत्यःप्रयुक्ता अन्योऽन्यसक्ता अनुविप्रयुक्ताः क्रियासुबाह्याभ्यन्तरमध्यमासुसम्यक्प्रयुक्तासुनकम्पतेज्ञः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

तिस्रः मात्राः मृत्युमत्यः प्रयुक्ताः अन्योन्यसक्ताः अनुविप्रयुक्ताः क्रियासु बाह्याभ्यन्तरमध्यमासु सम्यक्प्रयुक्तासु न कम्पते ज्ञः ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ओंकारस्य =	प्रणव की
तिस्रः =	अकार उकार मकाररूपतीन
मात्राः =	मात्रा
प्रयुक्ताः =	केवल वरण ध्यानविषे उपासना कीहुई
मृत्युमत्यः =	मृत्युविषय- कहैं अर्थात् अपरब्रह्मको प्राप्त करने वालीहैंयाने आवागमन मेंहीफसाने वाली हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+परंतु = परन्तु
सम्यक् = यथायोग्य
प्रयुक्तासु = विचार करने पर
बाह्याभ्यंतरमध्यमासुक्रियासु } = { जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थावों बिषे
अनुविप्रयुक्ताः } = { विश्वतैजसप्राज्ञरूपसे युक्त हुईं
च = और

अन्योन्यसक्ताः } = { परस्परएकता को प्राप्त हुईं
प्रयुक्ताः = { ऐसी उपासना इन तीनमात्रावों से की हुई
ज्ञः = उपासक
नकम्पते = { भयको नहीं प्राप्त होता है यानें ब्रह्मको ही प्राप्त होता है

नोट-प्रयुक्ताः प्रथमा बिभक्ति है परन्तु अर्थ तृतीया का देता है ऐसेही अनुविप्रयुक्ताः अन्योन्यसक्ताः प्रथमा है परन्तु अर्थ तृतीया का देते हैं॥

भावार्थ॥

तिस्रो मात्रेति-ब्रह्म दृष्टि से भिन्न अकार, उकार, मकार जो ॐकार की तीनों मात्रा हैं अपने उपासक को आवागमन से रहित नहीं करसक्ती हैं, अर्थात् केवल इन अक्षरों के जपसेही मुक्ति नहीं होती है, इसलिये ब्रह्मदृष्टि ॐकारमें करनी चाहिये, क्योंकि ब्रह्मज्ञान के विना केवल मात्रा का जप अपकर्षता का हेतु है तीनों मात्रोंको मिलाकरके ॐशब्द होता है, सोई ध्यान करनेके योग्यहै उसही ॐकारके ध्यान कालमें तीन जो कायिक वाचिक मानसिकक्रियाहैं उनको और जो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति अभिमानी और जड़हैं उनको तीनों मात्रों के साथतादात्म्यता करके जो जानता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और ॐकारको ब्रह्मरूप करके जो ध्यान करता है वह कदापि चलायमान नहीं होता है याने ब्रह्म लोकको प्राप्त होताहै ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

ऋग्भिरेतंयजुर्भिरन्तरिक्षंसामभिर्यत्तत्कवयो वेदयन्तेतमोङ्कारेणैवायतनेनान्वेति विद्वान्यत्तच्छान्तमजरममृतमभयंपरंचेति ॥ ७ ॥

इति पञ्चमः प्रश्नः ॥

पदच्छेदः

ऋग्भिः एतम् यजुर्भिः अन्तरिक्षम् सः सामभिः यत् तत् कवयः वेदयन्ते तम् ॐकारेण एव आयतनेन अन्वेति विद्वान् यत् तत् शान्तम् अजरम् अमृतम् अभयम् परम् च इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इति	= इसप्रकार	नीयते	= प्राप्तकिया जाता है
सः	= वह उपासक		
ऋग्भिः	= प्रथममात्रा अकार के अधिष्ठाता ऋग्वेद के मन्त्रोंकरके	यजुर्भिः	= द्वितीयमात्रा उकार के अधिष्ठाता यजुर्वेद के मंत्रोंकरके
एतम्	= इस मनुष्य लोक को	अंतरिक्षम्	= अंतरिक्ष बिषे चन्द्रलोकको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओंकारेण = प्रणव के
एव = ही
आयतनेन = द्वारा
यत् = जो
अजरम् = जराकरके रहित
अमृतम् = मरणकरके रहित
अभयम् = भयकरके रहित
शान्तम् = शान्त
च = और
परम् = सर्वोत्तम पुरुष है
तत् = उसको
अन्वेति = प्राप्तहोता है
इतिपञ्चमःप्रश्नः ।

नीयते = प्राप्त किया जाता है
सामभिः = तृतीय मात्रा मकारके अधिष्ठाता सामवेदकेमंत्रों करके
यत्तत् = जिस को
कवयः = त्रिकालदर्शी लोक
वेदयन्ते = जानते हैं और बताते हैं
तम् = उस को याने सत्यलोक को
नीयते = प्राप्तकिया जाता है
विद्वान् = त्रिमात्रप्रणवकीउपासनाका पूर्णज्ञानी

भावार्थ ॥

ऋग्भिरिति ॥ प्रथम मात्रा अकारके अधिष्ठाता ऋग्वेद के मन्त्रों का अभिमानी उपासक मनुष्य लोकको प्राप्तहोता है, द्वितीयमात्रा उकार के अधिष्ठाता यजुर्वेद के मन्त्रों का अभि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानी उपासक चन्द्रलोकको प्राप्तहोता है, और तृतीय मात्रा मकारके अधिष्ठाता सामवेद के मन्त्रोंका अभिमानी उपासक ब्रह्मलोकको प्राप्तहोताहै,ऐसा विद्वान् लोग कहते हैं जो तीनों मात्राका उपासकहै वही ब्रह्मज्ञानी है, वह उस पुरुषको प्राप्त होता है जो जराअवस्थासे रहितहै अभयहै, शान्तहै ॥ ७ ॥

इति पञ्चमःप्रश्नः ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

अथहैनंसुकेशाभारद्वाजःपप्रच्छ भगवन् हिरण्यनाभः कौशल्योराजपुत्रोमामुपेत्यैतंप्रश्नमपृच्छत् षोडशकलं भारद्वाजपुरुषंवेत्थ तमहंकुमारमब्रुवंनाहमिमंवेदयद्यहमिममवेदिषंकथन्तेनावक्ष्यमिति समूलोवाएषपरिशुष्यतियोऽनृतमभिवदतितस्मान्नार्हाम्यनृतंवक्तुम् सतूष्णींरथमारुह्य प्रवव्राजतंत्वापृच्छामिकासौपुरुषइति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

अथ ह एनम् सुकेशाः भारद्वाजः पप्रच्छ भगवन् हिरण्यनाभः कौशल्यः राजपुत्रः माम् उपेत्य एतम् प्रश्नम् अपृच्छत् षोडशकलम् भारद्वाज पुरुषम् वेत्थ तम् अहम् कुमारम् अब्रुवम् न अहम् इमम् वेद यदि अहम् इमम् अवेदिषम् कथम् तेन अवक्ष्यम् इति समूलः वै एषः परिशुष्यति यः अनृतम् अभिवदति तस्मात् न अर्हामि अ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नृतम् वक्तुम् सः तूष्णीम् रथम् आरुह्य प्रवव्राज तम् त्वा प्रच्छामि क्व असौ पुरुषः इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
अथ	= अब
ह	= प्रसिद्ध
एनम्	= इस पिप्पलादमुनिसे
भारद्वाजः	= भरद्वाजका पुत्र
सुकेशाः	= सुकेशनामक ऋषि
पप्रच्छ	= कहताभया कि
भगवन्	= हे भगवन्
कौशल्यः	= अयोध्यानिवासी
हिरण्यनाभः	= हिरण्यनाभ नामा
राजपुत्रः	= क्षत्रिय
माम्	= मेरे समीप
उपेत्य	= आय के
एतम्प्रश्नम्	= इसप्रश्नको
अपृच्छत्	= पूछताभया कि
भारद्वाज	= हे भारद्वाज मुनि
षोडशकलम्	= सोलहकला वाले
पुरुषम्	= पुरुषको
वेत्थ	= तू जानता है
तम्	= उस
कुमारम्	= राजपुत्र से
अहम्	= मैं
इति	= ऐसा
अब्रुवम्	= कहता भया कि
+हेराजपुत्र	= हेराजकुमार
अहम्	= मैं
इमम्	= इस षोडशकला वाले पुरुष को
नवेद	= नहीं जानता हूं
यदि अहम्	= अगर मैं
इमम्	= उस पुरुष को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवेदिषम् = जानता तो
कथम् ते = कैसेतेरे अर्थ
न अवक्ष्यम् = न कहताकि-
न्तु अवश्य
कहता
यः = जो
अनृतम् = मिथ्या को
अभिवदति = कहता है
एषः = वह
वै = अवश्य
समूलः = मूलसहित
परिशुष्यति = दग्ध होजा-
ताहै अर्थात्
पापिष्ठहोता
है
तस्मात् = इस लिये
अनृतम् = मिथ्या
वक्तुम् = कहने को
न = नहीं
अर्हामि = योग्यहूं मैं
+एवंश्रुत्वा = ऐसा सुनके
सः = वह राजपुत्र
तूष्णीम् = चुपचाप
रथम् = रथमें
आस्थाय = बैठके
प्रवव्राज = चलाजाता
भया
+इदानीं = अब
अहम् = मैं
तम् = उसपुरुषको
त्वा = आपसे
इति = ऐसा
पृच्छामि = पूछताहूं कि
असौ = वह
पुरुषः = पुरुष
क्व = कहां है

भावार्थ ॥

अथेति ॥ इसके अनन्तर सुकेशा नामक भारद्वाज गोत्रोत्पन्न ऋषि पिप्पलाद मुनि से पूछता भया ॥ हे भगवन् ! हिरण्यनाभ नामा राजपुत्र अयोध्याके निवासी मेरे पास आकर कहनेलगा हे भारद्वाज ! षोडशकलावाले पुरुषको आप जानते हो, तब मैंने कहा मैं उस षोडशकलावाले पुरुष को नहीं जानता हूं, यदि मैं उस पुरुषको जानता तो तुम उत्तम अधिकारी के प्रति क्यों न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहता, हे राजकुमार ! जो पुरुष मिथ्याभाषण करता है वह मिथ्यावादी मूल के सहित सूखजाता है, अर्थात् उसके शुभ कर्म जो उत्तम गतिके प्राप्तिकेकारण हैं वे सब नष्ट होजाते हैं,इसलिये मैं मिथ्याभाषण के योग्य नहीं हूं॥ मेरे वचन को श्रवण करके वह राजपुत्र तूष्णीं होकर रथपर बैठके अपने स्थानको चलागया, अब मैं आपसे पूंछताहूं कि वह षोडशकलावाला पुरुषकौन है ? ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाच इहैवान्तश्शरीरेसौम्यसपुरुषोय स्मिन्नेताःषोडशकलाःप्रभवन्तीति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

तस्मै सः ह उवाच इह एव अन्तःशरीरे सौम्य सः पुरुषः यस्मिन् एताः षोडशकलाः प्रभवन्ति इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तस्मै	= तिसभारद्वाजके प्रति	यस्मिन्	= जिस में
ह	= प्रसिद्ध	एताः	= ये प्राणादि
सः	= वह पिप्पलाद मुनि	षोडशकलाः	= नाम पर्यंत षोडशकला
इति	= ऐसा	प्रभवन्ति	= उत्पन्नहोती हैं और लय भी होती हैं
उवाच	= कहता भया कि	सः	= सो
सौम्य	= हे सौम्य	पुरुषः	= पुरुष
		इहएव	= इसही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्तःशरीरे = हृत्पुण्डरीकाकाशबिषे	+अस्ति = वर्तमान है

भावार्थ ॥

तस्मैसहेति ॥ तब भारद्वाज गोत्रबिषे उत्पन्न हुये सुकेशा ऋषिसे पिप्पलाद मुनि कहते हैं ॥ हे सौम्य ! हे प्रियदर्शन ! इसी शरीर के हृत, पुण्डरीकाकाश बिषे वह षोडशकलावाला पुरुष पूर्ण रूपसे स्थित है, उसीसे प्राणआदि षोडशकला उत्पन्न होती हैं, और उसीमें लय भी होती हैं, ॥ २ ॥

मूलम् ॥

सईक्षाञ्चक्रेकस्मिन्नहमुत्क्रान्ताउत्क्रान्तोभविष्यामि कस्मिन्वाप्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामीति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

सः ईक्षाम् चक्रे कस्मिन् अहम् उत्क्रान्ते उत्क्रान्तः भविष्यामि कस्मिन् वा प्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामि इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
सः	= वहपुरुष
सृष्टिविषये	= सृष्टिकी रचना बिषे
इति	= ऐसा
ईक्षाम्	= अवलोकन
चक्रे	= करताभया कि
अन्वयः	पदार्थ
अहम्	= मैं
कस्मिन्	= किसके
उत्क्रान्ते	= निर्गमनमेंया नेनिकलनेपर
उत्क्रान्तः	= निकसाहुआ
भविष्यामि	= होऊंगा
वा	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कस्मिन् = किसके प्रतिष्ठिते = स्थिति में	प्रतिष्ठा स्यामि	= स्थित रहूंगा

भावार्थ ॥

सईक्षांचक्रइति ॥ पिप्लाद मुनि फिर कहते हैं,हे ऋषि ! जो षोडशकलावाला पुरुष है वह सृष्टिके रचना विषे ऐसा चिन्तन करने लगा कि इस स्थूलशरीर से किस कर्त्ता विशेष के उत्क्रमण करने से मैं स्वयं प्रकाश आनन्दरूप आत्मा उत्क्रमण करता हुआसा मालूम हूंगा, और फिर शरीर में किसके स्थित होने से मैं स्थितिवाला प्रतीत होऊंगा ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

स प्राणमसृजत प्राणाच्छ्रद्धां खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीन्द्रियम् मनोऽन्नमन्नाद्वीर्य्यं तपोमन्त्राः कर्म्मलोकालोकेषुचनामच ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

सः प्राणम् असृजत प्राणात् श्रद्धाम् खम् वायुः ज्योतिः आपः पृथिवी इन्द्रियम् मनः अन्नम् अन्नात् वीर्यम् तपः मन्त्राः कर्मलोकाः लोकेषु च नाम च ॥

अन्वयः	पदार्थ
सः	= वहपुरुष
प्राणम्	= सब अधिकारियों में मुख्य प्राण को
असृजत	= सृजताभया
प्राणात्	= प्राणसे
श्रद्धाम्	= आस्तिक्यबुद्धिको
खम्	= आकाश को
वायुः	= वायु को
ज्योतिः	= तेज को
आपः	= जल को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृथिवी = पृथिवी को
इन्द्रियम् = दशोंइंद्रियोंको
मनः = मन को
अन्नम् = अन्न को
च = और
अन्नात् = अन्नपरिपाकसे
वीर्यम् = सब कर्मों के साधक बल को तथा प्रजाउत्पादन सामर्थ्य को
तपः = तप को
मन्त्राः = मंत्रोंकोयानेऋक्यजुःसाम अथर्व वेदोंको
कर्म = अग्निहोत्रादिक कर्म को
लोकाः = कर्मोंकेफलोंको
च = और
लोकेषु = लोकों बिषे
नाम = देवदत्तयज्ञदत्तादिनामोंको
असृजत = रचताभया

नोट-वायुः आपः पृथिवी मन्त्राः लोकाः ये प्रथमा विभक्तिके रूपहैं परन्तु इसमन्त्रमें अर्थ द्वितीयाविभक्ति का देते हैं ॥

भावार्थ ॥

सप्राणेति ॥ हे ऋषि ! वह षोडशकलावाला पुरुष जो परमात्मा है प्रथम प्राणोंको उत्पन्न करता भया, और प्राणसे श्रद्धा याने आस्तिक बुद्धिको जो सम्पूर्ण प्राणियों को शुभ कर्म में प्रवृत्ति का हेतु उत्पन्न करताभया, फिर आकाश वायु तेज जल और पृथिवीको उत्पन्न करताभया, फिर चक्षुरादि पांचज्ञानेन्द्रियों को उत्पन्न करताभया, फिर हस्तादि पांचकर्मेन्द्रियोंको उत्पन्न करताभया, फिर अन्तःकरण को रचता भया, फिर व्रीहियवादि अन्न को उत्पन्न करता भया, फिर अन्न से वीर्यको उत्पन्न करताभया, फिर चित्तकी शुद्धिका हेतुभूत जो तप है उसको उत्पन्न करता भया, फिर कर्मों का साधन जो कि [illegible] यजुः साम अथर्वण आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मंत्र हैं, उनको उत्पन्न करता भया, फिर होतारूप अग्निको उत्पन्न करता भया, फिर कर्मों के फलभूत लोकादिको उत्पन्न करताभया, उन लोकों में फिर प्राणियों को उत्पन्न करताभया, फिर उनके नाम देवदत्त यज्ञदत्त आदिको उत्पन्न करता भया ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

स यथेमानद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः समुद्रम्प्राप्यास्तं गच्छन्ति भिद्येते तासां नामरूपे समुद्रइत्येवं प्रोच्यते एवमेवास्य परिद्रष्टुरिमाःषोडश कलाः पुरुषायणाः पुरुषं प्राप्यास्तंगच्छन्तिभिद्येते तासां नामरूपे पुरुषइत्येवम्प्रोच्यते स एषोऽकलोऽमृतोभवति तदेष श्लोकः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

सः यथा इमा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः समुद्रम् प्राप्य अस्तम् गच्छन्ति भिद्येते तासाम् नामरूपे समुद्रः इति एवम् प्रोच्यते एवम् एव अस्य परिद्रष्टुः इमा षोडशकलाः पुरुषायणाः पुरुषम् प्राप्य अस्तम् गच्छन्ति भिद्येते तासाम् नाम रूपे पुरुषः इति एवम् प्रोच्यते सः एषः अकलः अमृतः भवति तत् एषः श्लोकः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ.
सः	= वह दृष्टान्त इस बारेमें ऐसाहै कि	यथा	= जैसे
		स्यन्दमानाः	= चलती हुई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समुद्रायणाः = समुद्रविषे गमन न करने वाली
इमाः = ये
नद्यः = नदियां
समुद्रम् = समुद्र को
यदा = जब
प्राप्य = प्राप्त होकर
अस्तम् = अभावको
गच्छन्ति = प्राप्तहोतीहैं
च = और
तासाम् = उननदियोंके
नामरूपे = नाम और रूप दोनों नष्टहोजाते हैं
तदा = तब
केवलम् = केवल
समुद्रः = समुद्रनाम
इति = करके
एवम् = ही
प्रोच्यते = कहाजाताहै
एवमेव = ऐसेही
यदा = जब
अस्यपरिद्रष्टुः = इस साक्षी पुरुषके
इमाः = ये
पुरुषायणाः = पुरुषमेंगमन करनेवालीं
षोडशकलाः = प्राणादि षोडश कला
पुरुषम् = पुरुष को
प्राप्य = प्राप्त होकर
अस्तम् = अभाव को
गच्छन्ति = प्राप्तहोतीहैं
च = और
तासाम् = उन के
नामरूपे = नाम और रूप दोनों
भिद्येते = नष्ट होजातेहैं
तदा = तब
पुरुषः = पुरुष
इति = करके
एवम् = ही
प्रोच्यते = कहाजाताहै
+यः एवं विद्वान् = जो उपासकउसपुरुष को इस प्रकार जानता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सः = सो	भवति = होता है
एषः = वह उपासक	तत् = इस विषे
अकलः = कला रहित	एषः = यह आगेवाला
च = और	श्लोकः = मंत्र प्रमाणहै ॥
अमृतः = मरणरहित	

भावार्थ ॥

सयथेति ॥ आत्मज्ञानकी प्राप्तिके लिये पूर्व अध्यारोप करके जगत्की उत्पत्ति को कहा है, अब तिसके अपवादको दार्ष्टांत द्वारा कहते हैं ॥ यथेति ॥ जैसे जब गंगा यमुना सरस्वतीआदिक नदियें चल करके समुद्र में लय होजाती हैं और उनके नाम और रूप सब नाशहोजाते हैं, और उनका जल समुद्र के जलके साथ अभेदको प्राप्तहोजाता है तब एक समुद्रही कहाजाताहै वैसेही दृष्टान्त अनुसार सोलहों कला याने पांचकर्मेन्द्रिय पांच ज्ञानेन्द्रिय पांचप्राण और एक मन जब पुरुष को प्राप्तहोकर लय होजाते हैं तब उनके नाम रूपका नाश उसी पुरुषमेंही होजाता है,पूर्वोक्त षोडशकलों का उपादान और बुद्धिका द्रष्टा जो पुरुष यानी आत्मा है,वह उन कलाओं से रहित है,जो उपासक पुरुष याने आत्मा को इसप्रकार जानता है,वह जन्म मरणसे रहित होजाता है, इसी अर्थको आगेवाला मन्त्र भी कहता है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

अराइवरथनाभौकलायस्मिन्प्रतिष्ठिताः तंवेद्यंपुरुषंवेदयथामावोमृत्युःपरिव्यथाइति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

अराः इव रथनाभौ कलाः यस्मिन् प्रतिष्ठिताः तम् वेद्यम् पुरुषम् वेद यथा मा वः मृत्युः परिव्यथाः इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इव	= जैसे	पुरुषम्	= पुरुष को
रथनाभौ	= रथचक्रनाभि बिषे	यूयम्	= तुमसब
अराः	= अराहै उसी प्रकार	इति	= उक्तप्रकार से
यस्मिन्	= जिसपुरुषबिषे	वेद	= जानो
कलाः	= प्राणादिकला	यथा	= जिसके जानने से
प्रतिष्ठिताः	= स्थित हैं	वः	= तुमको
तम्	= तिस	मृत्युः	= मृत्यु
वेद्यम्	= जाननेयोग्य	मा	= न
		परिव्यथाः	= पीड़ादेवैगा

भावार्थ ॥

अराइवेति ॥ रथ के पहियों के बीच में जो तिरछी २ लकड़ियां लगी रहती हैं उनका नाम अराहै, वे अरे जैसे रथके चक्रों में लगे रहते हैं तैसे ये प्राणादिक षोडशकला भी उस पुरुष में स्थित हैं यदि उस जानने योग्य पुरुषको आप अधिकारी लोग जानोगे तो मृत्युरूपी अज्ञानको कभी नहीं प्राप्तहोगे ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

तानहोवाचैतावदेवाहमेतत्परंब्रह्मवेदनातः परमस्तीति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

तान् ह उवाच एतावत् एव अहम् एतत् परम् ब्रह्म वेद न अतः परम् अस्ति इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+सः पिप्पलादः	= वह पिप्पलाद आचार्य्य	परम्	= पर
इति	= ऐसा शिक्षा करके	ब्रह्म	= ब्रह्मको
ह	= पुनः	एतावत्	= इतना
तान्	= उनशिष्योंसे	एव	= ही
उवाच	= कहताभया कि	वेद	= जानताहूं
अहम्	= मैं	अतः	= इस से
एतत्	= इस	परम्	= आगे
		किञ्चित्	= कुछ और
		न	= नहीं
		अस्ति	= है

तानिति ॥ उन छवों शिष्यों से पिप्पलादमुनि कहते हैं कि हेश्रेष्ठ ऋषियो ! इसपरब्रह्मको मैं इतनाही जानताहूं,इससे अधिक कुछ नहीं है, उसके स्वरूपको जैसा मैं जानता था सो आप लोगों से मैंने कहा, इससे और अधिकतर जाननेके योग्यनहीं है ७ ॥

मूलम् ॥

तेतमर्च्चयंतस्त्वंहिनःपितायोऽस्माकमविद्यायाः पारंपारंतारयसीतिनमः परमऋषिभ्योनमःपरम ऋषिभ्यः ॥ ८ ॥

इति प्रश्नोपनिषदष्टःप्रश्नःसमाप्तोयम् ॥

पदच्छेदः

ते तम् अर्चयन्तः त्वम् हि नः पिता यः अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्माकम् अविद्यायाः परम् पारम् तारयसि इति नमः परमऋषिभ्यः नमः परमऋषिभ्यः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इति =	पिप्पलादमुनिकेऐसे उपदेशको सुनकर	+असि =	हो
		यः =	जो आप
		अस्माकम् =	हमको
		अविद्यायाः =	अविद्यारूप अन्धकारके
ते =	वे कबंधी कात्यायन आदि छओं शिष्य	परम् =	परले
		पारम् =	किनारे को
		तारयसि =	पारकरतेभये
तम् =	उस पिप्पलाद गुरुको	अतः =	इस उपकार के कारण
अर्चयन्तः =	पूजन करते हुये	परमऋषिभ्यः =	विद्या संप्रदायचलानेवाले तुम सरीखे परमऋषियों के अर्थ
+इति ऊचुः =	ऐसाकहतेभये कि		
+गुरो =	हे गुरो हे भगवन्		
हि =	निश्चयकरके	नमः =	नमस्कार है
त्वम् =	आप	परमऋषिभ्यः =	परमऋषियोंके अर्थ
नः =	हम लोकोंके		
पिता =	पिता	नमः =	नमस्कार है

इति षष्ठःप्रश्नःसमाप्तः ॥

Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

तेतमिति ॥ वे कबन्धी कात्यायन आदि छवों शिष्य पिप्पलाद गुरुसे ब्रह्मविद्याको प्राप्तहोकर पिप्पलादजीका पूजन करते भये,और कहने लगे कि निश्चय करके आपही हम लोगों के पिता हैं, आपही हमलोगों के ब्रह्मविद्यादानकर्ता गुरु हैं, आपने हमलोगोंको जन्म मरण का हेतु जो अविद्या है उससे पार करके मोक्षको प्राप्त किया है,आपही ने ब्रह्मविद्यारूपी जहाज करके अविद्यारूपी समुद्र से हमलोंगों को मोक्षरूपी पारको प्राप्तकियाहै, आपही ब्रह्मविद्याके संप्रदायके प्रवर्तक हैं,आप के प्रति हमलोगोंका नमस्कारहो,पुनः २ नमस्कारहो ॥ ८ ॥

इति प्रश्नोपनिषत्षष्ठः प्रश्नः ६ समाप्तोयम् ॥

इति प्रश्नोपनिषत् सम्पूर्णम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इश्तिहार

केनोपनिषद् भाषा टीका सहित, क़ीमत =)

सामवेदीय तलवकार शाखीय भाषा टीका सरल मध्यदेशी हिन्दी भाषा में है—जिसको पण्डित यमुनाशङ्कर ने राजशाही मिहिरचन्द की सहायता से अनुवाद किया इस में भी पदों के अन्वयपूर्वक भावार्थ स्पष्ट किया है और ऐसा टीका किया है कि अल्पज्ञ मनुष्यों के भी समझ में आजावे ॥

माण्डूक्योपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत ॥=)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषाटीका सहित—जिस में ओंकार स्वरूप का प्रतिपादन व ब्रह्म और आत्मा की अभेदताका निरूपण चार प्रकरणों में अच्छी तरह से किया है ॥

कठवल्लीउपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत =)॥

पंचोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषाटीका सहित—इस में भी ऊपर लिखेहुये के अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया और समझने की सुगमता के लिये गुरुशिष्यसंवादपूर्वक पूर्णज्ञान लखाया है ॥

मुण्डकउपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत =)॥

पंचोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषाटीका सहित—जिस में वादी प्रतिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदुत्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का सम्भव व अग्निहोत्रादि क्रियाओं का विधान मन्त्रों द्वारा वर्णित है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत ।-)॥

पंचोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषा टीका सहित—जिसमें तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होने का उदाहरण और स्वर मात्रा व वर्णों के उच्चारण की शिक्षा का नियम व वर्णोंके सम्बन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मी की कामनावाले पुरुषों के अर्थ साधन जप और हवनादिकी क्रियायें वर्णितहैं ॥

ऐतरेयोपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत =)॥॥

पंचोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषाटीका सहित—जिस में आत्मा व ब्रह्मका निरूपण और प्राण व प्रणवकी उपासना की व्याख्या व संन्यासादि आश्रमोंके लक्षण व धर्म अच्छेप्रकार वर्णित हैं ॥

मैनेजर नवलकिशोर प्रेस,
हज़रतगंज—लखनऊ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri